धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग संग्रह

भाग-3

पूज्य परम संत
गुरबख़्श सिंह 'मैनेजर साहिब'

मस्ताना शाह बलोचिस्तानी आश्रम
जगमालवाली, सिरसा, हरियाणा

प्रकाशक :
सच्चा सौदा रूहानी सत्संग ट्रस्ट (रजि.)
पॉकेट ए-2, केशव पुरम, दिल्ली-110035
दूरभाष : 011-27391133, 27392233

मस्ताना शाह बलोचिस्तानी आश्रम
डाकघर जगमालवाली, वाया कालांवाली,
ज़िला-सिरसा, हरियाणा-125201
दूरभाष : 01696-286507, 286307 पी.सी.ओ.–286300
ई-मेल : mbajagmalwali@gmail.com

प्रेमसर धाम, गाँव बाजीतपुर ठाकरान, दिल्ली-110039
दूरभाष : 011-27753116

सर्वाधिकार © सुरक्षित

प्रथम संस्करण : जुलाई-2021, 2000 प्रतियाँ

मुद्रण : क्विक ऑफसेट, दिल्ली-110032

पाठको से बेनती

पाठकों से निवेदन है कि इस पुस्तक में संग्रहित सत्संग, इलाकों की आम बोलचाल की भाषा में जनसमुदाय को समझाने के लिए फरमाये गये हैं। इनमें अनेक संतों के द्वारा रचित अनन्य पुस्तकों से व्याख्यान संकलित हैं जिनमें सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है।

मुख्यतः गुरूवाणी के शब्दों का प्रयोग है। यहाँ पर पूर्णतः शुद्ध हिन्दी के शब्दों का प्रयोग नहीं है। आप से निवेदन यह है कि मात्राओं की तरफ ज्यादा ध्यान न दें। खासकर गुरूवाणी के शब्दों का उच्चारण करते समय ' ि ' तथा ' ु ' की मात्रओं का हिन्दी रूपांतरण न करें। इन शब्दों का 'गुरूवाणी' में अपना विशेष महत्व है परन्तु पढ़ते समय इन मात्राओं का उच्चारण नहीं किया जाता तथा हिन्दी में इनका प्रचलन नहीं है।

पूज्य परम संत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब के द्वारा फरमाये गये सत्संगों को यथावत भाषा में लिखा गया है यानि कि जैसा बोला है वैसा लिखा गया है। उसमें कोई तोड़-मरोड़ नहीं की गई है। यह भी कोशिश की गई है कि पुराने धार्मिक ग्रन्थों के विवरण भी यथावत रहें। यदि कहीं भी किसी वाक्य में कोई गलती मिले तो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हैं तथा आपसे अनुरोध है कि त्रुटि को दूर करने के लिए सुझाव अवश्य भेजें। आपका सहयोग अपेक्षित रहेगा एवं कथित त्रुटि को अगले संस्करण में दूर करने का प्रयास होगा।

–प्रकाशक

प्रकाशक की ओर से

सन्त + मत 'संतमत' परमपिता परमात्मा से मिलने का सहज मार्ग है जो अनादिकाल से चला आ रहा है। जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है तब से ही सन्तमत की शुरुआत हुई है। यह कुल मालिक का अपना बनाया हुआ मानवता के कल्याण का एक सरल मार्ग है। धर्म, सम्प्रदाय, जाति, देश, कौम, छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच की सीमाओं से परे एवं सहज योग और चिन्तन का मार्ग है। संसार का हर व्यक्ति, स्त्री-पुरुष, बच्चा, बूढ़ा एवं जवान कोई भी इस मार्ग को अपना सकता है। संतों के बताये हुये मार्ग पर चलकर, उस परम पिता को इस शरीर रुपी मन्दिर में प्राप्त कर सकता है और कोई ज़रिया मालिक से मिलने का नहीं है। सिर्फ संतों के द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर ही उस करुणामय, दीनदयाल परमपिता परमात्मा की प्राप्ति हो सकती हैः

''राम नाम रत्न धन पूंजी, संतन हथ रखी कूंजी''

''जिस वस्तु को लैन तूं आइआ, राम नाम संतन घर पाइआ''

युगों-युग से कुल मालिक संत का चोला पहनकर, जीवों को भवसागर पार कराने के लिए अवतरित होता आया हैः

''हमरा भरता बड़ा विवेकी, आपे संत कहावै''

''साध रुप अपना तन धारया''

"The Word was made flesh and dwelt amongst us."

सन्त सदैव करुणा की मूर्ती रहे हैं एवं हमें धीरज, विवेक, दीनता का मार्ग बताते आये हैं। उनका उपदेश सबके लिए सांझा उपदेश रहा है। संत फरमाते हैं कि मनुष्य किसी कामिल उस्ताद से नाम की दीक्षा लेकर, प्रेम, लग्न, आधीनता से बन्दगी करके इसी जीवन में परमात्मा के दर्शन कर सकता है तथा जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

पूज्य परमसंत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब जी को हुज़ूर महाराज परम संत सावन सिंह जी से नाम की दौलत मिली तथा पूज्य परमसंत मस्तानाशाह ब्लोचिस्तानी जी की सोहबत एवं मार्गदर्शन प्राप्त करके लगभग 38 सालों तक संतमत सिद्धांतों को शिरोमणी रखते हुये अपने सत्संगों के द्वारा जन-मानस को सरल एवं स्पष्ट तरीके से समझाया है। जहाँ भी, जिस इलाके में गये, उसी इलाके की बोली में सत्संग करके अपनी मधुर वाणी से जिज्ञासुओं की आत्मा को तृप्त किया है। आपने अपने सत्संगों में उच्च कोटि के संतों, महात्माओं एवं विद्वानों के उपदेशों को सरल, बोलचाल की भाषा में समझाकर जीवों का उद्धार किया है। आपकी नूरी जुबान से निकला हर एक शब्द हृदय को मंत्रमुग्ध करने वाला होता था जो कि हर जीव को अटूट शान्ति प्रदान करता था।

इस पुस्तक में, उनके द्वारा फरमाये गए कुछ सत्संगों का संग्रह करके तीसरा भाग संगत की सेवा में समर्पित है। आशा है कि संगत इस पुस्तक को पढ़कर, उनके उपदेशों को अमल में लाते हुये जीवन के असली उद्देश्य को प्राप्त करेंगें।

—दास 'वकील'

भूमिका

पूज्य परम संत गुरुबख़्श सिंह 'मैनेजर' साहिब जी ने प्रकाश पुंज की तरह प्रकाशमान होकर, दुनिया को रूहानियत का रास्ता दिखाया है। उनके मुखारबिंद से निकला हुआ प्रत्येक शब्द जीवन का सोमा एवं दिल की गहराईयों को छू लेने वाले अमृत क्लश की तरह है। जो भी जिज्ञासु-आत्मा उनके सत्संग में गई वह यह अनुभव करती कि प्रत्येक वचन उनके लिए ही कहा गया है। उनके सत्संगों में प्यासी आत्माओं को ठंडक पहुंचती थी। हर जीव भाव विभोर होकर सत्संग सुनता एवं अपने रोम-रोम में आत्मीयता के साथ-साथ परमात्मा की अनुभूती करता था।

आप अलौकिक नूर के स्वामी थे। अलौकिंक तेज से खिलखिलाता नूरी स्वरूप सबका मन मोह लेता था। आप सहज ही हर जिज्ञासु को अपनी मधुर एवं तेजस्वी वाणी से अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। आपके द्वारा हर संदर्भ में उच्चारित 'बे-ईमान! सोचो! बोलो! सोच लो! देखो! हाय-हाय! फिर बोल भई! जैसे मार्मिक शब्द जीव की अर्न्तआत्मा को छू कर रूहानियत के विषय में सोचने एवं समझने के लिए मजबूर कर देते थे।

'सत्संग संग्रह' नामक इस पुस्तक में दिये गये सत्संगों में मैनेजर साहिब जी ने हिन्दी, पंजाबी, उर्दू, अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है। पूज्य परम संत मस्तानाशाह ब्लोचिस्तानी जी का वचन था कि ''इतना पढ़ा-लिखा, गुणी एवं समझदार ''मैनेजर'' सतगुरु ने बड़ी ताकत खर्च करके पकड़ा है क्योंकि इससे बड़ा काम लेना है''। पूज्य मस्ताना जी के यह वचन सार्थक सिद्ध हुये एवं इन्होंने अपनी मीठी, अलौकिक तेजस्वी वाणी से जीवों के अन्दर नाम का बीज डालकर भवसागर से पार किया है। सभी सत्संग ज्ञान में परिपूर्ण, स्पष्ट, सरल एवं रूहानियत से लबालब हैं। हर सत्संग में उच्च कोटि

के संतों, महात्माओं तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों का हवाला देकर सहज तरीके से जीवों को समझाया है।

संसार कभी भी संतों से खाली नहीं रहता। सतगुरु की नूरी किरण हमेशा दुनिया के किसी न किसी कोने से अधिकारी एवं व्याकुल जीवों को प्रकाशमान करती रही है। इस मृतलोक में, भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहते हुऐ, पूर्ण कामिल संत या फकीर का सार उद्देश्य हमेशा एक ही रहा है कि जीव अपने निज घर पहुंच जाए। सबने एक ही सत्य, ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु, शब्द गुरु का उपदेश दिया है। जो महात्मा मंजिले-मकसूद पर पहुंचे हैं उनका एक ही उपदेश, एक ही उसूल एवं एक ही मुददा रहा हैः

जो पहुँचे ते कहि गए तिनकी एकै बात।
सभी सिआने एक मत उनकी एकै जात॥
जो पहुँचे ते पूछिए तिनकी एकै बात।
सब साधुऊँ की एक मत बीच के बाराँ बाट॥

(दादू साहिब)

यह संसार बदलता रहता है और इसकी परिस्थितियां और बोली भी बदलती रहती है। इसी तरह संत भी काल और देश के अनुसार अपना नया रास्ता बना लेते हैं। उनका काम अधिकारी और व्याकुल जीवों को ठीक मार्ग पर डालना है। वे मौके के बादशाह हैं और बादशाह को अधिकार होता है कि जो मर्ज़ी कानून बना ले। लेकिन अन्दर का रास्ता एक ही है जो युगों-युगान्तर से चला आ रहा है और जो मालिक का अपना बनाया हुआ है; वह शब्द की धार या सच्चा नाम है। दृष्टि का एक ही लक्ष्य है शब्द की धार को पकड़कर निजघर पहुंचना। आदमी के दृष्टिकोण अलग हो सकते हैं।

परमपिता परमात्मा ने स्वयं ही संसार सागर की रचना की है। फंसाने वाला भी खुद और निकालने वाला भी खुद ही है। संतों के रूप में आकर खुद ही जीव को अपने घर जाने का तरीका बताता है। यदि वह न आये तो जीव निजघर जा ही नहीं सकता।

संत जीव को समझाते हैं कि परमात्मा शरीर रूपी मन्दिर में निवास करता है। वह बाहर के मन्दिर, मस्जिद, उजाड़, पहाड़ एवं कन्धराओं में नहीं मिलता। वह कौमों मज़हबों तथा बाहर के भेखों से बहुत दूर है। संत समझाते हैं कि किसी कामिल रूहानी दरवेश की शरण में आकर उनसे नाम रूपी उपदेश लेकर,

दीनता से भजन सिमरण करके, इन्द्रियों के भोगों का त्याग करते हुये, सतगुरू की अनुभूति प्राप्त कर सकता है।

संतमत सहज योग का मार्ग है। इसको हर कोई शख्स, स्त्री-पुरुष, बच्चा, बूढ़ा, जवान, बीमार, तन्दुरूस्त चाहे किसी भी जाति, सम्प्रदाय, कौम, मज़हब, देश का हो, अपना सकता है। संतों का उपदेश घर-बार छोड़ने के लिए नहीं कहता बल्कि घर में रहते हुये, प्रारब्ध कर्मों का भुगतान करते हुये, भजन सिमरण के द्वारा अपने मंज़िले मकसूद पर पहुंच सकता है।

पूज्य ''मैनेजर'' साहिब जी ने अपने सत्संगों में बड़ी सरलता और स्पष्टता के साथ-साथ अन्य सन्तों की वाणियों का उल्लेख करते हुए हर एक रूहानी विषय को बाखूबी समझाया है। आशा है संगत इन सत्संगों को पढ़कर एवं उनके द्वारा फरमाये गये वचनों पर अमल करके लाभ उठायेगी।

–दास 'वकील'

अनुक्रम

क्रमांक	सत्संग शब्द	पृष्ठ संख्या
1.	'नाम रस मीठो रे शब्द रस मीठो'	11
2.	'मेरी नईया पड़ी मझधार में'	38
3.	'गुरु मोहि अपना रूप दिखाओ'	50
4.	'हर रंग विच आप समाइया है'	72
5.	'गुरु क्यों न सम्हार'	96
6.	'नर चेत चेत नर चेत खेत थारो चिड़ियाँ खावैं रे'	123
7.	'छोटा सा हो कर चलो रे मन मेरा'	137
8.	'दरस तेरे की प्यास मन लागी'	156
9.	'आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा'	186
10.	'हम कुक्कर तेरे दरबारि'	216
11.	'हे हिरदे तोहि आदि सुनाउँ'	233
12.	'झिनां झिनां चोला पहन सखीए'	256
13.	'जिसु जल निधि कारणि तुम जग आए'	285
14.	'असुर संघारण रामु हमारा'	317
15.	'परम संत पूज्य मैनेजर साहिब की साखीयां'	342
16.	'ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे'	372

सत्संग

'नाम रस मीठो रे शब्द रस मीठो'

सत्संग के वचन

पाठी– खांड खाया दुख उपजै, नीम खाया लवलीन।
राम रस मीठो, शब्द रस मीठो, प्रेम रस मीठो रे।
पीया अमर हो जाए, नाम रस मीठो, शब्द रस मीठो।
प्रेम रस मीठो रे, शब्द रस मीठो.....

मैनेजर साहिब जी– हरेक आदमी के अन्दर अमृत बरस रहा है। हम रोज़ पढ़ते हैं:

झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा। मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा॥

(102/5 म:5)

वो शब्द की धार, नाम की धार सब के अन्दर आ रही है। उसमें अमृत है। चाहे कोई हिन्दू है, चाहे सिक्ख हो, चाहे ईसाई हो, चाहे मुसलमान है, सबके अन्दर है। दादू साहिब कहते हैं:

घर घर घट कोहलू चले, अमी महारस जाई।
दादू गुरु के ज्ञान बिन, विषे हलाहल खाई॥

सब के अन्दर है। मुसलमान कहते हैं:

अलफ एह तन रब्ब सच्चे दा हुजरा विच पा फ़क़ीरा झाती हू।
न कर मिन्नत ख़्वाज खिज़र दी, तैं अंदर आब हयाती हू।

(हज़रत सुलतान बाहू जी)

सब के अन्दर अमृत बरस रहा है। कोई नसीबों वाला पीता है। यही नहीं अन्दर अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। अन्दर भी कई तरह के हैं। गुरु नानक साहिब मक्के गए तो काज़ी रूकनदीन ने पूछा कि खुदा कहाँ रहता है? उसके महल के कितने दरवाज़े हैं, कितनी खिड़कियां है? तब उन्होंने फरमाया कि–

नौ दरवाज़े कोट दे दसवां नूर महल।

यह जिस्म एक कोट है। इसके अन्दर नगरी है। इसके नौ दरवाज़े बाहर हैं। दसवां अन्दर खुलता है। अगर खोले तोः

हौज़ हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल।

वहाँ अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। आला से आला कौन सा है? आला से आला कौन सा है? कमल का है, जिसे दसवां द्वार कहते हैं, अमृतसर कहते हैं, पराग(प्रयाग) कहते हैं। सबके अन्दर है। वो जो असली है, नीचे का तो बहुतों ने पीया है लेकिन जो असली है, वो विरले ने ही पीया है।

अंम्रित रसु सतिगुरु चुआइआ॥ दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ॥

(1069/ 9 म : 4)

एक और जगह कबीर साहिब ने लिखा हैः

जेते घट अंमृतु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई॥2॥
नगरी एकै नउ दरवाज़े धावतु बरजि रहाई।
तृकुटी छूटै दसवा दुरु खूलै ता मनु खीवा भाई॥3॥

(1123/17 कबीर साहिब)

नीचे का तो कईयों ने पीया। कबीर साहिब का एक और शब्द हैः

तेरी काया रहे अलमस्त नाम की पी ले रे बूंटी।

इस में आखिर में फरमाते हैंः

ब्रह्मा पी, विष्णु पी, और पी शक्ति।
फिर, दास कबीरा ऐसी पी, आवागमन छूटी।

जो असली है, वो आवागमन का चक्र खत्म करता है। जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाता है। नीचे का कईयों ने पीया, यह नहीं कि नहीं पीया लेकिन आवागमन के चक्र नहीं छूटते। जो असली है वो दसवें द्वार में है, त्रिलोकी से पार है।

कहे कबीर जन गाइके, सुनो जगत इह गिआन।
नीचे त्रिलोकी रहे त उपर सतिगुरु नाम॥

वो अमृत सबके अन्दर है। वो किसी विरले ने पीया है। फकीरों का उपदेश यही है। उस अमृत को पीयो। जिन्होंने पीया वो अपनी मस्ती के राग सुना गए। वो अपनी मस्ती के राग सुना गए। बुल्लेशाह कहते हैंः

अव्वल आखर आप नूं जाणा, न कोई दूजा होर पछाणा।
मैथों ना कोई होर स्याणा।
बुल्ला शहु किहड़ा है कौण। बुल्ला की जाणा मैं कौण॥

यही एक और मुसलमान फकीर हज़रत बाईज़ीद बुसतामी ने लिखा है:

मन खुदायम, मन खुदायम, मन खुदा,
फारगम अज़ किबरो व कीना ज़े हवा॥

कि मैं खुदा बन गया, खुदा बन गया। यही पलटू साहिब ने कहा है:

कोटिन जुग परलय गई हम ही करने हार॥
हम ही करनेहार हम ही करता के करता।
जेकर करता नाम आदि में हम ही रहता॥
मरि हैं ब्रहमा बिशनु म्रित्यु न होय हमारी।
मरि हैं सिया के लाल मरैगी शिव की नारी॥
धरती अग्नि आकाश मूवा है पवन और पानी।
आद जोत मर गई रही देवतन की नानी॥
पलटू हम मरते नहीं ज्ञानी लेहु विचार।
कोटिन जुग परलय गई हम ही करने हार॥

सो उन्होंने यह अमृत पीया। यही नहीं बाकी फकीरों ने भी यही लिखा है। गुरु अर्जुन साहिब जी ने भी यही लिखा है। छुपा छुपाकर बात कही। क्या?

अब मोहि जीवन पदवी पाई। (1000/8 म:5)

क्या लिखते हैं:

पाठी– मंदर मेरे सभते ऊचे॥ देस मेरे बेअंत अपूछे॥ (1141/11 म:5)

मैनेजर साहिब जी– कि मैं ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ कोई नहीं पहुँचा। ऊँचे-ऊँचे सब मन्दिर हैं। वहाँ कोई पूछने वाला नहीं कि काल, महाकाल। वहाँ किसी की ताकत नहीं कोई हिसाब भी मांग सके। काल नज़दीक नहीं आता।

पाठी– मंदर मेरे सभ ते ऊचे॥ देस मेरे बेअंत अपूछे॥ (1141/11 म:5)
राजु हमारा सद ही निहचलु॥ माल हमारा अखूटु अबेचलु॥

मैनेजर साहिब जी– यहाँ तो तीसरे दिन हकूमत बदल जाती है। वहाँ बदलती ही नहीं, ऐसा राज है वहाँ जो बदलता ही नहीं। ऐसा अखुट खज़ाना है जो कभी खुटता नहीं। जिसके बारे में मीरां ने कहा है:

पायो रे मैंने नाम रतन धन पायो।
जिस को पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समायो।
जिस की चोरी कबहुं न होये, ऐसा धन मैंने पायो।
खरचूँ लाख खत्म ना होवै, दिन दिन बढ़त सवाइयो।

जब वो आता है सब भूखे मिटा देता है। अगर भूखें नहीं मिटीं तो समझो नाम नहीं आया। वो अमृत किसी ने भी नहीं पीया।

नानक अंमृत नामु सदा सुखदाता पी अंमृतु सभ भुख लहि जावणिआ॥

(119/4 म : 3)

पढ़ते तो हैं किसी ने ख़्याल किया है कभी कि वो अमृत हमने भी पीना है?

हरि हरि नाम अंम्रित रस मीठा।

पाठी– राजु हमारा सद ही निहचलु॥ मालु हमारा अखूटु अबेचलु॥
सोभा मेरी सभ जुग अंतरि॥ बाज हमारी थान थनंतरि॥
कीरति हमरी घरि घरि होई॥ भगति हमारी सभनी लोई॥
पिता हमारे प्रगटे माझ॥ पिता पूत रलि कीनी साँझ॥
कहु नानक जउ पिता पतीने॥ पिता पूत एकै रंगि लीने॥

(1141/11 मः 5)

मैनेजर साहिब जी– कि अन्दर पिता प्रगट हो गया, सतगुरु प्रगट हो गया, अकाल पुरुख प्रकट हो गया। हमारा एक ही रूप बन गया।

सगल कलेश निंदक भइया खेदु॥ नामे नराइन नाही भेदु॥

(नामदेव)

यही कबीर साहिब कहते हैंः

राम कबीरा एक है कहण सुनन के दोए।

यही नहीं कि उन्होंने कहा है, उसके नमूने दिखाए हैं। पर यह खास खास प्रेमीयों को दिखाए हैं। बुल्लेशाह के पास एक आदमी आया। कहने लगा कि जी मेरी औरत को एक अफसर ले गया। वो कहने लगा कि फिर मैं क्या करूं? कि जी आप नहीं करोगे तो और कौन करेगा? कि अच्छा भई देख कि कहीं नाच हो रहा है। वो गया, आगे खुसरे नाच रहे थे। कि जी खुसरे नाच रहे हैं। कि चलो भई! वहाँ चलते हैं। उसकी औरत ने उसके बाप से शिकायत की। वो पीछे भागा। उसने पूछा कि अफसर कहाँ रहता है? कैसी जगह है? जब उसने बताया तो कहने लगा कि–

अम्बां वाली बग़ीची ते खज्जी बाला बाग।
खोतिआं वाले सद बुलाई सुती है ते जाग।
चीणा इयों छड़ींदा यार।

एक मिनट में औरत आ गई! एक मिनट में औरत आ गई। खोतियां वाली

क्यों कहा? अपना अहंकार न किया, उसका मुर्शिद था जो खोते चारता था। उसका मुर्शिद था।

गुरु हरिकृष्ण साहिब को औरगंज़ेब ने बुलाया। वो जाते नहीं थे। माता जी ने भेज दिया। कुरुक्षेत्र में पण्डित था लाल चन्द। उससे उसकी शोभा न देखी गई। वो शास्त्रार्थ के लिए आया तो उन्होंने गूंगे, बहरे कहार से बहस करवा दी।

मौलवी रूम पढ़ा लिखा था। वह आलम, फाजल था। चीफ जस्टिस था। बहस करता था। हिदायतें करता था। मुसलमानों का लीडर था खास। शम्मस तबरेज़ उसके पास गए। वो हौज़ के किनारे बैठा था। पूछा यह क्या है? कि अहले दुनिया का बहस मुबाहिसा है, वकालत की जो हुई। आपको क्या सरोकार? शम्मस तबरेज़ ने किताबें उठाईं और हौज़ में फैंक दीं। बड़ा ही अनमोल खज़ाना था। ऐसा खज़ाना मिलना नहीं है। बहुत बुरा किया है। अच्छा, ऐसा खज़ाना नहीं मिलेगा? उन्होंने हौज़ में हाथ डालकर, किताबें निकाल दीं। वो सूखी की सूखी थीं। उसने पूछा कि यह कैसे? कि यह तो आशिकों की बात है, तुम्हें क्या मतलब? यह आशिकों की बात है, तुम्हें क्या मतलब? यह नमूना दिखाया उन्होंने, इस तरह खास-खास प्रेमीयों को। जहाँ-जहाँ जाते हैं वहाँ उनकी महक ही अलग होती है। उनकी मस्ती ही अलग है। सब को मस्त कर देते हैं।

कबीरा संगत साधु की, ज्यों गन्धी की बास।
जो कुछ गंन्धी दे नहिं, तो भी बास सुबास॥

जैसे फूल की खुशबू सब को मस्त कर देती है। वैसे ही सबको उन से मस्ती आती है। लेकिन वो कोई विरला ही है जो जांच करता है। सच्चे पातशाह फरमाया करते थे। एक बार हम कोहमरी दफ्तर को जा रहे थे। ऐसी खुशी आई कि कोई ठिकाना नहीं रहा। यह सोचो! कि खुशी किस बात की है? कि किसी को कोई जायदाद मिल जाए, तरक्की मिल जाए तो खुशी होती है। ऐसी कोई बात नहीं। कहने लगे कि अप्रैल का महीना था। शायद हमने समझा कि आजकल फूल खिले हैं। फल लगे हैं उनकी खुशबू है। अठारह साल हो गए। अभी क्या देखते हैं? कि फकीर बैठा है। घोड़े से उतरे नमस्कार किया। क्या? उसने कहा कि खुशबू लेने वाली नाक भी कोई-कोई होती है! खुशबू लेने वाली नाक भी कोई-कोई होती है। हर एक नहीं होती। फकीरों की खुशबू लेने वाला कोई विरला ही होता है। इस तरह पूज्य मस्ताना जी ने अपनी मस्ती लुटाई, पर किसी विरले ने पकड़ी। किसी विरले ने कद्र की है। किसी विरले ने जांच की है।

घूकियाँवाली में सत्संग था। तकरीबन हर भण्डारे पर सुनाते थे। क्यों? इसी वास्ते कि कि मस्ती निकालें। सत्संग था। वहाँ बारात भी आई थी। बारात वालों ने शराब पी रखी थी। गलियों में से गुज़रे। आपस में ठट्ठा मखौल करते गुज़रे और वहाँ पहुँच गए। अब वहाँ गए और सत्संग में बैठ गए। ऐसे बैठ गए जैसे पुराने सत्संगी हैं। रोटी के बुलावें आएं। वो ऐसे मस्त हो गए कि उठे ही नहीं। जब गए तो ऐसे हो गए जैसे कि कभी शराब भी ही न हो। होश ही नहीं रही। इस तरह सब उतर गई।

इसी तरह शुरू-शुरू में शाहजहाँ पुर गए थे। पूज्य मस्ताना जी के साथ हमारे एक जज साहिब रहते थे वो गए। साथ खुशी राम भी था। कुछ और भी थे। मेरी ड्यूटी ज़्यादातर डेरे में ही होती थी तो वहाँ रात को सत्संग हुआ। तो वहाँ एक प्रेमी था दिल्ली का, वो नाचने लगा और नाचता रहा। उसके लड़के की सगाई उस गांव में हुई थी। बाद में वो कहने लगे कि आपने बहुत बुरा किया। लोग क्या कहेंगे कि इनका रिश्तेदार फकीर के सामने नाचता है। कहने लगा कि भई! अब तो गलती हो गई, आइंदा ऐसा नहीं करूंगा। अगले दिन फिर सत्संग हुआ। वो अब फिर मस्ती में आ गया। अब वो दूर खड़ा ही कंधे मारे। लोग नाचने लग गए। पूज्य मस्ताना जी ने ऐसी तव्वजों फैंकी, कहने लगे कि वरी! जगह खुल्ली कर दो। जगह खाली कर दी। अब उसके रिश्तेदारों पर ऐसी तव्वजों फैंकी कि वो भी नाचने लग गए। उसने पूछा कि भई तुम क्यों नाचे? कि भई! हमें पता ही नहीं चला। वो कहने लगा कि बस ऐसे ही मुझे भी पता नहीं चला।

इस तरह बाबू खेमचन्द की बहन नैनीताल से आई थी। सत्संग लगा हुआ था। दर्शन करके ऐसी खुशी चढ़ी कि वो नाचने लगी। बाबू जी देख कर दौड़े। कहने लगे कि ऐसे नहीं करना चाहिए। खुशी को अन्दर पचाइए। अगले दिन पूज्य मस्ताना जी ने ऐसी तव्वजों फैंकी कि सबसे पहले बाबू जी उठकर नाचने लगे। अनेकों नमूने दिखाए।

वहाँ आगरे में हिन्दुओं, मुसलमानों के झगड़े थे। वहाँ एक प्रेमी था। जिद्दी बड़ा था। छोटी उमर का था। उससे बड़ा प्यार करते थे। पहले तो पूज्य मस्ताना जी ने इनकार कर दिया। खैर, बच्चा था मान गए। वहाँ कर्फ्यू लगा हुआ था। मुसलमानों और हिन्दुओं का झगड़ा था। कार लेकर आया, बैंड भी ले लाया। शहर में से गुज़रे, नारे लगाए, बीबीयां आगे नाच रही थीं। सोचो! पता ही नहीं लगा किसी को। पुलिस वालों को भी कोई होश ही नहीं था। ऐसी मस्ती फैंकते थे कि

पता ही नहीं चलता था। अनेकों जगह पर ऐसे नमूने दिखाए हैं।

एक प्रेमी आया नारायणदास रोहतक का था। कहने लगा कि जी मेरा भाई है। वो नाम नहीं लेता। कहने लगे कि हम क्या करें भई! हमारे साथ मिल जाए तो अच्छा है। इसकी किस्मत में नहीं है क्या करें। दूसरे दिन पूज्य मस्ताना जी बाहर निकले तो वो सामने खड़ा था। कहने लगे कि भई! कौन सी जमात में पढ़ते हो? क्या करते हो? और कई बातें पूछीं। फिर कहने लगे कि अन्दर से लाओ भई मिठाई! बर्फी पड़ी थी। सबको दी। यह पढ़ता है भई! इसको ज़्यादा देना। दोपहर को आराम करने लगे तो बाहर ही दरवाज़े पर बैठ गया। उसका ख़्याल था कि अन्दर जाऊं और दरवाज़ा खुला तो झट अन्दर चला गया। कहने लगा कि जी मुझे नाम दो। कहने लगे कि तेरे लिए नाम नहीं। अन्दर उसके घर वाले आ गए। कहने लगे कि जी नाम दे दो। खैर, नाम दे दिया और वो सबसे ज़्यादा सेवा करने लग गया। ऐसी अनेकों मिसालें हैं। ऐसी अनेकों मिसालें हैं। पता ही नहीं क्या करते थे!

हंसराज एक प्रेमी था, सच्चे पातशाह का चिताया हुआ। सत्संग किया करता था। वहाँ आ गया। आया तो ऐसी मस्ती में था कि जी मुझे नौ दरवाज़ों से परे करो, निकालो, मुझे अमृत पिलाओ। अपने सिर में खुरक कर रहा था। करते-करते दूसरे जो पास बैठे थे, उसके सिर में खुरक करने लगा। उसने कहा कि यह क्या? कि मैं तो अपने सिर में कर रहा हूँ। यह भी होश नहीं देख लो। ऐसी अनेकों मिसालें हैं।

यह रस मीठा है, कहते हैं पीने वाला हो। फकीर आते ही इसलिए हैं कि यह रस ले लो, यह शांती ले लो, अपने घर पहुँच जाओ। और कोई काम नहीं, सेवादार बनकर, जोड़े झाड़ने वाले। उन्होंने अनेकों तरह से मिन्नतें की हैं—सोना देकर, कपड़े देकर कि यह रस ले लो। किसी तरह मान जाएं, मिन्नतों से। कबीर साहिब का एक शब्द आता हैः

कर ले रे कर ले सौदा, पार लंघण दा।
अग्गे अग्गे हट्टड़ी बाजार भी नहियों।
आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता॥

बोलो! क्या ज़रूरत थी उनको राजा दाता कहने की—'आओ मेरे राजा आओ मेरे दाता'। सोचो! क्या ज़रूरत थी कहने की? मिन्नतें कीं कि किसी तरह मान जाए। जैसे हम बच्चों को समझाते हैं कि राजा यह काम कर ले, कि यह कर ले।

इस तरह वो भी कहते हैं कि राम रस ले लो। यह अमृत पी लो। यह काम कर लो। यह काम कर लो। फिर बोल भई! पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि देखो भई! तुमने लड्डू का रस लिया, जबेली का रस लिया, अगूरों का रस लिया और जो रस मालिक ने तुम्हारे अन्दर रखा है वो न लिया। हम बाहर के रसों में फंसे पड़े हैं।

पाठी– खांड खाया दुख उपजै नीम खाया लबलीन।
नाम रस मीठो, शब्द रस मीठो, प्रेम रस मीठो।

मैनेजर साहिब जी– जिसने खाया नहीं, पीया नहीं, वो क्या बताएगा? वो ही बताए जिसने रस पीया है। वो कहते हैं, पी लो! पी लो! यह रस तुम्हारे अन्दर है। अजीब खेल है, उल्टे खेल हैं। यह खज़ानची बैठा है इसको हैजा हो गया। यहाँ से रोहतक गया। दस्त लगे हुए थे। घर वालों ने मना किया पर वो चला गया। जब गया तो पूज्य मस्ताना जी ने खरबूज़े बांटे। एक फाड़ी उसने भी प्रसाद समझ कर ले ली। करते-करते आठ दस फाड़ियां और ऊपर से लस्सी पिला दी। दस्त-वस्त सब खत्म, कैसे भई!

इस तरह प्यारा सिंह बैठा था पास, दस बज गए। उठने का नाम ही न ले। पूज्य मस्ताना जी ने कहा कि भई अब घर जा। जब उसे होश आई कहने लगा कि जी घर जाने को मन नहीं करता। कि इसलिए तो ज़्यादा पास नहीं बिठाते। लेने-देने भी खत्म करने हैं। होश ही नहीं रहती थी किसी को पास बैठे।

पाठी– नाम रस मीठो, शब्द रस मीठो।

मैनेजर साहिब जी– सब फकीरों की यह तालीम थी। गुरुनानक साहिब आए तो उनकी यही। कबीर साहिब आए तो उनकी यही। दादू साहिब आए तो उनकी यही। पलटू साहिब आए तो उनकी यही।

कोई पीयो रे राम रस प्यासा।
गगन मण्डल में अमृत बरसै, उनमन के घर बासा॥

उन्होंने तो पीया और आकर होका दिया कि तुम भी पीयो। यही तालीम थी उनकी। बाद में कौम-मज़हब बन जाते हैं। उल्टे ठेके बन जाते हैं। पीना तो यह रस था, यह शांती लेनी थी। फिर फरमाते हैं किः

जिसु जलनिधि कारिण तुम जगि आए सो अंम्रितु गुर पाही जीउ।
छोड़हु वेसु भेखु चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ। (598/4 मः1)

क्यों आए हो? क्यों भेजा था मालिक ने? यह गधे, घोड़े, ऊंट, बैल हमारी

जैसी रूहें हैं। तुम्हें इन्सानी जामा क्यों मिला? रस पीने के लिए, शांती लेने के लिए। अगर शांती लेनी है तो क्या कर?

छोडहु वेसु भेखु चतुराई दुबिधा इहु फल नाही जीउ।

यह ख़्याल ही छोड़ दो कि बाहर शांती है। वेसों, भेखों में नहीं, चतुराइयों में नहीं। चतुराइयों वालों को कुछ नहीं मिलता। वह कुछ कर ही नहीं सकता।

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।

(1/5 जपुजी)

पढ़ते भी हैं फिर भी बाहर के ज्ञानों ने मिट्टी प्लीत कर दी सबकी। वो कहता है कि यह ठीक है, वो कहता है कि यह ठीक है। असली चीज़ ही छुड़ा दी। इसलिए लड़ाई झगड़े हैं और क्या? यह अमृत पीना था आकर। चाहे हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, सिक्ख हैं, ईसाई हैं, सबके अन्दर आबे हयात है, अमृत अन्दर है।

पाठी– शब्द रस मीठो नाम रस मीठो।

मैनेजर साहिब जी– यही कबीर कहता है कि खांड खाने से दुख होता है। नीम खाने से यह जाता है। नीम क्या? दुख उठाता है। तन का प्यार छोड़ना पड़ता है, विषय छोड़ने पड़ते हैं। यही पलटू साहिब ने कहा है:

मीठ बहुत सतनाम है पीयत निकाले जान।

यह जान निकालता है।

मीठ बहुत सतनाम है पीयत निकाले जान।

यह जीवित मरने का सवाल है। दसवां खोले, सिमरन कर-कर के आंखों के पीछे आए। यहाँ अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। यहाँ से मार्ग शुरू होता है। हम पढ़ते भी है:

अंनदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मैं पाइआ।
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती, मनि वजीआ वाधाईआ।
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ॥ (917/1 म:3)

कि मैंने ऐसा आनन्द हासिल किया है कि अन्दर सतगुरु को पा लिया है। कहाँ पाया? सहज सेती, सहज अवस्था में। वो कहाँ है? त्रिलोकी से पार चौथे लोक में।

त्रिहुगुणा विचि सहजु न पाईऐ, त्रैगुण भरमि भुलाइ।
पढ़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुढहु घुथा जाय।
चउथे पद महि सहज है गुरुमुखि पलै पाइ॥

वहाँ राग हो रहे हैं, परियां नाच रही हैं। वहाँ आनन्द ही आनन्द है, शांती है। हम पढ़ पढ़कर रह गए। ख़्याल ही नहीं किया कि किसी ने पीना भी है।

काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै।

(1323/12 मः 4)

यह सौदा करना था आकर। यह नगरी है इसमें सारे सौदे हैं। यह नहीं कि न हो।

सभ किछु घर महि बाहरि नाही। बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही॥

(102/3 मः 5)

इसके अन्दर सतगुरु है, सच्चा नाम है। इसके अन्दर ही ब्रह्मा है, विष्णु है, शिव है, सब शक्तियां हैं। आला से आला कौन सी चीज़ है? यह हरि रस का है।

काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै।

(1323/12 मः 4)

यह सौदा करना था आकर। वो बहुत मीठा है, प्यारा है। कह नहीं सकते कि कैसा है?

पाठी– प्रेम रस मीठो, शब्द रस मीठो, नाम रस मीठो.....

मैनेजर साहिब जी– कहने को तो नाम और प्रेम दो चीज़े हैं लेकिन अन्दर एक ही है। तब नाम से ताल्लुक पड़ता है, जब सूक्ष्म मण्डलों में जाए, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, इस तरह प्रेम का तभी पता चलता है।

मूसन मसकर प्रेम की रही जू अंबर छाइ।

अम्बर क्या? आसमान में! आंखों के पीछे ख़्याल को इकट्ठा करे। इस तरह प्रेम का तभी पता चलता है। बाहर क्या है? प्रेम! शेख सादी ने लिखा है कि यह प्रेम नहीं। यह तो खाने पीने की चीज़ों से पैदा हुआ है। यह प्रेम नहीं। अगर किसी ने सेवा की, खूब अच्छे-अच्छे खाने खिलाए कि बड़ी सेवा की। या मन खुश हुआ या तन पला। आत्मा का क्या बना? बोलो! आत्मा के कल्याण का तो तब पता चलता है कि नाम क्या है? प्रेम क्या है? हाँ जीः

प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु।

(640/3 मः 5)

मोह माया से दूर हों, यहाँ आएं तब पता चलता है। हाँ जीः

पाठी– शब्द रस मीठो नाम रस मीठो, प्रेम रस मीठो।

पीय अमर हो जाए नाम रस मीठो, शब्द रस मीठो।

काया रे कोठी काठ की चहुं दिसि लागी आग।
भागयो सो नर बच गया बाकी जर गया साथ।
शब्द रस मीठो.....

मैनेजर साहिब जी– यह काया जैसे लकड़ी को आग लगाती है। यह भी सारा दिन जलता है। यह सारा दिन कहता है कि मेरे लिए यह ला, वो ला। सारा दिन इसी की सेवा है तन की।

फरीदा एहु तनु भउकणा नित नित दुखीअै कउणु।
कंनी बुजे दे रहा किती वगै पउणु॥

(1382/10)

यह सारा दिन भौंकता है। सारा दिन मांगता है कि मेरे लिए यह ला, मेरे लिए यह ला। फकीरों के पास से किसने भगाया? कौन नहीं पीने देता अमृत? यह तन का प्यार। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि गुधला मल का प्यार इस को भजन नहीं करने देता। गुधला मल क्या? इस तन का प्यार है।

देह प्यारी जीव को, निस दिन सेवा मांहि।
दादू जीवन मरन लौ कबहू छाँड़े नाहिं॥

आखिर सारी उम्र इसकी सेवा की। आत्मा का क्या बना? इससे क्या निकाला? जो इससे फायदा उठा गया, उठा गया, नहीं तो बस! भजन सिमरण करके। इस देह से निकलना था, वो अमृत पीना था। बाकी इस तरह जलता रह गया। यह तन का प्यार इसको फिर वापिस लाता है। कहते हैं नः

'जहाँ आसा तहाँ वासा।'

इसका प्यार ही बार-बार इसको देह में लाता है। सोच लो! यह ऐसा प्यार है। इसको छोड़ना नहीं चाहता। मरने के करीब है, खुल खुल करता है, कोई रोटी नहीं देता, फिर भी कहता है कि मरूँ ना। तन से न निकले, तन को न छोड़ूँ। चूकि तन चाहता है, फिर मालिक इसे तन देता है। फिर हमारे ख़्यालों अनुसारः

अँतिकालि जो लछमी सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै।
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/5)

अगर माया की तरफ ख़्याल है, तन भी मिल गया। सांप की योनि मिल गई, बैठ जा भई! पेट भर ले।

अँतिकालि जो लड़िके सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै।
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै। (526/8)

सुअर की जोनि मिल गई, तन मिल गया। बच्चों में ख़्याल था, पीछे-पीछे बच्चे फिर रहे हैं।

अँतिकालि जो मंदर सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै।
प्रेत जोनि वलि वलि अुतरै। (526/9)

क्या? कि अगर मकानों में ख़्याल रह गया! यह करना था, वो करना था, घर-घर में बाबे की मढ़ियाँ हैं। यह ख़्याल ही लाते हैं। यह तन का प्यार ही भजन नहीं करने देता इसको। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे, हमें मिसालें दे देकर समझाया करते थे। एक बार सिमरन करते-करते बाहर निकल गए। क्या देखते हैं कि एक लालटेन जल रही है। वहाँ पहुँचे। आधी रात का समय था। एक आदमी ऊँट को चारा डाल रहा था। खूब प्रेम से उसे खिला रहा था। उन्होंने पूछा कि यह क्या? कहने लगा कि अब यह मेरा दादा है, मैं इसकी खूब सेवा करता हूँ। सुबह मैं इसका दादा, डंडा उठाता हूँ और दस रुपये कमाता हूँ। उसने तो उसे खिलाकर दस रुपये निकाले लेकिन हमने इसे खिलाकर क्या निकाला? बोलो! हमने क्या निकाला? सारी उम्र इसकी सेवा की। इसको खिलाते ही रहे, खिलाते ही रहे। निकाला तो कुछ भी नहीं, सारी उम्र इसकी सेवा करते रहे। सोचो! वो रास्ता ही न निकाला। इस जोनि में आकर निकालना था। इसका प्यार छोड़े, जायज़ खुराक दे फिर निकाल सकता है। उन्होंने पता क्या करना? जब मन ने बैठने न देना, तन ने बैठने न देना तो रोटी नहीं देते थे इसको कई-कई दिन। सात साल तक शलगमों का पानी निचोड़ कर पीया है। जगा जगाकर रखते थे। इसको सुख नहीं देते थे। जितने सुख हैं संसार के सब माया का जाल हैं।

'जेते सुख संसार के सब ही माया जाल'

रात को जगाए रखते थे। सारा दिन काम में लगाए रखते थे। ऐसे इसका अहंकार छुड़ाते थे। सेवा लगी थी, वहाँ हमारी डयूटी लगी हुई थी। जब थक जाते तो पूज्य मस्ताना जी बाहर आते और कहते, मैनेजर ने इनको ख़राब कर रखा, इनकी जान निकाल रखी है। छोड़ भई! कस्सीयां रखते-रखते, गोविन्द यह थोड़ा सा काम करना। थोड़ा-थोड़ा करते-करते फिर दो चार घण्टे निकाल देते। सिर्फ तन के प्यार को छुड़ाने के लिए ऐसा करते थे और कुछ नहीं। जगाते क्यों थे? क्योंकि ख़्याल ठीक रहे। कोई बला अन्दर रहे ही न। जिसने पाया जाग जागकर पाया।

रोहतक में सत्संग हो रहे थे। कई दिन तक वहाँ रहे। दिल्ली वाले आया करते थे वहाँ। वो दस बजे आते और बाद में सत्संग शुरू होता। तीन साढ़े तीन

बजे वहाँ से गाड़ी जाती थी, उसमें चले जाते और दिन में जाकर दुकानें खोलते थे। कि भई! रोज़-रोज़ कौन करे। एक प्रेमी था वहाँ। वो कहने लगा कि तंग आ गए। क्या करें! न तो सत्संग छोड़ सकते हैं और न ही बर्दाश्त होता है। क्या करे? अब दिल में ख़्याल था। रात को आया। तकरीबन दो बजे सत्संग खत्म हुआ। पूज्य मस्ताना जी ने फरमाया कि चलो भई! तुझे गाड़ी में चढ़ाकर आते हैं। स्टेशन पर चले गए। वहाँ एक मिठाई, चाय वाली दुकान खुली थी। एक आदमी चौकड़ी मारे बैठा था। वहाँ चले गए। काफी संगत थी। कहने लगे कि वाह भई, वाह! बड़ा अच्छा भजन करता है, चौकड़ी मार कर लाइट में। वो कहने लगा कि नहीं जी, मैं तो सौदा बेचने के लिए बैठा हूँ। अच्छा! माया के लिए बैठा है, हमने समझा कि भजन के लिए बैठा है। उसको जचा दिया कि यह बैठा है माया के लिए, तू सतगुरु के लिए नहीं जाग सकता। जचा दिया उसके अन्दर कि जिसने पाया, जाग-जागकर पाया। तन का मुकाबला कर करके, मन का मुकाबला कर करके। उन्होंने कोई सुख नहीं दिया इसको। कोई अच्छा कपड़ा है झट निकाल देते थे। इसको सुख की चीज़ कभी देते ही नहीं थे। हाँ जीः

पाठी– काया रे कोठी काठ की।

मैनेजर साहिब जी– दीवारों पर लिखवाया है हाफ़िज़ साहिब का एक वचनः

जान बजाना देह बगरना अज़ तू बिसतान्द अजल।
खुद तू मुनसिफ वाश ऐ दिल ई निको या आं निको॥

क्या? कि ''जान तो एक जाएगी। या सतगुरु के हवाले कर दे, या काल के हवाले कर दे। तू आप ही इन्साफ कर सतगुरु के हवाले करनी अच्छी है या काल के हवाले।''

सोच लो! काल को दे दो या सतगुरु के हवाले कर दो। गुरुनानक साहिब खुद अकाल पुरुष आए। बारह साल रोड़ियों पर बिस्तर रखा, हमारे समझाने के लिए। कि ऐसे तन का प्यार नहीं छूटता। मरदाने को किसने भगाया? तन के प्यार ने। मैं तो वहाँ रहूँगा यहाँ 'टके सेर खाजा टके सेर भाजी।'

देख लो! पढ़ते भी है फिर भी उसके मोह में फंसे हुए हैं। ख़्याल ही नहीं किसी को।

पाठी– काया रे कोठी काठ की चहुं दिसि लागी आग।
भागयो सो नर बच गये बाकी जर गया साथ।
शब्द रस मीठो, प्रेम रस.....

मैनेजर साहिब जी– जिसने इसका प्यार छोड़ा, उसने इसका रस लिया, बाकी नहीं। जिसने इसका प्यार छोड़ा वो ले गया। बाकी साथ ही जल कर चले गये। यही कबीर साहिब ने लिखा है:

एह जग कोठी काठ की चहुं दिसि लागी आग।
भीतर रहे सो जल मुये साधू उतरे पार।

कोई विरला है नसीबों वाला। सारी दुनिया आग में जल रही है। किसी को शांती है, देख लो! किसी को शांती है? देख लो! यह तन की मान वड़िआई, मन का खाना पीना, यही रोके बैठा है सबको।

पाठी– भागया सो नर बच गया बाकी जर गया साथ।
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– दिन को कमाए, जायज़ खुराक ही दे। खा-खाकर दुनिया ख़राब हुई है। जितना ज़्यादा देतें हैं खाने के लिए, उतनी ही बीमारियां, उतनी ही तकलीफ़ें ज़्यादा उठाता है। अगर जायज़ खुराक दे तो बीमारी नहीं लगती। रूहानी तरक्की भी हो जाती है। दोनों काम बन जाते हैं। खा-खाकर दुनिया ख़राब हुई है।

पाठी– शब्द रस मीठो, प्रेम रस मीठो.....

मैनेजर साहिब जी– दीवारों पर लिखवाया मस्ताना जी ने ''कि जितना पेट का हिस्सा खुराक से खाली रहेगा खुदा के नूर से भर जाएगा।'' सोचो!

जो मनि चिति इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े।
तुधुनो सभ धिआइदि से थाइ पए जो साहिब लोड़े।
जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मरि जंमे कोढ़े॥

(306/4 मः 4)

वो बार-बार जन्म लेते हैं और मरते हैं। सोच लो! उनकी बरकतें ऐसी थी। तीर्थ स्थानों पर, मसीतो पर, गुरुद्वारों पर, मन्दिरों में जिन्होंने रस लिया उनकी बरकते हैं। यह बढ़िया है और क्या?

पाठी– शब्द रस मीठो, प्रेम रस मीठो.....
हम घर जारा आपना ले मिसाल निज हाथ।
अब घर जारूं तासूं का जो चले हमारे साथ।
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– कबीर साहिब फरमाते हैं कि ''अब घर जारा आपना ले मिसाल निज हाथ।''

अपना घर जारा कौन सा? यह बाहर का नहीं। यह तन का प्यार छोड़ा है। इसको चलाने वाले कौन है? काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। इनको मारा है? इनका ही काम कर रहे हैं, यही फँसाते हैं। इनके लिए सब कुछ कर रहे हैं। सब इसका काम कर रहे हैं– या काम का, या क्रोध का, या मोह का, या लोभ का, या अहंकार का। मन इनका थानेदार है। ऊँचा ऑफिसर है। इनका ही काम कर रहे हैं। मन का, काम का, क्रोध का, लोभ का या अहंकार का। पढ़ते भी हैंः

'मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ।'

'मन जीतै जगु जीतु।' (87/13 मः3)

कभी झगड़ा किया? यह झगड़ा करना था मन से। अन्दर काम, क्रोध को मारना था। फिर हासिल कर सकता है। कोई ऐसा आए। हमने तो अपना जलाया ही है, उसका भी जला दें। यानि कि उसके काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार निकाल दें। कोई आए तो सही मैदान में। फकीर आते ही इसलिए हैं। इसी झंझट में पड़े हैं। सबको हथकड़ियाँ लगी हुई हैं काम, क्रोध की। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि बाहर दरवाज़े पर खड़े हैं जब जाओगे उसी वक्त पकड़ लेंगे। यहाँ दो मिनट ख़्याल आने देगा भजन का, बाहर तो उसी वक्त उलझा देता है अपने कामों में। यह कर, वो कर, चल जल्दी कर। उसी वक्त भुला देता है।

पाठी– हम घर जारा आपना ले मिसाल निज हाथ।
अब घर जारूं तासूं का जो चले हमारे साथ।
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– यही कबीर साहिब फरमाते हैंः-

नाम रतन धन मुझ में खान खुली घट माहि।
सीत मीत ही देत हूं ग्राहक कोई नाहि॥

कोई ग्राहक नहीं। यह हाफ़िज़ साहिब फरमाते हैंः-

पाठी– हाफ़िज़ साहिब फरमाते हैं कि ''या खुदा! चारो तरफ अंधेरा छा रहा है।

मैनेजर साहिब जी– हाँ, चारों तरफ अंधेरा छा रहा है।

पाठी– सब के सब बिल्कुल कोरे और रूहानियत से बिल्कुल बेख़बर नज़र आते हैं और इस धन का कोई ग्राहक नहीं नज़र आता।''

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! कोई ग्राहक नज़र नहीं आता। वो तो आते ही देने के लिए हैं पर इसका कोई ग्राहक नहीं। कोई बिरला है। कोई बिरला है।

'कहु नानक कोटनि में कोउ भजन राम को पावे।'

एक वचन आता है। सच्चे पातशाह कहा करते थे कि कोई विरला ही निकलता है। एक प्रेमी बैठा था पास में कि जी फिर हमें क्यों बैठा रखा है। हमें छोड़ दो बस और क्या? कहने लगे कि देखो भई! वैसे तो कोई विरला है। यह इतने भी करोड़ों में से पकड़ कर लाए हैं। यह आहिस्ता-आहिस्ता जाएंगे, ऐसे नहीं। ज़िन्दगी में कोई विरला ही फायदा उठाता है। कई-कई जन्म लग जाते हैं। धर्मदास आठ जन्मों में गया। कई रूहें है, कई बच्चे हैं। एक छोटा सा बच्चा है। बागड़ी बोलता है, लड़की है। यू. पी. के रहने वाले हैं। पहले तो कालांवाली में रहते थे। अब डबवाली में रहते हैं। जो पूज्य मस्ताना जी की फोटो देख कर कहेगी कि यह मेरा बाबा है। दूसरी तरफ ख़्याल ही नहीं जाता। यह है, देख लो! इनका लड़का था। वो सच्चे पातशाह की फोटो देखता था। कई-कई जन्म लग जाते हैं। जो ज़िन्दगी में फायदा उठा गया उठा गया, नहीं फिर कई-कई जन्म लग जाते हैं। देरी हमारी तरफ से है, उसकी की तरफ से नहीं। वो तो चाहते हैं:-

सतिगुरु सब को देत है, लेता नाहीं कोय।
लेता नाही कोई, सीस के धरे उतारी।
वही शख्श को मिले, मरने की करे त्यारी॥

(पलटू साहिब)

यह आशा-तृष्णा छोड़े, वो मालिक दूर नहीं है। यही पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि उनके तेहरवें वचन में है। किसी ने पूछा कि खुदा से मिलना है। वो कहने लगे कि *''खुदा तो भदी सी कोठी में रहता है, टूटी कोठी में है।''* वह सारे टूटे मकानों में गया। वहाँ क्या मिलना था? वापिस आया कि जी आपने तो कहा है कि खुदा भदी कोठी में है। वहाँ तो हमें कुछ नहीं मिला। बोले! ''यह नहीं, अगर दुनिया से दिल टूटे तो आए मालिक, दुनिया का ख़्याल टूटे तो आए मालिक।'' फिर दुनिया का ख़्याल निकलता जाए और सतगुरु का ख़्याल बसता जाए तब मालिक आता है। सत्संग में आते-आते जितना प्रेम करेगा, उतना ही रंग चढ़ता है।

सुभर भरे प्रेम रस रंगि, उपजै चाउ साध कै संगि॥

(289/4 म : 5)

ज्यों-ज्यों उनकी सोहब्बत करता है, त्यों-त्यों रंग चढ़ता है। मालिक का प्रेम जागता जाता है। दुनिया का रंग निकलता जाता है। यह निशानी है उसकी। अगर साध संगत में आते-आते भी दुनिया का रंग नहीं उतरा और मालिक का रंग नहीं चढ़ा तो कोई साध संगत नहीं। वो आते हैं उनको चोट लगती है और धीरे-धीरे

उन पर मालिक का रंग चढ़ता है। अन्दर मालिक बसने लग जाता है।

पाठी– हम घर जारा आपना ले मिसाल निज हाथ।
अब घर जारूं तासूं का जो चले हमारे साथ।
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– या सोहब्बत हो या फिर सिमरन हो। बस! इसी में लगा रहे। अगर अकेला हो तो सिमरन में लगा रहे। कई चिट्ठियां आई हैं। पांच-सात दिन हुए एक चिट्ठी आई है। कमाल किया है उसने। यहाँ तो धुन बताते नहीं किसी को। उसने लिखा है कि घण्टे, शंख मेरे अन्दर बज रहे हैं। बताओ मैं क्या करूं? मैं गरीब आदमी हूँ आ तो नहीं सकता। यही घण्टे, शंख बजाते हैं मन्दिरों-मस्जिदों में, यह अन्दर की नकल है। यह अन्दर बज रहे हैं। हाफ़िज़ साहिब ने लिखा है, वाणी में आता हैः-

घण्टा जा का सुनीअै चहु कुंट।

यहाँ आओ तो सुनो। हाफ़िज़ साहिब ने लिखा हैः

कस नदा निस्त कि मन्ज़िल गहे माशूक कुजा अस्त।
ई कदर हस्त कि बांगे जर्से ने आयद।

''कि किसी को पता नहीं कि खुदा का घर किधर है। वहाँ से आवाज़ आ रही है।'' यह नकलें हैं, यह पहली स्टेज है। कोई मेहनत करे तो आए। उसको किसी ने बताया तो नहीं कि यह भी आएंगे। जिन्होंने ख़्याल किया वो तो सुनते हैं कि आई आवाज़ ऐसी है मान भी जाते हैं चाहे नकली हो। लेकिन जो सिमरन करता है, जिसको पता ही नहीं, उसके अन्दर ठीक आएगी। सोच लो! उसके अन्दर ठीक आएगी।

पाठी– हम घर जारा आपना ले मिसाल निज हाथ।
अब घर जारूं तासूं का जो चले हमारे साथ॥
नाम रस मीठो, शब्द रस.....
ऐसा कोई न मिला, घर दे आग लगाय।
पांचों लरिका पटक के, रहे नाम लिव लाय॥
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि ऐसा कोई मिलता ही नहीं। पांचों लड़के कौन से? यह लड़के हैं– काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। जब अन्दर जाता है फिर यह कहकर जाते हैं, (लड़कों की शक्ल में आकर मिलते हैं) अब तेरा राज हो गया।

कहते हैं कि ऐसा कोई अभ्यास वाला मिलता ही नहीं, नहीं तो फौरन ले जाऊँ। पर इनसे मुकाबला भी नहीं रखता। देख लो! सारा दिन इनका काम करते हैं। कभी काम ने पकड़ लिया, कभी क्रोध ने, कभी लोभ ने, कभी मोह ने तो कभी अहंकार ने। इनका काम कर रहे हैं, और क्या? और ज़बरदस्ती करवा रहे हैं। हमें पता ही नहीं हथकड़ियां लगी हुई हैं, हम जेली हैं। सिमरन करने से, अन्दर सतगुरु प्रगट करने से फिर छुटकारा होता है, ऐसे नहीं। नहीं तो सबको नचा रहे हैं। बड़े-बड़े तपस्वियों को नचा रहे हैं। यह बड़े-बड़े योगियों को नचा रहे हैं, सब को नचा रहे हैं।

पाठी– ऐसा कोई न मिला, घर दे आग लगाय।

मैनेजर साहिब जी– दिन को काम करे रात को बैठे। इससे मुकाबला रखे। दो-चार घण्टे बैठे। दो घण्टे भी बैठे तो कुछ न कुछ हासिल कर लेता है। सोकर तो वक्त गुज़ारेगा, पर आत्मा के कल्याण का किसी को फ़िक्र नहीं। तन के प्यार का तो फ़िक्र है, आत्मा का किसी को नहीं।

देह प्यारी जीव को, जीव प्यारा देह।
दादू हरि रस पाईए, जो ऐसा होए सनेह॥

(दादू साहिब)

जैसे यह देह प्यारी है ऐसे राम रस कह लो, सतगुरु का प्यार कह लो। प्यारा हो, तो यह हासिल कर जाए।

पाठी– ऐसा कोई न मिला घर दे आग लगाय।
पांचों लरिका पटक के, रहे नाम लिव लाय॥
नाम रस मीठो, शब्द रस.....
ऐसा कोई न मिला शब्द गुरु का मीत।
तन मन सौंपे मृग ज्यों सुने बधिक का गीत॥
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– मृग (रात को शिकारी एक बाजा बजाते हैं) जब बाजे की आवाज़ सुनता है, जानता भी है कि पकड़ा जाऊँगा लेकिन उसका ऐसा प्यार है बाजे पर आकर सिर रख देता है। ऐसा प्यार है, मारा जाता है। हंडियों में चढ़ता है लेकिन प्यार नहीं छोड़ता। कहता है कि ऐसा कोई नहीं है जो शब्द गुरु का मीत हो। उसका प्यार है नहीं किसी को। इसके अन्दर भी मीठे से मीठे राग हो रहे हैं। बाजे बज रहे हैं, पढ़ते भी हैः-

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब सम्हाले।
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे।
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे।

(347/4 मः 1)

कितने गाने वाले हैं, कितने बजाने वाले हैं, इसको पता ही नहीं। यह बाहर के बाजों में फंस गया। अन्दर का ख़्याल ही नहीं किसी को। सबके अन्दर बज रहे हैं। इसका प्यार छोड़े तो सुने। उसने तो उस बाजे के लिए तन का प्यार छोड़ा, पकड़ा गया, जेलों में गया, कत्ल भी हुआ लेकिन इस को ख़्याल ही नहीं।

पाठी– ऐसा कोई न मिला शब्द गुरु का मीत।
तन मन सौपें मृग ज्यों सुने बधिक का गीत॥
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– 2-अप्रैल को भण्डारा हुआ। पूज्य मस्ताना जी ने नोट फैंके। उस वक्त फरमाया था कि जैसे रेडियो में आवाज़ें आ रही हैं, इसी तरह इसके अन्दर भी आ रही हैं। कोई नसीबों वाला सुने। जब नोट फैंके, तो सारी दुनिया दौड़ पड़ी पीछे-पीछे कि यह तुम्हारा आखिरी इम्तिहान है। सब माया के ग्राहक निकले, मालिक का कोई नहीं। सोचो! कोई मालिक का ग्राहक नहीं। सब माया के पुजारी हैं। देख लिया आखिरी इम्तिहान था तुम्हारा।

पाठी– ऐसा कोई न मिला शब्द गुरु का मीत।
तन मन सौपें मृग ज्यों सुने बधिक का गीत॥
नाम रस मीठो, शब्द रस.....
खट विकार या देह के तिन को चित न लाय।
और शौक, मोह, प्यास क्षुदा जनम मरण न डराय॥
नाम रस मीठो, शब्द रस.....

मैनेजर साहिब जी– खट विकार क्या? *'खट विकार या देह के तिन को चित न लाए।'* भूख प्यास, जन्म मरण, बुढ़ापा मौत इसका ख़्याल ही न आए। फिर वो हासिल कर सकता है कि मैंने तो भजन करना है बस। जैसे रविदास ने कहा हैः-

'इहु जनम तुमारे लेखे'

रोटी का गुज़ारा किया और इसी में लग गए। काम तो सारे करने ही हैं। जब तक हक्क हलाल की रोटी न हो, वह भजन कर ही नहीं सकता। यह भी करना है, यह भी ज़रूरी है। आत्मा का कल्याण भी ज़रूरी है कि ऐसे ही धन इकट्ठा करना है।

पाठी– खट विकार या देह के तिन को चित न लाय।

मैनेजर साहिब जी– हमने क्या करना देखो! गुरु अमरदास जी ने बारह साल कड़ी से कड़ी सेवा की। हर साल उन को एक परना देते थे सिर पर बांध लेते थे। एक भी ऊपर दूसरा भी ऊपर तीसरा भी। जुएँ पड़ गईं। नहाए ही नहीं, बोलो! हमने तन का प्यार छोड़ना है। कौन सा छोड़ना है? इतनी-इतनी सख़्त मेहनतें की हैं, बोलो! तब हासिल किया है। हाँः-

पाठी– खट विकार या देह के तिन को चित न लाय।

मैनेजर साहिब जी– आजकल तो आसान है। खाओ, पीयो भी और रात को जागो, कुछ करो। यहाँ तक कि पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि नौकर दुकान पर बैठा है, ग्राहक आए या न आए, उसकी तनख्वाह तो खरी है। तुम भी बैठो तुम्हें भी मज़दूरी देगा। बैठो तो सही, ज़रूर देगा, ज़रूर देगा और देता भी है। यह भी नहीं कि नहीं देता, देता भी है। यहाँ तक वो कह गए लक्कड़वाली में जब वचन किए न तुम्हारे रिश्तेदारों की संभाल, तुम्हारे कुत्तों की, तुम्हारे पशुओं की भी। वाक्य ठीक है। रिश्तेदारों तक की संभाल करता है। यह ठीक है कि मालिक की दरगाह में तब ही जाओगे जब रूह पूरी तरह साफ हो जाएगी लेकिन संभाल ज़रूर करता है। यह तो यह रिश्तेदारों की संभाल करता है।

प्रेमी– 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

प्यारी साध संगत जी दास को पूज्य मैनेजर साहिब जी के वचन सुनकर कुछ पिछला समय याद आया। दास की बहन टोहाने में रहती थी। बहन जी और जीजा जी ने नाम लिया हुआ लेकिन वो तीन साल डेरे में ही नहीं आए, नाम के बाद। टोहाने में ही उनको नाम मिला था।

बगलेवाली में सत्संग रखा, शहनशाह महाराज जी ने। उन्होंने सोचा कि नज़दीक ही है चलो चल कर सत्संग देख आते हैं। सत्संग में आए। शहनशाह महाराज जी अन्दर बैठे थे। खुशीराम बाहर गेट पर खड़े थे। हमारे जीजा जी का ख़्याल हुआ कि अन्दर जाकर दर्शन करें और खुशीराम जी इतने हुक्म के पाबन्द थे कि जो भी उनको हुक्म मिल जाता था तो वो किसी का लिहाज़ नहीं करते थे कि सज्जन मित्र है या रिश्तेदार है। बस जो हुक्म है बस, ठीक है। कहने लगे कि आप अन्दर नहीं जा सकते। उसने सोचा कि थोड़ी कोशिश करके अन्दर जाए। लेकिन खुशी राम ने उनको धक्का मारा और कहा कि जब तुझे कहा है कि अन्दर नहीं जा सकते तो फिर क्यों अन्दर जाने की कोशिश कर रहा है? बाहर आएंगे

तो दर्शन कर लेना। कुछ उनकी तबीयत भी ऐसे ही थी। वो घबरा गए। गर्मी खा गए। उनको भी गुस्सा आ गया कि हम इतनी दूर से घर-बार छोड़कर दर्शन के लिए आए आगे धक्के पड़ रहे हैं। अच्छा फकीरों का दरबार है। हम वापिस फिर कभी नहीं आएंगे। जब वो रात को आराम के लिए ठहरे तो ऐसे ही सर्दी का मौसम था, तो क्या देखते हैं कि कैसे वो बेपरवाह हमारे लिए एक-एक के लिए निरंजन के साथ लड़ाई करते हैं। उससे मुकाबला करते हैं कि जिस रूह को हमने पकड़ा है उसे छोड़ना नहीं।

रात को ख़्याल में आए। कहने लगे कि बस! इतनी सी बात से घबरा गया कि यहाँ वापिस नहीं आना। देखो! फकीरों की सोहब्बत के लिए जीवों ने कितने-कितने कष्ट उठाए हैं। तूं थोड़ा सा खुशी राम के कहने से घबरा गया। सुबह फिर सत्संग हुआ। सत्संग की समाप्ती के बाद दास को कहने लगे कि ले भई! सरदारी लाल प्रसाद ले जा। तूं भी खाना और तेरे जीजा जी को और बहन जी को भी देना। जलेबियों का प्रसाद हमारी झोली में डाल दिया। हमने जाकर उनके आगे रख दिया कि आपके लिए शहनशाह महाराज जी ने दिया है। यह ले लो। यह पुराने सत्संगीयों को तो पता है खास कर पूज्य मैनेजर साहिब जी को तो सब कुछ पता है। जब उन्होंने प्रसाद खाया तो वो अकाल पुरुष ही जानता है, वो बेपरवाह ही जानता कि उन्होंने अन्दर से क्या नमूना बनाया। रात दिन का जागना, अजपा जाप, अन्दर जिस तरह कि बता रहे थे शंख, घड़ियाल अन्दर हैं। यह जुबान अन्दर का बता ही नहीं सकती कि वो नमूना अन्दर प्रगट हो गया। नाम लेकर डेरे नहीं गए। सच्चे सौदे का प्रसाद खाकर ही यह प्रगट हो गया। हमारे जीजा का पत्र आया कि देखो आकर! अपनी बहन को पता नहीं क्या हो गया? न खाती है, न पीती है, सारी रात जागती है। बच्चों को नहीं संभालती। हम तो भूखे मर रहे हैं। हम गए। शहनशाह का फोटो लगा हुआ था। देखे और इशारा करे कि किसी तरह मेरे अन्दर से बन्द हो जाए पर वो तमाशा चीज़ क्यों बन्द होता? उसने बहुत कोशिश की किसी तरह अन्दर सुनना बन्द हो जाए पर वो होवे न। अब पड़ी-पड़ी के मन में ख़्याल आए कि बच्चे कौन संभालेगा? अभी छोटे-छोटे हैं। पता नहीं अन्दर क्या हो गया। मैं और मेरा बड़ा भाई हम दोनों गए। उनको तसल्ली दी कि कोई खास बात नहीं। यह तो बेपरवाह की आप के ऊपर कोई खास मेहर हो गई है। बड़े-बड़े अभ्यास करने वालों को न मिले और आप को मुफ्त मिल गई। कहने लगे कि जी हमें नहीं चाहिए। वो अपनी चीज़ वापिस ले

लें हमें नहीं चाहिए। हमारे साथ सच्चे सौदे चलो। उनको वापिस देकर आएँ। फिर सच्चे सौदे आ गए। जब शाहनशाह बाहर आए बहन जी खड़ी हो गई। कहने लगी कि बाबा जी अपनी चीज़ वापिस ले लो। कहने लगे कि सोचेंगे। अगले दिन हमने पूज्य मैनेजर साहिब जी से फरियाद की कि बाबा जी को कहो अपनी चीज़ वापिस ले लें। मुझसे संभाली नहीं जाती। पूज्य मैनेजर साहिब जी ने शहनशाह जी से कहा कि बीबी तो बहुत घबराई हुई है कि मेरे से यह चीज़ नहीं संभाली जाती। बाबा जी बाहर आए कहने लगे कि भई! इसके नसीब, क्या करें? यह चीज़ तो दुनिया के बादशाहों को न मिले, जवाहर लाल को न मिले। किसी को भी न मिले। पता नहीं इसके अन्दर कैसे बन गई? यह तो बताएं न कि हम ने जलेबियों में डाल दी है। पता नहीं बस! अब क्या करें? अच्छा भई! सोचेंगे। उस दिन से बन्द! सो साध संगत जी यही सर्दी का मौसम था।

नेज़िए सत्संग हुआ। शहनशाह महाराज स्टेज पर आकर बैठे। उस दिन बहुत ही नूरी जलाल में थे। बेपरवाह के रोम-रोम से नूर की किरणें निकलें। स्टेज पर बैठते ही कहने लगे कि इस तरह ख़्याल आता है कि आप सब का पर्दा खोल दें। फिर कहने लगे कि निरंजन का जो खेल है वो भी नहीं बिगाड़ना। निरंजन का देश भी इसी तरह ही रखना है। गुसाइयांवाली में नाम देने लगे और बाद में किलनी आना था। खास-खास बताते हैं। अब गांवों में रिवाज होता है कि कोई खास प्रोग्राम हो तो नाई को बुला लेते हैं, सेवा करने के लिए। हम सब एक कमरे में बैठे लंगर खा रहे थे। वहाँ से एक ही बस आती है सिरसा को। फिर समय पर ही आती थी। वहाँ सेवादारों को हुक्म दिया कि जिस ने नाम लेना है अन्दर आ जाओ, जल्दी जाना है नाम देकर। जब तक हम जाएंगे नहीं संगत भी नहीं जाएगी। सफर भी लम्बा है। उसके बाद भी कोई साधन नहीं जाने का। इस तरह हम लंगर खा रहे थे। वहीं पर संगत अन्दर आ गई। शहनशाह महाराज जी उस कमरे के आगे बैठे थे। उन्होंने कहा सेवादारों को भई! इनको समझा दो कि जिन्होंने शराब मांस, परस्त्री, इन वचनों पर कायम नहीं रहना वो चले जाएं। उनको नाम नहीं मिलेगा। वो नाई कहने लगा कि आप लंगर खुद भी खा लो तो मैं भी उठकर बाहर चला जाऊं। शहनशाह महाराज जी पूछने लगे कि क्या बात है भई? सुन तो लिया कि जी नाई कहता है कि अगर आप लंगर खुद खा लें तो अच्छा मैं भी बाहर जाता हूँ, मुझे नाम नहीं लेना। कहने लगे कि तेरा फोटो सचखण्ड में नहीं भेजते। सुनने से नाम नहीं आता। फ़िक्र न कर अगर तूने नाम नहीं लेना तो तेरी फोटो सचखण्ड में नहीं भेजते।

सो साध संगत जी अर्ज़ है कि जब से नाम मिल जाता है तब से मोहर, छाप लग जाती है। सैनमसैनी समझा देते कि तेरा फोटो सचखण्ड में चला गया है। छोटे-छोटे बच्चे आते तीन-तीन, चार-चार साल के, हमें पड़ोसियों के बच्चों की पहचान नहीं, वो कहेंगे कि अच्छा उसका बेटा है। पंजाब के, बागड़ के, यू. पी. के देखकर ही बता देते थे। क्योंकि उनके फोटो तो सचखण्ड में पहुँच गए हैं। बेपरवाह उनके फोटो को पकड़े रोज़ ही देखते थे। यह तो बाहर हमें देखने को लगते थे। सार बचन में स्वामी जी से सवाल करते हुए रूह से कहा है कि ऐ मालिक! तूं तो कहता है कि मैं तेरी अंश हूँ, तेरे से जुदा हुई हूँ, समुँद्र का कतरा हूँ। मुझे काल के चक्र में क्यों फंसा दिया, काल के देश में क्यों भेजा है? वहाँ, स्वामी जी महाराज ने साफ लिखा है, उस अकाल पुरुख नूरी सरूप ने साफ लिखा है कि तुम्हें लेने भी आता हूँ। मैंने भेजा है, तो इन्सानी चोला पहन कर, लेने भी आना पड़ता है! यह सब उसकी मेहर पर है। जिस तरह एक अरबपति, खरबपति हो, वो किसी की सेवा से खुश होकर कुछ प्रोपर्टी की वसीयत उसके नाम कर देता है पर फिर भी वो अपने बच्चों के लिए ऐसी लाइन छोड़ देता है कि वो भी इसमें भागीदार रहें। ऐसे ही उस अकाल पुरुष ने, निरंजन की भक्ति से खुश होकर अगर इसको रूहों का राज दे दिया है या मृत्युलोक संभाल दिया है तो आता भी लेने के लिए है। जिनको नाम मिल गया है सवाल ही पैदा नहीं होता कि निरंजन उसे ले जाए या निरंजन के दायरे में चला जाए, जिस को हम काल कहते हैं वो इसको ले जाए। यह तो सैन-म-सैनी हमारी तसल्ली के लिए समझाया जाता है कि रात को जागो, अभ्यास करो, भजन पर बैठो। सवाल ही नहीं पैदा होता, जो इनकी शरण में गए फिर यह नहीं कि निरंजन उनको ले जाएगा। फिर यह नहीं कि वो अपने घर न जाए, वो अपने देश में न पहुँचे।

जब सैन-म-सैनी बार-बार हमें वचनों द्वारा या नज़रों द्वारा जगह-जगह समझाते हैं। अब भी समझा रहे हैं कि भजन पर बैठो, सिमरन पर बैठो, जब हमारा बन ही जाएगा तो क्या चीज़ है? जब हमारा बन ही जाएगा तो क्या चीज़ है? बैठना, अभ्यास करना क्योंकि जो वसीयत निरंजन को है, खुश होकर उस में से थोड़ा सा पर्दा रखा कि यहाँ आकर हमने प्रगट नहीं होना। प्रगट होने की बात कही कि नेज़ीए सत्संग में कहा था कि दिल तो करता है कि सब को ले जाएं, सबका पर्दा खोल दें, एक सैकिण्ड में ले जाएं। थोड़ी सी लाइन रखी है। उस लाइन के लिए थोड़ा पर्दा रखना पड़ता है, हमें समझाने के लिए। बाकी यह समझो कि

जिसे नाम मिल गया है, उसका बेड़ा पार है। फिर पीछे रहने का सवाल नहीं पैदा होता है।

मैनेजर साहिब जी– जिसको नाम मिला है वो अच्छी भक्ति करे, महीना, बीस दिन बैठे, वो पहले बता कर जाएगा मृत्यु के समय, देख लो! महीना, बीस दिन पहले बता कर जाएगा, नहीं तो दो चार दिन पहले बता देगा। अगर मौके पर नहीं बताता भक्ति थोड़ी है, मिसाले हैं, उसका आखिर के समय टट्टी पेशाब नहीं निकलेगा, न शरीर अकड़ेगा। यह निशानी है उसकी। कितने ही केस हुए हैं ऐसी फोटो पड़ी हैं, चार-चार दिन पड़े रहे हैं। चार दिन बाद कुर्सी पर बिठा कर फोटो खींची है, बोलो! देर लगती है, जब तक यह साफ न होवे! सुनो काल का कानून। मज़दूर कहते हैं हमारी तनख्वाह बढ़ाओ। कारखाने वाले कहते हैं कि हम नहीं बढ़ा सकते। अगर बढ़ाते हैं तो कारखाना नहीं चलता। गवर्नमेंट ने भी दोनों ही देखने हैं। उसका भी देखना है, उसका का भी देखना है। इस तरह यह है। काल का भी देखना है। चिल्लाता तो बहुत है। काल का भी देखना है, रूहों का भी देखना है। मन से मुकाबला रखो, आप की मज़दूरी हम देंगे। उसका मुकाबला रखना ही भजन है।

प्रेमी– पीछे दो, तीन का सत्संग था। यह प्रोग्राम में नहीं था। प्रेमी यहाँ आए हुए थे। गुनहगार भी यहीं था। लुधियाने का एक प्रेमी था, ज्ञान सिंह। वो नहीं आ सका। चार दिन पहले हफ्ते की मजलिस थी। उन्होंने मजलिस में बेनती की कि आने वाला वीरवार हमें ज़रूर दो। गुनहगार ने कहा कि भई वायदा तो नहीं करते, कोशिश करेंगे। पर वो तीन तारीख इतवार को ही चोला छोड़ गया। चोला छोड़ने से पहले वह थोड़ा सा बीमार हुआ। तीन मील वहाँ शहर पैदल गया और दवाई लेकर शाम को घर आ गया और लेट गया। उसके परिवार वाले खेतों में नरमा चुगने गए हुए थे और शाम को वापिस आए तो उसके लड़के ने पूछा कि पिता जी क्या बात है कि लेटे क्यों हो? कि कुछ नहीं थोड़ा सा शक है कि दर्द हो रहा है। बेटा कहने लगा कि फिर हमारा क्या फायदा? हमें क्यों पाला अगर हम आप की सेवा न करें? चलो शहर ले चलते हैं। वो कहने लगा कि अभी शहर से ही दवाई लेकर आया हूँ। कि नहीं हम तो शहर में ज़रूर दिखाएंगे। वो कहने लगा कि ठीक है आप पहले खाना वाना खा लो फिर चलते हैं। उन्होंने ऐसा ही किया। खाना वाना खाया और उसे शहर ले गए। वहाँ मिशन हास्पीटल में भर्ती करवा दिया। दस बजे का समय था। उसका जो लड़का था वो तो बिस्तरा लेने चला

गया और उसका पोता पास में खड़ा था। उसको कहने लगा कि बेटा बाद में रोना नहीं। मेरा अब समय पूरा ही है। वो अभी बिस्तर लेकर आ ही रहा था कि ग्यारह बजे वो चोला छोड़ गया। गुनहगार तो वहाँ से लौट गया। चार बजे पर भाई जसवन्त सिंह जी संस्कार पर मौजूद थे और संगत भी काफी थी। उस का चेहरा ऐसा था कि अभी यह बोलने लग जाएगा। उसके अंग ऐसे पड़े थे कि दग़ दग़ रहे थे। अजीब खुशी का नूर था।

एक प्रेमी, हज़ूर पूज्य मैनेजर साहिब जी उनके घर भी गए थे। दलसिंह उसका नाम है। वो उनका रिश्तेदार था, सगा सांढू था। उसने हंसी मज़ाक में पूछा कि सच बता तू भजन पर कितना समय बैठता है। पहले तो माना नहीं फिर धीरे-धीरे उसने बताया कि पहले पन्द्रह मिनट, फिर आधा घण्टा, अब एक घण्टा, दो घण्टे, सुबह शाम बैठता हूँ। वो बताकर भी बच्चे को गया। और किसी ने भी उनके घर में नाम नहीं लिया। गुनहगार जिस समय बुधबार को गया। वीरवार को हामद जाना था। उस समय वो कहने लगे कि जी आपने वचन किया था कि यहाँ भी आपने शामिल होना है। मैंने कहा कि भई मेरी वहाँ ड्यूटी लगी हुई है। दो काम एक ही समय में नहीं हो सकते। फिर कहने लगे कि जी सुबह करके जाओ। उस समय उनका छोटा भाई वहाँ आया हुआ था। कहने लगा कि जी हमारे गांव भी चलो। हमने कहा कि भई पहले डेरे चलो, देखो, सत्संग सुनो! फिर दाना पानी हुआ तो आएंगे। यानि कि एक जीव सब को तार देता है। क्योंकि जिस समय उसकी मृत्यु होती है, दूसरों को भी शौक पैदा होता है। जाना तो सबने है। जैसे कि अभी-अभी फरमाया पूज्य मैनेजर साहिब जी ने कि काल के हवाले या सतगुरु के हवाले। इस तरह जीव डरता है कि काल के हवाले तो न हो कि जिस तरह इस जीव की मृत्यु हुई है हम भी ऐसे ही जाएं। उसके छोटे भाई ने बहुत मिन्नतें कीं पर उसका नसीब यहाँ नहीं आ सका। सो ऐसे कौतुक अब भी ज़ाहिर करने का हुक्म नहीं है। इतना कहकर क्षमा चाहता हूँ। 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

मैनेजर साहिब जी– कल परसों एक आदमी आया था। उसका बाप चोला छोड़ गया। उसने नाम भी नहीं ले रखा था। पहले वो दूसरे भाइयों के साथ रहता है। फिर इसके पास आकर रहने लगा कि तेरी रोटी से गति हो गई। चार पांच दिन ही रहा। मौत के समय कहकर गया कि सवा नौ बजे जाऊंगा। पहले-पहले रोटी खा लेना सब। जो वचन थे पूरे हैं। रिश्तेदारों की संभाल है। नाम भी नहीं लिया, देख लो!

पाठी– शम्मस तबरेज़ साहिब अभ्यासी की मृत्यु के समय मुर्शिद के आने का ज़िक्र...
मैनेजर साहिब जी– और कोई निशानी नहीं फकीर की, नाम की। अगर मौत के समय उनके शिष्यों की संभाल नहीं तो कुछ भी नहीं। यह है, मौत के वक्त ज़रूर संभाल होगी। मौत के वक्त कहकर जाएगा। नहीं कहता तो चेहरा पहले से अच्छा होगा। गमी की बात आ जाए तो चेहरा मुरझा जाता है। खुशी की बात आ जाए तो चेहरा खिल जाता है। उसका चेहरा सतगुरु के आने पर खिल जाता है।
पाठी– शम्मस तबरेज़ साहिब अभ्यासी की मृत्यु के समय मुर्शिद के आने का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि ''मालिक के प्रेमी तो बाख़बर मरते हैं।
मैनेजर साहिब जी– बाख़बर, ख़बर से मरते हैं। कह कर जाते हैं।
पाठी– उनको अपनी मौत की पहले से ही ख़बर हो जाती है। वे अपने प्रीतम के सामने एक मीठी मौत मरते हैं। मुर्शिद उनकी गुप्त आँख खोल देता है और मुर्शिदहीन मनुष्य अंधेरे में मरते हैं। आरिफ, यानी गुरुमुख लोग मरकर अपने सच्चे मालिक की तरफ रवाना होते हैं और बिना मुर्शिद वालों की जान ख़्वार होकर बेख़बरी में निकलती है।

जब वे चोला छोड़ते हैं तो सतगुरु उनके सामने होता है। उनको उस समय इतनी खुशी होती है कि अपनी शादी के मौके पर भी न हुई होगी। उनका सब से मोह टूट जाता है। मां अपने गोद के बच्चे का मुंह नहीं देखना चाहती। उनके दिल में कोई डर या चिन्ता फ़िक्र नहीं होता। उनको घर-बार छोड़ने का कोई रंज नहीं होता और न ही आम जीवों की तरह उनकी आँखों से आंसू निकलते हैं। न ही मल मूत्र निकालता है। न ही उनके चेहरे पर किसी प्रकार का मलाल होता है और न ही वह काला पड़ता है। बल्कि पहले से भी अच्छा और तेजस्वी होता है। उनका शरीर भी जल्दी नहीं अकड़ता। काल व दूत उनके समीप नहीं फटकते बल्कि अगर कहीं आ जाए तो उसमें इतनी ताकत आ जाती है कि दहाड़कर उनको भगा देता है। तुलसी साहिब लिखते हैंः-

जो कोई सन्त शरण के दागी, तिन तै काल दूर होई भागी।
यम की जाल निकटि नहीं आवे, मारगि छाडि अलग हो जावे॥

यही गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि जो लोग सतगुरु की भक्ति में लगे हैं, उनके पास काल व यमदूत नहीं फटकते व न ही उन्हें धर्मराज के पास जाना पड़ता है।

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि॥
तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि॥

(516/ मः 3)

फिर फरमाते हैं कि जहाँ पापी मनुष्य को काल दूध की तरह मथनी से मथता है, वहाँ सन्तों के चिताए हुए जीवों को, जो नाम प्रगट कर लेते हैं या प्रकट करने का यत्न करते हैं, धर्मराज भी स्वागत करता है और उनको नमस्कार करता है।''

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी, धर्मराज भी उनको नमस्कार करता है और उनका स्वागत करता है।

पाठी– पापी करम कमावदे करदे हाए हाइ।
नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ।
नाम धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति।
नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत॥

(1425/ मः 5)

मैनेजर साहिब जी– कोई कर्म हो तो सतगुरु पहले कटवा लेता है। कर्मों का बदला तो देना पड़ता है, यह नहीं की नहीं। आसानी से कटवाता है। सूली से सूल कर देता है। सिमरन से तो ऐसे ही कर्म हल्के हो जाते हैं।

सिमरतु नामु किलविख सब काटे॥ धरम राइ के कागर फाटे॥

(1348/12 मः 5)

यह ठीक है कि खोटे कर्म करेगा तो सज़ा तो मिलेगी ज़रूर फिर भी छोड़ते नहीं। गुरुनानक साहिब का एक जीव था। खोटे कर्म कर बैठा। सज़ा तो दिलाई, नरकों में भेजा पर फिर भी निकाल कर लाए। छोड़ते नहीं फिर उसको। यह महकमा ही ऐसा है।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

'सत्संग'

'मेरी नईया पड़ी मझधार में'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– बड़े विचार का काम है। यह समझ से काम लेना पड़ता है। हमने वो काम करना है, चाहे हम मन्दिरों में जाएं, गुरुद्वारों में जाएं, तीर्थों पर जाएं, सत्संग पर जाएं। मतलब उसका यह है कि हमारा मालिक से मिलाप हो। हमारा भजन सिमरन बनने लग जाए। हमारे अन्दर सतगुरु बसने लग जाए। असली मतलब तो यह है बाकी और कोई नहीं। अगर हमने यही नहीं समझा तो हमारा जाना-आना फ़ज़ूल है। वो देखो, वो विचार करो जिससे इसका भजन सिमरन बने, सतगुरु बसे अन्दर, सतगुरु से मिलाप हो। इसको वो काम करना चाहिए। कबीर साहिब ने कहा हैः-

गुरु पशु, नर पशु, त्रिया पशु, वेद पशु।
माणस सोई जाणीए जा हृदय विचार॥

जो विवेक, विचार से काम लेता है। मालिक ने अक्ल इसलिए दी है।

अकली साहिबु सेविए अकली पाईए मानु।
अकली हुकमै बुझीए अकली कीजै दानु।
नानकु आखै राहु एहु होरि गलां सैतानु॥

गुरु पशु क्या है– कि ऊपर-ऊपर से हुक्म मान लिया पर जो अन्दर का वचन है, वो नहीं मानता। जी हज़ूर तो रहे, मगर कई बार ऐसे होता है कि बड़े हिसाब से समझा देते हैं। पर उस पर सोचना पड़ता है कि बात क्या है? उसने अक्ल दी है। अपने हिसाब से देखे कि परमार्थ में मेरा बनता है कि कहीं घाटा है या नफा है।

त्रिया पशु क्या है– जैसे कैकयी के कहने पर दशरथ ने अपने बच्चों को बनवास दे दिया। यह त्रिया पशु है।

नरपशु क्या है– यह है कि कोई आदमी था बाहर चला गया। अब बीवी

पीछे से भूखी मरे। उसने सोचा कि अब क्या करूं। उसने एक बार नाई के हाथ कहला भेजा कि मेरे आदमी को कहना कि तेरी औरत विधवा हो गई। उसने ऐसे ही जाकर कह दिया। वो रोने पीटने लग गया। पड़ोसी इकट्ठे हो गए पूछा कि क्या हुआ? कि मेरी औरत विधवा हो गई। वो बड़े हैरान! कहने लगे कि तूं तो हट्टा-कट्टा बैठा है फिर औरत कैसे विधवा हो गई? कि यह तो इतबार का आदमी है, यह कह रहा है। हम लोगों के पीछे भागते हैं। अपना सोचें कि कहाँ मेरा भजन सिमरन बनता है? कहाँ मेरा ख़्याल जाता है। फलाना यह कहता है, फलानी किताब में यह लिखा है। यह नर पशु है।

वेदपशु क्या है– कोई महात्मा था। वो तीर्थों पर जाने लगा कि यह ग्रन्थ है, इसे संभाल कर रखना। वहाँ चूहे आने लगे। सोचने लगा कि अब क्या करूं। उसने लपेट कर रख दिया। वो फिर ख़राब कर जाएं। फिर उसने एक बिल्ली पाल ली। बिल्ली पाली और उसको अब दूध की ज़रूरत है। उसके लिए गाय रख ली। अब गाय कौन संभाले? उसके लिए विवाह करवा लिया। औरत आ गई। बच्चे हो गए। जब वो तीर्थों से वापिस आया यह सब आडम्बर देखकर वो हैरान हो गया और कहने लगा कि यह क्या? कि ग्रन्थ संभाला है। सो यह है कि वो काम करे जिससे भजन सिमरन बने। मालिक अन्दर बसे। आदमी वो ही है जो विवेक विचार से काम ले। मालिक ने अक्ल दी है। आँखें दी हैं, सोचो! समझो। कि मेरा भजन सिमरन कहाँ बनता है। कहाँ ख़्याल जाकर जुड़ता है–मालिक से, कि कौन सा काम करूं? वही काम करना चाहिए जहाँ मालिक ही मालिक बसे। तुझे आँखें दी हैं, देखकर चल।

पाठी– ऐ काहे जग आए राम राजे। जिन्हां ऐसा हरिनामु न जपिया जी॥
ऐ काहे जग.....
एह मनुष्य जन्म दुर्लभ है जी। जन्म वृथा जग जाए राम राजे॥
जिन्हां ऐसा हरिनामु न जपिया जी।
ऐ काहे जग.....
जिन्हां नूं गुरमत नाम न मिलया जी। आगे वृथा जन्म जाए राम राजे॥
जिन्हां ऐसा हरिनामु न भेटिया जी॥
ऐ काहे जग.....
इन्हां मनमुखां नू जन्म है जी॥ नानक हरि पाए राम राजे॥
जिन्हां ऐसा हरिनामु न जपिया जी॥
ऐ काहे जग.....

पाठी– धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा धन सच्चा सौदा धाम।
जंगल में मंगल तू करे मेरे परम सन्तों के न्यारे राम॥
तीरथ व्रत करता रहा काशी और कैलाश में।
ओह जो रमिया राम न खोजिया जो बैठा तेरे पास में॥
शाह मस्ताना के दरबार में जाइए बारम्बार।
ते भूली वस्तु बता बता मेरा शाह मस्ताना है दातार॥

यह शाह मस्ताना जी का डेरा है ज़िन्दाराम इसी में मिलते हैं।
हमारे बहके भटके हृदय को अरमान इसी में मिलते हैं।
और यह हर सख्श का मन्दिर है भगवान इसी में मिलते हैं।
यह शाह मस्ताना जी का डेरा है ज़िन्दाराम इसी में मिलते हैं॥

ओह जो रमिया राम न खोजिया जो बैठा तेरे पास में॥
शाह मस्ताना के दरबार में जाईए बारम्बार।
ते भूली वस्तु बता बता मेरा शाह मस्ताना है दातार॥
ओह नाम जहाज़ पर बैठ जा ते तैनूं करदे छिन में पार॥

प्रेमी– कल हम बस में आ रहे थे। प्यारी साध संगत जी, भीड़ भी बहुत, दो गाड़ी की सवारी। बस ख़राब हो गई। डाईवर कहने लगा कि यह सच्चे सौदे वालों ने ख़राब किया। हमने कहा कि क्यों? सच्चे सौदे वाले कोई मुफ्त में बैठे हैं किराया दिया है। दो बस की सवारी हैं हम धक्का लगाते हैं चला तो सही। महीने के महीने हज़ारों रुपयों की आमदनी होती है तुम्हें। मैंने कहा कि हाँ! लोगों की मत मारी है जो अपना काम भी छोड़ते हैं और कमाई भी पल्ले से लगा कर आते हैं। एक और सत्संगी बैठा था। वो कहने लगा कि यह तो ऐसे ही करता है। कि अगर दस रुपये की कमाई छोड़कर और पल्ले से दस रुपये लगाकर आते हैं तो कोई चीज़ तो है तभी आते हैं। ऐसे क्यों आते? कोई चीज़ है तभी आते हैं? मैं सदके जावां तौबा मेरी।

दूरों सुनकर आया सतगुरु मैं तां शुकरनबाज़ी तेरी।
तेरी शोख शराब पीण दी मैंनू लगी सी शिक घनेरी॥
मुंह नूं लाया हुण छुटदी ना करां तौबा बथेरी।
देख तेरा जलवा शाह मस्ताना मैं सदके जावां तौबा मेरी॥

मेरी नईया पड़ी मंझधार में जी सतगुरु बेड़ी को पार लगाना।
मेरी लाज है तेरे हाथ में जी सतगुरु बेड़ी को पार लगाना।
अपनी मौज खुशी में आया फिर तूने सारा जगत रचाया।
सब रच दिया कूड़ संसार में जी ये तो इक दिन फनाह हो जाना।
मेरी नईया पड़ी.....

मैनेजर साहिब जी– यह शब्द रोज़-रोज़ क्यों बुलाते थे। उनके वचन में पहले लिखा हुआ था कि भजन है क्या चीज़, असली भजन क्या है? नौ दरवाज़ों में से निकले। दूसरा हुक्म मानकर बैठे। हुक्म मानना, अच्छा करेगा तो अच्छा मिलेगा, बुरा करेगा तो बुरा मिलेगा। अच्छा क्या है? सतगुरु के वचन को मानना। बुरा क्या है? सतगुरु के वचन से परे होना। वचन मानकर भजन सिमरन करना, यह ठीक है। आखिर क्या लिखते हैं कि हमने सारा तजुरबा किया है। हाँ जीः-

प्रेमी– और भजन मण्डली में पूज्य मस्ताना जी ने सीखा कि सतगुरु का वचन और भजन सिमरण किसी से नहीं बना और न ही किसी से बन सकता है। और रात को, दिन में अन्दर में पछताना और रोना कि ऐ सतगुरु असीं तुम्हारे सामने कई युगों से पाप करते आए हैं। सो हम ऐबदार हाँ, गुनहगार हाँ। तुम्हारे आगे तूं सतगुरु जिस तरह होवे इस जेल से छुड़ा ले और हमारी हिम्मत कुछ नहीं कर सकती। हम झूठ बोलते हैं कि यह सब तन और कुटुम्ब मेरा है। भजन मण्डली में सीखा कि सावनशाह के बिना कोई नहीं मेरा संगी। अगर जो नाम है वो भी सतगुरु ने दिखा है। वो ही ज़ोर लगावे तो मुझे भवनिधि से छुड़ा सकता। छुड़ाने की ताकत सिर्फ सावनशाह निरंकार को है। तब सतगुरु छुड़ाएगा जब भजन मण्डली की हिदायत मानेगा। क्या हिदायत है? कि रात दिन यही पुकारे कि ऐ सतगुरु! घर भी तेरा, धन भी तेरा, मन भी तेरा, तन भी तेरा। सारी उम्र मैंने पाप कमाया तूं मुझे बख़्श! मेरा एक तूं है। भजन मण्डली का यह पहला नुक्ता पकाया है।

कि घर भी तेरा, तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा। सारी उम्र मैंने पाप कमाया। तूं मुझे बख़्श, मेरा एक तूं है।

मैनेजर साहिब जी– इसलिए रोज़-रोज़ बुलाते थे कि मैं मंझधार में घूम रहा हूँ।

मेरी नईया पड़ी मंझधार में जी सतगुरु बेड़ी को पार लंघाना।

तूं ही सतगुरु बेड़ी को पार कर। और प्रार्थना करता रहे उठते-बैठते, चलते-फिरते, यह सब से बड़ा भजन है। यह बड़ा भजन है अगर कोई करे। हाँ, जी। उठते-बैठते, चलते-फिरते यही प्रार्थना करे कि ऐ सतगुरु! तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा, घर भी तेरा, सब कुछ तेरा। तूं मुझे बख़्श ले, मैं ऐबदार

हूँ, हर वक्त यह रहे तो बस भजन बन गया। हाज़िर नाज़िर समझना ही बड़ी भक्ति है। अगर हाज़िर नाज़िर समझता है, सब कुछ सतगुरु का है फिर कोई ऐब-पाप भी नहीं करता। फिर ख़्याल जुड़ा ही रहता है। अगर ऐसे ख़्याल पक्का हो जाए, तो जब भजन पर बैठता है तो एक लखत जाएगा और क्या? देर भी नहीं लगती। पर यह पक्का करना ही कठिन है कि घर भी तेरा, बाल बच्चे भी तेरे। अगर यह पक्का हो जाए फिर भजन नज़दीक है दूर नहीं। यह पक्का करना ही कठिन है कि सब कुछ तेरा है। मेरा कुछ भी नहीं।

पाठी– घर भी तेरा, तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा। सब कुछ तेरा है। तूं बख़्श ले मुझे, मैं सेवादार हूँ। हर वक्त यही रहे। यह पकाया है।

मेरी नईया पड़ी मंझधार में जी सतगुरु जी बेड़ी को पार लंघाना॥

1. **मैं हूं आदम बन्दा तेरा, क्यों मुझे काल जाल में गेरा।**
   फंस गया पांच ठगों के बाजार में जी, मेरे सिर पर यम का थाना॥
   मेरी नईया.....

2. **तीन लोक रचा कूड़ पसारा, कर्म धर्म सब कर कर हारा।**
   कुछ आता नहीं विचार में जी, ये तो जन्मा सो मर जाना॥
   मेरी नईया पड़ी.....

   मक्के गिआं ता ईटां देखीयां गंगा गिआ ता पानी।
   ओह जदों कामिल मुर्शिद देखया तां मेरी मुक गई आनी जानी॥
   रब्ब नूं ढूंढदे कई मारे गए ते रब्ब बाहो फड़ किसी ने दसिया न।
   लोकी भालदे विच मन्दिरां मसीता ते रब्ब कोठड़ा पा के बसया न।

3. **ठाकुर पूज्या टाल बजाई, सब युग बीतया बोल्या नाही॥**
   किआ न्योलि कर्म हज़ार मैं जी नहीं छुटया आना जाना॥
   मेरी नईया पड़ी.....

   अख खख शरीर सन्दूक अन्दर क्यों नहीं दिलां दे जिन्दरे खोलदा तूं।
   साई लोका है रब्ब हर पासे आपै वाज मारै ते आपै बोलदा तूं॥
   जे मुल्ला तूं हज करन चलया तां मैंनू दस ओथो लिआएँगा कि।
   ओथे आके हाजी सदाण बाझो दस मैनूं होर सदाएंगा कि।
   जे कर चलयां तू वेदीद होकर अग्गे जाकर चंद चड़ाएंगा कि॥

   किए न्योलि कर्म हज़ार में जी नहीं छुटया आना जाना॥
   मेरी नईया पड़ी.....

अवलि अलह नूर उपाइआ कुदरति दे सभ बंदे।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे॥

4. **पुण्य किया तो स्वर्ग दिखया, पाप किया तो नरक डुबाया।**
सतगुरु करता रोज़ पुकार जी, मैं तो जेली हूं जेल से छुड़ाना॥
मेरी नईया पड़ी.....
तेनूं भेजया सी बन्देया लाल खरीदने नूं ते कोयलां दे ढेर ला बैठा।
हुक्म सी सच्ची कस्तूरी खरीदने दा ते तूं हिंग जवैण दे ढेर ला बैठा॥
उस शाह अग्गे की जवाब करसीं जिस शाह दी रकम खर्च करवा बैठा।
वाह रे मियां क्या वे तेरी सुदागिरी ऐंवे हट्टीयां ते चोर कहा बैठा॥

5. **सारी संगत तेरे नाम बिना रोगी शब्द बिना मुक्ति न होगी।**
तेरे नाम का था बीमार मैं जी मुझे वैद्य मिला शाह मस्ताना॥
मेरी नईया.....
ज़ुबानी कलमां हर कोई पढ़दा ते दिल दा पढ़दा कोई।
जिथे कलमां दिल दा पढ़ीए जीभा मिले न ढ़ोई॥
दिल दा कलमा कोई कोई पढ़दा की जानण यार बिलाई।
मैंनू शाह मस्ताना कलमां दिता ते मैं सदा सुहागिन होई॥
मेरी नईया पड़ी.....
सुन फरियाद पीरां दिया पीरा मैं आख सुणावां कैनूं।
तैं जेहा मैनूं होर न कोई मेरे जेहे लख तैनूं॥
फोल न कागज वदिआं वाले ते सावनशाह दर तो धक्क न मैनूं।
मैं विच ऐड गुनाह न हुँदे ते तू बखशेंदों कैनूं॥
जे सतगुरु देखे मेरे ऐबा वल्ले तां कुछ नहीं मेरे पल्ले।
जे मैं देखां तेरी रहमत वल्ले तां बल्ले बल्ले बल्ले॥
मैं तां ऐबां भरी कुचजड़ी हाँ तेरे दर दी मारी हाँ।
गल ला लै दर ते आई नूं मैं तां कलमां तेरा पढ़दी हाँ॥
मैं निक्कमी काहनूं जमीं मैं दर दर दी मारी हाँ।
ओह पर्दा रखी शाह मस्ताना जी तेनूं शरमां सारीआं॥
बड़ी कठिन है डगर पनघट की कैसे भर लाऊं यमुना से मटकी।
शाह मस्ताना जी लाज रख मेरे घूंघट पट की॥
तेरी तलाश सोहणियां करावां किथे किथे।
न थाह ठिकाणा तेरा मैं जावां किथे किथे॥

सोहणियां महबूबा दस तेरी चाल कि ए।
गुस्सा तेनूं दस आशिकां दे नाल कि ए॥
तेरे डेरे विचों लखां पी पी जांदे मेरे लिए मनाही क्यों है।
मैनूं एह समझा दे गुस्सा तेनूं आशिकां दे नाल कि है।
तेरी तलाश सोहणियां.....
चल दिला उथे बसीए जिथे शाह मस्ताना जी दा डेरा है।
बुल्ला इल्म बिच न फसां सांनू कोई शाह मस्ताना जी दी गल सुणा सानूं।
ओथे इलमां दा सिक्का नहीं चलदा जिथे शाह मस्ताना जी दा डेरा है।
तेरी तलाश सोहणियां.....
पढ़ पढ़ पोथी जग मुआ ते पण्डित भया न कोय।
दो अक्षर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय॥
सरसे उते चमकारा पैंदा नूर दा.....
अलफ नाम अल्ला दा इको ते शाह मस्ताना जी ने अलफ पढ़ाई।
हुण जे पढ़ियां सानूं लज़्ज़त न आंदी जे लज़्ज़त अलफ तो आई॥
सरसे उते चमकारा पैंदा नूर दा.....
कोई ते आखे बाबा तूं सच्चे सौदे रहंदा।
कोई ते आखे बाबा तूं मौज़पुरे रहंदा॥
न थाह ठिकाणा तेरा मैं जावां किथे किथे।
असली मकांना वालिया तूं ला मकान रहंदा॥
फक्कर नू चंगा सलाम करना भावे हाल तों ओह बेहाल होवे।
फक्कर चौदहवीं सदी तक पहुँच जांदा भावे किसी फकीर दा बाल होवे॥
ठोकर मार न फटी होई गोदड़ी नूं भावे गोदड़ी विच छुपया लाल होवे॥
असली मकानां बलियां तूं ला मकान रहंदा।
सारे डेरे ढूंढ़े तू केहड़े डेरे रहंदा॥
न थाह ठिकाना तेरा मैं जावां किथे किथे॥
तेरी तलाश.....
''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा॥''
गौण गौण दे ज़रा हजूर दर ते मेरे तरले ते हथ जोड़िआं जी।
डिगी दर तेरे और कोई दर नहीं मैं मारी ही धक्कयां दी जी॥
मेरे वास्ते ताज सी चांदीया दा मैं तां खाक सांईं तेरे जोड़ियां दी।
सानू हर बेले तेरी लोड़ रहंदी तेनूं लोड़ की साडे रोलियां दी॥

शाह मस्ताना जी मेरे, शाह मस्ताना जी मेरे।
तूं है तो संगत कितनी हंसी है। तूं नहीं तो कुछ भी नहीं है।
शाह मस्ताना जी.....

1. **तूं हो तो बढ़ जाती है कीमत संगत की।**
यह जो तेरी टोपी है शोला शबनम की।
मुझे जीना भी यहीं है मुझे मरना भी यहीं है॥
शाह मस्ताना जी.....

2. **रख ले तूं मुझ को अपना दीवाना करके।**
पास आजा मस्ताना देखूं जी भरके।
मेरे जैसे होंगे लाखों पर कोई तुझ सा नहीं है॥
शाह मस्ताना जी.....

मैनेजर साहिब जी– उसकी रहमत पर है सब कुछ है।

पाठी– 'धन धन सतगुरु जी।'

लै के दिल विच प्यार, आए मस्ताना शाह निरंकार।
ऊँचा नीचा इको जेहा दिता कर।
लैके दिल.....

1. **ऊँच नीच दा उसने भेद मिटाया सी।**
एकता दा बूटा जग बिच लाया सी।
कीता नाम दा प्रचार दिते बिगड़े लोग सुधार॥
ऊँचा नीचा इको जेहा दिता कर।
लैके दिल.....

2. **कौडे जेहे राक्षसां दे दिल विच बसया।**
जालमां दे दिलां विचों जुलम सी नसया।
जिसने कीता आन दीदार उस दी नईया हो गई पार॥
ऊँचा नीचा इको जेहा दिता कर।
लैके दिल.....

3. **हिन्दुआं ते मोमनां दा सांझा पीर सी।**
सिधे रस्ते पाण वाला मस्त फकीर सी।
उसदी महिमा तो बलिहार सतगुरु तों सदके सौ सौ बार॥
ऊँचा नीचा इको जेहा दिता कर।
लैके दिल.....

4. **विषय ते विकारां विच दुनियां मस्त होई सी।**
काल तो बचण दी युक्ति जाणदा न कोई सी।
सब ने डूबणा सी मंझधार सतगुरु बेड़ा कीता पार॥
ऊँचा नीचा इको जेहा दिता कर।
लैके दिल.....

5. **खाण मास पीण शराबां दुनियां मस्त होई सी।**
चौरासी तो बचाण वाला दिसदा न कोई सी॥
सतगुरु कीता खबरदार आया काल हो होशियार॥
ऊँचा नीचा इको जेहा दिता कर।
लैके दिल.....
'धन धन सतगुरु जी'

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी! और बोलेगा! चल बोल!

प्रेमी– *ऐ हवा बादशवा सनम बेदार होता है।*
मन कर गुल की कलियों को चटके न यार सोता है॥
जनून का गनून शाह मस्ताना है वो कब फरियाद करते हैं।
लबों पर बन्द खमोशी दिल में याद करते हैं॥
खुदी को कर बुलन्द इतना कि तकरीर से पहले।
खुदा बंदे से खुद पूछे कि बता तेरी रज़ा क्या है॥
मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ पाना है।
कि दाना मिट्टी में मिलकर गुलो गुलज़ार होता है॥

दुनियां से किनारा हो सकता है, शाह मस्ताना से किनारा कौन करे।
बाझों अपने सतगुरु दे दुख दर्द नज़ारा कौन करे॥

1. **दिल लगदा नहीं दिलदार बिना साडा वक्त नहीं लंघदा यार बिना।**
सौखा लंघदा नहीं वक्त बिछोड़या दा बिना यार गुज़ारा कौन करे॥
दुनियां से किनारा.....

2. **रोना पिटणा है कम शुदाइयां दा तेरा कम है बाबा बेपरवाईयां दा।**
तेरीयां नित दी यार जुदाईयां दा दस गुज़ारा कौन करे॥
दुनियां से किनारा.....

3. **तेरा दर्द सीने नूं सलदा ऐ न चैन पवै इक पल दा ए।**

"ऊचीयां लम्बीयां खजूरां ते पतर जिन्हा दे सावे।
जिस दे नाल प्रीत है साडी ओह यार नज़र न आवै॥
सुन्नीयाँ गलीयाँ यार दिसदीआं ते बिहड़ा सानूं बढ बढ के खावै।
ओह गुलाम फरीदा उथे की बसना जिथे यार नज़र न आवै॥"
तेरा दर्द सीने नूं सलदा ऐ न चैन पवै इक पल दा ऐ।
इक दिन है साल बराबर दा सारी उम्र गुज़ारा कौन करे॥

मैनेजर साहिब जी– फिर बोल भई! यह तो एक साल कहता है। गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि

"इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥"

(601/2 मः 3)

एक पल बिछुड़ गया तो पचास साल का अन्तर पड़ गया।

प्रेमी– तेरा दर्द सीने तूं सलदा ऐ न चैन पवै इक पल दा ऐ॥

"हंसणा खेडणा मेरा नाल लै गिया ते तौबा पा गिया डूघीआं फिकरां॥
पाटी लीर पुराणी वांगू टंग गिया विच किकरा॥"
तेरा दर्द सीने नू सलदा ऐ न चैन पवै इक पल दा ऐ।
इक दिन है साल बराबर दा सारी उमर गुज़ारा कौन करे॥
शाह मस्ताने तों किनारा कौन करे.....

मैनेजर साहिब जी– मालिक को मिलने की तीन स्टेजें होती हैं मोटा-मोटी। पहली है भक्ति—याद कर कर के अन्दर बसाना। नहीं बसता, नहीं दीदार होता, फिर तड़फ हो। जिसको विरह कहते हैं। हाय! कब दर्शन हों, कब मिलेगा। मैं गुनहगार हूँ। इसके पाप सामने आने लग जाते हैं। यह ऐब पाप मुझे आगे जाने नहीं देते। कि ऐ मालिका! तूं मेहर कर। फिर रो-रोकर आखिर में दीदार होते हैं। अगर यह स्टेज नहीं आई तो समझो भक्ति की तरफ गया नहीं। दादू साहिब फरमाते हैं:-

रात दिवस का रोवना, पलक पहर का नांहि।
रोवत रोवत मिल गया, दादू साहिब माहि॥

यही कबीर साहिब कहते हैं:-

हंस हंस कंत न पाया, जिन पाया तिन रोय।
हंसी खुशी जो पीव मिले, तो कौन दुहागिन होय॥
सुखिया सब संसार है, जो खावे और सोवे।
दुखिया दास कबीर है, जो जागे और रोवे॥

यही दुख था। जागता था और कहता था कि ऐ मालिका! कब दीदार हो? भक्ति, भजन, सिमरन इसलिए ही है कि तड़फ उठे, प्रेम उठे। साध संगत में आने

से प्रेम उठता है। सेवा करने से प्रेम उठता है। जब असली तड़प उठती है फिर चैन ही नहीं आती। फिर तो कहता है कि कब दीदार हो? कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती। रोटी, पानी कुछ भी अच्छा नहीं लगता। जैसा कि किसी मर्द का बीबी से प्यार पड़ जाए और बीबी का मर्द से। उनको कुछ अच्छा नहीं लगता। घर वाले भी अच्छे नहीं लगते। बस इसी तरह यह है।

पाठी– दिल लगदा नहीं दिलदार बिना साडा वक्त नहीं लंघदा यार बिना।
सौखा लंघदा नहीं वक्त बिछोड़यां दा बिना यार गुज़ारा कौन करे॥
दुनियां से.....

मैनेजर साहिब जी– यह किसी और ने कह दिया। और लफ़्ज़ों में गुरु अर्जुन साहिब क्या कहते हैंः-

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई। बिलप करे चात्रिक की निआई॥
(96/15 मः 5)

बस बात एक ही है। उसको तड़प थी तब वहाँ पहुँचे हैं। अगर तड़प नहीं उठी तो भजन सिमरन में बहुत कमी है।

पाठी– दिल लगदा नहीं दिलदार बिना साडा वक्त नहीं लंघदा यार बिना।
सौखा लंघदा नहीं वक्त बिछोड़यां दा बिना यार गुज़ारा कौन करे॥
दुनियां से.....
दिखला के झलक अलोप हुए जी भर कर नजारा हो न सका।
इक बार तेरा दीदार हुआ फिर दीदार दोबारा हो न सका॥

मैनेजर साहिब जी– अब तो भजन सिमरन से होगा ओर कोई तरीका ही नहीं। गुरु अर्जुन साहिब के पास मुसलमान आए उन्होंने पूछा कि खुदा कैसे मिलता है? तो गुरु अर्जुन साहिब जी ने फरमाया किः-

अला अगम खुदाई बंदे॥ छोड़ि खिआल दुनिआं के धंधे॥

कि जो ऊँचे से ऊँचा है, परे से परे है। तब मिलता है जब सब ख़्याल छोड़े। इस तरफ से सो जाए।

छोड़ि खिआल दुनिआ के धंधे॥
होइ पै खाक फकीर मुसाफ़रु इहु दरवेसु कबूलु दरा॥

क्या? कि फकीर के वचनों पर फूल चढ़ा। वचन को मानना ही असली भक्ति है। मालिक की दरगाह में यह भक्ति कबूल है।

सचु निवाज यकीन मुसला॥ मनसा मार निवारिहु आसा॥

सच्चे दिल से नमाज़ पढ़, भरोसा रखो कि जो वचन उन्होंने दिया है, जो समय दिया है। उस पर अमल करो। भरोसा रखो, यकीन रखो। इसको यकीन

आता ही नहीं। सब आशा, तृष्णाएं खत्म कर दे।

देह मसीति मनु मउलाणा॥

कि यह देह मसीत है, मन्दिर है, गुरुद्वारा है। इसके अन्दर मालिक मिलना है।

देह मसीति मनु मउलाणा॥

कि मौलवी मसीत में नमाज़ पढ़ते हैं। इसमें नमाज़ पढ़नी है सच की। ऐसे न हो कि गुरुनानक साहिब गए मस्जिद में। मौलवी कहने लगा कि हम नमाज़ पढ़ने लगे हैं आप भी पढ़ो। कि अच्छा भई! पढ़ेंगे। जब मौलवी नमाज़ पढ़ चुका तो कहने लगा कि आपने नमाज़ नहीं पढ़ी? कि किसके साथ पढ़ता? कि हमारे साथ। कि तूं तो घोड़े खरीद रहा था। असली नमाज़ वो है कि दिल से पढ़ *''कलम खुदाई पाक खरा॥''*

बस जब सच्चे दिल से पढ़ेगा तो वो पाक कलमां, खुदा, शब्द या नाम वो आ जाएगा। बस! जब भी मिलेगा मेहनत से मिलेगा। जब भी अन्दर होगा, मेहनत से होगा। बाहर से तो सेवा करके खुश कर ले तो और बात है। अब तो बस मेहनत है।

पाठी– जिस दिन से किनारा तुमने किया खाना पीना भी भूला है।
तुमने तो किनारा कर ही लिया हमसे वो किनारा हो न सका॥
अलवता हमें इश्क मालूम न था भूले से मुहब्बत कर बैठे।
इसे दिल भी दिया और जान भी दी ये दिल वो हमारा हो न सका॥

मैनेजर साहिब जी– हाँ, फिर न जी सके न मर सके। दो प्रेमी थे कहने लगे कि भजन तो होता नहीं। अब करना ही नहीं, छोड़ देना है। थोड़ी देर बाद फिर धन धन सतगुरु। फिर नहीं छूटता। अब नहीं छूटता जैसे 'ब्रुक बांड टी' चाय वाले थे। तीस रुपये का डिब्बा पन्द्रह में देते थे। मुफ्त में चाय पिला पिला कर पीछे लगा लिया। अब आदत पड़ गई छूटती नहीं। बस, इस तरह वह है। खा खा के मिठाइयां नाम ले लिया। अब जपना कठिन हो रहा है। अब न तो जपा जाता है न पीछा छूटता है। हाय! हाय!

पाठी– तूफान में किश्ती आन फंसी इमदाद किसी ने कुछ भी न की।
अल्लाह भी था मल्लाह भी था पल भर का सहारा दे न सके॥
जिस दिन से किनारा तुम ने किया खाना पीना भी भूला है।
तुमने तो किनारा कर ही कर लिया हम से तो किनारा हो न सका॥
दुनियां से.....

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'गुरु मोहि अपना रूप दिखाओ'

सत्संग के वचन

पाठी:(शब्द)–ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे तेरे कम्म आवेगा।
सुन्दर महल मकान ऐत्थे छड्ड जावेंगा॥

1. **जदों कालवली ने औणा, तेनूं गुरजाँ मार डरौणा।**
तेरे कोल होंणगे सारे, तैनूं किसे नहीं छुडौणा।
फेर पछतावेंगा॥ सुन्दर महल.....
2. **क्यों करदा ऐं मेरा मेरी, हो जाएगी खाक की ढ़ेरी।**
एह मानस जन्म है बन्देया, इक जोगी वाली फेरी।
फेर नहीं आवेंगा॥ सुन्दर महल.....
3. **जिस धन जोबन ते फुल्लया एह ऐत्थे ही छड्ड जाणा।**
तेरे चलदी बारी मूर्ख, इक नाम ने साथ है जाणा।
होर की लै जावेंगा॥ सुन्दर महल.....
4. **एह शाह मस्ताना जी दा कहणा, ऐत्थे बैठ किसे नहीं रहणा।**
बन्दे नाम दी कमाई करलै, जे जीवन सफल बनौणा।
नहीं तां दुख पावेंगा॥ सुन्दर महल.....

पाठी– गुरु मोहि अपना रूप दिखाओ॥
यह तो रूप धरा तुम सर्गुण। जीव उबार कराओ॥

मैनेजर साहिब जी– पहले भी कई बार अर्ज़ की है और इसी बात पर ज़ोर है कि जो गुरु नाम है, वो बदनाम है। फ़कीरी बदनाम हो चुकी है। गुरु एक ही है।

एक ही की सेव सब ही को गुरुदेव एक॥
एक ही सरूप सबै एक जोत जानवो॥ (गुरु गोबिन्द सिंह जी)

इसकी जोत सबके अन्दर है। सबके अन्दर काम कर रही है। राम गुरु भी अन्दर है। राम कहते हैं रमी हुई ताकत को।

'रमेता सो रामा॥'

वो शब्द रूप में रमा हुआ है। गुरु का लफ़्ज़ 'ग्री' धातु से निकला है। इसका मतलब है शब्द। जितने भी फकीर हुए हैं रूहानी, उन्होंने मुक्ति देने वाला गुरु एक ही माना है। अगर गुरुनानक साहिब को पूछाः-

'तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला। (942/18 मः 1)

सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥' (943/1)

पलटू साहिब ने कहा हैः-

'धुन आने जो गगन की, सोई मेरा गुरदेव॥'

उन्होंने शब्द कह दिया। उन्होंने धुन कह दिया यही तुलसी साहिब ने कहा हैः—

सुरति शिष्य सबदे गुरु मिलि मारग जाना हो।
अलख आकास ऊंधा कुआं ता में सुरति समाना हो॥

अब वो सबके अन्दर है। लेकिन अन्दर होते हुए भी वो किसी को ऐबों, पापों से नहीं बचाता। हम उसी तरह चोरियाँ, ठगीयाँ करते हैं और बदमाशीयाँ करते हैं। गुनाह करते हैं पर वो किसी को कुछ नहीं कहता। जब वो हमें इन ऐबों, पापों से बचाना चाहता है, नरकों से निकालना चाहता है, चौरासी में से निकालना चाहता है तब वो आदमी का चोला पहनता है। जब तक वो आदमी का चोला न पहने, वो हमें समझा नहीं सकता। हमारे साथ बातचीत नहीं कर सकता। हमारे भी शक, सन्देह हैं वो दूर नहीं कर सकता। हमें अपने घर का रास्ता नहीं बता सकता। हमें पता नहीं कहाँ जाना है।

ब्रह्म बोले काया के ओल्हे॥ काया बिन ब्रह्म क्या बोले॥

बिना आदमी के चोले से वो हमसे बातचीत नहीं कर सकता। यही एक मुसलमान फकीर ने लिखा हैः-

आं पातशाहे आज़म दर बस्ता बूद मोहकम।
पोशीदा दिल के आदम यानि कि बरदर आमद॥

(शम्स तबरेज़)

''शम्मस तबरेज़ साहिब फरमाते हैं कि वह पातशाहों का पातशाह द्वार बन्द करके बैठा है और खुद ही आदमी का चोला पहन कर दरवाज़ा खोलने के लिए आता है।''

जब वो आता है तब हमें पता चलता है। सच्चे मत का पता चलता है।

उस समय वो पुकार करता है कि ऐ सतगुरु! यह जो पांच तत्व का चोला पहना है, यह तो हमारे समझाने के लिए है। पर जो तेरा असली रूप है वो कुछ और ही है। तेरा रूप तो कोई और है। वो रूप दिखा जो हमेशा कायम रहता है। जो हमेशा कायम रहता है। यह तो कल ही छोड़ जाना है। यह तो आज है कल नहीं। और सन्त भी आए, वो भी छोड़ गए। हमने भी छोड़ जाना है। लेकिन जो असली रूप है वो दिखा। यह तो हमारे समझाने के लिए है। यह तो हमें रास्ते पर डालने के लिए है।

पाठी– यह तो रूप धरा तुम सर्गुण। जीव उबार कराओ॥
रूप तुम्हारा अगम अपारा। सोई अब दरसाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि यह रूप तो चले जाना है। आज नहीं तो कल, लेकिन जो असली रूप है वो अगम है। परे से परे है, ऊँचे से ऊँचा है। वहाँ मन बुद्धि पहुँचती नहीं, यह आँखें नहीं पहुँचती नहीं, यह हाथ नहीं पहुँचते। उनसे छुआ नहीं जाता। इन आँखों से देखा नहीं जाता। इन कानों से सुना नहीं जाता वो चीज़ ही कुछ और है। मुझे वो रूप दिखा ताकि मेरा छुटकारा हो जाए। ताकि मुझे पता चले कि मैं क्या चीज़ हूँ?

पाठी– रूप तुम्हारा अगम अपारा। सोई अब दरसाओ॥
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ। अभय दान दिलवाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कि मैंने तो सुना है कि वो जो आप का रूप है। वो बड़ी शांती देने वाला है, ठण्डक देने वाला है। जो भी दर्शन करता है मग्न हो जाता है। वहाँ तो कभी ज्वार आया तो नहीं, और सब बेखौफ देने वाला है। वो बे-फ़िक्र करवाने वाला है, जन्म-मरण खत्म करने वाला है। न कभी पैदा हुआ है, न कभी मरा है। वो जो असली रूप है वो दिखा।

पाठी– देखूँ रूप मगन होय बैठूँ। अभय दान दिलवाओ॥
यह भी रूप पियारा मो को। इस से ही मोहे को समझाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि मुझे यह भी रूप प्यारा है। इसका प्यार ही मुझे खींच कर ले जाता है। लेकिन यह तो हमारे समझाने के लिए है। यह न तो किसी सिक्ख का रहना, न जो गुरु पाक है उनका रहना है। सब ने चले जाना है। यह तो हमारे समझाने के लिए है। जो असली रूप है वो दिखा मुझे। हाँ जीः-

पाठी– यह भी रूप पियारा मो को। इस से ही मोहे को समझाओ॥
बिनु इस रूप काज नहिं होई। क्यों कर वाहि लखाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि अगर तूं आदमी का चोला पहन कर न आए, तो मुझे कौन समझाए, मैं किस तरह समझूं? मैं समझ नहीं सकता। ज्ञान नहीं हो सकता। इसी के ज़रिये मैं आगे जा सकता हूँ। इसके बिना मेरा काम नहीं बन सकता, इसलिए मुझे प्यारा है। इसलिए पलटू साहिब ने कहा हैः-

नाम न जाना जानूं सन्त जिनां जग तारया॥

क्योंकि वो तो अन्दर हमेशा ही है। लेकिन समझाने वाला वहीं है। समझा कर फिर असली रूप का पता चलता है, ऐसे नहीं। वो असली रूप है, उसके बिना छुटकारा नहीं।

पाठी– बिनु इस रूप काज नहिं होई। क्यों कर वाहि लखाओ॥
ता ते महिमा भारी इसकी। पर वह भी लखवाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहता है कि यह भी मुझे प्यारा है। इसकी कद्र है। इसके बिना भी काम नहीं बनता। हौमें भी बड़ी है पर जो चीज़ तेरे अन्दर है वो और है। वो तेरा यह असली रूप है। वो भी मुझे दिखा कि क्या चीज़ है?

पाठी– ता ते महिमा भारी इसकी। पर वह भी लखवाओ॥
वह तो रूप सदा तुम धारो। या ते जीव जगाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि जो वो रूप सदा ही अन्दर है। उसके अन्दर होते हुए भी हम चौरासी में जाते हैं, नरकों में जाते हैं और ऐब पाप करते हैं। लेकिन जब यह सरूप आता है तब होश आती है। यही चिताता है, उन सन्तों के रूप में आकर। उसका असली रूप क्या है शब्द? इस रूप में आकर समझाया और इसी रूप में आकर चिताया है। इसी रूप में आकर जीवों को नाम रूप दे कर, जीवों को रास्ते पर डालकर चले जाते हैं। वो शब्द में आया है और शब्द में समा जाना है।

नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ।
धनु धंनु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ॥

(1407/13 मः 5)

गुरु नानक साहिब के चोले में शब्द गुरु आया अपना काम किया और चला गया। फिर अमरदास के अन्दर बैठा और चला गया। फिर रामदास के अन्दर बैठा काम किया और चला गया। अब कहता है कि मेरे में आकर बैठ गया।

आद अंत एको अवतारा सोई समझे गुरु हमारा॥

अगर वो किसी चोले में नहीं आता तो हमें कोई भी ठीक रास्ते पर नहीं

डाल सकता। ऐसे तो आम आदमी कहते हैं। अंना, बोला कोई गूंगा कोई गुरु होवे बस मुक्ती हो जाती है। मतलब तो यह कि अंना, बोला कोई गूंगा होकर रहे जो वो कहे वो ही माने। यह और कुछ ही बना लिया। लेकिन अगर वो चीज़ न आए जैसे कि डाक्टरी न आए तो इलाज नहीं कहीं कर सकता है। किताबों ने तो नहीं करनी, दवाईयों ने तो नहीं करनी। इस तरह अगर वो गुरु न आए किसी चोले में तो काम नहीं कर सकता। वो मुक्ति नहीं दे सकता। जन्म-मरण के बन्धन नहीं काट सकता। वो एक ही गुरु है जन्म-मरण के बन्धन तोड़ने वाला है। मौत भी अन्दर, मारने वाला भी अन्दर। उस वक्त छुड़ाने वाला कोई नहीं। उसके बिना काम नहीं चलता।

पाठी– वह तो रूप सदा तुम धारो। या ते जीव जगाओ।
यह भी भेद सुना मैं तुम से। सुरत शब्द मारग नित गाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि तेरे तरफ ही लगा है जब से आदमी का चोला पहना है। इसलिए दूसरा जन्म है कि आदमी का चोला पहना है। तभी पता चला है। उसने कहा कि असली रूप शब्द है। उसमें सुरत लगा। वो मुक्ति देने वाला है, वो बन्धन तोड़ने वाला है। तेरे से ही पता चला है। तभी मैं पुकार करता हूँ और मुझे होश आई है। वो अपना रूप दिखा। एक ही रास्ता है बिना शब्द के जा ही नहीं सकता। यह सिमरण जो हमें मिला है यह उस शब्द से कनैक्ट करने के लिए है। अगर कोई बाहर स्थूल गुरु है तो वचन है, सिमरन है। बाकी कुछ नहीं।

सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो॥

(1309/18 म : 4)

पूज्य मस्ताना जी कई बार मिसाल देते थे। कहते हैं कि देख भई जा हमारे घर से पांच रुपये लेकर आ। बोले आया। वहाँ कौन गया भई वचन तू तो यहाँ बैठा है। तेरे वचन ने काम किया। इस तरह फकीर का रूप ही वचन है। सतगुरु का रूप ही वचन है वो सिमरन है। अगर कोई है तो वो है। उस वचन ने काम करना है। यही गुरु अमरदास ने कहा है:–

सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु।
डिठै मुक्ति न होवई जिचरु सबदि न करे विचारु॥

(594/11 मः 3)

जब तक यह सिमरन न करे तब तक मुक्ति नहीं, छुटकारा नहीं। उसका

कहा न माने तब तक मुक्ति नहीं।

पाठी– यह भी भेद सुना मैं तुम से। सुरत शब्द मारग नित गाओ।

मैनेजर साहिब जी– उसके बिना पता ही नहीं चलता, जब तक कि आदमी का चोला न पहने। इसलिए उसको चोला पहनना पड़ता है।

हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै॥

(476/16)

साध रूप अपना तनु धारिआ॥

(1005/7 मः 5)

पाठी– शब्द रूप जो रूप तुम्हारा। वा में भी अब सुरत पठावौ।

मैनेजर साहिब जी– कि जो आप का असली रूप है शब्द उस में मेरी सुरत को लगा। मेरा भी कोई रूप नहीं मेरा भी सुरत रूप है। इसका भी सुरत रूप है। उसका शब्द रूप है। इसको भी पता नहीं, यह बेहोश है। यह तन के प्यार में इतना बेहोश हो चुका है कि इसने तन को अपना रूप बना लिया है। चुंकि हम अपने तन को अपना रूप बना बैठे हैं इस तरह जब सतगुरु इस चोले में आता है तो यह उसको पकड़ बैठता है। यह जो तन का रूप बना बैठा है उसको भी तन का रूप बना लेता है। तभी पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि अगर यह समझो कि इस बॉडी में सतगुरु तो आप समझोगे कि आप की बॉडी में भी सतगुरु है। अगर आप बॉडी को पकड़ोगे तो आप कहोगे कि मैं भी कहीं हूँ। अगर उसको बॉडी बनाओगे तो आप भी बॉडी बन जाओगे। अगर समझोगे कि उस बॉडी में सतगुरु है, उस बॉडी में चीज़ है, समझोगे कि मेरे अन्दर भी चीज़ है। तब फायदा उठा सकते हो। वो चीज़ कोई और है जो तेरा असली रूप है, शब्द रूप है, वो दिखा। उसमें मेरी सुरत को लगा।

पाठी– शब्द रूप जो रूप तुम्हारा। वा में भी अब सुरत पठाओ॥
डरता रहूं मौत और दुख से। निर्भय कर अब मोहि छुड़ाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहता है कि मैं हर वक्त मौत से डरता रहूँ। दुखों-सुखों में फंसा पड़ा हूँ। तन के बन्धनों में फंसा पड़ा हूँ। चौरासी भुगत रहा हूँ। अगर आप मुझे अपना वो रूप दिखा दो तो मैं बेखौफ हो जाऊं। मुझे कोई डर नहीं रहे। मेरे अन्दर शांती आ जाए। सब डर निकल जाएं।

पाठी– डरता रहूं मौत और दुख से। निर्भय कर अब मोहि छुड़ाओ॥
दीनदयाल जीव हितकारी। सतगुरु काज बनाओ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि मैंने सुना है तूं दीनों पर दया करने वाला है। तूं दयाल हैं। मैं दीन होकर तेरे पास आया हूँ। तुम हमारे भले के लिए आए हो। हमारे छुटकारे के लिए आए हो। यह वक्त है तेरी मेहर का तूं मेरे भी काज बना दे। अपना असली रूप दिखा। अब आगे जो उत्तर देते हैं। जिस रूप में आते हैं। आते हैं वो सन्तों के रूप में। जवाब देते हैं कि क्या करना चाहिए? किस तरह छुटकारा होवेगा?

पाठी– देख पिआरे मैं समझाऊँ। रूप हमारा न्यारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि जो मेरा असली रूप है वो न्यारा है। परे से परे है, ऊँचे से ऊँचा है। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि आप ने मस्ताने को नहीं देखा। मस्ताना कोई और चीज़ है। मस्ताने की बॉडी देखी है, मस्ताने की देह देखी है पर मस्ताना नहीं देखा। अगर आप उस रूप के दर्शन कर लो, मस्ताने को देख लो, वो दर्शन कर लो तो बादशाह बादशाही छोड़ दें, कामी काम छोड़ दें, क्रोधी क्रोध छोड़ दें, घर-बार, बाल-बच्चे सब भूल जाओगे, वापिस घर नहीं जाओगे। याद ही न रहे कुछ, वो ऐसा रूप है। ऊँचे से ऊँचा है, न्यारे से न्यारा है। मीठे से मीठा है, प्यारे से प्यारा है। हाँ जीः-

पाठी– देख पिआरे मैं समझाऊँ। रूप हमारा न्यारा॥
वह तो रूप लखे नहिं कोई। जब लग देऊँ न सहारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि बड़े से बड़े पीर, पैगम्बर, ऋषि, मुनी, बड़े-बड़े भक्त उस रूप को न देख सके। वो अपनी हद में पहँचे। काल ने पहले सत्तर युग भक्ति की। मालिक ने पूछा कि क्या चाहता है? कहने लगा कि अलग राज चाहता हूँ। चाहे यह संभाल दो चाहे कोई और संभाल दो मुझे पूछने वाला कोई नहीं हो। मालिक ने खण्ड ब्रह्मण्ड बना दिए। फिर काल ने चौंसठ युग भक्ति की। मालिक ने पूछा कि अब क्या चाहता है? कि अब बसाऊं किसे उजाड़ पड़ी है? खेल मालिक का अपना ही था। उस को रूहें दे दीं। अब उसने सत्तर युग भक्ति की और चौसठ युग भक्ति करनी कोई आसान है। रूहों को लेकर पांच तत्व के पुतले में कैद कर लिया। तीनों शरीरों में डाल दिया, साथ में कर्मों-धर्मों के बन्धन डाल दिए। जैसे अंग्रेज़ों के वक्त रियासतें होती थीं। उनके बादशाह होते थे। उनके भी बादशाह थे। उनके भी वज़ीर थे तो उसके भी वज़ीर थे। उनके भी सैसन जज हैं। उसके भी हैं। इस तरह उसने किया और उसने भी मुक्ति बनाई है। स्वर्ग नरक बनाए

हैं। अब कर्मों का जाल डाल कर इसको फंसा दिया। अब अगर अच्छे कर्म करता है तो स्वर्गों में जाता है। ज़्यादा से ज़्यादा त्रिलोकी की हद तक चला जाएगा। अगर पाप करता है तो नरकों में चला जाएगा। नरकों में कभी पशु, कभी पंछी। अगर भक्ति की भी तो ज़्यादा से ज़्यादा त्रिलोकी तक। उसके दायरे में से नहीं निकला। हमारे में मन ऐजण्ट रखा हुआ है। उसका काम क्या है जीव को भरमाना और भटकाना। अव्वल तो विषय विकारों में लिए फिरता है। अगर भक्ति करे भी तो वो करवाता है जो उसकी हद में रहे। आगे न जाए।

'मन का सुभाउ मनहि बिआपी॥' (328/19)

वो अपने दायरे से किसी को निकलने नहीं देता। इसलिए कोई भी वहाँ तक नहीं पहुँचता। तुलसीदास जी कहते हैंः-

'कहां कहूं लग नाम बड़ाई। राम न सके नाम गुण गाई॥'

पूरे सन्तों का रूप, पूरे सतगुरु का सरूप वो नाम है। कहते हैं कि मैं नाम की महिमा कहाँ तक करूं। वो ऊँचे से ऊँचा है। परे से परे है। वो त्रिलोकी का राम भी वहाँ तक न पहुँचे। यही कबीर साहिब कहते हैं किः-

लोग कहे दूर गया कबीरा एह मत जाणेगा कोई धीरा।
दशरथ सुत त्रिलोकी जाणा राम नाम का मरम न आणा॥

यह जो असली राम नाम है। जो असली मालिक का रूप है। वो उनके पास भी नहीं है। इसलिए जब तक सतगुरु आप आदमी का चोला पहनकर आए, न समझाए, संभाल कर साथ न ले जाए, यह जा ही नहीं सकता। कोई भी उस रूप को देख ही नहीं सकता।

पाठी– वह तो रूप लखे नहिं कोई। जब लग देऊँ न सहारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि हमें तो पता ही नहीं। थोड़ी सी भी किसी की करामात देख ले, बस यह तो पूरी ताकत है। यह तो मालिक के घर पहुँचा हुआ है, वहीं बैठ गए। दो बातें भी सुनोगे तो भी कहोगे कि बस बहुत ऊँचा है। जब तक वह आप सहारा न दे, आप ही आदमी का चोला पहन कर न आए, न समझाए, न नाम दे, साथ न ले जाए, कोई जा ही नहीं सकता। हाँ जीः-

पाठी– करनी करो मार मन डालो इन्द्री रोक दुआरा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं अगर तूने वो रूप देखना है तो मेहनत कर।

बिन मेहनत किसे न पाया रब्ब दा नाम खज़ाना॥

बिना मेहनत के कुछ नहीं मिलता। मेहनत ज़रूरी है लेकिन कौन सी मेहनत? बिना अहंकार के अगर हम करते भी हैं तो मैं भजन किया इतना, मैं इतना बैठता हूँ। मेहनत कर। अब मैं यहाँ बैठ गया। वहाँ मन का बैर है, इस मन को काबू कर। इस मन को काबू करने के लिए कैसे करे? यह इन्द्रीयों के बस में है। जो इन्द्री चाहती है पकड़ कर ले जाती है। इन्द्रीयों और भोगों के बस में है। उनको काबू करने के लिए इसको इन्द्रीयों के भोग ने दे, और कोई इलाज ही नहीं।

इन्द्री रोके ते मन रूके और जतन नहिं कोय।
मन चंचल रिझवार है रसिक सवादि होय॥

(चरणदास जी)

महात्मा चरणदास कहते हैं यह साधन कर ले। यही कबीर साहिब कहते हैंः-

मन जाता है तो जाने दे दृढ़ कर रख शरीर।
उतरी पड़ी कमाण से कैसे चाले तीर॥

मन अगर विषय विकारों में जाता है, इन्द्रीयों में जाता है तो जाने दे पर इसको इन विषय विकारों और इन्द्रीयों में मत फंसा। मुकाबला रख फिर सतगुरु अपने आप करेगा। अगर किसी के हथियार ही खोखले हों तो वो लड़ेगा कैसे? अगर इन्द्रीयों के भोग नहीं देगा तो कितना लड़ेगा? फिर अपने आप बैठ जाएगा। अगर किसी बच्चे को कमरे में बन्द कर दो तो पहले तो वो दरवाज़े, खिड़कियां तोड़ेगा। जब न खोलो तो क्या करेगा? इधर-उधर बैठकर देखने लग जाएगा, रोने लग जाएगा। इसी तरह इसको इन्द्रीयों के भोग न दें। भजन पर बिठाएं। चाहे भजन पर मन भी न लगे। अन्दर धीरे-धीरे जाने लग जाएगा। बच्चे की तरह टिक जाएगा। मुकाबला बड़ी चीज़ है। पहले भी अर्ज़ की थी। यहाँ पर गुड़ निकाल रहे थे। पड़ोसियों का ऊँट ख़राब करता था। उन्होंने कहा कि कल्हाड़े पर जोड़ देते हैं, जोड़ दिया। चार घण्टे लगातार जोड़ा। एकदम सीधा हो गया। मन का भी यही हाल है। इसका यही इलाज है और कोई नहीं। वो ही सूरमा है जो मन से लड़ाई करता है। कबीर साहिब कहते हैंः—

कामी क्रोधी लालची इनसे भगति न होय।
भगति करे कोई सूरमा जाति बरण कुल खोय॥

कहते हैं कि क्या कर? इसको इन्द्रीयों के भोग न दे। यह इन्द्रीयों के भोग ही हैं जो दौड़ाए फिर रहे हैं। जब इसको भोग नहीं देगा तो यह अपने आप बैठ जाएगा। तो मदद फकीरों के रूप में आकर सतगुरु करता है उसको यह मानता

नहीं और अन्दर जा नहीं सकता। वो तो समझाते हैं कि इसको इन्द्रीयों के भोग न दे, विषय विकारों में न जाने दे। बाहर न भागने दौड़ने दे, वो सब यह करता नहीं फिर जाए कैसे?

पाठी– करनी करो मार मन डालो। इन्द्री रोक दुआरा॥

मैनेजर साहिब जी– अब आंखों की इन्द्री सुन्दर-सुन्दर रूप देख कर उधर को खींचे फिर रही है। कानों की इन्द्री, अच्छे-अच्छे राग सुनकर उधर को खींचे फिर रही है। ज़ुबान की इन्द्री खट्टे-मिट्ठे रस लेकर उधर को खींचे फिर रही है। मगर इसको स्वाद न दे। फकीरों ने भी खाया हमारी तरह पर इसको स्वाद नहीं दिए सिर्फ जिस्म को चलाने के लिए खाया। वो भी खाते हैं और हम भी खाते हैं। वो खाते हैं सिर्फ पालने के लिए और हम खाते हैं स्वाद के लिए। इसलिए वो कहते हैं कि इसको विषय विकार न दे। अगर मांगे भी तो भी न दे। इसके विरुद्ध चल।

पाठी– सुरत चढ़ाय गगन पर धाओ। सुन्न शिखर के पारा॥

मैनेजर साहिब जी– जब इसको विषय विकार नहीं देगा, बच्चे की तरह जैसे उसको कमरे बन्द कर देते हैं शरारतें करने पर, वो चुपचाप बैठ जाएगा। इधर-उधर देखने लग जाएगा। इस तरह यह भी अन्दर को जाएगा।

'सुन्न शिखर के पारा'

गगन क्या? त्रिकुटी कह लो, ब्रह्म देश कह लो, दसवां द्वार कह लो, सुन्न शिखर वहाँ यह टिक जाएगा।

पाठी– सुरत चढ़ाय गगन पर धाओ। सुन्न शिखर के पारा॥

मैनेजर साहिब जी– जब तक मन इधर-उधर भागता फिर रहा है, विषय-विकारों में है तब तक यह चल नहीं सकता। जाएगा फिर वापिस आ जाएगा, जाएगा फिर वापिस आ जाएगा। चार दिन बाद फिर गिर जाता है। कई प्रेमी हैं काफी दूर तक चले जाते हैं। लेकिन यह विषय-विकार ही हैं जो पीछे खींच लाते हैं। हाँ जीः-

पाठी– सत्त पुरुष का रूप दिखाऊँ। अलख अगम दर सारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि इसको इन्द्रीयों के भोग न दे, विषय विकार न दे तो अन्दर चल पड़ेगा। ब्रह्म देश से दसवें में आगे सचखण्ड में पहुँच जाएगा। आगे सतगुरु का रूप, अलख में पहुँच जाएगा। अगम में पहुँच जाएगा जहाँ मनबुद्धि पहुँचती ही नहीं, यहाँ ख़्याल ही नहीं पहंचते। यह तब है जब इसको विषय विकार न दे।

पाठी– ता के आगे सतगुरु। निज रूप हमारा॥

मैनेजर साहिब जी– अनामी कहो अलख, अगम से परे, सचखण्ड से परे कहते हैं कि मेरा रूप है। अगर तूं इस रूप को देखना चाहता है तो विषय विकार छोड़। मैं तो आया ही लेने के लिए हूँ पर तू ही नहीं जाता। अगर तू विषय विकार छोड़े तब जा सकता है नहीं तो नहीं जा सकता।

पाठी– ता के आगे सतगुरु। निज रूप हमारा॥
धीरज धरो करो सत्संगत। मेहर दया से लेऊँ सुधारा॥

मैनेजर साहिब जी– अब कहते हैं कि जल्दी का काम ही नहीं कि तू चाहे तो जल्दी पहुँच जाए। यह जल्दी का काम भी शैतानी है। यह धीरज का काम है। युगों के युग हो गए हमें मालिक से बिछुड़े। हमारी आत्मा पर मैले चढ़ती ही गईं। उनको साफ करने के लिए समय चाहिए। यह दो दिन बैठता है तभी घबरा जाता है कि मन तो टिकता नहीं, बनता तो है नहीं कुछ। चल भई कौन करे, उठकर बैठ जाता है। आप ही तारेगा सतगुरु। छोड़कर परे हो जाता है। फिर कहता है, केहड़ा रब्ब है? केहड़ा सतगुरु है? केहड़ा खुदा है? यह तो छोड़कर परे हो जाएगा या फिर बैठने से हट जाएगा। कहते हैं कि यह शांती का काम है। धीरज का काम है। अगर आज हम कणक बीजें और कल को कहे कि फसल काट लें तो मुश्किल है। उसके लिए छः महीने लगते हैं। इसी तरह यह जल्दी का काम नहीं।

धीरे धीरे रे मना धीरे ही सब होय।
माली सीचे सौघड़ा ऋतु आये फल होय॥

(कबीर साहिब)

कहते हैं कि धीरे-धीरे सब कुछ होता है।

कबीर धीरज के धरि हस्ति सवा मन खाय।
एक टुकड़े के कारिणी स्वांग करे सौ जाय॥

हाथी ज्यों सुबह से खाने लगता है आहिस्ता-आहिस्ता सवा मन ज्वार शाम तक खा जाता है। इस तरह एक कुत्ता एक टुकड़े के लिए घर-घर घूमता है। कि तू तो चाहता कि जल्दी मिल जाए। कहते हैं कि जल्दी का काम नहीं। धीरज से, शांती से, सब्र से, सन्तोष से मिलता है। सब्र की ज़रूरत है, सन्तोष की ज़रूरत है। सब्र किसे कहते हैं? पूरी कोशिश करे पर कुछ हासिल भी न हो फिर भी मालिक का शुक्राना करे। इसका नाम है सब्र। उसका नाम सब्र। कहते हैं सब्र रख, धीरज रख। जैसे कहते हैं वैसे ही लगा रह।

पाठी– धीरज धरो करो सत्संगत। मेहर दया से लेऊँ सुधारा॥

मैनेजर साहिब जी– सत्संग में आता रह, सोहब्बत करता रहता है। कि मैं तो आया इसलिए हूँ। मुझे और काम नहीं। वो सतगुरु, वो मालिक, आदमी के चोले में आकर सख़्त सर्दी, गर्मी सहता है। गुरुनानक साहिब से चक्कीयां पिसवाई। कसूर में कोढ़ी के घर रहे। किसी ने भी अन्दर नहीं आने दिया। शम्मस तबरेज़ की खाल उतार दी। किसलिए उतारी खाल? पूज्य मस्ताना जी यहाँ गीले टिब्बों में रहते रहे हैं। बड़ी-बड़ी तकलीफें काटीं। हमारे लिए फोड़े झेले। किस लिए? हमारे लिए। कहते हैं कि मैं तो आता ही इसलिए हूँ। वो आते ही इसलिए हैं कि जीवों को ले जाएं और काम नहीं। वो तो हर वक्त दया रखते हैं पर हम नहीं चलते। हम कहना नहीं मानते कि जैसे मां बाप बच्चों को संभाल करते हैं कि कब उठे और अपने पैरों पर खड़ा हो जाए। कब काम संभाले। इस तरह सतगुरु भी संभाल करता है। मोह माया छोड़े तो यह घर पहुँचे।

पाठी– वह तो रूप दिखा कर छोडूँ। तुम जल्दी क्यों करो पुकारा॥
तुम्हरी चिंता मैं मन धारी। तुम अचिंत रह धरो पियारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि जल्दी का काम नहीं, मेरा तो काम ही यही है और काम नहीं। मैं तुम्हें वो असली रूप दिखाकर ही छोडूंगा, ऐसे नहीं। अब नहीं तो अगले जन्म में सही। उसमें नहीं तो फिर अगले जन्म में सही। इसकी तरफ से देरी है। उसकी तरफ से कोई देरी नहीं। पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि स्वामी जी के, गुरुनानक साहिब के, कबीर साहिब के जीव अभी तक यहाँ घूम रहे हैं। जिस चोले में सतगुरु आता है वही आ कर उसको पकड़ लेता है पर वो छोड़ता नहीं, हर वक्त साथ रखता है। एक दो प्रेमी हैं वो गुरुनानक के समय के हैं। उनको इतवार नहीं आता पर सतगुरु छोड़ता नहीं। धनी धर्मदास जिसका हम शब्द बोलते हैंः-

'कहे कबीर सुनो धर्मदासा'

धर्मदास के पीछे लगा ही रहा। आखिर ले ही गया पर छोड़ा नहीं। कभी लड़का बन कर आ गए, कभी बाप बनकर आ गए। कभी कैसे, तो कभी कैसे, पर छोड़ा नहीं। सतगुरु आकर पड़कर लेता है। अन्दर नाम का बीज डाल देता है, पर उसको छोड़ता नहीं। उसको अपने गुरु की लाज है। नरकों में भी चला जाता है तो वहाँ से भी निकालकर लाता है। पर छोड़ता नहीं। सच्चे पातशाह ने एक बार फरमाया कि एक रूह बाबा जी की चिताई हुई थी। कुसंगत में आ गई। नरकों में चली गई। बाबाजी ने हमें कहा कि जाओ निकाल कर लाओ। हम गए

उसको पूछा कि तुझे सिमरन याद है? कि नहीं। सरूप याद है? कि नहीं। कि मेरी आवाज़ सुन रही है? कि हाँ। कि मेरे पीछे-पीछे आ जा। नरकों में से निकाल कर लाए। कोढियों के कोढ़ खाने में गए। हालांकि बाबा जी का चिताया हुआ था। बाबा जी की निन्दा की, स्वामी जी की निन्दा की। वचन निकल गया कुदरती कि जा कोढ़ी हो जा। पहले तो तेरा एक जन्म में छुटकारा हो जाता लेकिन अब कई जन्म लगेंगे। अपनी निन्दा तो फकीर बर्दाशत कर लेते हैं मगर अपने मुर्शिद की निन्दा नहीं बर्दाशत कर सकता। फिर कोढ़ी के पास गए वहाँ। हुक्म माने, भजन सिमरन करे, मन से मुकाबला करे। हाँ जीः-

पाठी– संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीत और परतीत संवारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि पूरे संशय छोड़कर, पूरा प्रेम पैदा करे, पूरा भरोसा रखे कि सतगुरु तुझे ले जाएगा। अगर भरोसा है तो भजन सिमरन करेगा। अगर भरोसा है तो विषय विकार भी छोड़ेगा। हमने देखा है हालांकि जब नाम देते हैं तब सिवाय सिमरन के, सिवाय भजन सिमरन के किसी और चीज़ को नहीं मानना। लेकिन फिर भी दुनिया मान रही है। फिर आगे कैसे तरक्की करे? गुरुनानक साहिब ने कहा हैः-

एतु मोहि डूबा संसारु॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि॥
एतु मोहि फिरि जूनी पाहि॥ मोहे लागा जम पुरि जाहि॥
गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि॥ ना मोहु तूटै न थाइ पाहि॥
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ॥ नानक हरि सिउ रहै समाइ॥

(356/7 मः 1)

कि यह मोह माया का ऐसा भयानक समुद्र है जिसमें सब रुड़ते जा रहे हैं। यह गुरु दीक्षा लेकर भी, नाम लेकर भी, सिमरन लेकर और-और जपों तपों में, और झगड़ों में पड़ी है दुनिया। फिर दुनिया का मोह कैसे छूटे? कैसे अन्दर चढ़ाई हो? कैसे अन्दर मालिक मिले? कल कुछ प्रेमी आए, साथ एक बीबी थी। कहने लगी कि मुझे नाम लिए सात साल हो गए पर बला छोड़ती ही नहीं कि कौन सी बला? वो मेरी बहन है। उसको उसकी बहन नहीं छोड़ती। हमने कहा कि भई भजन सिमरन किया कर। कहने लगी कि भजन तो मैं दो-दो घण्टे करती हूँ। कि फिर सिमरन से तो बड़े-बड़े भूत निकल जाते हैं। फिर कैसे? कि मैं तो रोटियां खिला खिला कर थक गई। बस फिर! रोटियां खिलाएंगे तो आएंगे ही। फिर यह मन बड़ी वला है। वो रूप धार लेता है पता नहीं नरकों, में कहीं स्वर्गों में है। कौन

सी चीज़ है? वो यह रूप धार कर आ जाता है। फिर रोटियां खिला खिला कर मनाओगे तो फिर वो अपने आप ही आएगा। फिर कहने लगी कि अब मैं नहीं खिलाऊंगी। सो यह बात है कि यह छोड़ता ही नहीं। भरोसा ही नहीं आता जल्दी। अगर भरोसा रख कर करे! जितने जप, तप, कर्म, धर्म सब छूट जाए सिवाय सिमरन के। सिवाय सतगुरु से, बड़ा कोई नहीं है। जो दोनों तरफ चलते हैं वही ज़्यादा मुसीबत में फंसते हैं। फिर वो ज़्यादा पकड़ती है कि मैंने रोटी खिला दी फिर भी पीछा नहीं छोड़ती। बात तो यह कि भरोसा नहीं आता। भरोसा रखे, सतगुरु को तेरा ही फ़िक्र है। हाय! हाय! कि आप को भी सतगुरु ने कहा हैः-

पाठी– संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीत और परतीत सँवारा॥
यह करनी मैं आपि कराऊँ और पहुँचाउँ धुर दरबारा॥

मैनेजर साहिब जी– पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि एक नौकर बैठा है दुकान पर, ग्राहक आए या न आए उसकी तनख्वाह तो खरी है। इसी तरह अगर हुक्म मान कर बैठो, तो आप की भी मज़दूरी खरी है सतगुरु के दरबार में। आपका भजन भी खरा है। चाहे मन लगे या न लगे। अगर बिठाए तो धीरे-धीरे अपने आप ही लगने लग जाता है। यह बिठाता ही नहीं। अगर बिठाए तो धीरे-धीरे लगने लग जाता है कि मैं आप ही करवाऊँ तो तू फ़िक्र न कर। सब कुछ हुक्म मान कर बैठ। हुक्म मानना ही भजन है। सन्तमत का आला से आला असूल यही है। तत्त कह लो, यही है कि हुक्म मानना, बस! लेकिन वो कौन सा वचन है? भजन सिमरन का, मन से मुकाबला रखना। वो कौमों मज़हबों के झगड़ों में नहीं डालते। लड़ाई-झगड़ों में नहीं डालते। जैसे कि अबोहर का केस हुआ। ऐसे नहीं करवाते। ऐसे नहीं वो करवाते, समझे न। वो भजन सिमरन करवाते हैं, लड़ाई नहीं। लड़ाते हैं तो मन से या इन्द्रीयों से, वो दुश्मन हैं। और दुनिया में इसका कोई दुश्मन नहीं। और दुनिया में इसका कोई दुश्मन नहीं, न कोई कौम, न मज़हब, न कोई देश है, न कोई यार दोस्त, यह मन ही दुश्मन है और कोई नहीं। आत्मा का दुश्मन यही है और कोई नहीं। पूज्य मस्ताना जी कई बार कहा करते थे कि सच्चे पातशाह का हुक्म है कि तीन बजे उठकर बैठो। अगर तो हुक्म मानकर तीन बजे बैठे, फिर तो सतगुरु भी कहता है काल को कि देख भई! मेरा हुक्म मान कर बैठा है, मेरा बच्चा है। अगर नहीं बैठता तो काल कहता है कि मेरा बच्चा है। बस इतनी ही तो बात है। सतगुरु को खुश करने के लिए उसका हुक्म मानकर भजन पर बैठो, मन लगे या न लगे। मन से मुकाबला रखो और कोई भजन नहीं। मन ही दुश्मन

है सतगुरु का। यही दूर रखता है भजन से, यही कहता है कि न बैठ। यही कहता है कि विषय विकारों में जा। यही कहता है कि यह धंधे कर। यहीं कहता है कि फलाने को पूज। कोई और कहता है? वह इसी का काम है और किसी का नहीं। यह काल का ऐजण्ट है। इसका काम है सतगुरु से दूर करना और कोई काम नहीं, बस। इसका काम ही सतगुरु से दूर करना है। गुरुनानक साहिब कहते हैंः-

मनु मैगलु साकतु देवाना। बन खंडि माइआ मोहि हैराना॥ (415/6 मः1)

मन एक मस्त हाथी की तरह है, जो मोह माया और विषय विकारों के जंगलों में भटकता फिर रहा है। कभी स्त्रीयों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी रिश्तेदारों का प्यार। कभी कौमों मज़हबों के झंझट, कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों में घूमता है। यह काल का ऐजण्ट है।

इत उत जाहि काल के चापे॥

इसका काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना, मालिक की तरफ नहीं जाने देना। भगति भी अपने दायरे की कराएगा, लेकिन सतगुरु वाली नहीं करने देगा। कहते हैं कि वो वचन नहीं मानने देगा और अपने वचन मनवाएगा। यह अपने वचन मनवाएगा। इसकी खटपट खत्म न हुई। इसकी खटपट खत्म हो जाए तो फिर काम ही बन जाएगा। फकीर का वचन नहीं मानने देगा। आप ही और जगह ले जाएगा। वो वचन नहीं मानने देगा, बस! उसका वचन नहीं मानने देगा।

इत उत जाहि काल के चापे॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥ (415/7 मः1)

कोई विरला फकीर है जिसने फकीरों के वचन को माना है। जो अन्दर गए हैं, जिन्होंने गुरुमुखों की सोहब्बत की है, वो ही इसकी चाल को जानते हैं और कोई नहीं। सब को भरमाता और भटकाता है। पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि देखो भई! कि हिन्दुस्तान में कितने वकील हैं। हम ने कहा कि जी करोड़ों। कि काल का एक ही वकील है, जो सबको भरमा रहा है। कि काल का एक ही वकील है जो सबको भरमा रहा है, हाँ जी। इसका एक इलाज है डण्डा और कुछ नहीं। जैसे गधे पर अढ़ाई मन भार न रखो तो वो टैं-टैं करने से हटता नहीं। इस तरह इस पर डण्डा रहे, बोझ रहे सिमरन का या सेवा का, तो यह सीधा होता है, नहीं तो होता ही नहीं।

पाठी– यह करनी मैं आपि कराऊँ। और पहुँचाउँ धुर दरबारा॥

मैनेजर साहिब जी– यही सवाल एक प्रेमी ने सच्चे पातशाह के आगे किया कि जो करे सतगुरु आप ही करता है। यही वचन कियाः

'जह करनी मैं आपि कराऊं'

सच्चे पातशाह जी ने फरमाया कि कर तो रहा है आप और कैसे करे? आदमी का चोला पहनकर आता है, हमें समझाता है कि ऐसे भजन कर। अब यह न माने तो क्या करें। फिर कहता है कि विषय विकार छोड़ दे। अब छोड़े न तो वो क्या करें? काम न छोड़ा, क्रोध न छोड़ा, निन्दा, चुगली न छोड़ी, ईर्ष्या, द्वैत नहीं छोड़ी तो फिर जाए कैसे? वो तो कहते हैं कि इन चीज़ों से बचो। दुनिया के ख़्याल छोड़ो। यह न छोड़े तो वो क्या करें? निन्दा, चुगली नहीं छोड़ी, ईर्ष्या, द्वैत नहीं छोड़ी तो फिर जाए कैसे? मुसलमान फकीर इकट्ठे होकर गुरु अर्जुन साहिब के पास आए। मालिक से मिलने की बात चली तो उन्होंने फरमाया :-

अल्लाह अगम खुदाई बंदे॥ छोडि खिआल दुनिआ के धंधे।

कि अल्लाह अगम क्या? मन बुद्धि की गमता से परे है। वो तो बहुत ऊँची चीज़ है, वो परे से परे है। दुनिया के ख़्याल छोड़। तू इसी में फंसा पड़ा है। दुनिया के ख़्यालों को छोड़ो, कौमों, मज़हबों को छोड़ो। कई बार कह देते हैं कि कौम मज़हब फकीरों ने बनाए हैं। यह कौम मज़हब, शरीयतें वगैरह फकीरों ने नहीं बनाईं। यह सब बाद में हमने बनाई हैं। कौम मज़हब हमने बनाए हैं। उन्होंने कुछ नहीं बनाया। वो तो कहते हैं कि जीवित मरो। जब जीवित मरा तो ईर्ष्या, द्वैत सब निकल गए। कौम मज़हब यार दोस्त सब छूट गए। मुसलमान फकीर ने लिखा है:

'मौतोबा किबल अंत मौतोबा॥'

अर्थात मरने से पहले मर। (हज़रत मुहम्मद साहिब)

'दादू पहले मर रिहो पाछे मरे सब कोय॥' (दादू साहिब)

'जीवितु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतर पाइ॥' (550/3 म : 3)

यह तो पहले मरने का सवाल है।

जब लग आस शरीर की, मृतक हुआ न जाए।
काया माया मन तजे, तूरे रहे बजाये॥

(कबीर साहिब)

सब छोड़कर भी कर तब तक भी मरा न समझो। यह सब ख़्याल छोड़ने पर है। जिस्म का प्यार भी छोड़े।

अल्लाह अगम खुदाई बंदे। छोडि खिआल दुनिआं के धंधे।
होइ पै खाक फकीर मुसाफर इहु दरवेसु कबूल दरा॥

कि सब ख़्याल छोड़कर फकीर की शरण में जा। उनका हुक्म मान कि जैसे

हम कहते हैं उनकी चरण धूल में जा। उनका हुक्म मान, उनकी चरण धूल मान, बस यह बढ़िया चीज़ है। उनका हुक्म मानना ही भजन है। यही बन्दग़ी है, यही इबादत है और कोई नहीं। यह दरवेशी कबूल है मालिक की दरगाह में और कोई नहीं। यह फकीरी कबूल है। यह भक्ति कबूल है।

सचु निवाज यकीन मुसल्ला मनसा मारि निवारहु आसा॥

क्या? यकीन का मसल्ला रख। उस पर, पूरे मुर्शिद पर, उस पूरे फकीर पर, भरोसा रख। फिर जो कुछ वो कहता है, वो सही है। उस पर बैठकर सच की नमाज़ पढ़। जैसे वो कहता है। हमारी नमाज़ें कौन सी हैं? यह सच की नहीं हैं। यह सच की नहीं हैं, सच की क्या है? शब्द को पकड़ना। कहते हैं कि उनका हुक्म मान कर शब्द को पकड़, भजन कर, आशा तृष्णा को मार, विषय विकार छोड़, दुनियां के ख़्याल छोड़।

'सचु निवाज यकीन मुसल्ला।'

यकीन का मुसल्ला। उनका मुसल्ला तो कपड़े का होता है। वो कहते हैं कि यकीन के मुसल्ले पर बैठ। आशा तृष्णा को मार।

'देह मसीति मनु अउलाणा॥'

मसीत कौन सी? यह शरीर। इसमें बैठकर भजन कर। इसमें नमाज़ पढ़। जैसे मौलवी नमाज़ पढ़ाता है। ऐसे ही मन से नमाज़ पढ़। गुरु नानक साहिब एक बार कहीं गए। पता नहीं कौन सा बादशाह था। पता नहीं कौन मौलवी था। वो कहने लगा कि आप भी नमाज़ पढ़ो। कि अच्छा। जब वो नमाज़ पढ़ने लगा और पढ़कर कहने लगा कि आपने नमाज़ नहीं पढ़ी। गुरु साहिब कहने लगे कि किसके साथ पढ़ता? कि हमारे साथ। कि तू तो फलानी जगह घोड़े खरीद रहा था। सो हमारी घोड़े खरीदने वाली तो नमाज़ें हैं। यह मन ही मौलवी है। यही काबू नहीं आता। यही मौलवी है। इसने पढ़ाना है हमें यही काबू नहीं आता। यही भागा दौड़ा फिर रहा है। इसको काबू करे। इसको अन्दर बिठा कर नमाज़ पढ़े।

'कलम खुदाई पाकु खरा॥'

अगर वो नमाज़, वो कलमां अच्छी तरह से पढ़े। तो वो नाम, वो कलमा दुनिया के ख़्याल तोड़ने से झट आ जाए। कई प्रेमीयों ने बताया आ कर भजन पर पूरा रस नहीं आया। अगर पूरा न आए थोड़ा सा भी आ जाए तो यह मस्ती ही नहीं सही जाती। बाकी क्या? सो यह नमाज़ें हैं। एक बार एक बादशाह की लड़की जा रही थी। एक मौलवी नमाज़ पढ़ रहा था। अब जब वो नमाज़ पढ़ रहा

था वो उसके आगे से निकल गई। उसने देख लिया। अब औरत आगे से निकल जाए तो उनकी नमाज़ ख़राब हो जाती है। कज़ा हो जाती है। वो ज्यूं गालियों पे गालियां देने लगा कि कहाँ से आ गई। मेरी नमाज़ ख़राब कर दी, कजा कर दी। यह हो गया वो हो गया। अब वो बादशाह की लड़की थी। वो डर गया। वो आगे खड़ा हो गया और कहने लगा कि बीबी जी मुझे माफ कर दो। कि क्या? कि मैंने तुझे गालियां निकाली। कि मुझे तो पता ही नहीं। कि क्यों निकाली? कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था तू आगे से निकल गई। मेरी नमाज़ ख़राब हो गई तब गालियां निकाली। कि तू कौन सी नमाज़ पढ़ रहा था? कि अल्ला की, कि मुझे तो पता नहीं कि तू नमाज़ पढ़ रहा है। लाहनत है तेरे को और तेरी नमाज़ पर। यह मन मौलवी ख़राब करता है। बस यही टिकने नहीं देता। इसका मुकाबला ही भजन है और कोई नहीं। तब तो यह सीधा होता है नहीं तो नहीं।

पाठी– यह करनी मैं आपि कराऊँ। और पहुंचाऊँ धुर दरबारा॥

मैनेजर साहिब जी– उनकी मेहर तो हर समय है, मिनट-मिनट में है। हर वक्त संभाल करता है। पहले तो कई-कई जन्म देते थे। लेकिन अब इतनी मेहर है कि आगे बिठाकर भजन करवा लेते हैं। पर यहाँ का एक दिन का भजन वहाँ हज़ार साल के भजन के बराबर है। जल्दी जन्म नहीं देते। हमने कई प्रेमीयों का सुना है। जैसे थोड़ा समय हुआ नाम लिए, सतगुरु उसकी भी संभाल करता है। अगर अच्छी तरह भजन करता है तो महीना पहले ही पता चल जाता है। अगर कुछ थोड़ा करता है तो दस पन्द्रह दिन पहले पता चल जाता है। अगर उससे भी कम करता है तो पांच छः दिन पहले भी पता चल जाता है। नहीं तो मौके पर ज़रूर पता चल जाता है। एक प्रेमी ने सुनाया कि एक आदमी था वह शराब बहुत पीता था। सवा साल हुआ अभी उसे नाम लिए। मौत हो गई। बीमार हुआ तो किसी को पता ही नहीं कि अभी तो अच्छा भला था। अच्छे भले ने सभी को कह दिया कि आज खेत न जाना, काम पर न जाना। पता लग गया न पहले ही। शाम को एक हिचकी सी आई। कहने लगे कि गोली दो। कहने लगा कि क्या खानी है। गोली पर जो लेना देना था वो भी खत्म किया। अगले दिन रिश्तेदार भी आए तो उसका शरीर वैसे का वैसा ही पड़ा रहा। नहीं तो दुनिया देखो कैसे लकड़ी की तरह अकड़ जाता है, काला-पीला हो जाता है पर वो वैसे ही रहता है।

हम एक बार जब अहमदगढ़ थे, मक्खन के घर मजलिस रखी। वो भण्डारे के दिन ही थी। वो पहले ही रखवा रहा था। हमने कहा कि इस दिन ही रख।

अगला हफ्ता वही हैं। वहाँ गए अभी दरवाज़े तक ही गए कि उसकी मां चोला छोड़ गई। शाम का वक्त था। कहने लगी कि मुझे शब्द सुनाओ। शब्द सुनाया। तभी कहने लगी सतगुरु आ गए। कहने लगी कि कुर्सी लाओ। मैं चली। अब वो रोटी न बनाएं। हमने कहा भई रोटी बनाओ खाओ। फिर रोटी भी खाई और खूब नाचे। दूसरे दिन उसका संस्कार किया। जब उसको दाग देने लगे तब भी उसका शरीर वैसे का वैसे ही पड़ा था। प्रेमी की मौत के वक्त यही खास बात है। अगर खास-खास प्रेमी बैठे हों तो वो ज़रूर बता जाए कि मैं जा रहा हूँ भई! सतगुरु आ गए। यह खास बात है। उसको हर वक्त ख़्याल है। मिनट-मिनट पर हमारी संभाल करता है। हाँ जीः-

पाठी– सतगुरु कहत सुनाई। जब जब जैसी मौज विचारा॥

मैनेजर साहिब जी– कि सतगुरु को तो हर वक्त ख़्याल है। इसी का फ़िक्र है कि कब यह अपने घर पहुँचे मैं तो बे-फ़िक्र हो जाऊँ। जब तक उसके चिताए हुए जीव अपने घर न पहुँच जाएं, इसको चिन्ता नहीं छोड़ती। इसका पीछा नहीं छोड़ती। उसको हर वक्त यही ख़्याल है कि कब यह पहुँचे। कि जब-जब मौज़ होती है, जब-जब देखता है कि जीव अब लायक है तो उसी वक्त ले जाने को तैयार है। पर यह जाने को तैयार नहीं। एक बार कृष्ण भगवान को कहा कि तेरे पास इतने स्वर्ग हैं, इतनी दुनिया को स्वर्गों में क्यों नहीं ले जाते? वो कहता है कि कोई जाता ही नहीं, मैं क्या करूं? कि स्वर्गों में कोई नहीं जाता? कि हाँ, कि ले आ कोई जाने वाला है तो। आगे गया एक सुअर मिला। उसने पूछा कि भई! स्वर्ग में जाओगे? कहने लगा सूरी के साथ सलाह करता हूँ। पहले तो यह कहा कि उसकी सलाह के बिना जाता ही नहीं। जब पूछा तो कहने लगी कि वहाँ रूढ़ियां हैं? कि नहीं। गन्द है? कि नहीं? फिर वहाँ क्या खाएंगे? सो हमारा हाल यह है। हमें तो खाने पीने का है आगे का पता कोई ही नहीं। वो हर वक्त ले जाने को तैयार है पर हम चलते ही नहीं।

पाठी– सतगुरु कहत सुनाई। जब जब जैसी मौज विचारा॥

मैनेजर साहिब जी– यह विषय विकार ही नहीं छोड़ते।

जब तलक विषयों से यह मन विरक्त हो जाता नहीं।
तब तलक साधक विचारा सच्चा सुख पाता नहीं॥

(कबीर साहिब)

पाठी– *सतगुरु सतगुरु कर मन मेरे। गुरु की मूरत अपने चेरे।*
कहे कबीर अगम अपारा अगाध। गुरु शरणां में रहे मन मेरे।
कहे कबीर गुरु बिनु इक दाता और न कोई।
तां मन के अन्दर गुरु गुरु होई।
इक गुरु नेड़े गुरु दूरे सतगुरु रहता हाजिर हजूरे।
सतलोक को गुरु धार दिखावै।
सतलोक बीच गुरु समाय सतलोक की गुरु बात बतावै।
सतलोक की गुरु बात बतावै। सतलोक गुरु पद पावै।
कहत कबीर सुनो सन्तों पूरे गुरु की करूं बडिआई।
उस सतगुरु की महिमा कही न जाई।
जिन सतगुरु से हम शब्द भेद गुरु पाई।
कहे कबीर सन्त मिले तो इतने चढ़े काल जाल यम चोट।
शीश निबाई गिर पड़े लाख पाप की पोट।
कहत कबीर सन्त जनां के नाम है शीतल तिन के अंग।
तपत बुझाय अरि अपने मन की फिर बजावे वो रकीब दे दे शब्द प्रसंग॥

मैनेजर साहिब जी– जिसने प्रेम से याद किया वहीं खड़े हैं! जिस ने प्रेम से याद किया वहीं खड़े हैं। देह नहीं। वो देह से अलग होते हैं।

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए।
जीआ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउलैनि मिलाए॥

(749/2 म : 5)

यही कबीर साहिब कहते हैंः-

मोहे न व्यापे जग की माया, कहन सुनन की है ये काया।
देह नहीं और दरसे देही, रहूं सदा जहां पुरख बदेही॥

कि यह देह दिखाई देती है इससे मेरा कोई ताल्लुक नहीं, सिर्फ समझाने के लिए! सिर्फ समझाने के लिए है। हमें बताने के लिए है। लेकिन वो देह से अलग है कि वो ऐसी हस्ती है कि हमें उसकी ताकत का पता ही नहीं। जब रानी इन्द्रमती अन्दर सचखण्ड में पहुँची तो क्या देखती कि सतपुरुष की जगह कबीर साहिब ही काम कर रहे हैं। उसने पूछा कि आपने वहाँ क्यों नहीं बताया कि आप ही सतपुरुष हो। कि कौन इतबार करता है? कि है तो हमारे जैसा। हमारी तरह खाता पीता है, हमारी तरह चलता फिरता है। कौन इतवार करता है? सच्चे पातशाह

पीटर की मिसाल दिया करते थे। पीटर रूस का बादशाह था। वो दरबार में सबकी देख-रेख करता था। वो थोड़ा आगे गया वहाँ खेतों में मज़दूर थे। उसको काम सीखने का मौका मिला। वहाँ रात को उनके साथ काम करना, रहना, उनसे बात करनी और उसने कहा बादशाह का एक आदमी है। उसको जानता हूँ। वो हमारी मदद कर सकता है। इस तरह वो भी कभी सतगुरु के चोले में आया, कभी गुरु अंगद साहब के चोले में कभी अमरदास के चोले में। हमारे जैसा चोला पहनकर आता है। हमें समझाता है। हमें समझा कर ले जाता है। पर हमें विश्वास आता ही नहीं। यह सब वो छोड़ता ही नहीं। यह आहिस्ता- आहिस्ता एक दूसरे को देख कर पर छोड़ता नहीं। अगर विश्वास आ जाए तो काम न बन जाए! कहते हैं कि यह मन का आशिक है। मन जैसे करता है वैसे ही करता है। पूज्य मस्ताना जी ने इतनी तसल्लीयां देकर समझाया। इतनी तसल्लीयां लेकर भी मन नहीं मानता। विश्वास आता ही नहीं।

पाठी– पीना चाहे प्रेम रस और रखना चाहे मान।
एक मयान में दो खड़ग कभी देखी न सुनी कान॥
जब तलक विषयों से यह मन दूर हो जाता नहीं।
तब तलक साधक विचारा सुख पाता नहीं॥
जो नहीं एकाग्र कर सकता है अपनी वृतियां।
उसको सपने में भी सतगुरु नजर आता नहीं॥

मैनेजर साहिब जी– चाहे कितना कर ले, मन को काबू करना अपने बस में नहीं। यह भजन सिमरन करे, इसको बिठाए तब यह काबू आता है। बाकी कितने ही साधन कर लो यह विश्वास आता ही नहीं। इसको विषय-विकार न दे। इन्द्रीयों में न फंसने दे। फिर यह बैठे तब यह आहिस्ता-आहिस्ता काबू आ जाता है। यह सीधा हो जाता है। जब तक यह खत्म न हो इसका कोई ऐतबार नहीं। यह तो सोचता कि मैंने काबू कर लिया लेकिन जब तक अन्दर रस नहीं आता सब बेकार है।

मैं जानू हरी से मिलूं मोमन मोटी आस।
हर बिच डारे अन्तरा, माया बड़ी पिशाच॥

(कबीर साहिब)

आग है इस पर मिट्टी डाल दो तो बुझ जाएगी मगर थोड़ी सी हवा चली,

एक मिनट में बस मिट्टी एक तरफ हुई और फिर लपटे निकलने लगीं। इस तरह भी अन्दर भी है।

पाठी– जो नहीं एकाग्र कर सकता है अपनी वृतियां।
उस को सपने में भी सतगुरु नजर आता नहीं॥
जब तलक.....
क्या हुआ वेदों के पढ़ने से जो न पाया भेद को।
आत्मा चीन्हे बिना ज्ञानी तो बन जाता नहीं॥
जब तलक.....
पाप कर्मों से सदा रहता है जिसका मन मलीन।
उस को सद उपदेश यह हरगिज हृदय भाता नहीं॥
जब तलक.....
मन लोभी मन लालची मन के मते अनेक।
मन के मारे मरे फरीदा मुल्ला काहे दी रोज़॥
जब तलक.....
लाली लाली वो हर कोई कहे सब के पल्ले लाल।
गांठी खोल देखे नहीं इस विधि भया रे कंगाल॥
लाल पड़ी मैदान में कीच रही लपटाय।
निगुरा ठोकर मार चला गुरुमुखि लई उठाय॥

मैनेजर साहिब जी– नाम तेरे अन्दर है। यह ख्वाहिशें ही रोके बैठी हैं। विषय- विकारों में नहीं। यह छोड़े तो मिले। यह विषय-विकार ही हैं जो नरकों के अधिकारी बनाते हैं।

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

सत्संग

'हर रंग विच आप समाइया है'

सत्संग के वचन

पाठी– यही तमन्ना है सतगुरु जी, मेरे दिल में हो प्यार तेरा।
करूं हमेशा मन के मन्दिर में, प्यारा प्यारा दीदार तेरा॥
यह मतलबी स्वार्थी है दुनिया, कोई किसी का न बन सकेगा।
न चाहूं मैं आसरा किसी का है चरणों का आधार तेरा॥
यही तमन्ना है सतगुरु.....

मैनेजर साहिब जी– यह कीमती बात है, सुनो भई! भजन बड़ा कठिन है। ख़्याल जो मौत के वक्त होता है जीव उस तरफ ही जाता है।

पाठी– ''सन्तों से प्यार करना और उनका हुक्म मानना ही निर्मल करनी है। हर व्यक्ति को मौत के बाद उसकी आशा, तृष्णा अनुसार ही अगला जन्म मिलता है। यदि शिष्य को अपने सतगुरु से सच्चा प्यार और विश्वास है। किसी भी संसारिक चीज़ की इच्छा नहीं और हर समय उनके मन में भजन सिमरन की इच्छा बनी रहती हैं चाहे प्रालब्ध कर्मों के ज़ोर से वह भजन सिमरन और सेवा में पूरा समय नहीं दे पाता हो तथा मन और काल जैसी विरोधी शक्तियां उसके रास्ते में सैकड़ों रुकावटें डालती रहती हैं फिर भी ऐसे शिष्य की आत्मा तरक्की करती है, भले ही उसे इस बात की अनुभूति न हो। ऐसे शिष्य को दोबारा जन्म नहीं मिलता। प्रालब्ध कर्मों के समाप्त होते ही उसकी आत्मा ऊपर के मण्डलों में उड़ान भर जाती है। आगे किसी ऊँचे मण्डल में बिठा कर सतगुरु भजन की कमी को पूरा करवा लेता है और आहिस्ता-आहिस्ता धुरधाम पहुँचा देते हैं।''

वचन– *परम सन्त सावन शाहः* हम तो यही कहते हैं कि अगर आप ज़्यादा मेहनत नहीं कर सकते तो अपने महात्मा के लिए, सतगुरु के लिए अधिक प्रेम पैदा कीजिए। अगर आप सन्त या गुरुमुख से वास्तव में प्यार करते हैं तो आप सोते, जागते उन्हीं का चिन्तन करते रहेंगे। मृत्यु के बाद आप कहाँ जा सकते हैं?

'जहाँ आसा वहाँ वासा।'

यही हमारे शास्त्रों का कथन है।''

मैनेजर साहिब जी– यह आसान से आसान तरीका है। बस प्रेम बना रहे। प्रेम है तो ख़्याल भी उधर जाएगा। यही भजन है। आना जाना तो ऐसे ही बना रहता है। इसको आगे ख़्याल ही ले कर जाता है। हाय! हाय! यह सच्चे पातशाह जी की चिट्ठी थी। एक अंग्रेज़ था, उसको लिखी थी। हाँ जी। दोबारा पढ़ भई! हम तो यह कहते हैंः-

पाठी– ''हम तो यह कहते हैं कि अगर आप ज़्यादा मेहनत नही कर सकते तो अपने महात्मा या गुरु के लिए अधिक प्रेम पैदा कीजिए।

मैनेजर साहिब जी– पर फकीर भी पूरा हो ऐसे ही न हो। हाँ जीः

पाठी– अगर आप सन्त या गुरुमुख से वास्तव में प्यार करते हैं तो सोते जागते उन्हीं का चिन्तन करते रहेंगे। मृत्यु के बाद आप कहाँ जा सकते हैं?

'जहाँ आसा तहाँ वासा'

यह हमारे शास्त्रों का कथन है।

मैनेजर साहिब जी– पर फकीर भी पूरा हो ऐसे ही न हो। प्रेम ही चीज़ है। जहाँ प्रेम है वहीं जाना है इसने हाँ जीः

पाठी– यह मतलबी स्वार्थी है दुनिया, कोई किसी का न बन सकेगा।
न चाहूं मैं आसरा किसी का, हो चरणों का अधार तेरा॥
यही तमन्ना है सतगुरु.....
मेरा यह तन मन भी है तेरा, तेरे हवाले है ज़िन्दगी भी।
तू मेरा मालिक मेरा स्वामी, मैं अदना खिदमतगार तेरा॥
यही तमन्ना है सतगुरु.....
न मांगू दुनिया की ऐशो इशरत, न ही मुझे कोई सुख चाहिए।
मिले जो मुझ को तेरी मुहब्बत शुक्र करूँ लख बार तेरा॥
यही तमन्ना है सतगुरु.....
भरोसे औरों के छोड़ सारे, मैं जी रहा हूं तेरे सहारे।
मेरी खताए न देख प्यारे, कि मैं दास हूं गुनाहगार तेरा॥
यही तमन्ना है सतगुरु.....

मैनेजर साहिब जी– हाँ फिर बोल! देख लो भई! उसके भरोसे ही यह डेरा बन गया। बोलो भई! नहीं तो खाली ही फिरते थे। हमने सोचा कि डेरों की सेवा ही

होती रहे। कहीं कुछ तो कहीं कुछ बस। साथ की साथ सब खत्म वहाँ। फिर यहाँ आकर बनाया बस! यह भरोसा रखो फिर बस! अपने आप सब काम करता रहेगा, याद रखो! दुख भी आएगा लेने-देने भी खत्म करने हैं। सुख भी आएगा। बस लगा रहे। हाँ जीः-

पाठी– भरोसे औरों के छोड़ सारे मैं जी रहा हूं तेरे सहारे।
मेरी खताएं न देख प्यारे कि मैं दास हूं गुनाहगार तेरा॥
यहीं तमन्ना है सतगुरु.....

मैनेजर साहिब जी– पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि यह काम देने वाला राम है। बाहर आते तो कहते मैनेजर! यह केसे बन गया इतना बड़ा। कहाँ से पैसा आया। सतगुरु आप ही करने वाला है। वाणी का भी शब्द है। एक लोगों को देखकर तसल्ली की है। भरोसा किया, कि फलाने का किया, फलाने का किया। हमने जपा फिर हमें भी भरोसा आ गया। अब सब काम करता है। सोचो! हाँः-

पाठी– हरि को नामु सदा सुखदाई॥
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हूं गति पाई॥रहाउ॥
हरि को नाम.....
पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई॥
ता को दूखु हरिओ करुणामै अपनी पैज बढ़ाई॥
हरि को नाम.....
जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई॥
(1008/5 मः9)

मैनेजर साहिब जी–हमें समझाने के लिए कहते हैं। देखो भई! द्रोपती की लाज रखी। जो जपते हैं उनके काम करने लग जाता है। मैंने भरोसा किया। मैंने छुटकारा कर लिया। यह हमारे लिए है।

पाठी– जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई॥
कहु नानक मैं इही भरोसै गही आनि सरनाई॥
हरि को नाम..... (1008/7 मः9)

मैनेजर साहिब जी– यह काम करने वाला राम है। पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि हमने तजुरबे किए हैं। तभी तुम्हें बताया है। यह जपे तब है। मीरां ने जपा, जहर का अमृत बन गया, सांप का हार बन गया। देख लो! संभाल की न, प्रहलाद की संभाल की न, बस यह काम देने वाला है। जपो सब काम करेगा। अपने आप

करता है। जो जायज़ है। सब करता है। यह हमारे समझाने के लिए है। तसल्ली के लिए है। यह देखो भई! कैसे बन गया। हाँ जीः-

पाठी– आपै आहू आपै चीता आपे मारण धाया।
आपै साहिब आपै बरता आपै ही मुल लखाया।
कदी हाथी ते अस्वार होया कभी ठूठा मांग पवाया।
कहीं रावण योगी भोगी हो की सांगी ने सांग बनाया।

मैनेजर साहिब जी–हाय! हाय!

पाठी– बाज़ीगर क्या बाज़ी खेली मैंनू पुतली बांग नचाया।
मैं उस पर तां ही नचदा हाँ जिस गत मित यार लखाया।
मौला आदमी बन आया, मौला आदमी बन आया॥
हर रंग विच आप समाया है, इक नुकते विच समझाया है।
कहीं शम्मस तवरेज कहाया है, कहीं मौलाना वन के आया है
कहीं नानक को प्रगटाया, कहीं नाम कबीर धराया है।
हुण सावनशाह बन आया है, इक नुकते विच समझाया है॥
हरि रंग विच.....
सावन महीने विच आके पपीया, स्वाती बूंद पिला के।
दुखी जीवा दा दर्द मिटा के बदल मेहरां दीआं झड़ीयां लाके।
सावनशाह नाम धराया है इक नुकते विच समझाया है॥
हर रंग विच.....

मैनेजर साहिब जी– रूस का बादशाह पीटर जहाज़रानी का काम सीखने गया। अब मज़दूर बन कर गया। ऐसे कौन रखता वहाँ! देख लो भई! मज़दूर बन कर गया। वहाँ पर वो लोग थे जो वहाँ से निकाले गए थे। जो उसके खिलाफ थे। वो आ नहीं सकते थे ज़िलावतन थे। उनके साथ अपने वतन की बातें किया करे। यह नहीं बताया कि मैं बादशाह हूँ। कहने लगा कि बादशाह के साथ मेरे अच्छे ताल्लुकात हैं। अगर आप चाहो तो मैं माफी दिला सकता हूँ। वो कहने लगे कि हमें कौन माफ करेगा? कि हो ही नहीं सकता। जब काम सीख कर वापिस आया, तो आगे उसका इस्तकबाल हो, स्वागत हो। वो आपस में बाते करने लगे कि भई! यह तो कोई बड़ा आदमी है। वो साथ गए तो अपने तख़्त पर बैठ गया। वो कहने लगे कि शुक्र है बादशाह मज़दूर का रूप धार कर हमें वापिस तो ले आया। इस तरह वो आता है कभी किसी चोले में, कभी किसी चोले में। जो इतबार करता

है वो ले जाता है। जो नहीं करता वो बस रह जाता है। हाय! हाय! पूज्य मस्ताना जी जेठ के महीने पन्द्रह-पन्द्रह दिन पानी नहीं मिलता था नहाने के लिए। सिरसा से लाते थे। जेठ के महीने में एक वृक्ष के नीचे बैठ कर गुज़ारा करते थे। बोलो! शुरू-शुरू में। बस, पीछे से यह हाल होता है। फिर कभी किसी को कैसे समझाया, कभी किसी को कैसे समझाया। किसी को कपड़ा देकर, कभी किसी को कुछ! बस! बड़े हिसाब से जीवों को निकालते हैं। नहीं तो कोई तैयार ही नहीं जाने को।

पाठी– सावन महीने विच आके पपीया, स्वाती बूंद पिला के।
दुखी जीवा दा दर्द मिटा के बदल मेहरां दीआं झड़ीयां लाके।
सावनशाह नाम धराया है इक नुकते विच समझाया है॥
हर रंग विच.....

मैनेजर साहिब जी– तौबा है भई! हाँ।

पाठी– ''सन्त जीवों के उद्धार के लिए मालिक के हुक्म से इस दुनिया में आते हैं। वे अपने अलौकिक आनन्द को छोड़कर इस मृत्युलोक में रहते हैं ताकि काल और माया के महा अंधकार के जाल से निकाल कर ले जाएं। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी फरमाते हैं कि हम भक्ति कर के, मालिक के अन्दर समा कर एक रूप बन चुके थे। हमारा दिल मालिक के चरणों की खुशी, शांती और आनन्द को छोड़ना नहीं चाहता था।

मैनेजर साहिब जी– यहाँ इंग्लैण्ड, अमरीका चले जाओ। बाहर की चार दिन ऐश, उनका मन नहीं करता छोड़ने को। उस खुशी को कौन छोड़े भई? बोलो! हाय! हाय! हाँ जीः-

पाठी– अब भी हमारी सुरत प्रभु के चरणों में रहने के लिए तड़प रही है और हमारा ध्यान उसी तरफ लगा रहता है परन्तु मालिक ने अपनी कार्यवाही के लिए हमें ज्यों-त्यों समझा बुझाकर इस दुनिया में भेजा है।

मैनेजर साहिब जी– पूज्य मस्ताना जी यहाँ टिब्बों पर रहकर गए हैं। रहने को मन नहीं करता पर क्या करें मजबूर हैं। लालपुर टिब्बे सर्दी वहाँ काटी। टिब्बे पर सारी सारी रात धूनी लगाकर बैठे रहते थे। हाय! हाय!

पाठी– इह विधि करत तपसिआ भयो। द्वैते एक रूप ह्वै गयो॥
चित न भयो हमरौ आवन कह। चुभी रही सुरत प्रभु चरनन मह॥
ज्यों त्यों प्रभ हम को समझायो, इम कह के इह लोक पठायो॥

(बचित्र नाटक/6)

मैनेजर साहिब जी– हमने उल्टा उनको दुख दिया है। शम्मस तबरेज की खाल उतार दी, पलटू को ज़िन्दा जलाया। कबीर के कितने बुरे हाल किए? कभी बांध कर दरिया में फैंका, कभी हाथ पांव बांधकर हाथियों को शराब पिला कर उनके आगे डाला। देखो भई! काल का देश। हाँ जी!

पाठी– शम्मस तबरेज़ साहिब फरमाते हैं कि :-''तुम क्या जानो हम कैसे मुर्ग हैं। अन्दर ही अन्दर, हर लम्हा, हर पल, हम क्या इच्छा रखते हैं। बाहर से देखने में चाहे हम इस दुनिया में फकीर मालूम देते हैं, तुम हमारी बड़ाई अन्दर जाकर देखो कि हम कैसे बादशाह हैं। बाहर से चाहे हम कंगाल मालूम होते हैं, तुम हमारे अन्दर झांक कर देखो कि हम कैसी खान है। हम खुद खण्डों ब्रह्माण्डों के बादशाह हैं। हमें क्या गम है। अगर हम आज इस शरीर रूपी कैदखाने में कैद हैं तो कब तक रहेंगे। हम सब ही इस जगह पर मेहमान हैं। हमारा इस जगह, इस दुनिया में आना, अपने बादशाह के साथ एक इकरार की वजह से है, जिसे हम निभा रहे हैं। जब तक हम इस गुदड़ी शरीर में कैद हैं, हम किसी को नाराज़ नहीं करते और न ही नाराज़ होते हैं।

मैनेजर साहिब जी– हाथ जोड़-जोड़कर, बोलो भई! हाय! हाय! देख लो। पता नहीं जीवों को कैसे लेकर जाते हैं। उस बुढढी की सेवा करनी पड़ती है। तब खुश होता है मालिक। छोटे से छोटा बने, दासों का दास बने। उसकी सेवा कौन करे? अब कोई भी नहीं। यह भी संभाल करनी पड़ती है। तौबा है, हाँ जीः-

पाठी– फिरदौस सचखण्ड की तरह हम पुरनूर प्रकाशमान हैं। हम प्रसन्न हैं, खुश दिल हैं और खुश खुल्क हैं।''

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! तब चीज़ मिलती है। दासों का दास बने।

दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई॥

(600/13 मः 3)

हाँ, जीः-

पाठी– काशी देखी, मथुरा देखी।

मैनेजर साहिब जी– मां तो थक जाती थी। ऐसे बनना पड़ता है देख लो भई! मां से अक जाते हैं, कोई किसी का नहीं बनता। पता नहीं फकीर कैसे लेकर जाते हैं। तौबा ही तौबा है बस! कोई भी जाने को तैयार नहीं, दुनिया बेगर्ज़ है। हाँ जीः

पाठी– काशी देखी, मथुरा देखी देखे तीर्थ सारे।
कहीं न मन का मीत मिला फिर आया सतगुरु तेरे द्वारे।
न रब्ब गंगा, न रब्ब मक्के विच किताबां आ न सके।
हिन्दु मुस्लिम लभ लभ थके, जिस ने लभणा ओह अन्दर लभे।
सावनशाह भेद बताया है, इक नुक्ते विच समझाया है।
हर रंग विच.....

''ऐसे सन्त महात्मा, रूहानी ताकतों के भण्डार मालिक की दरगाह से लेकर आते हैं। वह मालिक के खज़ाने के चाबी बरदार, खज़ानची हैं। जिन के द्वारा मालिक अपनी दौलत खुद लुटाता है। जब तक सन्त इन्सानी चोले में रहते हैं, वे मालिक के हुक्म से सब जीवों को प्रेम, प्यार और दीनता से समझाते रहते हैं कि यह मानस देह मुश्किल से चौरासी भुगतने के बाद मिली है। परन्तु नाम की भक्ति बिना ऐसे ही बर्बाद हो रही है और एक दिन यूं ही मिट्टी में मिल जाएगी, इस से लाभ उठा लो।

चिरंकाल पाई दुर्लभ देह॥ नाम बिहूणी होई खेह॥

(890/मः 5)

जितनी जल्दी हो सके इन संसारिक बन्धनों को तोड़कर आज़ाद हो जाओ।

मैनेजर साहिब जी– हाँ, जी किसी को फ़िक्र है कि आज़ाद होना है। आगे से आगे और बंधते जाते हैं। हाँ जीः-

पाठी– और अन्दर जाकर नाम धन प्राप्त करे जिसका खज़ाना सन्त मालिक की दरगाह से बांटने के लिए लाते हैं। जन्म-मरण के बन्धनों से आज़ाद हो जाओ।

मैनेजर साहिब जी– भीख मांगता है क्या?

पाठी– आज लुटा दे सरवस अपना मान ले कहना मेरा।
मिट जाएगा पल में तेरा जन्म जन्म का फेरा॥

परन्तु इस दौलत का कोई ग्राहक नहीं मिलता है।

मैनेजर साहिब जी– ग्राहक नहीं मिलता है। हाय! हाय! चीज़ मिलती है वो भी कोई नहीं मिलता।

पाठी– अगर मिलता भी है तो कोई विरला! यही कबीर साहिब फरमाते हैं कि मेरे अन्दर नाम रत्न धन की खान खुली है। जिसको मैं मुफ्त देता हूँ। परन्तु इस का कोई ग्राहक नहीं मिलता।''

नाम रत्न धन मुझ में खान खुली घट मांहि।
सीत मीत ही देत हूं ग्राहक कोई नाहिं॥

हाफ़िज़ साहिब फरमाते हैंः-

''या ख़ुदा! चारों तरफ अंधेरा छा रहा है। सब के सब बिल्कुल कोरे और रूहानियत से बिल्कुल बेख़बर नज़र आते हैं और इस धन का कोई ग्राहक नज़र नहीं आता है।''

मैनेजर साहिब जी– कोई ग्राहक नज़र नहीं आता। देख लो भई! हाल मुफ्त में चीज़ मिलती है। फिर भी नहीं लेते। फकीर लेते भी कुछ नहीं और छोड़ते भी कुछ भी नहीं। सोच लो! राजा जनक ने ज्ञान मांगा। अष्टावक्र ने कहा कि ज्ञान की दक्षिणा भी होती है। कि जी क्या? तन मन और धन। कि जी देने को तैयार हूँ। कि भई मुश्किल है। कि नहीं जी। कि देख ले। कि जी देख लिया। ठीक है फिर संकल्प कर दे। संकल्प कर दिया। तन मेरा है कि जी हाँ। जा फिर जूतियों में बैठ जा। एक बादशाह का रैइयत के सामने जूतियों में बैठना कोई आसान काम है? बैठ गया। अब उसका ख़्याल महलों में जाए, खज़ानों में जाए। अष्टावक्र कहने लगा कि महल मेरे हैं? कि हाँ जी। कि खज़ाने मेरे हैं? कि हाँ जी! इनकी तरफ ध्यान न दे। वो ख़्याल छोड़ा। फिर मन संकल्प विकल्प उठाता है। कि मन मेरा है? कि हाँ जी? कि इससे संकल्प-विकल्प न उठा। यह मुश्किल काम है। जब मन से लड़ाई की तो कामयाबी हुई। रूह ऊपर पहुँच गई। कि ज्ञान हो गया, कि जी हो गया। कोई कसर? कोई कसर नहीं। देखो! कि संभाल अपना तन मन और धन। फकीरों ने क्या करना है लेकर? अपने तन के लिए इतना बंदोवस्त करते हैं दूसरे का लेकर क्या करेंगे? सोच लो! अपना मन काबू नहीं आता, पराया लेकर क्या करेंगे? उनके पास वो खज़ाना है, जो कभी भी खत्म न हो।

पायो रे मैंने नाम रत्न धन पायो।
जिस को पाये दुख सुख भूले, मन आनन्द रे समायो।
जिस की चोरी कबहूं ना होये, ऐसा धन मैंने पायो।
खरचूं लाख खत्म ना होवै दिन दिन बढ़त सवाइयो॥

(मीरांबाई)

यह लेकर क्या करेंगे। संभाल अपना तन, मन और धन और अपना नहीं समझना, सतगुरु का समझना और सेवादार बन के काम करना। क्या लिया और क्या छोड़ा बोलो! बस यह बन्धन तोड़ने हैं इसलिए है। सब सतगुरु का समझे। सेवादार बन के काम करे। बाल बच्चों का भी काम करना। यह भी सतगुरु के हैं बस! क्या लिया और क्या छोड़ा बोलो! अपना न समझे, अहंकार न हो ज़रा भी, बस! यह है– गरीबी आए, अमीरी आए, दुख आए, सुख आए, बीमारी आए, तदरुस्ती आए। कुछ भी हो, बस यही करना मुश्किल है। काम तो थोड़ा है पर

यही कठिन है। दुनिया भी नहीं छोड़नी। यह काम कठिन है, हाँ जीः

पाठी– मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मरतबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर गुलो गुलजार होता है॥
मंदरा विच बजाई साजां विच मसीतां पढ़ीआं नवाजां।
पण्डित मौलवीआं दीआं सुणीयां आवाज़ां किसे ने बताया असली राजा।
वो भेद सावनशाह दर्शाया है इकु नुकते विच समझाया है॥
हरि रंग विच.....
देश इनामी तो चल आकर इन्सानी चोले विच डेरे लाके।
जात पात दा भरम मिटा कर सुरत शब्द दा भेद बता के।
सावनशाह ने सच्च दे रस्ते पाया है, इक नुकते विच समझाया है॥
हर रंग विच.....

मैनेजर साहिब जी– यह पढ़ भई! यह सुनो! फकीरी क्या होती हैः-

पाठी– गुरुनानक साहिब जब मक्का मदीना को जा रहे थे तो रास्ते में उन को शाह शरफ नामक एक फकीर अन्य हाजियों के साथ मिला। शाह शरफ ने जब गुरुनानक साहिब की फकीराना गुदड़ी देखी जो कई रंगों में होने के कारण न किसी मुसलमान और न किसी हिन्दू फकीर की लगती थी। तो वह हैरान हो गया और अन्य हाजियों से बोला कि इस फकीर से मैं फकीरी के बारे में सवाल करूंगा। अगर जवाब ठीक मिला तो फकीर कामिल है, वरना इसकी गुदड़ी और तसवीह सब छीन लूंगा। फिर उसने गुरुनानक के पास जाकर पूछा कि तुम कौन हो?

गुरुनानक साहिब ने उतर दिया कि सिवाए खुदा के और खुदा की बात फकीर से कुछ और पूछना तकसीर (गलत) है। क्योंकि फकीर दुनिया से नाउमीद (उदासनी) होता है।

शाह शरफ बड़ा हैरान हुआ सुनकर और चुप रह गया और दिल में कहने लगा कि यह तो कोई कामिल है जो ऐसा माकूल (उचित) जवाब दिया है। कुछ और सवाल करके देखूं क्या जवाब देता है? फिर कितने ही सवाल किए, जिन का जवाब गुरुनानक साहिब ने इस प्रकार दिया :-

पाठी– ***''अव्वल फकीरी फनाहअस्तः*** *फकीरी की शुरुआत अपने आप को मिटा देना है।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ, फकीरी की शुरुआत अपने आप को मिटा देना है। तब चीज़ मिलती है। देख लो! बीज सड़ गल जाता है तब फूल फल बनता है। अपनी हस्ती को मिटाए। हाय! हाय!

पाठी– ***आखिर फकीरी बका अस्तः*** *फकीरी की इन्तिहा (चरम सीमा) सदा की ज़िन्दगी प्राप्त करना है।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ, यह असली चीज़ है। **''दाना खाक में मिलकर गुलो गुलजार होता है।''**

पाठी– ***खाना ए फकीरी मुसल्लम अस्तः*** *फकीरी का घर, मुसल्लम अर्थात पूरा और पक्का भरोसा है यानि पूरे और पक्के भरोसे में रहना है।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ, पक्का भरोसा रखे। हाय! हाय! कि अन्दर है, इसे प्रगट करना है। सही रास्ता है पर भरोसा आता ही नहीं। दो दिन इधर, दो दिन उधर, फिर दो दिन बैठता है कि कुछ नहीं मिला, दर्शन नहीं हुए दो दिन में। हाँ जीः-

पाठी– ***कुलीदे फकीरी खामोशी अस्तः*** *फकीरी की कूंजी, ज़ुबान बन्द रखना अर्थात कम बोलना है और ताकत को हज़म करना है।*

मैनेजर साहिब जी– कम बोलना, बातें कर-करके इधर-उधर ख़्याल डाल लिए। बाहर की बातें जितनी कम करे, उतना ही ठीक है। जितनी बाहर की बातें करता है उतना ही मालिक से दूर होता है। हाँ जीः

पाठी– ***मकबरा-ए फकीरी हलीमी अस्तः*** *फकीरी की आरामगाह नम्रता और दीनता है।*

मैनेजर साहिब जी– दीनता! दीन बने तब है। चलों हो गया जो हो गया, खड्डे में पड़े। अपने आराम से रहो तब है एक बार झगड़ा पड़ जाएगा तो कुलों के कुल खत्म, बस! हाँ जीः

पाठी– गंज-ए फकीरी पाबोशी अस्तः *फकीरी का खज़ाना सेवाधारी जोड़े-झाड़ने वाला बनना है। अर्थात सबके चरणों की धूल बनना है।*

मैनेजर साहिब जी– यह खज़ाना है। सेवाधारी जोड़े झाड़ने वाला बनना है। पहले पूज्य मस्ताना जी को सन्त कह देते या कोई सतगुरु कह देते कोई कुछ कह देते तो कहते कि नहीं भई हम तो सेवादार हैं। फिर जोड़े झाड़ने वाले। कहने लगे कि वो तो गुफा में है। वो कहते बुल्ला देखना हमारी जूतियां संभालना भई! उनकी जूतियां संभालते थे। वहीं पहरे पर खड़े रहे। हाय! हाय! फकीरी बहुत कठिन है, तौबा है।

पाठी– तरीक-ए फकीरी बेदारी अस्तः *फकीरी का तरीका जागना है।*

सोजने-फकीरी अकल अस्तः *फकीरी की सोजन (सुई) अक्ल और विवेक विचार से काम लेना है। सत्य असत्य को परखना है।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ, कि भजन की तरफ ख़्याल जाता है कि कहीं दुनिया के

ख़्याल तो नहीं पड़े। अच्छी तरह ख़्याल रखो, बस! छोटी-छोटी बातों से भजन खत्म हो जाता है। कैसे देसराज, ठीक है न! हाँ, पुराना प्रेमी है भजन मण्डली का।

पाठी– रेशम ए-फकीरी दीदार अस्तः *फकीरी का रेशम अर्थात उत्तम से उत्तम वस्तु मालिक का दर्शन करना है।*

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी! मालिक के दर्शन करना है बस भई लगे रहना है।

पाठी– लुकमा-ए फकीरी सबूरी अस्तः *फकीरी का लुकमा (ग्रास) सबर और सन्तोष है। अर्थात सन्तोष में रहना है।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ, यह लुकमा है। सब्र, भूखा रखे, नंगा रखे, ज्यों भावै त्यों राखि ले।

पाठी– खिर्का-ए फकीरी रासती अस्तः *फकीरी का लिबास (पहरावा) सच्चाई है। अर्थात दिलों दिमाग में सच्चाई हो और दिल सच्चा हो।*

मैनेजर साहिब जी– पढ़ते ही नहीं जन्म साखी में तो साफ लिखा है फारसी के लफ़्ज़ों में हाँ जीः

पाठी– कफनी-ए फकीरी जिन्दा मुरदन अस्तः *फकीरी की कफनी, अपने आपको ज़िन्दा मारना है।*

मैनेजर साहिब जी– यह कफनी है। कफनी तो वैसे ही पहने फिरते हैं। यह तो जीवित मरना है। हाय! हाय! एक मुसलमान फकीर था। उसके पास एक आदमी आकर कहने लगा कि मुझे कफनी चाहिए। कि क्यों? कि मुझे भी फकीर बनना है। वो कहने लगा कि बता अगर बीबी के कपड़े किसी मर्द को पहना दे तो बीबी बन जाएगा? कि नहीं जी। अगर मर्द के कपड़े बीबी को पहना दे तो वो मर्द बन जाएगी? कि नहीं जी। कि फिर कफनी पहन कर तू फकीर कैसे बन सकता है?

ऐसे ही एक और वाक्य है कि आदमी आया और कहने लगा कि कोई रास्ता बताओ कि मालिक का ख़्याल आए। वो कहने लगा कि दुनिया को मालिक की तरफ लगाना कहीं अपनी तरफ न लगा लेना। हाँ जीः

पाठी– जामा-ए फकीरी कुशाद अस्त। हरकि आयद आराम हासिल कुनदः *फकीरी का कपड़ा ऐसा खुला है कि जो आता है, इस पर आराम पाता है।*

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! सब को सुख पहुँचाता है। मालिक की तरफ लगाना है। हाँ जीः

पाठी– धूनी-ए फकीरी मानिंदे पस खुराऐ ज़ाग अस्तः *फकीरी की धूनी मालिक के अतिरिक्त, इस दुनिया से लेकर ब्रह्म लोक तक जितने पदार्थ हैं, उन सबको कौवे की विष्ठा की तरह बेकार समझकर उनकी तरफ ध्यान न देना है।*

मैनेजर साहिब जी– धूनीयां लगाते हैं न! असली धूनी यह है। कोई चीज़ चाहिए ही नहीं। सब ख़्याल निकाल दे। बैकुंठ की भी आस न हो।

जब लगु मनि बैकुठ की आस।
तब लगु होइ नहीं चरन निवास॥

(325/10 कबीर साहिब)

यहाँ धूनीयां वैसे ही लगा कर बैठ जाते हैं।

पाठी– फाहुड़ी-ए फकीरी खाकरोबी अस्तः *फकीरी की फाहुड़ी अपने अन्दर की गन्दगी को दूर करना है।*

मैनेजर साहिब जी– फाहुड़ी उठाए फिर रहे हैं देख लो! बाहर साफ करके तो बैठ गए मगर अन्दर की गन्दगी तो दूर न की। तन के ज़रिये चोरी करता है, चकारी करता, जीव हत्या करता है और ऐब-पाप करता है। मन के ज़रिये बुरे संकल्प उठाता है। ईर्ष्या, वैर, विरोध कमाता है। धन के ज़रिये ऐशो-इशरत का सामान खरीदता है। सुरत जो मालिक से लगानी थी, वो मोहमाया और जड़ पदार्थों में लगाई है। इसको पता नहीं। एक ने बताया आकर कि कोई फकीर है वो माना हुआ है। अगर कोई माघी के दिन यहाँ आकर माघी नहाने जाए बात चली थी, नहा ले तो सारे पाप निकल जाएं। ऐसे निकलते हैं बोलो! ऐसे तो सारी दुनिया नहा ले। देखो भई!

पाठी– सेल्ही-ए फकीरी बरदा पेश मुरशदां अस्तः *फकीरी की सेल्ही, पीर मुर्शिद की गुलामी है अर्थात गुरु की आज्ञा के अन्दर रहना है।*

कश्ती-ए फकीरी रू गरदानी अज जहान अस्तः *फकीरी की नाव संसार से मुंह फेरना है। जब तक यह नहीं करता तब तक समझो कि नाव पर सवार ही नहीं हुआ और इस रास्ते पर ही नहीं चला।*

लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो। *(657/9 नामदेव)*

मैनेजर साहिब जी– मुँह फेरना है इस नाव में चढ़ना है। ठीक है भई! सुरजीत सिंह। यह जन्म साखी में है।

पाठी– वसला-ए फकीरी जबान सैफ साहब करामात अस्त। दर मेहर व कहर पुर मामूर अस्तः *फकीरी का वसला खुशकलामी अर्थात सब से मीठा बोलना है और दुख-सुख में एक रस रहना है।*

मुतकाए फकीरी मन बस करदन व गोशा नशीनी अस्तः *फकीरी का मुतका मन को काबू करना व गोशा-ए-तनहाई अर्थात एकान्तवास है। फिर फरमाते हैं :-*

मैनेजर साहिब जी–यह डण्डा है जो उठाए फिरते हैं। यह मन पर लगाना था।

पाठी– *अर्थात जो फकीर इस तरीके पर अमल करता है, वह कामिल है और जो इस पर अमल नहीं करता वह कामिल फकीर नहीं बल्कि वह फकीरी के राह से कोसों दूर है। और उसने फकीरी को ही गंवा दिया है।''*

मैनेजर साहिब जी–हाँ जी! वह फकीरी के राह से कोसों दूर है।

पाठी–***शाह शरफ :-*** *''जो लोग फकीरों का पहरावा पहनकर दुनिया को ठगने के लिए भेष बनाते हैं और नाम के बुर्जुग कहलाते हैं, वे असल में फकीर नहीं। ऐसे लोग दुनियादार भी नहीं रहते और गुमराह हो जाते हैं। परन्तु आपने जो यह फकीराना सूरत बनाई है तो अब इससे सम्बन्धित वेशभूषा की असलियत बताएं ताकि मेरे दिल को तसल्ली पहुँचे।''*

गुरु नानक साहिब :- *''जो दिल से फकीर है, दुनिया को नाशवान समझता है और मालिक के ध्यान में रहता है; वह देखने में चाहे दुनियादार ही क्यों न हो, मालिक का प्यारा है। इसके विपरीत जो फकीरी लिबास में दुनियादारी करता है, उसकी फकीरी वेश भूषा तौबा-तौबा पुकार उठती है और कहती है कि ऐ हैवान! तूने हमें क्यों पहना है? जिन नेक-चलन महात्माओं ने हमें बनाया था, अगर तेरा आचरण उनके अनुसार है तो बेशक पहन वरना उतार दे। हम तेरी सोहब्बत से दुखी हैं।*

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! हाँ जी।

पाठी– टोपी *कहती है कि ऐ खुदा के बन्दे, हैवान सूरत! टोपी बच्चों का पहनावा है। उनका सिर मुंडवा कर टोपी पहना दी जाती है। अगर तेरा दिल बच्चों जैसा निष्पाप व पवित्र है तो मुझे पहन। परन्तु यदि तूने पशुओं जैसे काम करने हैं तो कदापि मत पहन, नहीं तो नरकों में जाना पड़ेगा।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी! तो मुझे पहन नहीं तो मत पहन, देखो भई!

पाठी– कफनी *कहती है कि मैं मुर्दों का पहनावा हूँ, यदि तू जीते जी मर चुका हो तो मुझे पहन। अगर दुनिया की कामना दिल में रखता है तो मुझे क्यों पहनता है, दुनियादार ही बना रह।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी, तो मुझे पहन। बस दिखावा ही दिखावा रह गया।

***पाठी*– फाहुड़ी** *पुकारती है कि अगर मेरी तरह धूनी की राख से मिला रह सके और अच्छे व बुरे इरादों को दिल से झाड़ कर फैंक सके तो मुझ को हाथ में पकड़, वरना छोड़ दे।*

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी, उस फाहुड़ी का क्या फायदा? हाँ।

पाठी– धूनी *कहती है कि मुझे जलाने से पहले अपने विकारों को जला। जिस तरह मैं दिन रात जलती हूँ, उसी तरह अच्छी और बुरी इच्छाओं को मालिक के प्रेम*

की अग्नि में जला दे और मेरी तरह राख की ढेरी हो जा। अगर ऐसा नहीं कर सकता तो मुझ को न जला।

मैनेजर साहिब जी– इनको जला काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार को। यह असली धूनी है। बाहर धूनी लगाकर बैठ गए क्या बना? हाँ, जीः-

पाठी– ***डब्बी*** *पुकारती है कि तमाम बर्तनों के मुंह सीधे होते हैं परन्तु मेरा मुँह उल्टा है। अगर दुनिया की नाशवान लज़्ज़तों और इच्छाओं से मुंह मोड़ सके तो मुझे हाथ लगा वरना मेरे नज़दीक न आ।*

मैनेजर साहिब जी–लो, देखो भई! हाँ, जी।

पाठी– **सेल्ही** *बोलती है कि मैं गुलामों को बांधने के लिए बनाई गई हूँ। अगर मुझको गले में डाला है तो सच्चे गुरु का गुलाम बना रह। वह जिधर कहे उधर जा और इसमें कोई आपत्ति न कर। अगर तू यह नहीं कर सकता तो मुझे हाथ न लगा।*

मैनेजर साहिब जी– गुरु का गुलाम बना रह। उनके वचनों पर चल।

पउए– *(खड़ाऊँ) कहती हैं कि हम कैदियों की बेड़ी की मानिद हैं। यदि हमें पैरों में डालना चाहते हो तो दुनिया की दौड़ धूप और दर-दर भटकना छोड़ दे। दृढ़ आसन लगाकर मालिक की तरफ ध्यान लगा।*

यह तो फकीरी का लिबास पुकारता है। ढंग और नियम फकीरी का यह है कि एक बार यदि कोई घरबार छोड़ दे तो फिर घर घर हाथ न पसारे। सन्तोष से एकान्त में बैठा रहे और मालिक की तरफ ध्यान लगाए।

मैनेजर साहिब जी– झूठी भक्ति भी हो मगर दिल सच्चा हो तो कहीं भी चाहे जंगल में बैठा है वहाँ भी रोटी पहुँचाता है। सच्चे दिल वाला कोई है नहीं। बस! ऐसे ही धक्के खाता फिरता हैं घर घर में, हाँ जीः

पाठी– *फिर या तो दम ही निकल जाएगा या मालिक से मिलाप हो जाएगा।*

मैनेजर साहिब जी– कबीर का आता है। एक बार कहीं जा रहे थे। कुछ साधू अपने आप को संगलों में बांध कर खूह में लटक रहे थे। उन्होंने पूछा कि भई! यह क्या कर रहे हो? कि मालिक से मिलना है। कि ऐसे मालिक मिल जाता है? कि हाँ। उसके पास संगल तो था नहीं वड़-वटी लेकर उससे लटक गए। मालिक ने देखा कि यह सब मेरे पीछे हैं। बाकी सब पाखण्ड है। दिल की सच्चाई पर मिलना है। जब भी मिलेगा दिल की सच्चाई पर।

पाठी– *दुनिया को त्याग कर दुनियादारों से भीख मांगना वास्तव में मालिक से विमुख होना है व उस पर भरोसा न करना है। ऐसा व्यक्ति किसी काम का नहीं, वह*

तो केवल नालायक और मनमुख है। उससे तो वह दुनियादार अच्छा है जो मालिक की राह पर चले और नेक आचरण से दुनिया में इज़्ज़त से रहे।

मैनेजर साहिब जी– बादशाह इब्राहीम कबीर के पास रहा। पहाड़ पर जा रहा था। वहाँ एक फकीर बैठा था। वो कहने लगा कि तू यहाँ न आ। वो कहने लगा कि क्यों? कि यहाँ पर खाने के लिए कुछ भी नहीं है। इब्राहीम कहने लगा कि मैं तेरे पास नहीं आया। जहाँ वो बैठा, वहाँ वो बैठ गया। उसके पास दो रोटियां और एक गिलास पानी आ गया। और इब्राहीम के पास पुलाव आ गए। वो फकीर बहुत क्रोधित हुआ कि मुझे सूखी रोटी और उसको पुलाव। दूसरे दिन फिर ऐसा हुआ। उसके पास दो सूखी रोटियां और उसके पास पुलाव आ गए। वो फिर सड़ा कि मालिक! फकीर-फकीर एक यह क्या? उस को पुलाव और मुझे सूखी रोटी! मालिक की आवाज़ आई कि उसने तो मेरे पीछे बादशाही छोड़ी है। तू घास खोदता आया है। अगर तुझे यह नहीं पसन्द तो वो ही रंभा और कपड़ा उठा ले, जा घास खोद। हँसकर मैनेजर साहिब जी फरमाने लगे कि तौबा है। हाँ जीः

एक बार इब्राहीम भूखा जा रहा था। कई दिन का भूखा था। अजमायश भी बड़ी करता है सतगुरु। कहने लगा मालिका! तीन दिन हो गए रोटी भी नहीं। इतने में एक आदमी आया, कहने लगा कि इब्राहीम मेरे आज तेरा खाना है। वो साथ ले गया, बैठक में बिठा दिया। खाना बन गया। आगे रख दिया। फिर कहने लगा कि मुझे पहचाना कि मैं तेरा फलाना गुलाम हूँ। उन दिनों में गुलाम होते थे न, कि मैं तेरा फलाना गुलाम हूँ। सारी जायदाद तेरी है। उसने वहीं खाना छोड़ा और भागा कि मालिका मैंने तो रोटी मांगी थी। यह फिर वही स्यापा। यह तो नहीं मांगा था। हाय! हाय! कठिन है फकीरी, तौबा है।

पाठी– *बुजुर्गों ने कहा है कि जिसने सच्चे दिल से फ़िक्र और फाका अपनाया, उसी ने मालिक को पाया और जिसने....*

मैनेजर साहिब जी– बिल्कुल! हाँ जीः

पाठी– *जिसने नकलचियों और भांडों की तरह फकीरी का स्वांग बनाया, वह पाखण्डी व मक्कार है। जब कोई नकलची, फकीरी का स्वांग बनाता है तो चाहे वह शक्ल से फकीर मालूम होता है, परन्तु जब उसके असली लक्ष्ण पता लगते हैं तो हर कोई कहता है कि यह तो भक्तियां भांड है जो फकीरों का भेष बनाए हुए है। चाहे कोई सिद्ध हो या फकीर, पीर हो या सन्त, भक्त हो अथवा महापुरुष, अगर सच्चे दिल से फकीर है, नहीं तो झूठा है, दीन और दुनिया में मरदूद है। यह सुनकर शाह शरफ बहुत खुश हुआ।''*

मैनेजर साहिब जी– बड़ी कठिन है भई फकीरी, कि मेरी नहीं जब चाहे मालिक ले जाए ख़्याल ही न आए। चीज़ पड़ी है उसकी तरफ ध्यान न दे। यह फकीरी है। यहाँ एक प्रेमी आता था। वो बताता था कि राजपुरे में एक मोनी था उसके पास जाया करता था। एक बार उसको घी की ज़रूरत पड़ी, देखो! अब इशारों से समझाने लगा कि मुझे घी चाहिए। उसने बहुत समझाया पर किसी की समझ में आया नहीं। आखिर लकड़ी की मधानी मंगवाई फिर समझाया। कितना समय ख़राब किया। दो लफ्ज़ बोल देता तो क्या था? मौन किसलिए है? कि मन बाहर न जाए। यह दिखावा ही दिखावा है। मन तो बाहर घूम रहा है।

पाठी– देश इनामी तो चल आकर इन्सानी चोले विच डेरे लाके।
जात पात दा भरम मिटा कर सुरत शब्द दा भेद बता के।
सावनशाह ने सच्च दे रस्ते पाया है, इक नुकते विच समझाया है॥
हर रंग विच.....

मैनेजर साहिब जी– जिनके पीछे हम लड़-लड़कर मर गए। पूज्य मस्ताना जी और हम बागड़ से आए, काफी दिनों की बात है। डेरे आकर याद किया कि शाम को केलनिया जाना था। वहाँ सत्संग था। लंगर बन रहा था। बिल्डिंग उस समय कच्ची ही थी। पूज्य मस्ताना जी कहने लगे कि मैनेजर देख कितना काम पड़ा है। हमने काम लेना है। बापू कितना आडम्बर छोड़ गया। हमने भी छोड़ जाना है। हमने काम लेना है। फकीरों ने तो काम लिया है। दुनिया इसके लिए लड़-लड़कर मर गई। बस भई! यही हाल हो रहे हैं। हाय! हाय! फकीरों ने क्या करना यह सब, यहीं रह जाएगा। वो तो दिखाते हैं कि यह चीज़ है। इससे सब काम लो। तुम्हारे सब काम करेगा, तसल्ली के लिए है और कुछ नहीं। देख कर शौक पैदा होता है कि मैं भी जपूँ। सब काम आप ही करेगा, कोई जपे। खेतों में बरकतें, अगर बीमारी है तो भी हल्का करके कटवाता है।

पाठी– सन 1968 पर्व बिलोचस्तानी आश्रम दी नींव धर दी। रूहानी ताकत सावनशाही मौज़ मस्तानी।

हुक्म इलाही जगमालवाली विच खचखण्ड बनाया है।

मैनेजर साहिब जी– न भई यह किधर से मिला लिया बीच में हमें बदनाम करना है।

पाठी– हुक्म इलाही जगमालवाली विच सचखण्ड बनाया है।
एक नुक्ते विच समझाया है॥
हर रंग विच.....

कोट आलम दर तेरे ते सिजदे करदे, नाम तेरे लै पापी तरदे।
दाता असीं गुनाही तेरे दर दे, सावनशाह बख्शनहार कहाया है।
इक नुक्ते विच समझाया है॥
हर रंग विच.....

मैनेजर साहिब जी– बड़ा कठिन है कोई विरला फायदा उठाता है। साधू क्या? साथ आकर रहते हैं। आकर फिर दुनियादार बन जाते हैं। हाँ सतगुरु बख़्शे भई! यहाँ तौबा है।

पाठी– साधुओं का दुनिया में फिर से फंसना– व्यास डेरे में एक महात्मा रहता था। वो अपनी रोज़ी रोटी के लिए दवाईयां बनाकर बेचते थे। एक दिन उसने पूज्य मस्ताना जी से कहा कि आप बूढ़े बूढ़ियों के पीछे घूमते हो।

मैनेजर साहिब जी– बाद में हमारे पास पत्र भी आया उसका फिर बाद में बहुत पछताया।

पाठी– पूज्य मस्ताना जी जीवां नूं अगर कोई हो, बिलोचस्तान से लाकर नाम दिला देते थे। आपकी तो आँख खुली थी। आप रूहों को देखकर लाते थे। आप बिलोचस्तान से उनको लाकर नाम दिला देते थे। वो कहने लगा कि यह दवाईयां ले जाकर बेच आया कर। हमारे मूल्य से बढ़कर जो होगा। वो आप को देंगे। अपनी रोटी का गुज़ारा भी करते रहो, भजन सिमरन भी करते रहो। पूज्य मस्ताना जी ने चौधरी देवदत राम नूं अर्ज़ की। वो कहने लगा कि सच्चे पातशाह के हुक्म बिना कोई काम नहीं करना। पूज्य मस्ताना जी ने मौका पाकर पूजनीय सच्चे पातशाह जी के आगे बात की। पूजनीय सच्चे पातशाह जी ने फरमाया कि, *''साधू इस तरह दुनिया विच भजन करने के लिए आते हैं और दोबारा दुनिया में फंस जाते हैं।''*

मैनेजर साहिब जी– बस यही हाल होता है फिर कभी दुकानदारियों में फंस गए, कभी कुछ, तो कभी कुछ, बस। आगे और से और बढ़ जाता है।

पाठी– कि फलाना दवाइयों में फंस गया, फलाना किताबों में फंस गया, फलाने ने यह काम किया है। इस तरह आप भी लोभ में फंस जाओगे। आप को मालिक ने सब बन्धनों से आज़ाद किया है।

मैनेजर साहिब जी– तौबा है! इन बन्धनों से आज़ाद किया है। हाय! हाय!

पाठी– आप नहीं फंसना इनमें और इन बातों में आकर ख़राब नहीं होना।

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! एक ने सुनाया बिस्तरा साधू का, हज़ारों रुपये का। कि शाहूकारों के पास नहीं देखे ऐसे बिस्तरे देखो! हज़ारों रुपयों का विस्तरा।

अच्छे-अच्छे खाने देखो! एक सेठ ने रोटी की पूज्य मस्ताना जी को। चले तो गए, खाने उन्होंने अच्छे-अच्छे बनाए। कुर्सी मेज लगा दिए, खाने परोस दिए, खाओ जी। पूज्य मस्ताना जी चक्कर लगाते रहे कहने लगे कि ऐसे खाने खिला कर और पता नहीं क्या क्या बोले उसको और थाली भगाकर मारी और दूसरे प्रेमीयों के घर सूखी रोटी मूली के साथ खाकर परे हो गए। ऐसे फंसते हैं, पराया खाकर कभी भजन नहीं हुआ तौबा है। कोई विरला बचता है। अच्छा फिर, और मान बड़ाई मिल जाती है। एक जगह अच्छा दूसरी जगह उससे भी ज़्यादा। इस तरफ फंस जाते हैं। इसलिए इनको ताड़कर रखते हैं कि बाहर जाते हो, खाने मत खाया करो लोगों के। सादा खाएं, सादा पहने बस! हाँ जी! बाहर की चीजे आती हैं। हम देखकर देते हैं साधुओं को। बाकी संगत के लिए तो चलता ही है। बस यह है इन पर झट असर करेगा। जैसे सफेद कपड़ों पर दाग लग जाता है चाहे मामूली सा हो। इस तरह इन पर ज़्यादा असर पड़ता है इन चीजों का। तौबा ही तौबा है। बहुत कठिन भक्ति है।

एक फकीर था भक्ति भाव वाला। वो जा रहा था। रास्ते में एक मिला उसके गले में सोने का हार था। उसने उसका गला घोट कर उसके हार को लेकर अपनी कुटिया में चला गया। अब पुलिस को पता चला कि एक बच्चे का कत्ल हुआ है। वो पैड़ *(पद्चिन्ह)* के पीछे-पीछे गए। पैड़ अब कुटिया तक ही गई। उसको पूछा कि बाबा! यहाँ कोई और आया था। कि नहीं। कहने लगे कि अभी-अभी एक बच्चे का कत्ल हुआ। उसकी पैड़ यहाँ तक आई है। कहने लगा कि मैं ही हूँ। अब उस पर एतबार कोई न करे। बादशाह के पेश किया। पहले बादशाह भी सिआणे होते थे। बादशाह ने सोचा कि फकीर तो कमाई वाला है। बात क्या है? उसको पूछा कि तूने खुराक कहाँ खाई थी? कि भट्ठी पर दाने लिए थे। भट्ठी वाले को बुलाया। उसने बताया कि कसाई के घर के दाने थे। एक मुट्ठी इसको दे दिए। बोलो भई! एक खुराक कसाई के घर का अन्न, बच्चे का गला घोट दिया। देख लो! ऐसे खुराक का असर है।

हामिद का वो बूढ़ा था न, देख लो! वो विचारा रोज़ भजन किया करे। रिश्तेदारों में उनके विवाह था। वह वहाँ गया। वहाँ सब खाने पीने वाले थे। उसने वहाँ से आटा लिया और रोटी आप बनाई। उसमें सिर्फ नमक डाला और कुछ नहीं। यहाँ आकर रो पड़ा कि जिस दिन की रोटी खाई, दो महीने हो गए, मेरा भजन बनने से हट गया। बुरा हाल हो गया। खुराक का बड़ा असर है। याद रखो, संभलो। हाय! हाय!

पाठी– हर रंग विच आप समाया है, इक नुक्ते विच समझाया है।

मैनेजर साहिब जी– हमारे साथ कई नाराज़ हुए हैं। मैंने कही नहीं खाया। पूज्य मस्ताना जी के समय में खायी होगी, उन्होंने खिलाई होगी। एक बार पूज्य मस्ताना जी ने रात को ग्यारह बजे आधा पाव कलाकंद भेजी। आधा पाव, खाकर देखे, गर्मी का मौसम रात के ग्यारह बजे। मैं बड़ा हैरान हुआ। मैंने खाया सारी रात सतगुरु-सतगुरु लगी रही। अगले दिन मुझे पूछा कि ऐसा प्रेम कभी-कभी होता है। बाकी सब ठगीयाँ है। कोई मौका होता है, नहीं तो बस। यहाँ पहले भी चीज़ आती थी। मुझे कभी नहीं दी थी। कहते मैनेजर क्या खाना जानता है? सब को बांट देते थे। फिर पूछते कि कोई रह तो नहीं गया? कि जी मैनेजर रह गया। कि मैनेजर क्या खाना जानता है? बस यह कह देते। देख लो! खुराक का बहुत असर है। हमारे साथ कई नाराज़ हुए हैं कि हमारे नहीं खाते। फलाना खा जाता है, बड़े-बड़े महात्मा खा जाते हैं। याद रखो खुराक का बहुत असर है। अपना हक हलाल का कमा कर खाओ। बस थोड़ा भी हो तो सब्र आ जाता है। और बाहर का खाकर पेट नहीं भरता। हाँ जी! जितने हम अच्छे-अच्छे खाने खाते हैं, उतनी ही बीमारियां! पहले यह पढ़ भई! सुनो भई!

पाठी– खुराक की ज़रूरतः शरीर, मन और आत्मा का एक औजार है, जिसके बगैर दुनिया में न कोई दुनियावी काम हो सकता है न आत्मिक। इसलिए इसको पालना भी ज़रूरी है। इसको ठीक हालत में रखने के लिए खुराक की ज़रूरत है। बिना कुछ खाये पीये शरीर की मशीन काम करने से रह जाती है और मन में चैन नहीं पड़ता। खाने से मन आलसी हो जाता है और भजन सिमरन में नहीं लगता।

बिन खाये चित नहीं खाये आलस होये।
खाये आलस होये कहो कैसी बिधि कीजे।
दोउ विधि से बिपति दोस का को हम दीजे॥

(पलटू साहिब)

इसलिए अपनी सेहत और हाज़मा के मुताबिक शरीर रूपी मशीन को मुनासिब खुराक देनी चाहिए जिससे पेट में बोझ न हो और आलस न हो।

जिस तरह एक ईंजन को सही तेल देने की ज़रूरत है ताकि वह ठीक काम कर सके। अगर उसको ज़्यादा तेल दे दिया जाए तो वह मैल बन कर इंजन को जाम और ख़राब कर देता है। इस तरह स्वादों के आधीन खाई गई ज़रूरत से ज़्यादा खुराक, शरीर रूपी मशीन को ख़राब कर देती है और काम करने के काबिल नहीं छोड़ती। वह खुराक की ज़्यादती, कच्चे पारे की तरह किसी न किसी शक्ल

में फूट निकलती है और कई प्रकार की बीमारियां पैदा कर देती है। उदाहरण के तौर पर बदहज़मी, जोड़ों का दर्द, कब्ज़, दस्त, सिर दर्द, बुखार, मुह का कड़वापन और सुस्ती आदि।

आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध डाक्टर हरन कहते हैं कि ''मनुष्य जितना खा लेता है उसका तिहाई हिस्सा भी पचा नहीं सकता। बाकी पेट में रहकर, रक्त को विषैला बनाकर कर, असंख्य विकार पैदा करता है। जिससे प्राण शक्ति का दोहरा नाश होता है। एक तो उस फालतू भोजन को पचाने में और दूसरा उसको बाहर निकालने में।''

सादा और मुनासिब खुराक– अगर इन्सान अपने शरीर को मुनासिब और ठीक खुराक देता है तो कभी बीमारी नहीं आती। जितना खाना सादा, कुदरती और थोड़ा हाता है उतना ही मेदा खाने को जल्दी हज़म कर लेता है और साफ रहता है। दिल ताज़ा, दिमाग साफ और शरीर चुस्त रहता है। ज़्यादा काम करने से भी तकलीफ नहीं होती।

एक हकीम अरब के बादशाह के पास गया और बेनती की कि उसे उसके शहर के बीमारों की सेवा का मौका दिया जावे। बाहशाह ने मंजूर फरमाया। हकीम वहाँ साल भर रहा परन्तु कोई बीमार न आया।

मैनेजर साहिब जी– अब डाक्टर पीटेंगे, बस।

पाठी– आखिर वह बादशाह के पास गया कि उसके शहर के लोग उससे इलाज क्यों नहीं करवाते? बादशाह ने कहा कि वह बीमार ही नहीं होते क्योंकि वह सादी और जायज़ खुराक खाते हैं और वह भी भूख लगने पर और भूख से कम खाते हैं।

सिमरण करने वाले कैसी और कितनी खुराक खाते हैं?

मैनेजर साहिब जी– हाँ, कितनी खुराक खाते हैं? सुनो!

पाठी– मालिक के प्रेमी उसकी बख़्शी हई नियामतों से लाभ उठाते हैं। और उनके रस ले लेकर उसके गुण गाते हैं। वह उसकी बाज़ी को अच्छी तरह देखते और समझते हैं। उसमें फंसते नहीं।

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी। उसमें फंसते नहीं, बहुत स्वाद और लाओ, और लाओ। कल को फिर ऐसी बनाओ। हाय! हाय! देखो!

पाठी– वह मालिक जो सबकी ज़िन्दगी का आधार है।

मैनेजर साहिब जी– सबसे बुरी तो जीभ है।

कुटिल इन्द्री जीभ की, चाहै खट रस स्वाद।
या बस होइ औगुन करै, जन्म जाय बरबाद॥

इसको क्या? इसने तो स्वाद लेना है। क्या नहीं करवाती यह? (हमारे एक अफसर था किले में। अब किले में सब चीज़े होती हैं। आम उठाकर उसने टट्टी में जाकर खाया, देख लो। हंसकर मैनेजर साहिब जी फरमाते हैं। तौबा है। हाय! हाय! देख लो! गंगानगर का आता है न सूद साहिब उसको भी पता है। हमारे आफिसर का बाप था साथ में, अच्छी नौकरी, देखो! हमारे आफिसर का बाप था।)

पाठी– वह मालिक जो सब की ज़िन्दगी का आधार है।

मैनेजर साहिब जी– देख लो! सादा खाओ, सादा पहनो। याद रखो गुज़ारे मात्र चलो। खा पीकर, सोकर गुज़ार कर चले गए सब। जागो जहाँ तक हो सके।

पाठी–जिसके अन्दर से निकल जाने से इन्सानी शरीर मिट्टी के एक ढेले के समान रह जाता है। वह ऐसे मालिक को विसार कर सब खाना, पीना और पहनना लाहनत समझते हैं।

सो किउ मनहु बिसारीऐ जाके जीअ प्राण।
तिसु बिणु सभु अपवित्रु है जेता पैनणु खाणु॥

(16/3 मः 1)

वह उसके गुण गाते रहते हैं और पल भर के लिए उसका सिमरन और उसकी याद नहीं बिसारते। भजन सिमरन करने में उनकी जान भी चली जाए तो वह परवाह नहीं समझते परन्तु याद की कमी में ज़रा हर्ज़ सहन नहीं करते।

अब्बदुला हनीफ पारसी दिन भर में सात ग्रास खुराक का आहार करते थे।

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी! सिर्फ सात बुरकीयां।

पाठी– एक दिन उनके सेवादार ने आठ ग्रास खुराक खिला दी।

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! (मैनेजर साहिब जी ठण्डी स्वास भर कर फरमाते हैं) कि खुराक क्या थी? यह मुन्नका होता है। इसके सात दाने खाता था। उस दिन एक फालतू खिला दिया, देख लो भई! उस दिन भजन नहीं बना।

पाठी– जिसके फलस्वरूप वह रात को सुखपूर्वक ईश्वर आराधना न कर सका। दूसरे दिन जब उनको आठ ग्रास की बात मालूम हुई तो उन्होंने सेवादार से कारण पूछा। सेवादार ने कहा कि आप के कमज़ोर शरीर को देखकर बहुत दुख होता था। आपके शरीर में थोड़ा बल आ जाए तभी मैंने इस तरह किया। यह सुनकर अब्बदुला बोले कि तू मेरा हितकारी सेवादार होता तो तू सात के बदले छः ही देता।

मैनेजर साहिब जी– हाँ, तो तू छः ही देता। हाय! हाय! तौबा है।

पाठी– यह कहकर उस सेवादार को हटा दिया और उसकी जगह दूसरा रख लिया।

सिमरन करने वाला मनुष्य अल्प आहार करता है और कम सोता है। ऐसा इन्सान ही एक मन और एक चित होकर सिमरन कर सकता है। अपनी आत्मा की दुनियावी और शारीरिक जंज़ीरों को तोड़कर मालिक के रस की प्राप्ति कर सकता है।

मैनेजर साहिब जी– यहाँ आकर भी घर के झगड़े सुनाते हैं। औलाद के और-और। वो आकर हमें तंग करते हैं। हमें सुनकर तकलीफ होती है। उनको तो होनी ही है। देख लो। हाय! हाय! तौबा है। इस तरफ फकीर छुपते ही रहे हैं।

पाठी– पूज्य परम सन्त मस्ताना जी फरमाया करते थे कि जब खाना खाओ प्रसन्नचित और बे-फ़िक्र होकर खाओ। शांती और नम्रताई से खाओ। खूब चबा चबाकर खाओ। अपना ध्यान मालिक की तरफ रखो और यह समझो कि इस शरीर के अन्दर जो सतगुरु है उसको खिला रहे हैं। इस खुराक के नाजायज़ इस्तेमाल से सतगुरु के शरीर को कोई तकलीफ न होवे और उसके भजन सिमरन में कोई बिघ्न न पड़े। गुरु रामदास जी फरमाते हैं कि जो पुरुष एक मन और एक चित से सतगुरु की आराधना करता है उनके भजन के भण्डार अखुट रहते हैं।

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी! उनके भजन के भण्डार अखुट रहते हैं। फिर बरकतें ही बरकतें हैं।

पाठी– जिनसे लाखों, करोड़ो जीवों को रूहानी और शारीरिक खुराक मिलती रही है। और जो सतगुरु के भजन सिमरन के बगैर खाते पीते हैं और कपड़ा पहनते हैं, वो बार-बार जन्म-मरण के चक्कर में फिरते हैं।

मैनेजर साहिब जी– जो मनि चिति इकु अराधदे,
तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े॥

(306/4 मः 4)

देख लो! आज तक पुराने सन्तों के लंगर चल रहे हैं। उनकी बरकते हैं और क्या है?

पाठी– मौलवी रूम साहिब फरमाते हैं किः

''आम इन्सान के खाने से गन्दगी पैदा होती है और भक्तों के खाने से मालिक का नूर टपकता है।''

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! मालिक का नूर टपकता है।

पाठी– पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थे कि ''रात को मेहदा खाली होना भजन वाले के लिए एक नेहमत है॥''

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी। भजन वाले के लिए एक नेहमत है।
पाठी– एक सूफी साहिब के वचन इसकी ताईद करते हैं।
मैनेजर साहिब जी– क्या कहते हैं, सुनो भई, यह कीमती बात है।
पाठी– वह कहते हैं कि ''वह मनुष्य भाग्यवान है। जो सुबह भूखा उठे और रात को भूखा सोये। क्योंकि ऐसी हालत में मालिक की तव्वजों उस बन्दे पर और उस बन्दे की तव्वजों मालिक पर होती है।''
मैनेजर साहिब जी– खा-खाकर वैसे ही भूल जाता है। हाँ जीः
पाठी– शेख सादी साहिब फरमाते हैं कि ''अगर खुराक खाने से शरीर मोटा और मजबूत होता है तो खुराक कम खाने से आत्मा बलवान होती है।''
मैनेजर साहिब जी–'आत्मा बलवान' होती है और शरीर पतला होता है। हाँ जीः
पाठी– शेख सादी साहिब फरमाते हैं कि ''पेट का जितना हिस्सा खुराक से खाली रहेगा, उतना ही वह खुदा के नूर से भर जाएगा।''
मैनेजर साहिब जी– हाँ! पेट का जितना हिस्सा खुराक से खाली रहेगा, उतना ही वह खुदा के नूर से भर जाएगा।
पाठी– महात्मा बुद्ध लिखते हैं कि एक बार हल्का आहार करने वाला महात्मा है। दूसरी बार संभाल के खाने वाला बुद्धिमान तथा भाग्यवान है। इससे अधिक व अटकल खाने वाला महामूर्ख, अभागा और पशु से बढ़कर पशु है।
मैनेजर साहिब जी– चंडीगढ़ वालो सुन लो, कोई ठिकाना है। कहते हैं दो बुरकियां और खा ले तगड़ा हो। हाँ जीः
पाठी– पेट भर के खाना खाने में नुक्सः पेट भर के खाना, दिल के शीशे को काई (उल्ली) लगाना है। जो आदमी पेट भर के खाता है उसमें यह पांच बातें ज़ाहिर होती है :-

1. बन्दगी में मज़ा नहीं आता।
2. स्मरण शक्ति कम हो जाती है।
3. किसी पर मेहरबानी करने के योग्य नहीं रहता क्योंकि वह सब को पेट भरा ही समझता है।
4. कामवासना ज़्यादा उठती है।
5. नींद ज़्यादा सतायेगी।

सिमरन करने वाले महापुरुषों ने अक्सर सात्विक, हल्की और कुदरती खुराकों को पसन्द किया है ताकि नींद और आलस कम आए। उनकी खुराक अक्सर घी, दूध, मक्खन, दही चावल, जौ, गेहूँ, मूंग, दालिया, सब्जियां और फल रही हैं। कबीर

साहिब की खुराक खिचड़ी थी। हज़रत मुहम्मद साहिब की खुराक जौ की रोटी थी। गुरु अर्जुन साहिब अक्सर लापसी खाते थे यानि घी में ज़रा सा आटा भूनकर और दाल की शक्ल का पतला हलवा खाते थे।

मालिक की बन्दगी के लिए हक हलाल की कमाई से खरीदी गई सात्विक खुराक का होना ज़रूरी है।

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी, खुराक तैयार करने वाला भी सिमरन करने वाला हो। हक हलाई की कमाई हो तब है। हाय! हाय! वो फकीर हुआ न निज़ामुदीन, वहाँ डेले होते थे। वो ही उबालकर खाते थे और कुछ नहीं। एक बार डेले तो उबाल लिए पर डालने के लिए कुछ नहीं था कि कहीं और से लाया हूँ। क्यों लाया भई? बाहर फैंक दिए उठा कर। बोलो! भई कठिन है। चलो बोल भई! यह बीबीयों के हाथ में है, अच्छे-अच्छे खाने खिलाकर फिर कहती सो जाओ अब! तौबा है। यह चीजें ज़रूरी हैं। हल्की और सादी खुराक हक हलाल की हो, ज़्यादा बातें न करे अगर भजन सिमरन करना है। गपोड़े मारते हैं सारे दिन। हम ज़रा सा बाहर आते हैं सारा दिन ख़्याल नहीं निकलते। पूज्य मस्ताना जी कहा करते थे कि आप तो कहते हो कि खड़े रहो पर आप के ख़्याल ही नहीं निकलते दो घण्टे।

पाठी– 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि।
सो गुर सिखु गुरु मनि भावै॥

(305/19 मः4)

मैनेजर साहिब जी– पूज्य मस्ताना जी की पहले रोटी कई बार मैंने बनाई है। सवा छटांक आटे की चार-पांच रोटीयां बना देता था। कभी एक खाते, कभी दो खा लेते, बस, ज़्यादा से ज़्यादा तीन खा लेते बस सादी हो। पूज्य सच्चे पातशाह जी भी एक ही लेते थे। उनकी तो बहुत कम खुराक थी। एक आधी फुलकी ले ली तो ले ली वरना एक कौली दाल बस।

पाठी– जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुर सिखु गुर मनि भावै॥
गुर सतिगुरु का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरिनामु धिआवै॥
जो सासि.....

(305/16 मः4)

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'गुरु क्यों न सम्हार'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– बता भई! कितनी तकलीफ आई। यह तो चैन नहीं लेने देता, चीखें निकाल देता है, सुनो भई!

पाठी– ''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

यह पत्र सच्चे पातशाह जी ने किसी को भेजा कि अगर तेरा मन ज़्यादा ख़राब करे तो एक दो बार यह पत्र पढ़ लिया कर। आदमी का दुश्मन यह मन है।

मैनेजर साहिब जी– बस! यह मन ही दुश्मन है। यही करवाता है सभी काम। यही दुश्मन है और कोई दुश्मन नहीं। इसका काम है मन को भरमाना और भटकाना। यह काल का ऐजण्ट है। यही नहीं चाहता कि कोई जीव मुक्ति हासिल कर ले। यह नहीं चाहता कि कोई जीव इसके दायरे से निकल जाए। यह ऊपर-ऊपर से वैराग दिखाता है कि मैं भक्ति करना चाहता हूँ मगर अन्दर से नहीं।

मन का सुभाउ मनहि बिआपी॥
ऊपर-ऊपर से बैराग दिखाता है।
मनहि मारि कवन सिधि थापी॥ (328/19 कबीर)

ऊपर-ऊपर से वैराग दिखाता है। यह अपने दायरे से किसी को निकलने नहीं देता। अगर भक्ति भी करे तो उसके दायरे की जो बाहर न निकल सके। कर्म-धर्म, जप-तप जो बाहर के हैं इनमें फंसा रहे। अन्दर वाले सतगुरु की भक्ति न करे। सतगुरु वाली भक्ति से यह मुखतलिफ है। वहाँ इसकी दुश्मनी है और कोई दुश्मन नहीं है।

पाठी– आदमी का दुश्मन मन है। यही हमें नरकों में ले जाता है। यही मन खोटे कर्म करवाता है। जो आदमी मन के कहे काम करता है वो अपनी गर्दन आप ही छुरी से काटता है।

मैनेजर साहिब जी– सारी दुनिया मन के कहने पर चलती है।

मन अंतरि बोलै सभु कोई॥ मन मारे बिनु भगति न होई॥

(329/2 कबीर)

सारी दुनिया मन के मातहत है। क्यों मेम साहिब, मेम साहिब को पूछते हैं। सारी दुनिया मन के मातहत है। सभी इसके कहने पर चलते हैं, सोच लो! इसके कहे खाते हैं, इसके कहे पीते हैं, इसके कहे कौम मज़हब बनाते हैं। जितने झगड़े हैं, सब इसी के डाले हैं और किसी ने नहीं डाले। किसी का मन कैसा, किसी का मन कैसा। कोई कहता है ऐसे ठीक है, कोई कहता ऐसे ठीक है। बस! लड़ाई झगड़े हैं, इसी के हैं और किसी के नहीं। एक मुसलमान, एक हज़रत मुहम्मद, एक कुरान, लड़ाई किस बात की? 72 फिरके बने हैं। सुन्नी शिआओं की हर साल लड़ाई होती है। सिक्खों के कितने बन गए। किसने बनाए? मन ने। तो कहता है ऐसे ठीक है, वो कहता है ऐसे ठीक है। यह मन करवाता है और कोई नहीं करवाता है और कोई नहीं करवाता।

पाठी– यानि अपने आप को नरकों का हकदार बनाता है।

मैनेजर साहिब जी– नरकों का हकदार बनाता है।

मनु मैंगलु साकतु देवाना॥ बन खंडि माइआ मोहि हैराना॥
इत उत जाहि काल के चापे॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥

(415/6 मः1)

''कि मन एक मस्त हाथी की तरह है, जो मोह माया और विषय विकारों के जंगलों में भटकाता फिरता है। कभी स्त्रीयों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी रिश्तेदारों का प्यार, कभी कौमों मज़हबों के झगड़े, कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों के लिए घूमता है।''

यही लिये फिरता है। कौन लिये फिरता है? ''इतु उतु जाहि काल के चापै॥

यह काल का ऐजण्ट है।

''गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥'' (415/6 मः1)

कोई विरला गुरुमुख इसके दायरे से निकला है नहीं तो कोई नहीं निकला। सबको पीसता जा रहा है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को खा गया। बड़े-बड़े पीर पैगम्बरों, ओलिया सबको खा गया किसी को नहीं छोड़ता। इतिहास पढ़ कर देख लो। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को खा गया। किसी को नहीं छोड़ता।

सबको खा गया, त्रिलोकी तक किसी को नहीं छोड़ा। जो त्रिलोकी से पार गये हैं, वो इसके दायरे से निकले हैं, बाकी कोई नहीं निकला। जब फिर काम

करने आते हैं तो भी जब तक इसके दायरे में न आए तो काम नहीं चलता। इसको साथ रखना पड़ता है। चाहे भक्ति करो या विषय विकार भोगों। इसके बिना काम नहीं चलता। इसको साथ रखना पड़ता है। फिर भी उनको धोखा देना चाहता है।

पाठी– यानि अपने आपको नरकों का हकदार बनाता है। जो खोटे कर्म यह करता है यह रूह को भोगने पड़ते हैं मगर अपने ऊपर इल्ज़ाम नहीं लेता। इल्ज़ाम दूसरों को देता है। मुक्ति नाम में है। सिवाय सतगुरु और नाम के कोई नहीं छुड़ा सकता। जो खोटे कर्म करता है उसको भोगने पड़ते हैं, क्योंकि इसने किए हैं। एक दूसरे के कर्म कोई नहीं ले सकता। बाप करे तो बाप भोगे, बेटा करे तो बेटा भोगे। सारे कर्मों की दवाई भजन सिमरन है। सो नाम धुन आप को मिली है।

सरब रोग का अउखदु नामु॥ (आदि ग्रन्थ)

जिस तरह हो सके सिमरन करो। अगर मन खोटा समय मांगे तो मत दो। जो तुम कहते हो माफी दो! माफी दो! माफी देने वाला अन्दर ही बैठा है।

मैनेजर साहिब जी– दो-दो, चार-चार घण्टे वक्त दो, चल फिर करो। दो-दो, चार-चार घण्टे भजन करो। अन्दर सतगुरु से माफी मांगों कि सतगुरु मैं भूल गया। आगे नहीं करता, माफी दो। दो चार घण्टे सच्चे दिल से माफी मांगों। फिर तुझे पता चल जाएगा। हमने कह दिया माफी हुई, तू भी खुश हो गया। फिर पता क्या लगा? पता तभी चलेगा जब अन्दर से सफाई हुई और तकलीफ कटी, फिर तसल्ली है न। अपने कपड़े आप ही धोते हैं न। आप ही अन्दर गन्द डाला है। सिमरन से इसे निकालो। बस यही है साफ करने वाला।

प्रभ कै सिमरनि मनकी मलु जाइ॥ अंम्रितु नामु रिद माहि समाइ॥

(363/3 मः 5)

बस दो-दो, चार-चार घण्टे वक्त दो, चल फिर कर करो, कुछ दिनो में पता चल जाएगा। हाँ जीः

पाठी– अगर नाम नहीं जपते तो कोई माफी नहीं।

मैनेजर साहिब जी– कोई माफी नहीं, हाँ जी। महीने वाले सत्संग पर आते रहना और सतगुरु के आगे प्रार्थना करते रहना। हाँ जीः

पाठी– गुरु क्यों न सम्हार॥ तेरा नर तन बीता भर्म में॥

मैनेजर साहिब जी– नरकों में कह लो, मनुष्य जन्म में कह लो। चौरासी लाख जीआ जून में सबसे ऊँची मनुष्य की जोनि है। क्यों तरसते हैं? क्योंकि चौरासी लाख जीअ जून में जन्म-मरण के बन्धनों में से निकलने का अगर समय है तो यही है।

अगर मालिक को मिलने का समय है तो यही है, और कोई नहीं। वो क्यों तरसते हैं? क्योंकि जैसे हमारे अफसर है न यहाँ पर—कोई एस.डी.ओ. है, कोई ए.सी है, कोई एस. पी है, कोई एक्स.ई.एन. है, वो चाहे कि मैं चुनाव लड़ूँ, एम.पी, एम. एल.ए का, तो तभी हो सकता है अगर वो रिटायरमेंट ले, नौकरी छोड़े। 'पब्लिक मैन' आम आदमी बन कर आए। यह तभी हो सकता है। इस तरह यह है। देवते भी मुक्ति हासिल नहीं कर सकते जब तक वो इन्सानी जामे में न आएं। यही एक जामा है जिसको वडिआई है कि मालिक के पास पहुँच सके कोई नहीं।

लख चौरासी जून सवाई, मानस को प्रभि दी बडिआई॥
इस पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइंदा॥

कहते हैं कि इस इन्सानी जामे में ही मालिक को मिल सकता है। अगर अब समय निकल गया, तो फिर पता नहीं कब मिले? यह जून हम गफ़लत में गुज़ार रहे हैं। इसका एक-एक दिन, एक-एक पहर, एक-एक घड़ी, एक-एक पल, एक-एक मिनट, एक-एक सैकण्ड, एक-एक श्वाँस कीमती है। इसको पता नहीं, यह ऐसे ही गफ़लत में गुज़ार रहा है। देख लो! जिसको देवी-देवते तरसते हैं तो कितना कीमती है। कबीर साहिब कहते हैं—

कहता हूं कहि जात हूं, कहाँ बजाऊं ढोल॥
सुंआसा खाली जात है, तीन लोक का मोल॥

एक-एक स्वास की कीमत तीन लोक के बराबर है। जिस को सारी दुनिया पूजती है त्रिलोकी नाथ को, एक स्वास जितनी कीमत रखता है, देख लो! कबीर साहिब का वचन है, पूरी ताकत का वचन है। इतनी कीमती चीज़ है।

ऐसे मंहगे मोल का एक सुंआस जो जाय॥
चौदह लोक पंटतर नाहीं काहे धूल मिलाए॥

कहते हैं कि इतनी मंहगी चीज़ है। चौदह लोक कौन से? ब्रह्मलोक, इन्द्रलोक, शिवलोक, जिनको तरसती है दुनिया, कि हम भी स्वर्गों में जाएं। कहते हैं वो भी मुकाबले में नहीं। हम गफलत में गुज़ार रहे हैं। ऐसे तो काल सबके सिर पर खड़ा है लेकिन इन्सानी जामे के लिए खास निगरानी है कि कब इसका वक्त खत्म हो और कब इसको ले जाऊं। यह कोई ऐसी विधि न बना ले कि इसका छुटकारा हो जाए। वो तो हर समय इसी ताक में है।

यमकालि मौत खड़ी नालि अन्तिकाल छीजै॥

कि कब इसका समय पूरा हो तो कब इसको जल्दी से ले जाऊं। यह गफलत

में पड़ा है। जितने फकीर हुए हैं सबने यही हिदायत दी है कि काल सिर पर खड़ा है तेरे लिए खड़ा है। दादू कहता हैः

काल न सूझे कन्ध पर मन चितवे बहु आस॥
दादू जीव जाने नहीं कठिन काल के फास॥

कहते हैं कि वो सिर पर खड़ा है। यह इसमें लगा है कि मैं यह कर लूं, वो कर लूं। किसी को याद ही नहीं, उसकी फांसी बड़ी मजबूत है। कौन सी है? अब वो जान निकाल कर ले जाएगा, चौरासी में फैंकेगा। कभी घोड़ा, कभी गधा बनेगा, कभी इन्सान बनेगा, कभी हैवान बनेगा। बस! इसी तरह धक्के खाता फिरेगा। नरकों में ले जाएगा, थोड़े दुख भोगने पड़ेंगे। कहते हैं कि समय अनमोल है।

काल हमारे कंध चढ़ि सदा बजावे तूर॥
काल हरण कर्ता पुरिष क्यों न सम्भालै सूर॥

कहते हैं कि सारा दिन खड़ा है सिर पर तूर बजा रहा है, खुशियां मना रहा है। कि इसका यह वक्त जा रहा है खत्म हो रहा है। अब नज़दीक है यह गफलत में है। रोज़ मरतों को देखते हैं मगर किसी को ख़्याल ही नहीं, सोच लो! इसे होश ही नहीं कि मेरा मालिक मेरे अन्दर बैठा है। यह वक्त कीमती है। यह वक्त व्यर्थ ही जा रहा है बच्चों के मोह में, औरतों के मोह में, विषय विकारों की लज़्ज़तों में अंधा हुआ पड़ा है। इसको होश ही नहीं कोई, सोच लो! इसको होश ही नहीं कि मेरा मालिक मेरे अन्दर बैठा है। देवी-देवता भी इसके अन्दर हैं। सब कुछ मालिक ने इसके अन्दर रखा है। यह मुक्ति का समय है। इसमें इसने क्या करना था कि सतगुरु को प्रकट करना था। सिवाय सतगुरु के कोई मुक्ति देने वाला नहीं। हज़ारों जप कर लो, हज़ारों तप कर लो, हज़ारों दान कर लो, कितने ही देवी देवता पूज लो, कोई मुक्ति देने वाला नहीं। अगर कोई मुक्ति देने वाला है तो शब्द गुरु है। गुरु गोविन्द सिंह जी ने लिखा है—

जागत जोत जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै॥
एक उसके सिवा किसी को न माने।
पूर्ण प्रेम प्रतीत सजै व्रत गोर मड़ी मठ भूलि न माने॥
तीरथि दान दइआ तप संजम एक बिना नहीं एक पछाणै॥
एक जागती जोत के सिवा किसी को न माने।
पूर्ण जोत जगै घट में तब खालसा ताहि न खालस जाणै॥
तभी खालसा बनता है। कहता है इसके लिए क्या करना था कि यह वक्त

जा रहा है। तेरा सतगुरु तेरे अन्दर है। उसको प्रगट करना था। अंधा ही नहीं बल्कि बहरा भी है। फकीर होके मार-मार कर चले गए, सोच लो! ग्रन्थ भी पढ़ता है, शास्त्र भी पढ़ता है, सत्संग भी सुनता है, कथा भी सुनता है मगर कोई ख़्याल ही नहीं। एक फकीर हुआ 'हसन' वो जब तक राबिया बसरी न आए तो सत्संग ही नहीं करता था। लोगों ने पूछा कि एक बीबी के न आने से तू सत्संग बन्द कर देता है। कहता है कि हर चीज़ अधिकार की है। कोई अधिकारी ही नहीं दिखाई देता। फिर किसी ने पूछा कि तुझे बड़ी खुशी होती होगी कि इतनी दुनिया आती है तेरी संगत में। कि नहीं, अलबता एक अधिकारी मिल जाए तभी खुशी होती है। कहते हैं कि क्या करें, हमारे मन सोए पड़े हैं तेरी बातें हमारे दिल पर असर नहीं करती। कहने लगे कि सोए नहीं, मुर्दा हुए पड़े हैं। सोए पड़े हैं, वो तो जगाया जा सकता है। होश ही नहीं किसी को। सतगुरु इसके अन्दर आवाज़ें दे रहा कि आ बच्चा तुझे ले चलूं। यह बे-ख़बर है सुनता ही नहीं। तभी मुहम्मद साहिब ने कहा है :-

गुफ्त पैग़म्बर के आवाज़े खुदा। में रसद दर गोशे मन हम चू सदा॥

कि पैगम्बर कहते हैं कि मेरे कानों में खुदा की आवाज़ आ रही है।

मोहर बर गोशे शुमां बानिहाद हक्क। ता बा आवाज़े खुदा नारद सबक॥

तुम्हारे कानों पे मोहरे लगी हुई हैं इसलिए नहीं सुन सकते। तभी गुरुनानक साहिब कहते हैं–

उपर खासे महल दे देवे बांग खुदाये॥
सुत्ते बांग न सुन सकन रहिया खुदाये जगाये॥

वो आवाज़ें दे रहा है कि आ बच्चा तुझे ले चलूँ। यह बेहोश है। बाहर ही बाहर घूम रहा अन्दर न गया। किसी को होश नहीं। इसके अन्दर कुदरती राग हो रहे हैं, कीर्तन हो रहे हैं, बाजे बज रहे हैं। सतगुरु आवाज़ें दे रहा है। इसको कोई ख़्याल नहीं।

पाठी– गुरु क्यों न सम्हार। तेरा नर तन बीता भर्म में॥
दारा सुत परिवार। ठगियन संग क्यों खोवहि॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि जिनका तू काम करता है, बच्चों का, यार-दोस्तों का, रिश्तेदारों का, और कहते हैं कि कौन सी चीज़ साथ जाएगी? सब मतलब के हैं, सब ठग्ग हैं। सभी मतलब के हैं तेरा कोई भी नहीं, कोई मदद नहीं देगा। उस समय यह नहीं कि यह न करो, यह भी करो मगर आगे की संभाल करो।

वहाँ कौन सहाई है? न मां-बाप, न बहन-भाई, यार-दोस्त, रिश्तेदार कोई सहाई नहीं होगा। कहते हैं सभी ठग हैं। तू गफलत में पड़ा है। हाँ जीः

पाठी– दारा सुत परिवार। ठगियन संग क्यों खोवहि॥
क्यों नहि करत विचार। जग मिथ्या यह है सही॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि जिनका तू काम करता है। सारी दुनिया मिथ्या है, फनाह है, कूड़ है। हम रोज़ पढ़ते हैं आसा की वार में।

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु॥
कूड़ु मण्डप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु॥

(468/5 मः1)

सोच लो! राजे-परजे सब कूड़ है। महल माड़ियां जिनके पीछे लड़-लड़कर मर गए। उनके पुजारी भी सब कूड़ हैं।

कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैनणहारु॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु॥
कूड़ु मीआं कूड़ु बीबी खपि होए खारु॥
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु॥
किसु नालि कीजै दोसती सभु जगु चलणहारु॥
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु॥
नानकु बखाणै बेनती तुझु बाझु कूड़ो कूड़ु॥

(468/5 मः1)

कहते हैं कि सारी दुनिया कूड़ में खप-खप मर गई। मालिक के सिवाय सब कूड़ है। कूड़ में फंस-फंस कर मर गया। पल्ले क्या है? इसके लिए खप-खप कर मर गया। कौन सी चीज़ इसके साथ गई जिन देशों के लिए लड़ता फिर रहा है? लाखों देश बने, लाखों गए, सोच लो! हमारे देखते-देखते कितना बड़ा हिन्दुस्तान था। बर्मा गया, लंका गई, अंडेमान गया, पाकिस्तान गया, मलाया गया, सोच लो! कितना बड़ा पंजाब था पाकिस्तान में चला गया। अब 1/3 हिस्सा रह गया। छटा हिस्सा रह गया। यह तो बदलते रहेंगे, दुनिया बदलती रही है। यहाँ लड़-लड़कर कब्जे में कर लिया। जब प्रलय हुई तो सब खत्म। किसके पीछे झगड़ा करता है? कितनी कौमें गईं, कितनी आईं। जितने फकीर आए मालिक की दरगाह से, उन्होंने हमें नाम जपने का उपदेश दिया। जहाँ-जहाँ फकीर आए, जिन्होंने उस मौके पर फायदा उठा लिया, उठा लिया बाद में फिर कौमों मज़हबों के झगड़े। वही झगड़े,

फिर एक और फिरका बन जाता है। फिरके पर फिरके बन गए। लाखों बच्चे हुए इसके लाखों बहन-भाई हुए, जो पीछे थे। लाखों मां-बाप, वो अब याद नहीं। अब के भी भूल जाएंगे। यह दुनिया किसी की भी नहीं बनी। लाखों बादशाह हुए, किसी के हाथ चढ़ी? कहता है कि सारा कूड़ है, मिथ्या है, किसके लिए धूम रहा है? कुछ सोचो तो सही। हाँ जीः

पाठी– क्यों नहि करत विचार। जग मिथ्या यह है सही॥

मैनेजर साहिब जी– कहता है कि विचार कर, तसल्ली कर, सोच लो! देखो तो सही कि यह सब मिथ्या। कौन सी चीज़ है जो तेरे साथ जाएगी। हाँ जीः

पाठी– मन है बड़ा गँवार। मोह रहा कर प्यार। छूटे कैसे जार से।

मैनेजर साहिब जी– मन ही इसका दुश्मन है और कोई नहीं। सन्तों ने तसल्ली की है कि हमारा कोई दुश्मन नहीं, दुश्मन तो यह है। तभी उन्होंने तसल्ली करके लिखा है।

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ॥
मनि जीतै जगु जीतु॥ (87/13 मः3)

जिसने मन को जीत लिया उसने सब कुछ कर लिया। हमारा यही दुश्मन है और कोई नहीं। यह काल की ताकत है। मालिक ने काल को सृष्टि चलाने का हुक्म दिया। उसने चलानी है। उसने साथ अपना एजेण्ट छोड़ रखा है, मन। वैसे मन कोई चीज़ नहीं। इन्द्रीयां भी जड़ हैं मन भी जड़ है। इसको ताकत आत्मा से मिलती है। कई बार आपने देखा होगा बाहर जंगलों में अमरबेल होती है। वो वृक्ष पर चढ़ी होती है। अमरबेल की अपनी कोई ताकत नहीं। वो वृक्ष से ही ताकत लेती है और वृक्ष को ही सुखाती है। बल्ब है, इसमें कोई ताकत नहीं। ट्यूब है इसमें कोई ताकत नहीं। यह बिजली से ताकत लेकर उसी को खत्म करती है। इसको पता नहीं, उसके कब्जे में है। यह भी इसी तरह आत्मा से ताकत लेकर, आत्मा को खत्म करता है। खुद इसकी कोई ताकत नहीं। इन्द्रीयां भी जड़ हैं, मन भी जड़ है। पांच तत्व से निकला है। इसको खत्म कर रहा है। इसको पता नहीं इसके कब्जे में आया हुआ है। अब छूटने का उपाय कोई नहीं मिलता। यही दुश्मन है और कोई नहीं। सभी झगड़े मन के डाले हुए हैं। हाँ जीः

पाठी– मन है बड़ा गँवार। मोह रहा कर प्यार। छूटे कैसे जार से।

मैनेजर साहिब जी– यही कहता है कि यह तो मेरे बच्चे हैं, यार दोस्त हैं, मां-बाप, कौम-मज़हब। यह बस उसने झगड़े डाले हैं और किसने डाले हैं? कौन है इसका?

पाठी– बिन गुरु चले न दाव। थाके सभी उपाय कर॥

मैनेजर साहिब जी– इस मन को काबू करने के लिए लोगों ने बहुत उपाय किये। जप किये, तप किये, तीर्थ किये, व्रत किये, उल्टे लटके मगर किसी तरह भी काबू न आया। रामचन्द्र जी वशिष्ठ को कहते हैं कि अगर कोई कहे कि मैंने समुद्र पी लिया, है तो मुश्किल मगर में दो मिनट के लिए मान लेता हूँ कि पी गया। अगर कोई यह कहे कि मैंने हिमालय पर्वत उठा लिया, है तो मुश्किल मैं दो मिनट के लिए मान लेता हूँ। अगर कोई यह कहे कि मैंने हवा को रोक लिया, है तो मुश्किल फिर भी मैं मान लेता हूँ, मगर कोई यह कहे कि मैंने मन को जीत लिया है, मन पर काबू कर लिया, तो मैं मानने को तैयार नहीं, देख लो! शृंगी ऋषि ने साठ हज़ार साल तप किया। राजा दशरथ के घर औलाद नहीं होती थी। उसने वशिष्ठ को पूछा कि किस तरह औलाद हो। वह उसका पुरोहित था। कहने लगा कि विधि पूर्वक यज्ञ हो तभी हो सकता है। इसको कौन कर सकता है? कि जी शृंगी ऋषि। उसको कौन लाए? अगर कोई लाए तो मोतियों के थाल भर कर दूंगा। एक वैश्या कहती कि मैं लेकर आऊंगी। उसने अपने नौकरों को भेजा कि देखो क्या करता है। उन्होंने देखा कि भक्ति में बैठा है। एक बार वृक्ष पर जीभ फेरता है पानी पी लेता है, फिर बैठ जाता है। बस इतना ही काम है, पवणाहारी है। उसने सोचा कि इसको पकड़ना तो बहुत मुश्किल है। अब वहाँ फिर आप गई। देखा जाकर अब जहाँ जीभ फेरता था वहाँ गुड़ लगा दिया और मन कोई न कोई शरारत ढूंढ लेता है। अब जहाँ एक बार जीभ फेरता था वहाँ दो बार लगाई। उसने सोचा कि यह तो काम बन गया। फिर उसने फिर वहाँ हलवा लगा दिया। फिर तीन बच्चे वहीं पैदा हुए। कहने लगी कि अब इनको खिलाएं कहाँ से? कि चलो राजे के दरबार! फिर यज्ञ किया। उसको फिर होश आई कि मेरे साथ तो धोखा हुआ, फिर भागा। विश्वामित्र ने ''अस्सी हज़ार साल तप किया, फिर मारा गया। पाराशर जी पूर्ण योगी होकर आए। पूर्ण योग अभ्यास किया। एक दिन आ रहा था। रास्ते में नदी पार करनी थी। मल्लाह से बोले, मुझे पार करा दो। उसने कहा, महात्मा जी, रोटी खा लूं। कि नहीं धूप चढ़ रही है। कहने लगा कि मैं शराफ दे दूंगा। उसकी लड़की पास बैठी थी। कहने लगी कि चलो मैं छोड़ आती हूँ। उस पर मन खोटा ख़्याल ले आया। जब उसने प्रकट किया तो लड़की कहने लगी कि सूर्य देवता देख रहा है। उसने कहा बरेती (धुंध) हो जा! मगर मन को न रोका। मन काबू न आया इतना अभ्यास करके भी, बोलो! एक ही तरीका फिर उसने कहा कि हम माछी

हैं बदबू आएगी आप को। कि योजन गन्धारी हो जा! मगर मन को काबू नहीं किया। एक ही तरीका है इस को काबू करने का। इसके अन्दर सतगुरु है। जो अमृत का खज़ाना है, नाम का खज़ाना लिए खड़ा है, जिसमें अमृत है। अगर वो पीये, तो काबू आता है वरना काबू नहीं आता।

रामा रम रामो सुनि मनु भीजै॥

इसके अन्दर नाम है, कुदरती राग हो रहे हैं। जब वो सुनता है, उसमें रस है, अमृत है।

हरि हरि नाम अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै॥

उस अमृत में मिठास है, रस है। जब वो पीता है, पढ़ते तो रोज़ हैंः

हरि हरि नाम अंम्रित रसु मीठा॥

कभी सोचा है कि पढ़-पढ़कर थक गए कि कभी वो मिठास आई, वो रस आया? वो पीये तो मन काबू आता है वरना किसी से नहीं आता।

बिन गुर सबदै मनु नहीं ठउरा॥
सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा।

(415/8 मः1)

यह सिमरन करके किसी गुरुमत वाले फकीर से पूछ कर सिमरन करे, अन्दर जाए, वो रस ले तभी यह मन काबू आता है बाकी नहीं। कोई ताकत नहीं, हज़ारों यत्न कर लो किसी से काबू नहीं आता।

मन मूसा पिंगल भिआ पी पारा हरि नाम॥

बाकी काई चीज़ नहीं जो इसे काबू करे। वो नाम की ऐसी लज़्ज़त है, उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं। हाँ जीः

पाठी– बिन गुर चले न दाव॥ थाके सभी उपाय कर॥
नाम सम्हारो मीत॥ धीरज धर घट में रहो॥

मैनेजर साहिब जी– वो मुक्ति वाला नाम, वो शांती देने वाला जिसमें अमृत है, वो इसके अन्दर है। चाहे हिन्दु हैं, चाहे मुसलमान हैं, चाहे सिक्ख हैं, चाहे ईसाई हैं, सबके अन्दर है। आम लफ़्ज़ नहीं, जो मुक्ति देने वाला है। वो लफ्ज़ नहीं, वो एक ताकत है। जो खण्डों ब्रह्माण्डों को रच रही है।

नाम के धारे सगले जँत॥ नाम के धारे खंड ब्रहमँड॥
नाम के धारे आगाश पाताल॥ नाम के धारे सगल आकार॥
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन॥ नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन॥

(284/11 मः 5)

वो एक ताकत है, सबके अन्दर है। वो रेडियो-वेवज की तरह सब जगह है। वो एक कुदरती आवाज़ है। मालिक की अपनी आवाज़ है।

हरि नाम विच आप समाइ॥ कालि काल विच गुरमुख पाइ॥

किसी गुरुमुख के अन्दर होती है। वो इस दुनिया की चीज़ ही नहीं। वो सूक्ष्म मण्डलों में जाकर मिलती है। यह नौ द्वारे छोड़े, क्या? ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। यहाँ पर वो नाम सुनाई देता है। यहाँ पर नाम से ताल्लुक पड़ता है। वो लफ्ज़ नहीं।

नाम डोरि है गुप्त, कोऊ नहीं जानता।
निह अछर निह रूप दृष्ट नहीं आवता॥

(पलटू साहिब)

जो फकीर नाम देते हैं, सिमरन देते हैं जपने के लिए देते हैं। वो नाम पकड़ने के लिए है। यहाँ ख़्याल को इकट्ठा करे। फिर वो नाम मिलता है। उस सिमरन में भी शांती है जो फकीरों ने बताया है। यह तो वो भी नहीं करता सिमरन तो दूर की बात है। जल्दी-जल्दी नहीं मिलता। यह घबरा जाता है कहता है मन नहीं लगता। यह जल्दी का काम नहीं।

धीरज धर घट में रहो॥

ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करो, जोड़ते रहो। धीरे-धीरे काम बनता रहता है जल्दी का काम नहीं। अगर कोई यह कहे कि आज बीज डाल, कल फसल तैयार कर ले तो मुश्किल है। यह जल्दी का काम नहीं। यहाँ मुद्दतें लगती हैं।

धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय॥
माली सीचे सौ घड़ा ऋतु आए फल होय॥

यह कहते हैं कि जब ऋतु आएगी तभी फल लगेगा। जपो जैसे भी हो, मालिक मुनासिब समझेगा तभी मालिक देगा, नहीं तो नहीं मिलता। जब हृदय साफ होता है तब नाम मिलता है। कोई ऐसी चीज़ नहीं जो हृदय को साफ करे। बस एक ही चीज़ है सिमरन।

प्रभ कै सिमरिन मन की मलु जाइ॥
अंम्रितु नामु रिद माहि समाइ॥

(363/3 मः 5)

और कोई चीज़ नहीं, यह दुनिया के ख़्याल निकाले। जैसे कि पूज्य मस्ताना जी फरमाया करते थेः

"कि कोयलों की भरी बोरी में से एक-एक कोयला निकालते जाओ और एक पैसा डालते जाओ तो वह एक दिन पैसों से भर जाएगी।"

इस तरह दुनिया के ख़्याल निकालते जाओ और सिमरन करते जाओ। तब मालिक ही मालिक अन्दर हो जाएगा। दुनिया के सभी ख़्याल निकालते जाओ सिमरन करते जाओ, तब मालिक ही मालिक अन्दर बस जाएगा। फिर नाम प्रकट हो जाएगा। यह जल्दी का काम नहीं। हाँ जीः

पाठी– नाम सम्हारो मीत॥

मैनेजर साहिब जी– प्रेम से कहते हैं वो कि नाम सम्हारो मीत! ऐ मेरे मित्रों! ऐ मेरे प्यारो! नाम को संभालो, नाम को अन्दर प्रकट करो। हाँ जीः

पाठी– नाम सम्हारो मीत॥ धीरज धरो घट में रहो॥

मैनेजर साहिब जी– *"धीरज धरो घट में रहो"* हम तो बाहर भागे दौड़े फिर रहे हैं, सोच लो! घर में रहो। बच्चा बाहर खेलने का आदि होता है। हम कहते हैं कि बैठ कर पढ़। इस तरह इसको भी बाहर, अन्दर जाने की आदत है। मन इसको अन्दर नहीं जाने देता।

काइआ नगर इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई॥

(1191/9 मः 4)

पाठी– मौज़ निहारो पीव जो करिहैं सो बस भला॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि तू लगा रह बाकी मालिक पर छोड़ दे। दुनिया के कामों का क्या? इनका भी ख़्याल न कर। दुख-सुख, गरीबी-अमीरी, तदरुस्ती-बीमारी, हम लिखवा कर लाए हैं। जो कर्म हमने पीछे किए हैं उनके अनुसार दुख-सुख भोगने हैं, ज़रूर भोगने पड़ेंगे। जो हमने पीछे फसल काटी है वो ही दाने खाने हैं। उन्होंने ज़्यादा कम नहीं होना। आगे के लिए हमें अख़्त्यार है, थोड़े बीज दें। हमें अख़्त्यार है जो मर्ज़ी करें। इस तरह जो पीछे बीजे हैं, जो कर्म किए वो ज़रूर भोगने हैं। चाहे हाय! हाय! करके भोग लें, चाहे आराम से भोग लें, जैसे मर्ज़ी भोग लें। वो तो भोगने ही पड़ेंगे। फिर मालिक की मौज़ पर छोड़ दें। तू अपनी ओर से कोशिश कर। तू अन्दर नाम को प्रकट करना सीख। तू अपना सिमरन करना सीख। हाँ जीः

पाठी– मौज निहारो पीव॥ जो करिहैं सो सब भला॥

मैनेजर साहिब जी– अगर वो मुनासिब समझता है तो सुख भेजता है, अगर वो मुनासिब समझता है तो दुख भेजता है। यह हमारे फायदे के लिए है। डाक्टर के

पास मां ले जाती है बच्चे को, चाहे वो चीरे या फाड़े, हमारा फायदा ही करवाती है। इस तरह दुख-सुख भी हमारे लिए हैं कि जो चाहता है हमें देता है। कि तू अपना सिमरन कर, तू अपना नाम प्रगट करने का यत्न कर। हाँ जीः

पाठी– तेरी बुद्धि मलीन। मन चंचल घाटा गहे।

मैनेजर साहिब जी– दुनिया के कामों में फंस कर उनका काम कर रहा है—घर के, यार-दोस्तों के काम, विषय-विकारों के, कौमों-मज़हबों के। इसकी बुद्धि मलीन हो चुकी है। इसको होश ही नहीं, सिवाय दुनिया के इसको कुछ भी नज़र नहीं आता। कभी साध संगत आए तब भला याद करे। अगर दो दिन याद रखेगा साध संगत में जाने के बाद फिर भूल जाता है। इसको पता ही नहीं इतने कीमती स्वास गुम कर रहा है। यह घाटा नहीं तो और क्या है, बोलो। चौबीस हज़ार स्वास रोज़ गुम करता है, जो कि एक स्वास की कीमत त्रिलोकी जितनी है। सिकन्दर ने दुनिया फतेह की। जब वापिस अपने देश जाने लगा तो शीशस्तान का इलाका था जैसे रेगिस्तान है, अपने राजस्थान में है। अब वहाँ टिब्बे और वज़ीर साथ। आगे-आगे बादशाह फौज पीछे-पीछे। राजा कहने लगा वज़ीर को कि मुझे तो बुखार हो गया। कि आगे चलो शायद कोई वृक्ष आ जाए। वहाँ वृक्ष कहाँ, आगे और गए। कहने लगे कि कोई वृक्ष नज़र नहीं आता। मेरा तो बुखार बढ़ने लगा है। आखिर घोड़े पर से उतर गए। पहले जो वज़ीर या बड़े अफसर होते थे, उनके पास भी जराबखत्र कोट होता था। अन्दर लोहा और ज़री की तारें होती थी ताकि गोली लगने पर इसका बचाव हो। अब उन्होंने कोट उतारकर नीचे बिछा दिया। अब करें क्या? और पास एक ढाल थी उसकी छाया कर दी। बादशाह को झटपट याद आ गया। उसने नजूमियों (ज्योतिषियों) से पूछा था कि मेरी मौत कब होगी? अब सीधे तो उन्होंने कहा नहीं। वो कहने लगे कि जब लोहे की ज़मीन होगी सोने का आसमान होगा। उसे झट ख़्याल आया कि मेरे नीचे तो लोह है ऊपर आसमान सोने का है। अन्दर सोने (ज़री) की तारें थी। हकीम आ गए नब्ज वगैरह देखी तो कहने कि बादशाह तेरा वक्त आ गया। कि मेरी मां को मिला दो। कि मुश्किल है। आधा राज दे दूंगा! मगर एक स्वास भी नहीं मिल सकता। सारा राज दे दूंगा, कि मांग कर खा लूंगा! एक स्वास में, कहने लगे कि मुश्किल है, सोच लो! सारी दुनिया का राज दे कर भी एक स्वास न मिला, बोलो! एक स्वास फिर कौन से लेखे? सारी ज़मीन जायदाद किस लेखे? बोलो! यह स्वास किस लेखे में आए बोलो! इतने कीमती स्वास गुम कर रहे हैं। तभी कहते हैं कि घाटे में जा रहे हैं हमें पता नहीं।

रोज़ कहते हैं कि यह फलानी चीज़ बना लो, यह बना लो, बड़ा खुश होता है। यह नहीं पता कि यह घाटे में जा रहा है। यह यहीं रह जाने हैं तब चिल्लाता है जब मौत आती है। यह सब तो यहीं रह जाने हैं। साथ क्या गया। हाँ जीः

पाठी– तेरी बुद्धि मलीन॥ मन चंचल घाटा गहे॥

मैनेजर साहिब जी– अगर चार पैसे कम हो जाएं तो कहता है कि घाटे में चला गया, हाय! घाटे में चला गया, देख लो! तभी चिल्लाता है। यह कभी ख़्याल ही नहीं किया कि मैंने यह भक्ति की है। रोज़ कभी सतगुरु के आगे बैठा भी है। पहले से घाटे में जा रहा हूँ कि नुकसान में जा रहा हूँ। कभी ख़्याल नहीं करता।

पाठी– तू नहिं जाने भेद॥ भ्रम जाल में फंस रहा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं तुझे होश ही नहीं, पता ही नहीं। जिनको अपना समझता है, कोई चीज़ तेरी नहीं। सब भ्रमों में फिर रहा है, कोई चीज़ तेरी नहीं। एक जगह कबीर साहिब ने कहा है कि :

देखो भई लोगों भूल भूलैइयां का तमाशा॥

कौन सी होती है? यहाँ एक बड़ी सी कोठरी हो जिसमें कोठरियां ही कोठरियां होती है। आदमी को एक बार उसमें बन्द कर दो तो उसमें निकलने का राह ही नहीं मिलता जल्दी से। बस इसका भी यही क्या? भूल भूलैइयां।

न कोई आवे न कोई जावे झूठे जग का नाता॥
न काहू की भैण भाणजी न काहू की माता॥

कोई इसका नहीं है। सब भूल भूलैइयां है। मां-बाप, बहन-भाई, बच्चे कोई किसी का नहीं। कभी मां बनी, तो कभी वही औरत बनी, कभी बेटा बना, वही बाप बना। सिलसिले अनुसार चल रहा है। पता है कितनी माताएं बनी, कितने बाप बने, कितनी औरतें बनी, कितने बेटे बने? इसको पता नहीं। हाँ जीः

पाठी– तू नहिं जाने भेद॥ भ्रम जाल में फंस रहा॥
या ते कर विश्वास॥ गुरु बिना और न दूसरा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि पक्का विश्वास रख कोई नहीं तेरा सिवाय सतगुरु के। दो ही साथी हैं, अन्दर सतगुरु या नाम एक ही चीज़ है। सतगुरु या नाम एक ही सतगुरु है, कौन सा?

तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला॥ (942/18 मः1)
सबदु गुरु सुरति धुनि चला॥ (943/1 मः1)

नाम कह लो, शब्द कह लो। उसको ही शब्द, गुरु नाम कहा है, भाणा कहा

है, हुकम कहा एक ही चीज़ के नाम है। वह ही भक्ति जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने वाली है, जो इसको छुड़ाने वाली है। उसको अन्दर प्रगट करना ही असली भक्ति है।

सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी॥
कहु नानक इक राम नाम बिनु अबर सगल विधी ऊरी॥

(1221/1 म:5)

वो शब्द गुरु की भक्ति है जो इसको बचाने वाली है। बाकी कोई नहीं। वो काल जो त्रिलोकी तक सब को खा गया।

तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ का राज॥
आये अचानक यू पकड़ेगा, ज्यों चिड़ियां ने बाज॥

त्रिलोकी तक सब को खा गया। बस एक शब्द गुरु की भक्ति से डरता है, बाकी किसी से नहीं डरता। कहते हैं कि सिवाय सतगुरु के, सिवाय नाम रस के इसका कोई नहीं, बाहर कौन है? पूरी साध संगत जो कहते हैं कि अभी नाम जप, अभी कर वो इसके साथी हैं, वो मित्र हैं बाकी कोई नहीं बाकी सब दुश्मन हैं। किसी ने कहा कि जप, मां बाप भी वो ही है जो यह कहे कि तू भी जप और मैं भी जपूं। बच्चे भी वहीं हैं जो यह कहें कि तू भी जप वह भी जपे बाकी कोई नहीं। औरत वही है जो यह कहे कि तू भी जप मैं भी जपूं, बाकी कोई नहीं। वो सच्चा साथी है। वो सच्चा मित्र है या फिर साध संगत है। कहते हैं कि सिवाय सतगुरु के कोई नहीं तेरा। वो यहाँ भी रखवाला है आगे भी रखवाला है। जब मौत आती है, मरते हुओं को देखो क्या होता है, रोता है, चिल्लाता है कोई छुड़ा सकता है इसको? मां-बाप, बहन-भाई, ग्रन्थ-शास्त्र, मंदिर-मस्जिद परे, सोच लो! चीखें मारता है। बाहर वाले गुरु बाहर, उस वक्त कौन छुड़ाए? अन्दर वाला गुरु ही छुड़ा सकता है बाकी कोई नहीं। यमदूत भी अन्दर, मारने वाला भी अन्दर, आत्मा भी अन्दर। आत्मा रोती दिखाई देती है बाकी कुछ भी पता नहीं चलता। उस वक्त कौन छुड़ाएं? अन्दर वाला ही छुड़ा सकता है। जैसे यमदूत दिखाई नहीं देते ऐसे गुरु भी दिखाई नहीं देता। वो भी इसके अन्दर है; बाहर तो इसने सबको खुश किया, मगर उसको खुश न किया। वो फकीरों का रूप धार कर आता है। कभी कबीर साहिब का, कभी गुरुनानक साहिब का, कभी किसी का, कभी किसी का और कहते हैं कि अन्दर चल भई! तेरा सतगुरु तेरे अन्दर है, यही सहाई है। यह सुनता ही नहीं जब जब फकीर आए। गुरुनानक साहिब आए तो कुराहिया है। अब हमारा नानक, हमारा नानक। कबीर साहिब आए, तो जुलाहा उल्टा ज्ञान

चलाता है। अब हमारा कबीर, हमारा कबीर। बाद में तो सभी कहते हैं मौके पर किसी ने भी कद्र नहीं की है, हाँ जीः

पाठी– या ते कर विश्वासा॥ त गुरु बिनु और न दूसरा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं सोच लो! वाणी में हर रोज़ पढ़ते हैं, रोज़ भोग डालते हैं:

नाम रहियो, साधू रहियो, रहियो गुरु गोविन्द॥

बाकी यही है कोई चीज़ साथ जाने वाली नहीं हाँ, जीः

पाठी– गुरु का घाट निहार॥ सुरत बांध निज शब्द में।

मैनेजर साहिब जी– *"गुरु का घाट निहार"* ऐसे तो शब्द सब जगह हैः

चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालँ॥
सभ महि सबदु बरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलँ॥

(1275/12 मः1)

रोमि रोमि रविया हरिनामु॥

(1144/4 मः 5)

रेडियो-वेवज की तरह सब जगह है मगर उसके सुनने का तरीका आंखों के पीछे है। जब सभी ख़्याल तोड़े तब सुनाई देता है। इसके नीचे आता नहीं। अगर गुरु आता है तो किसी बॉडी में आता है, तब वहाँ पता नहीं चलता जल्दी। यह सिर्फ हमारे समझाने के लिए है कि अन्दर चल तेरा गुरु तेरे अन्दर है। चाहे फकीरों के रूप में आता है, चाहे साधू के रूप में आता है। वो कहता है कि तेरा गुरु तेरे अन्दर है। कि यहाँ आ आंखों के पीछे, यहाँ वो खड़ा है, वो आवाज़ें दे रहा है।

उपर खासे महल दे देवे बांग खुदाये॥
सुते बांग न सुण सकन रहिया खुदा जगाये॥

(गुरुनानक साहिब)

यह गुरु का घाट है। यह घाट है यहाँ आ, यहाँ ख़्याल को इकट्ठा कर। यहाँ कुदरती तौर पर आवाज़ें दे रहा है जिसको गुरु अमरदास जी ने कहा हैः

नौ दर ठाके धावतु रहाए॥ दसवैं निज घरि वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती॥ गुरमती सबदु सुणावणिआ॥

(124/12 मः 4)

कहते हैं कि यह नौ दरवाज़े बन्द कर। दो आंखों के, दो कानों के चार, दो नाक के छः, एक मुंह का सात, दो टट्टी पेशाब के, इन नौ के साथ बाहर ही बाहर

भटकते फिरते हैं, दसवां अन्दर खुलता है। वहाँ कुदरती तौर पर अनहद शब्द आ रहा है जो तेरे घर का रास्ता है। वो छुड़ाने वाला है और कोई छुड़ाने वाला नहीं। वो सुनाई कैसे देता है? गुरुमत से। कोई गुरुमत वाला फकीर मिले जिसने अन्दर प्रकट किया है, वो हमें सिखा सकता है, बाकी नहीं। हाँ जीः

पाठी– गुरु का घाट निहार॥ सुरत बांध निज शब्द में॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं यहाँ कुदरती आवाज़ आ रही है। वो तेरे घर का रास्ता है। वो सीधी सड़क है, वो जरनैली सड़क है।

गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ॥
हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ॥
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ॥

(42/2 मः 4)

हाँ जीः

पाठी– शब्द बिना कोई नाहिं॥ जो काढ़े इस फंद से॥

मैनेजर साहिब जी– शब्द एक ज़रिया है। इसी रास्ते जाना है और इसी रास्ते आना है और कोई रास्ता नहीं। युगों-युगों से यही रास्ता है।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥

(27/9 म : 3)

यही कबीर साहिब कहते हैंः

सुरत शब्द माहिं राखिए तब पहुंचे दरबार॥
कहै कबीर तहां देखिए, बैठा पुरुष हमार॥

कहते हैं कि यहाँ ख़्याल को जोड़। यहाँ आ, शब्द से ताल्लुक जोड़। तब तुझे घर का रास्ता मिलेगा, नहीं तो नहीं।

जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ॥
दैत पुत्रु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ॥

(1133/13 मः 3)

एक ही ज़रिया है। गुरु नानक साहिब जी को सिद्ध मिले। उन्होंने पूछाः

कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ॥ काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ॥
कितु बिधि आसा मनसा खाई॥ कितु बिधि जोति निरंतरि पाई॥

(939/19 म : 1)

कि ऐ महात्मा! तेरा जन्म मरण कैसे समाप्त हुआ?

सतगुरु कै जनमे गवनु मिटाइआ॥ अनहति राते इहु मनु लाइआ॥

(940/2 मः 1)

कि जब कोई कामिल फकीर मिला उसने मेरे अन्दर नाम का बीज डाला तो वो सतगुरु के घर में जन्म है। जब मेहनत की उन्होंने तरीका बताया, वहाँ गए। वहाँ अनहद आता है। जब वो सुना उसमें रस है, शांती है, अमृत है। जिसको पी कर मन काबू आ जाता है, बाकी कोई चीज़ काबू करने वाली नहीं। उसके मुकाबले में कोई लज़्ज़त नहीं। आशा-तृष्णा खत्म हो गई। मन काबू आ गया और कौन सा? मैं गुरुमुखि बन गया। अपने घर पहुँच गया। युगों-युगों से एक ही तरीका है। अगर मुसलमान गए तो इसी रास्ते गए। हिन्दू गए तो इसी रास्ते गए। सिक्ख गए तो इसी रास्ते गए। जो असली चीज़ थी वो तो गुम कर दी। ऐसे ही लड़-लड़कर मर गए। बाकी जितने रास्ते हैं, यह सब नीचे दर्जे के हैं। जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते, मुक्ति नहीं मिलती छुटकारा नहीं।

नेम धर्म आचार जप तप ये उरले व्योहारा॥
जा से मिले अखण्ड मोक्ष सुख सो मारग है न्यारा॥

वो रास्ता ही और है, यह भूला बैठा है।

काल जाल से बांचा चाहो गहो शब्द ततूसारा॥
कहहिं कबीर अमर कर राखो जो परखो टकसारा॥

(कबीर साहिब)

बस एक ही शब्द गुरु का रास्ता है जो मुक्ति वाला है, छुटकारे वाला है और कोई नहीं, हाँ जीः

पाठी– शब्द बिना कोई नाहिं॥ जो काढे इस फंद से॥
ता ते शब्द किवाड़॥ खोलो गुरु कुँजी पकड़॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि एक ही इलाज है। वो शब्द किवाड़ खोल। कौन सा किवाड़ है? वहाँ दुनिया के ख़्याल आगे पड़े हैं। वो जो सिमरन दे गए हैं जो करते हैं उनको पूछो रोज़ चिट्ठीयां आती हैं। कहते हैं मन नहीं लगता। दुनिया के ख़्याल आते हैं वो बैठने नहीं देते। यह ख़्यालों का फाटक उतारे तभी है। यह ख़्याल ही हैं और कोई नहीं। यही बैठने नहीं देते। यह किवाड़ लगे हैं। इनको दूर करना है, हाँ जीः

पाठी– ता ते शब्द किवाड़ खोलो गुरु कुँजी पकड़॥

मैनेजर साहिब जी– जितना सिमरन करेगा उतने ख़्याल निकलेंगे। सिमरन कौन

करता है? दुनिया के ख़्याल ज़्यादा हैं। सारा दिन दुनिया में माथा मारता है और फिर कहता है कि सिमरन नहीं बनता। सिमरन कहाँ से बने? हाँ जीः

पाठी– महल माहिं धस जाय। गुरुमुख को रोके नहीं॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि अगर तू गुरुमुख बन जाए तो तुझे कोई रुकावट नहीं। गुरुमुख कब बनता है? असली तो तब बनता है जब असली द्वार पर जाए, दसवें द्वार पर जाए, अमृतसर में नहाए। ख़्याल को आंखों के नीचे इकट्ठा करे। यहाँ सतगुरु के पास पहुँच कर हर वक्त उनकी शरण में रहे। वो सतगुरु इसके अन्दर है। जब फकीरों की शरण में आता है, उनके हुक्म अनुसार भजन सिमरन करता है। जैसे कोई कोर्स शुरु होता है डाक्टरी का या और कोई। डाक्टरी को पांच साल लगते हैं मगर उस दिन से कहना शुरू कर देते हैं कि डाक्टर साहिब। इस तरह जब से फकीरों की शरण में आता है तब से गुरु-मुखता के कोर्स में दासिल होता है। मगर असली कोर्स तभी है जब दसवें द्वार पहुँचे, अमृतसर में नहाए। फकीरों के हुक्म से भजन सिमरन करता है तभी गुरुमुख बनता है। फिर अपने घर पहुँचता है। फकीरों के हुक्म अनुसार भजन सिमरन करे, अन्दर जाए फिर कोई रुकावट नहीं जिधर मर्ज़ी जाए। जब-जब फकीर आए उन्होंने यही कहा कि तेरा गुरु तेरे अन्दर है। वो देश शांती का है।

महरम होय सो जानो साधो, ऐसा देश हमारा॥
वेद कतेब पार नहीं पावे कहन सुनन से न्यारा॥

(कबीर साहिब)

वहाँ राग हो रहे हैं, कींगरीयां बज रही है, बंसरीयां बज रही हैं, बीन बज रही हैं, जोते जग रही हैं। किसी विरले ने इतबार किया, किसी ने नहीं किया। रविदास उनका शिष्य था उसने इतवार किया। उसने मेहनत की। वो फिर लिखता है कि मैं बेगमपुरे पहुँच गया। बाकी तो ठीक था वहाँ कोई गम नहीं।

अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ उहां खैरि सदा मेरे भाई॥
काइमु दाइमु सदा पातशाही॥ दोम न सोम एक सो आहि॥

वहाँ खैर ही खैर है, सुख ही सुख है। वहाँ कोई गम नहीं जहाँ मर्ज़ी जाए, वो आज़ाद है। कुल खण्डों, ब्राह्मण्डों में कहीं भी जाए। कोई विरला ही इतवार करता है। अगर उनके हुक्म से भजन सिमरन करे, अन्दर जाए तो यह भी आज़ाद हो जाए, गुरुमुख बन जाए। फिर जिधर मर्ज़ी जाए, हाँ जीः

पाठी– महल माहिं धस जाय। गुरुमुख को रोके नहीं॥

मैनेजर साहिब जी–अब आंखे बन्द करो तो अंधेरा। फिर सब अंधेरे मिट जाते हैं। अन्दर रोशनी हो जाती है।

नाइ सुणिअै घटि चानणा आनेरु गबावै॥

(1240/15 मः 1)

नाम सुन के वो बाहर थक गए। कभी सोचा है कि हमारे अन्दर रोशनी नहीं हुई, हाँ जीः

पाठी– मनमुख भटका खाय॥ चढ़ उतरे गिर गिर पड़े॥

मैनेजर साहिब जी– जो मनमुख हैं, वो दुनिया के रंग में रंगे हुए हैं। विषय विकारों में रंगे हुए हैं। जब यही रंग चढ़े हुए हैं तो अन्दर कैसे जाएं? बाहर कहते हैं कि दो मिनट ख़्याल आया चलो भजन कर लो, मन लगे न तो झट उठो भई! मन झट उठा लेता है। फिर कहता है कि भजन नहीं बनता। भजन कैसे बने? कहते हैं एक मिनट नहीं टिकता, फिर नीचे, एक मिनट भी नहीं टिकता फिर नीचे। हाँ जीः

पाठी– मनमुख भटका खाय। चढ़ उतरे गिर गिर पड़े॥
ठीका ठौर न पाय, क्यों कर गुरु समझावही॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि दुनिया के रंग में रंगा हुआ है, कैसे टिके? कोई ठिकाना नहीं, कैसे मिले? सारा दिन तो दुनिया में माथा मारता है कैसे टिके? एक मिनट का चैन नहीं, सुपने में भी दुनिया को ही लिए फिरता है। रात को भी बातें करके सोयेगा तो इसी की, फलाना काम करना है, फलाना काम करना है। दो मिनट का वक्त निकालता ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– ठीका ठोर न पाय। क्यों कर गुरु समझावही॥

मैनेजर साहिब जी– यहाँ भी आएंगे तो वो ही सिआपे लेकर आएंगे। फिर भजन कहाँ से बने? दूसरों को भी रोकते हैं, हाँ जीः

पाठी– मनमत छोड़े नाहि॥ गुरु को दोष लगावहि॥

मैनेजर साहिब जी– देख लो! अब तुम्हारे सामने है। लड़का कहता है कि मैंने शराब पी ली। तकलीफ आई कि नहीं! मनमत छोड़ो तो सीधा होय, कैसे होय? मनमत के पीछे लगा है। फिर कहता है इतना समय हो गया नाम लिए कुछ बना नहीं। क्या बने फिर? बोलो! बने क्या? फिर अवगुण निकालता है। कौन सा नाम? हमने तो देख लिया है भई! अगर ख़्याल निकाले, असूल ठीक रखे, दो-दो घण्टे भी बैठे। जो बैठते हैं उनकी बड़ी चिट्ठीयां खुशी की आती हैं, हाँ जीः

पाठी– मनमत छोड़े नाहि॥ गुरु को दोष लगावही॥

मैनेजर साहिब जी– इसने कभी विचार किया है कि मैंने कितना पराया माल खाया है, कितनी परायी बीबीयों की तरफ देखा है, कितना इधर-उधर घूमा हूँ? अपने अवगुण तो नहीं देखता। जो अपने अवगुण देखता, तो वो खट जाता है। यह पराए अवगुण देखता है। जितने यह पराए अवगुण देखता है उतने ही इसके अन्दर पाप आ जाते हैं। इसको चाहिए कि अपने पाप निकाले, दूसरों के गुण उठाए। हाँ जीः

पाठी– गुरु जो कहें उपाय॥ उसमें मन बांधे नहीं॥

मैनेजर साहिब जी– जो उपाय सन्त फकीर बताते हैं, क्या हैं वो? कि पराई निन्दा छोड़ दे, क्रोध छोड़ दे, अहंकार छोड़ दे। वो तो छोड़ता नहीं। गुरुनानक साहिब जी कहते हैं–

कामु, क्रोधु परहरु पर निंदा॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला॥ हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

काम छोड़ दे, क्रोध छोड़ दे, पराई निन्दा छोड़ दे। भ्रम का संगल क्या? यह बाहर जितना है सब भ्रम है।

जो दीसै सो सगल बिनासै॥

फिर सब से बड़ा अपने जिस्म का प्यार है। यह नहीं बैठने देता। इसका प्यार ही इसको नहीं बैठने देता। इसको खूब खिला-खिलाकर पालता है। फिर वह बैठने नहीं देता। जितना यह इसे खिलाता है उतना ही इसे यह बैठने नहीं देता, तराई चढ़ जाती है। थोड़ा खाय, थोड़ा सोय फिर रात को जागे तो इसको रस मिलने लग जाएगा। कहते हैं कि–

भ्रम का संगलु तोड़ि॥

इस भ्रम से निकल।

कामु, क्रोधु परहरु पर निंदा॥ लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला॥ हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥
निसि दिमनि जिंउ चमके चंदाइणु देखै॥
अहिनिस जोति निरन्तर पेखै॥

कि जैसे अंधेरी रात में बिजली के चमकारे आते हैं। अब आंखे बन्द करो तो अंधेरा है। अगर बैठे, सिमरन करे, तो अन्दर रोशनी आने लग जाए। सूर्य, चांद, तारे आने लग जाएं।

आनन्दु रूपु अनूपु सरूपा गुर पूरै देखाइआ॥

उसके पास सतगुरु का सरूप आने लग जाएगा जो अती शान्ती देने वाला है। जो मालिक की दरगाह में ले जाता है। यह तो करता नहीं, यह तो कहा मानता नहीं कोई। हाँ जीः

पाठी– गुरु जो कहे उपाय॥ उस में मन बांधे नाहि॥

मैनेजर साहिब जी– दुनिया के काम करने पड़ते हैं। या तो काम की तरफ ध्यान रखे, या मालिक की तरफ। बस दोनों चीजों पर ध्यान रहे। ऐसे ही निन्दा पराई, चुगली और गप्पे हाँक रहा है। फायदा क्या है? बोलो! वो ज़बरदस्ती अन्दर डाल रहा है। अपने रोटी का काम किया और सतगुरु-सतगुरु किया, बस। हाँ, जीः

पाठी– गुरु जो कहे उपाय॥ उसमें मन बांधे नाहि।
क्योंकर होय निबाह॥ यम धक्के खावत फिरे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि अगर नहीं समझता। कबीर साहिब कहते हैंः

कबीर है समझाए नाहि गहे जो मन की ठौर॥

वह धक्के खाता है। फिर यमदूतों के भी धक्के खाता है। फकीर भी चुप रहते हैं कि जैसे चलता है चले भई! हम क्या करें, हाँ जीः

पाठी– क्योंकर होय निबाह। यम धक्के खाबत फिरे॥
राधा स्वामी कहत सुनाय॥ मन वैरी को मीत करे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि मन ही दुश्मन है और कोई नहीं। कहते हैं कि इसको काबू कर, इसको पकड़। यह नहीं करने देता इसको मीत कर, इसको साथी बना। अगर यह साथी बन जाए तो यह साथी भी बड़ा है। कोई भी काम इस दुनिया में हम इसके बिना नहीं कर सकते। कबीर साहिब ने कहा है कि चाहे भक्ति कर, चाहे विषय भोग, यह मन के बिना नहीं।

कबीर मन एक है भावें यहाँ लगाय॥
भावें गुरु भक्ति कर भावें विषय कमाय॥
मनहि सो मलु उपजै मनहि सो मलु जाई॥
मनहिं रहता राम सिउ मनहिं रहया समाई॥

इसको साथ लेना पड़ता है। इसको कहीं भी लगा लो। जैसे मशीन है, इस पर बिजली की मोटर लगा लो। इधर लगा लो इधर चल पड़ेगी, उधर लगा लो उधर चल पड़ेगी। इस तरह यह है। मन भी एक मशीन है। अगर इसको विषयों की तरफ लगा लो तो उधर लग जाएगा। अगर भक्ति की तरफ लगा लो तो वहाँ लग जाएगा। इसको पता नहीं आहिस्ता-आहिस्ता इस तरफ लग जाएगा, हाँ जीः

पाठी– राधा स्वामी कहत सुनाय॥ मन वैरी को मीत कर॥

मैनेजर साहिब जी– सुनो भई! पण्डित ने लगाया। उसकी रखवाली करता था। एक गाय थी। वह दौड़ गयी। उसके पीछे गया और वह एक गांव में चली गई। वहाँ जा कर पूछता है कि गाय किधर गई? किसी को पूछा कि तूने गाय देखी है? कि हाँ जी देखी है। कि कहाँ गई? कि इस तरफ गई है। वहाँ जाकर उसने गाय को मार मारकर मार दिया। जब दरगाह में हिसाब होगा तो इसको तो जो सज़ा मिलनी है मिलनी ही है। जिसने इशारा किया उसकी अंगुल काटी गई। क्योंकि? उसने इशारा किया। अब तू सोच ले जिसने इशारा किया, खामखाह ऐसे ही। जो प्रालब्ध लिखवा कर लाए हैं। वो ही मिलता है। वो ही बनना है, किसी के लिए नहीं होगा, श्रापों से नहीं होगा। जो बनना है बनना है। किसी के किए होना नहीं, किसी के हटाए हटेगा नहीं। सतगुरु ने ही करना है। आज ही एक पत्र आया है। बात तो कुछ और ही थी। उनका ख़्याल हुआ कि किसी जगह पर ऐसे इच्छा पूरी होती है कि चलो यहाँ चलें। चलने लगे तो बेहोशी आ गई कि तूने नाम लिया है। यह क्या सतगुरु तो हमेशा साथ है। जो तुझे मिलना है वही मिलना है; श्रापों से कोई ज़्यादा मिलेगा? किसी के अख्त्यार नहीं, उसके अख्त्यार है। देवी देवतों के अख्त्यार नहीं। सतगुरु का जो नाम जपते वो भी दखल नहीं दे सकते उस काम में, हाँ जीः

पाठी– राम समीपी सन्त है वे जो करैं सो होय।
वे जो करैं सो होय हुकमु में उनके साहिब॥
सन्त कहें सोई करैं राम न करते बायब॥
राम के घर के बीच काम सब सन्तैं करते॥
देवता तेतीस कोट सन्त से सबहिं डरते॥

मैनेजर साहिब जी– सतगुरु ने काम लेना होता है अपने फकीरों से। उन्हें उनकी माननी पड़ती है। जिनको मालिक के हुक्म से नाम देते हैं उनकी लाज रखनी पड़ती है। देवता तेतीस करोड़ भी संत से डरते हैं बाकी का तो क्या? बोलो! सोच लो! हाँ जीः

पाठी– धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा। धन सच्चा सौदा धाम॥
जंगल में मंगल तूं करे मेरे परम सन्तों के न्यारे राम॥
औगुणहारे की बेनती सुनो गरीब निवाज॥
जे हंउ पूत-कपूत तो बहुड़ि पिता को लाज॥

भई परापति मानुख देहुरीआ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम॥ मिलु साधसंगति भजु केवल नाम॥

जप ले अपने सतगुरु का नाम॥
कोई नहीं इस जग में तेरा क्यों करता है अभिमान॥
बदे.....

मैनेजर साहिब जी– अपने सतगुरु का नाम जपो, अपने गुरु को तो सभी छोड़े बैठे हैं, वो अन्दर है।

सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई॥
इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई॥
(758/6 मः4)

उस सतगुरु का तो फकीरों से पता चलता है। सारी दुनिया भूली बैठी है तभी उसने कहा हैः

इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई॥

कि उनके पास जाकर, साध संगत में पता चलता है कि अपना सतगुरु तो इसके अन्दर है। उसको तो सभी छोड़े बैठे हैं। हाँ जीः

पाठी– मात गर्भ में था तू बंदे कौल गुरु से कीन्हा॥
हरदम नाम जपूंगा तेरा रहकर तेरे आधीना॥
ये निश्चय था कीन्हा, अब क्यों बन बैठा नादान॥
कोई नहीं है इस जग में तेरा, क्यों करता है अभिमान॥ बंदे..
जप ले.....
मानस देही पाकर बंदे इस जग में तू आया॥
मोह ममता में फंस कर तूने गुरु का नाम भुलाया॥
तेरे हाथ कछु न आया, कहते हैं सब वेद पुराण॥
कोई नहीं है इस जग में तेरा, क्यों करता है अभिमान॥ बंदे..
जप ले.....

मैनेजर साहिब जी– मां के पेट में होता जब तब जेर से लिपटा होता है, तब बहुत दुखी होता है क्योंकि कैद में होता है। जेर में लिपटा होता है, बदबूदार चीजें होती है वहाँ। फिर रोता है, चिल्लाता है कि मालिक तेरा नाम मैं जपूंगा। यहाँ आकर बस फिर भूल जाता है। बाहर की हवा लगी तो भूल गया, मोह-माया में फंस गया।

याद ही नहीं बस भुला ही छोड़ा। सतगुरु की दया मेहर से आदमी की जूनी मिली, जिसको देवी देवता भी तरसते हैं। उस समय वहाँ कहता था कि तेरा नाम जपूंगा, इस चौरासी में से निकाल, इस जेल में से निकाल। यहाँ आकर भूल गया। सारी उम्र या तो बाल बच्चों का काम किया या रिश्तेदारों का किया, या कौमों मज़हबों का किया। अपने सतगुरु का तो कुछ नहीं किया। अपने सतगुरु को तो प्रगट न किया। उसको प्रगट करने का यत्न ही नहीं किया। प्रकट तो क्या करना था, कहता है उसका तो ख़्याल ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– हाड मांस की देही बनी है क्यों मन में गरभाए॥
सुन्दर काया देख के पगले फूला नहीं समाए॥
तू इक दिन माटी में मिल जाए, आखिर इस की ढेरी जान॥
कोई नहीं है इस जग में तेरा, क्यों करता है अभिमान॥ बंदे..
जप ले.....

मैनेजर साहिब जी– जब आंखे बन्द की तो कौन सी चीज़ रह गई। काया भी गई, औरत भी गई, बाल बच्चे भी गए, रिश्तेदार, कौमें, मज़हब सब गए। कौन गया इसके साथ? जो साथ जाने वाला साथी सतगुरु है उसको तो भुला दिया, सोच लो! कौन सी चीज़ साथ गई? हाँ जीः

पाठी– हरदम याद गुरु को राखो मत दिल से विसराओ॥
ऊठत बैठत शाम सवेरे सतगुरु के गुण गाओ॥
रे मन भवसागर तर जाओ, इसी तरह सतगुरु को पहचान॥
कोई नहीं है इस जग में तेरा, क्यों करता है अभिमान॥ बंदे..
जप ले.....

मैनेजर साहिब जी– यह देश काल का बनाया हुआ है। यह फनाह है और इसने फनाह होना है। यह कायम नहीं, यह कूड़ है। त्रिलोकी तक कूड़ ही कूड़ है। वह अविचल नगर है, वो चौथा लोक है जो हमेशा कायम है। जिसके मुतल्लक गुरुनानक साहिब ने कहा है–

आदि सचु जुगादि सचु॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु॥

(1/3 जपुजी साहिब)

वो हमेशा कायम है। वो सतगुरु ने बनाया है। वो हमेशा कायम है। वो हमारा देश है। वहाँ से आत्मा आई है। वहाँ जाए, वहाँ सुख ही सुख है, शांती ही शांती है। यहाँ कितना ही बड़ा बन जाए यहाँ दुख ही दुख है, किसी को शांती नहीं। त्रिलोकी तक किसी को शांती नहीं।

पपीहा जाये पुकारयो पंछीअन आगे रोये॥
तीन लोक फिर आयो हूं बिन दुख लखै न कोय॥

(जगजीवन दास)

कि त्रिलोकी तक सबको देख आया हूँ, कोई सुखी नहीं। यहाँ ही नहीं, त्रिलोकी तक। गुरुनानक साहिब जी ने लिखा है–

नानक दुखीआ सभु संसारु॥

सोच लो!

नानक दुखीआ सभु संसारु॥

कहता है कि मैंने त्रिलोकी तक भी देख लिया। सब दुखी हैं। वहाँ तक सभी दुखी-दुखी हैं। एक ही देश है जो सुखों का है, वह चौथा लोक है। यहाँ से आया है, सोच लो! लड़ना तो उसके लिए था। लड़ाई तो मन के साथ करनी थी। यहाँ पर कौमों मज़हबों के लिए लड़ना शुरू कर दिया। आत्मा की आज़ादी के लिए लड़ना था। मन इन्द्रीयों ने मिट्टी पलीत कर रखी है। आत्मा के लिए लड़ना था, अपने देश पहुँचना था। यह तो किया ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– जप ले अपने.....

मैनेजर साहिब जी– पढ़ते हैं न, ''सूरा सोई जो लड़े दीन के हेत॥''

इस दीन के पीछे लड़ना था। इस आज़ादी के पीछे लड़ना था। यह बाहर की आज़ादी के लिए लड़-लड़कर मर गया। यह तो आज है कल नहीं। हाँ जीः

पाठी– हरदम याद गुरु को राखो मत दिल से विसराओ॥
ऊठत बैठत शाम सवेरे सतगुरु के गुण गाओ॥
रे मन भवसागर तर जाओ, इसी तरह सतगुरु को पहचान॥
कोई नहीं है इस जग में तेरा, क्यों करता है अभिमान॥ बंदे..
जप ले.....

मैनेजर साहिब जी–उठते बैठते कहते हैं किः

इकु पलु खिनु बिसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा॥

(601/3 मः 3)

गुरु अमरदास कहते हैं कि एक मिनट भूला तो पचास साल का बकफा पड़ गया। हमें याद नहीं।

जो दम गाफिल सो दम काफिर सानूं मुर्शिद एह फरमाया हूं॥

(बाहू)

बाहू कहता है कि जब गाफिल हो गए। अब सोच लो! कि हम कितने काफिर हैं, कितने मोमन है, हाँ जीः

पाठी– हरदम याद गुरु को राखो मत दिल से विसराओ॥
ऊठत बैठत शाम सवेरे सतगुरु के गुण गाओ॥
रे मन भवसागर तर जाओ, इसी तरह सतगुरु को पहचान॥
कोई नहीं है इस जग में तेरा, क्यों करता है अभिमान॥ बंदे..
जप ले.....

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

सत्संग में आया करो, मन लाया करो।
इस नाम में बड़ी बहार है जी।
नाम ध्याया करो हर बेले।
मन मन्दिर तन भेस कलन्दर घट ही तीर्थ नावां॥
एक शब्द मेरे प्राण बसत है बहुड़ि जन्म न आवां॥
सत्संग में.....
अन्दर सब के बैठा प्यारे सब दुनिया दा वाली॥
सुरत समाधी ला के देखो जगती जोत निराली॥
सत्संग में.....
नौ द्वार में सब है धोखा यह सब को बतलाओ॥
नाम जपो जे पार पहुँचना निज घर अपने जाओ॥
इस नाम में बड़ी बहार है जी।
नाम ध्याया करो हर बेले।
सत्संग में.....

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'नर चेत चेत नर चेत खेत थारो चिड़ियाँ खावैं रे'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– तुम्हारी बातों ने कभी इधर, कभी उधर। चलो! हमारी भी चिड़ियाँ खा गई। यह चिड़ियां लगी हैं न सब, वह सब स्वास खा गए न, कभी इधर खींचो, कभी उधर खींचो, बोलो! चिड़ियां ही चिड़ियां पड़ी हैं रास्ते में, ठीक है न, ओह बोलता नहीं अब। (मैनेजर साहिब जी हंस कर फरमाते हैं) चौधरी साहिब ठीक है न, अब पक्की गवाही, फ़जूल बातें बस इधर से उधर, उधर से इधर।

पाठी–''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा॥''

नर चेत चेत नर चेत खेत थारो चिड़ियाँ खावैं रे।
चिड़ियां खावैं रे उमर तेरी बीती जावै रे॥
नर चेत चेत.....
भाई सन्त की खेती राज ठाठ खाबण जावे रे।
कहे मन रूप गुरु के पासे फंद कट जावे रे॥
नर चेत चेत.....

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा॥''

पायो रे मैंने नाम रतन धन पायो॥
बस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो॥
जिसको पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समायो॥
पायो रे मैंने.....
जिस की चोरी कभी न होवै ऐसो धन मैंने पायो॥

मैनेजर साहिब जी– फिर बोल भई! यह देश ही सुखों-दुखों का है, निकलो यहाँ से, देख लो भई! उस नाम को प्रगट करो सिमरन करके तब है। अपने देश चलो। सुन सुनकर चले गए, किसी ने सुन लिया, किसी ने कह दिया।

वक्ता होय सो कथा सुनावे, श्रोता सुन घर आवे॥
ज्ञान ध्यान की समझ न कोई, कह सुन जन्म गवावे॥

(दरिया साहिब)

ठीक है कि नहीं, अब बता, बस यह है। यही काम करना था आकर। यहाँ मिसालें पड़ी हैं। वो डोकरी(बुढ़िया) डेरे जाकर आई है साथ बूंदी भी ले आई। यह काम करो।

बीमार पड़ी थी खाट पर। घर वाले जाने नहीं देते थे कि बीमार है। वो सूक्ष्म रूप में डेरे चली गई। घर वाले सभी रोने लग गये। फिर देर बाद जब होश में आई, पूछने लगी कि रो क्यों रहे हो? कि तू मर गई थी, कि मैं तो डेरे गई थी। बूंदी लाई हूँ। वहाँ दाना-दाना प्रसाद का सभी को दिया। हाँ डोकरी बनो! हाँ जी, सुनोः

पाठी– काया कोट छुड़ावै सोई है राजपूत॥

मैनेजर साहिब जी– यह किला फतेह करो, हाँ जीः

पाठी– काया कोट छुड़ावै सोई है राजपूत॥
सोई है राजपूत देह गढ़ आगि लगाई॥
मुरचा पांच पचीस बात में लेई छुड़ाई॥

मैनेजर साहिब जी– इसने क्या कहा था अभी, पांच मृग, पच्चीस मृगणी। बस इनसे छुड़ाओ।

पाठी– काया गढ़ के बीच जाय के थाना करना॥
मन है बड़ा मवास पकरि के ठौरे मरना॥
काम, क्रोध को मारि लोभ औ मोह हंकारा॥
लालच का सिर काटि बहै लोहु की धारा॥
पलटू अठएँ लोक में अमल करे अवधूत॥
काया कोट छुड़ावै सोई है राजपूत॥

मैनेजर साहिब जी– यह काम करो। बस लगे रहो। यही काम करना था आकर। हाँ जी, दुख-सुख भूले।

पाठी– पाइयो रे मैंने नाम रतन धन पाइयो॥
जिस की चोरी कबहूं न होवै ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूँ लाख खत्म नहीं होवै दिन दिन बढ़त सवाइयो॥
पाइयो रे.....

जब से दीन भई है मीरां सतगुरु ने अपनायो॥
तब से एक समान लगत है अपनो और परायो॥
पाइयो रे.....

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय॥
जो चाहे सो लेय जाएगी लूट ओराई॥
तुम का लुटिहौ यार गांव जब दहिहै लाई॥

मैनेजर साहिब जी– यह वक्त है फिर क्या लूटोगे? वक्त जा रहा है हाथ से, बस। हाँः

पाठी– ताकै कहां गँवार मोट भर बाँध सिताबी॥

मैनेजर साहिब जी– जल्दी कर, हाय! हाय! देखो भई! क्या सोचता है। यह कर लूं फिर करेगा, वो कर लूं फिर करेगा। बस, हाँ जीः

पाठी– ताकै कहां गँवार मोट भर बाँध सिताबी॥
लूट में देरी करै ताहि की होय खराबी॥

मैनेजर साहिब जी– क्या पता फिर वक्त हाथ आए या न आए। एक मिनट का भरोसा नहीं, बस जैसे भी है लगे रहो।

पाठी– बहुरि न ऐसा दांव नहीं फिर मानुष होना॥

मैनेजर साहिब जी– यह तो नहीं कि जल्दी आदमी की जूनी मिल जाए। कीड़े बने, पंतगे बने, हाथी बने, घोड़े बने। नरकों के दुख भोगे, स्वर्गों के सुख भोगे। इस तरह धक्के खा रहे हैं।

पाठी– बहुरि न ऐसा दांव नहीं फिर मानुष होना॥

मैनेजर साहिब जी– यह जन्म मुश्किल से मिलता है। इसके लिए देवी-देवता भी तरसते हैं। जिनको हम पूजते हैं। वो भी तरसते हैं। उनको भी चीज़ नहीं मिली।

मनुष्य रूप को जन्म दुर्लभ जग माहि है।
देवन हूं को कठिन प्राप्त नाहि है॥
सकल देवा यही भांत मनोरथ नित करें।
मनुष्य जन्म को पाय के भवसागर तरे॥

(महात्मा चरणदास जी)

वो तरसते हैं। जब सन्तों का चिताया हुआ जीव आगे जाता है, कई रोते हैं, चिल्लाते हैं कि अगर हम भी वहाँ होते तो हम भी यहीं रास्ता अपनाते। हाँ जीः

पाठी– बहुरि न ऐसा दांव नहीं फिर मानुष होना॥
क्या ताकै तू ठाढ़ हाथ से जाता सोना॥

मैनेजर साहिब जी– जाता सोना। हाथ से सोना जा रहा है।

पाठी– पलटू मैं उतरन भया मोर दोस जिन देय॥
लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय॥

मैनेजर साहिब जी– मैंने तो मालिक का हुक्म सुना दिया। अब तुम जानो तुम्हारा काम, मुश्किल से मिला है। (पूज्य मैनेजर साहिब दीवारों पर लिखवा गये थे कि वक्त है, निकल जाओ चौरासी में से, नाम जप लो, नहीं तो तुम जानो तुम्हारा राम जाने, हमने कह दिया।) हाँ जीः

पाठी– पलटू मैं उतरन भया मोर दोस जिन देय॥
लहना है सतनाम का जो चाहै सो लेय॥
मीठ बहुत सतनाम है पियत निकारै जान॥

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! पीना मुश्किल है; जान जाती है पर मीठा बहुत है। हाँ जीः

पाठी– मीठ बहुत सतनाम है पियत निकारै जान॥
पियत निकारै जान मरै की करै तिआरी॥
सो वह प्याला पीये सीस को धरै उतारी॥

मैनेजर साहिब जी– सीस ऐसे कटवाना नहीं, वो तो करतब आरा था। अंग्रेज़ सरकार ने बन्द करवाया उसे। क्या बना ऐसे ही सीस कटवाने से? यह तन का प्यार छोड़े, विषय विकार छोड़े, फिर देखे। सभी दुनिया की मुहब्बतों को छोड़े। हाँ जीः

पाठी– पियत निकारै जान मरै की करै तिआरी॥
सो वह प्याला पीये सीस को धरै उतारी॥
आंख मूंदि कै पियै जियन की आसा त्यागै॥

मैनेजर साहिब जी– 'आंख मूंदि कै पियै' कडवी दवाई होती है न बच्चों को कहते हैं कि आंख मूंद कर पी ले। वो भी कहते हैं कि आंख मूंद कर पी ले, हाँ जीः

पाठी– आंख मूंदि कै पियै जियन की आसा त्यागै॥
फिरि वह होवै अमर मुए पर उठि के जागै॥

मैनेजर साहिब जी– दवाई कड़वी होती है। पीये तो बुखार उतर जाता है। बस यह भी कड़वी है। पीये तो काम बन जाता है।

पाठी– आंख मूंदि कै पियै जियन की आसा तिआगै॥
फिरि वह होवै अमर मुए पर उठि कै जागै॥
हरि से बड़े हैं वें पीयो जिन हरि रस जाई॥
ब्रह्मा विस्नु महेस पियत कै रहे डेराई॥

मैनेजर साहिब जी– उनको भी नहीं मिला, देख लो! यह ऐसा है, बहुत ऊँची चीज़ है।

पाठी– पलटू मेरे वचन को ले जिज्ञासू मान॥
मीठ बहुत सतनाम है पियत निकारै जान॥

मैनेजर साहिब जी– देखो! बाहर कितनी मेहनतें करते हैं। दुकानदार, ज़मींदार और-और साइंसदान लगे हुए हैं। कितने आविष्कार किए हैं? मगर अन्दर कोई भी नहीं जाता। यह ऐसी दौलत है जो कभी खत्म न हो, हमेशा का सुख, फकीर लिख गए। इसने अभी सुनाया था–

पाइयो रे मैंने नाम रतन धन पाइयो॥
जिस को पाये दुख सुख भूले मन आनन्द समाइयो॥
जिस की चोरी कबहुं न होवै ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै दिन दिन बढ़त सवाइयो॥

(मीरां)

काल, महाकाल बड़ी-बड़ी ताकतों को खा गया। इसके नज़दीक नहीं आता, हाँ जीः

पाठी– 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

अरे तेरी काया रहे अलमस्त, नाम की पी ले रे बूंटी॥
तन की कूंडी मन का सोटा, सख़्त रगड़ तू पी॥
कसमों के रूमाल छाण, तेरे तन को लगी घूंटी॥
अरे तेरी.....

मैनेजर साहिब जी– मेहंदी को जितना रगड़ो उतना ही रंग, भांग को जितना रगड़ों उतना ही नशा, फूस निकालते जाओ। ख़्याल निकालते जाओ, सिमरन करते जाओ, फिर पी सकते हैं, फिर देखो नशा! हाँ जीः

पाठी– तन की कुंडी मन का सोटा, सख़्त रगड़ तू पी॥
कसमों के रूमाल छाण, तेरे तन को लगे घूंटी॥
अरे तेरी.....

आया मुट्ठी बांध के रे, जाएगा खुली मुट्ठी॥
नैन खोल कर देख जरा, तेरी जिन्दगानी झूठी॥
अरे तेरी.....

मैनेजर साहिब जी– मुट्ठी क्यों बांधते हैं, कोई चीज़ होती न उसमें तभी बांधते हैं। अगर न उस में कुछ हो तो खाली।

'आया मुट्ठी बांध के।'

स्वासा रूपी पूंजी लाया था, यूँही बर्बाद करके चला गया। क्या काम किया इसने? बाल बच्चे पाले, ज़मीनें जायदादें बनाई, औहदे लिए और क्या किया इसने? बस! देख लो!

'जाएगा खुली मुट्ठी'

स्वासा रूपी पूंजी कीमती थी। एक स्वास की कीमत त्रिलोकी जितनी है। दस रुपये गिर जाएं तो कितनी चिन्ता करता है। उसका ख़्याल ही नहीं किसी को। चौबीस हज़ार स्वास दिन रात का, चौबीस हज़ार त्रिलोकियां गंवा रहा है। बाहर पैसे-पैसे के लिए मर रहा है।

कहता हूं कहि जात हूं, कहां बजाऊं ढोल॥
सुआसा खाली जात है, तीन लोक का मोल॥

(कबीर साहिब)

फकीर तजरवे करवा देते हैं। पूज्य मस्ताना जी दिल्ली गए। अपनी जीप कार तो नहीं थी, किसी की ली थी और आगे मुनादी हो रही थी। पहले वो टांगों में बांस बांध लेते थे। पहले तो करते थे ऐसा अब तो नहीं देखा कभी। आगे बाजे ढोल बज रहे थे। पूज्य मस्ताना जी ने पूछा कि यह क्या है? कि जी बीड़ीयों की मुनादी कर रहे हैं। कि बीड़ीयों की मुनादी कर रहे हैं! कि बीड़ीयों की कैसे की मुनादी? कि हमारी बीड़ी सबसे बढ़िया है, यह पीयो। पूज्य मस्ताना जी कहने लगे कि बीड़ीयों की मुनादी के लिए इतना खर्चा करते हैं! प्रेमी कहने लगे कि यहाँ सब शहरों में इनका होता है। फिर फरमाया कि अच्छा हम भी ज़िन्दाराम से पूछेगे कि तू शहनशाहों का शहनशाह तेरे लिए क्या खर्च करें। रात को भजन पर बैठे। सुबह कहने लगे कि हुक्म हुआ है कि एक स्वास की कीमत खर्च कर दो। उस वक्त सिरसा तहसील थी, उनका सोना चांदी ही खत्म नहीं हुआ। सोच लो! हल्ला पड़ गया, इतनी कीमत है। स्वासों की कद्र नहीं किसी को। एक स्वास की कीमत त्रिलोकी जितनी है। किसी को कद्र नहीं इसकी।

'जाएगा खुल्ली मुट्ठी'

पाठी– आया मुट्ठी बांध के रे, जाएगा खुली मुट्ठी॥
नैन खोल कर देख जरा, तेरी जिन्दगानी झूठी॥
अरे तेरी.....

मैनेजर साहिब जी– इस तरह समझाने के लिए फकीरों ने सख़्त मेहनतें की हैं। हमने तो कुछ भी नहीं किया। यहाँ आए थके हैं न, वहाँ दिन रात लगे रहे हैं। किसी ने कद्र नहीं की। इस तरह फकीर कहाँ-कहाँ तक नहीं गए बल्कि उनको धक्के ही पड़े हैं। किसी ने भी कद्र नहीं की। कितनी मेहनतें की कि इनका छुटकारा हो जाए। किसी ने सुना ही नहीं। साथ जो रहते थे उन्होंने नहीं सुना। ऐसे ही बातों में वक्त गुज़ार जाते हैं सब। मरदाना सारी उम्र भागता रहा, देखो! तसल्लीयां भी मिली। एक जगह गया, कहने लगा कि जी मुझे भूख लगी है। कि आगे चल देखते हैं। आगे गए कुछ नहीं मिला और आगे गए फिर कुछ नहीं मिला। कहने लगा कि जी मुझे भूख लगी है, मैं तो मरता हूँ। कहने लगे कि अच्छा, आक की कुकड़ीयां खा ले। कि जी कड़वी हैं। कि नहीं मीठी हैं, उतनी ही खाना जितनी ज़रूरत हो। जब खाईं तो मीठी निकलीं। कल के लिए छुपा कर रख लीं। इतबार न आया। देख लो भई! इतबार न आया। अगले दिन खाने लगा तो कड़वी। हाँ जीः

पाठी– आया मुट्ठी बांध के रे, जाएगा खुली मुट्ठी॥
नैन खोल कर देख जरा, तेरी जिन्दगानी झूठी॥
अरे तेरी.....
काल अचानक आके घेरे, लंका सी लूटी॥
तेरा शाल दुशाला काम न आवे, पड़ा रहे खूंटी॥
अरे तेरी.....

मैनेजर साहिब जी– पढ़ते हैं, सुनते हैं कि रावण सोने की लंका का मालिक था। सिकन्दर ने सारी दुनिया फतेह की। यह तो पुरानी बात है। लेकिन आजकल भी देख लो! पांच दस साल की बात है कि रोमानिया का बादशाह, कितने बंदोवस्त किए एक मिनट में बस गया। कहते हैं कि उसने बहुत ही ऐशो इशरत का सामान इकट्ठा किया। बस एक मिनट नहीं लगा फिर 'पड़ा रहे खूंटी।'

पाठी– काल अचानक आके घेरे, लंका सी लूटी॥
तेरा शाल दुशाला काम न आवे, पड़ा रहे खूंटी॥
अरे तेरी.....
ब्रह्मा पी, विष्णु पी, और पी शक्ति॥
फिर दास कबीरा ऐसी पी, आवागमन छूटी॥
अरे तेरी.....

मैनेजर साहिब जी– पी तो उन्होंने भी, ऐसे ही नहीं पूजा है। जैसे पटवारी की पूजा है, तहसीलदार की पूजा है। और-और की भी है। उन्होंने पी, पर वो नहीं पी जिससे आवागमन का चक्र मिट जाए। कि मैंने ऐसी पी है।

पाठी– ब्रह्मा पी, विष्णु पी और भी शक्ति।

मैनेजर साहिब जी–यह औहदे हैं उनके, जैसे यहाँ पटवारी का है, तहसीलदार का है। वो भी औहदो हैं, दर्जे हैं।

पाठी– ब्रह्मा पी, विष्णु पी और पी शक्ति।
फिर दास कबीरा ऐसे पी, आवागमन छूटी।
तेरी काया.....

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

सतगुरु अलख लखाया सन्तों सतगुरु अलख लखाया।
परम प्रकाश की पुंज ज्ञान धन घट भीतर दर्शाया॥
संतो सतगुरु.....
मन बुद्धि वाणी जाहे न जानत वेद कहत संकुचाया।
अगम आपार अथाह अगोचर नेति नेति जेह गाया॥
संतों सतगुरु.....

मैनेजर साहिब जी– वेदों को बनाने वालों को पता नहीं ऐसी चीज़ है। वो नेति नेति कह गये। दुनिया को चलाने के लिए कर्मों का जाल डाला है। पाप-पुण्य का जाल डाला हुआ है। उनको भी पता नहीं चला। बहुत ऊँची चीज़ है यह। मनबुद्धि के ज्ञानों ने सबकी मिट्टी पलीत कर दी। फिर बोल भई! जितने फकीर हुए हैं:

ब्रह्म वेद वाणी प्रगासी माया मोह पसारा॥
मन देव ज्ञानी वरतै घर आपणै ता मरू बहुत अहंकारा॥

उसने कर्मों का जाल दिया, ज्ञानों का जाल डाल दिया। सबकी मिट्टी पलीत कर दी। वो बहुत ऊँची चीज़ है।

पाठी– परम प्रकाश की पुंज ज्ञान धन.....

मैनेजर साहिब जी–बाहर देखने की चीज़ नहीं, अनुभव की चीज़ है। अन्दर जाए तो देखे, तो पता चले, सोच लो! किसी ने कोई चीज़ खाई वो क्या बताए कि क्या है, मीठी है, खट्टी है। कैसी मीठी है? खट्टी-मिट्ठी है, सलूणी मिट्ठी है, मिट्ठी भी होती है। समझ में आएगी कैसी है? जो समझाया जाए वो लिखने में नहीं आता। चीज़ ही ऐसी है। देखे तो पता चले कि क्या है? अन्दर जाए तो पता चले। वो सतगुरु अलख है, क्या? मनबुद्धि के दायरे से परे हैं, समझने की बात ही नहीं, हाँ जी!

पाठी– सतगुरु अलख लखाया सन्तों सतगुरु अलख लखाया।
परम प्रकाश की पुंज ज्ञान धन घट भीतर दरसाया॥
संतो सतगुरु.....
मन बुद्धि वाणी जाहे न जानत वेद कहत संकुचाया।
अगम आपार अथाह अगोचर नेति नेति जह गाया॥
संतों सतगुरु.....

मैनेजर साहिब जी–अगोचर क्या? मन बुद्धि का विषय नहीं। इन आंखों से देखा नहीं जाता। इन कानों से सुना नहीं जाता। इस ज़ुबान से रस नहीं लिया जाता। वो चीज़ कोई और है, हाँ! ईसा ने कहा है–

"Have you eyes you see not, Have you ears you hear not."

यही तुलसी साहिब कहते हैं–

बिनु पग चले सुने बिना कांना॥ कर बिन करम करे विधि नाना॥

पाठी– शिव सनकादि आद ब्रह्मा के वह प्रभ हाथ न आया।
ब्यास विशिष्ट विचारत हारे कोई पार नहीं पाया॥
संतों सतगुरु.....
परम प्रकाश की पुंज ज्ञान धन घट भीतर दरसाया॥

मैनेजर साहिब जी– वो देखने की चीज़ नहीं। डाक्टर कहते हैं कि हमने बहुत मुर्दे काटे पर देखा तो नहीं। वो देखने की चीज़ नहीं। अनुभव की चीज़ है।

पाठी– बीज माँहिं अंकुर तरू और शाखा पत्र फूल फल छाया।
शब्द में अर्थ पदारथ पद में स्वर में राग सुनाया॥
तिल में तेल काष्ठ में अग्नि घृत पय माँहिं समाया।
त्यों आत्म में है परमात्म, ब्रह्म जीव और माया॥
संतों सतगुरु.....

मैनेजर साहिब जी– देख लो भई! बीज डाला गल सड़कर क्या बना? पानी दिया, गोडी की, क्या बना, ऐसे ही यह बनता है। ऐसे ही निकलता है अन्दर जैसे यह फूल है। अन्दर भी ऐसे ही है। बीज डाला पानी दिया, गोडी की, गल सड़कर यह बीज ऐसा बना। इस तरह यह भी गले फिर चीज़ बनती है, फिर फूल की तरह खिल जाए।

पाठी– तिल में तेल काष्ठ में अग्नि घृत पय माँहिं समाया।
त्यों आत्म में है परमात्म, ब्रह्म जीव और माया॥
संतों सतगुरु.....

परम प्रकाश की पुंज ज्ञान धन घट भीतर दरसाया॥
कहे कबीर कृपाल कृपा कर निज स्वरूप प्रगटाया।
जप, तप, योग, नेम व्रत पूजा सब जंजाल मिटाया॥
संतों सतगुरु.....

मैनेजर साहिब जी– देख लो! क्या गाया इसने, वो बोलो! 'सन्तों मूल भेद'

पाठी–''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

संतों मूल भेद कछु न्यारा, कोई विरला जाननहारा॥
मूंड मुंडाए भयो कहाँ धारे, जटा जूट सिर भारा।
संतो मूल.....
कहाँ भयो पशु सम नगन फिरे वन, अंग लगाए छारा॥
संतों मूल.....
कहा भयो कंदमूल फल खाये, वायु कीये आहारा।
शीत उष्ण जल जुधा त्रिषा सह, तन जीरन कर डारा॥
संतों मूल.....
सांप छोड़ बांबी को कूटै, अचरज खेल पसारा।
धोबी से बस चले नहीं कछु, गधड़े ने काई रे बिगाड़ा॥
संतों मूल.....
योगी यज्ञ जप तप संजम व्रत, किया कर्म विस्तारा।

मैनेजर साहिब जी–देख लो! मूंड मुंडाए, नगे फिरे, तन को दुख दिया। बला तो मन है। सांप तो वह है, बांबी कूटते हैं, कंदफूल खाया। इसको काबू करना था। मन को मारना था।

पाठी– योगी यज्ञ जप तप संजम व्रत, किया कर्म विस्तारा।
तीर्थ मूरत सेवा पूजा, ये उरले व्योहारा॥
संतों मूल.....
हरि हरि ब्रह्मा खोजत हारे, धर धर जग अवतारा।
पोथी पाहना में क्या ढूंढ़े वेद नेति कह हारा॥
संतों मूल.....

मैनेजर साहिब जी– कोई पढ़ने पढ़ाने में रह गया। कोई ज्ञानों में रह गया। कोई भेखो में रह गया। बस दिखावा ही दिखावा रह गया। चीज़ अन्दर है। जो चीज़ है मन के पर्दे के पीछे है। मन को मारे तब है। क्रोध को वश में करे फिर चीज़ मिलती है।

पाठी– हरि हरि ब्रह्मा खोजत हारे, धर धर जग अवतारा।
पोथी पाहना में क्या ढूंढ़े वेद नेति कह हारा॥
संतों मूल.....
बिनु गुरु भक्ति भेद नहीं पावै, भर्म मरे संसारा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो मानो कहा हमारा॥
संतों मूल.....

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

पाठी– झिनां झिनां चोला पहिर सखी मैं तो झिरमिट खेलन जाती।
रमती ने खेलती ने मिल गयो सावरियो आए मिलयो गलबाती रे।
मीरां हरि चरणां की दासी, सांवरिया॥
भोली भोली दुनिया द्वारका ने जाती तीर्थ कर कर आती।
गंगा रे यमुना म्हारे घटि महि वसत है नहावण करूं दिन राती।
सांवरिया, मीरां हरि चरणां की दासी॥

मैनेजर साहिब जी– किसी ने अन्दर देखा ही नहीं। सारी दुनिया बाहर ही बाहर फिर रही है। गंगा यमुना उसने अन्दर देखीं हैं। यह तो नमूने हैं बाहर, देख लो!

गंगा रे यमुना म्हारे घटि महि वसत है नहावण करूं दिन राती।

उसमें कब नहाओगे? बाहर तो तन धो लिया, लेकिन मन तो उसी तरह रहा, आत्मा उसी तरह रही। उस तीर्थ में नहाए तो साफ हो। सारी दुनिया इस तरह धक्के खा रही है। चीज़ अन्दर है यह फिरता है बाहर।

पाठी– गंगा रे यमुना म्हारे घटि महि वसत है नहावण करूं दिन राती।
सांवरिया, मीरां हरि.....
भोली भोली दुनिया मद पीवण जाती मैं बिन पीए मदमाती।
मैं मद पीयो म्हारे प्रेम भटी रो छकी फिरूं दिन राती॥
सांवरिया, मीरां हरि.....
मीरां तो प्रभ हरि की लाडली गूंज करे दिन राती।
कट गया कर्म जाल सभ टूट्या रटियो राम अविनाशी॥
सांवरिया, मीरां हरि.....

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

मैनेजर साहिब जी– पलटू साहिब क्या कहते हैं मीरां की तरह?

पाठी– सकल तजि गुरु ही से ध्यान लगैहौं॥

ब्रह्मा बिस्नु महेस न पूजिहौ, न मूरत चित लैहौं॥
जो प्यारा मोरे घट माँ बसतु है, वाही को माथ नवैहौं॥

मैनेजर साहिब जी– जो घटि में है, हाँ जीः

पाठी– ना कासी में करवत लैहौं, न पचकोस में जैहौं॥
प्रयाग जाय तीरथ नाहि करिहौं, अगर न सीस कटैहौं॥
अजपा और अनाहू साधो, त्रिकुटी ध्यान न लैहौं॥
पदम आसन खींच न बैठौं, अनहद नाहिं बजैहौं॥
सब ही जाप छोड़ि के साधो, गुरु का सिमरन लैहौं॥

मैनेजर साहिब जी– सिमरन ही मेन चीज़ है, ख़्याल निकालने पर है। ख़्याल निकाले तब है न, सब कुछ मिल जाता है।

पाठी– गुरु मूरत हृदय में छाई, वाहीं से ध्यान लगैहौं॥
दुई खुदी हस्ती जब मेटे, निरंकार कह लैहौं॥
गगन भूमि में राज हमारो, अनलहक धूम मचैहौं॥

मैनेजर साहिब जी– अनहद का है ''अहम ब्रह्मास्मि' जो कहते हैं।

पाठी– पलटूदास प्रेम की बाजी, गुरु ही से दाव लगैहौं॥

मैनेजर साहिब जी– यह काम करना था बस, मेन चीज़ सिमरन है। कैसे पाया मीरां ने? आला दर्जे के जो फकीर हैं, उन सबका एक ही मत है कि सिमरन से पाया है। हाँ जी, बोलो भई!

पाठी– मीरां रो मन राम ही राम रटै॥ दासी रो मन राम ही राम रटै॥
राम जी रटै कोई भगवान रटै, मीरा रो मन.....

मैनेजर साहिब जी– राम-राम रटने का मतलब यह नहीं कि राम-राम करते रहो। जो सिमरन बताया रविदास ने, वो रटा। हाँ जीः

पाठी– राम नाम तू जप लीजै प्राणी कोटिक पाप कटै॥
मीरां रो मन.....
जन्म जन्म की खता पुरानी नाम ही लेत फटै।
मीरां रो मन.....
कनक कटोरे अंम्रित भरियो पीवत कौन नटै॥
मीरां रो मन.....
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी तन मन ताई पटै॥
मीरां रो मन.....

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

लग रहना मन लग रहना रे। हरि भजन में लग रहना॥
साहिब का घर दूर है रे जैसी लंबी खजूर।
चढ़े सो चाखे प्रेम रस पड़े तो चकनाचूर॥
लग रहणा.....
क्या बख्तर का पैहरना रे क्या ढ़ालो की ओट॥
सूरा पूरे का पारखा रे जो लड़े धनी के जोर॥
लग रहणा.....

मैनेजर साहिब जी–''जो लड़े धनी के ज़ोर।''

अपने ज़ोर से बैठे तो उसका आसरा लेकर! सतगुरु तू बिठाए तो बिठाए। उठे तो कहे कि सतगुरु की मेहर से बैठा हूँ। याद रखो! यह खास बात है प्रेमीयों के लिए। अगर कहे कि मैं करूंगा फिर नहीं। मैंने इतना किया, बस अहंकार हो गया। ज़रा सा अहंकार आया बस!

पाठी– क्या बखतर का पैहरना रे क्या ढ़ालो की ओट।
सूरा पूरे का पारखा रे, जो लड़े धनी के जोर॥
लग रहणा.....
ज्ञान कटारी बड़ी है रे गुरु गोविन्द तलवार।
वैराग रूपी भाला बांध ले कबहूं न होवे हार॥
लग रहणा.....
हाड मास की देही बनी रे नवनाड़ी दस कोर।
मीरां के प्रभ गिरधर नागर लगी राम सिंउ डोर॥
लग रहणा.....

मैनेजर साहिब जी– ''हरि भजन में लग रहना'' सुनो भई!

पाठी– धैर्य और दृढ़ता ''आज बीज बोया और कल उसका फल चाहा। ऐसे अधीर पुरुष को कदापि यश नहीं मिलता। अगर जल्दी फल न मिले तो यह समझो कि पहले के किए गए पाप संकल्प अधिक हैं। परन्तु वह नए पनपे संकल्पों द्वारा निश्चय ही प्राप्त होगा। जब तक हृदय के अपवित्र भाव न हट जायें तब तक हठ पूर्वक सेवा तथा सिमरन करते रहो।

मैनेजर साहिब जी– मन लगता नहीं हमारे कर्म ही ऐसे हैं। लेकिन लगे रहो मन से मुकाबला रखो।

पाठी– जिस तरह धूप में या अग्नि के पास बैठने से या पानी को हाथ लगाने से, अन्दर गर्मी या ठण्डक का असर होने लगता है, उसी तरह सिमरण से लगने से

अन्दर प्रभाव ज़रूर होता है।

मैनेजर साहिब जी– कुछ भी हो। संतरा खाना कोई और चीज़ है। उसको देखना कुछ और है। खाने से और ही रस आता है, देखने से और ही रस आता है। जैसे भी टूटा फूटा लगे रहो। जल्दी का काम नहीं। जब तक ख़्याल नहीं निकलते तब तक अन्दर जा नहीं सकता। जल्दी का काम नहीं।

पाठी– भाव, कुभाव अलख आलस हूं॥ नाम जपत मंगल दस दिसहू॥

(तुलसीदास)

उलट पुलट जम राम ही, टेढ़ा सीधा होये॥
या का फल नहीं जायेगा कैसा ही लो कोये॥

(चरण दास जी)

मैनेजर साहिब जी– उलट पुलट राम ही, टेढ़ा सीधा होवे। जैसे भी हो टूटा फूटा हो, लगे रहो। यह चरणदास जी ने लिखा है। उन्होंने तजरबे किए हैं कि जल्दी का काम नहीं, हाँ जीः

पाठी– मालिक से मिलने के लिए मुद्दतें लगती हैं। ज़िन्दगी में उसकी प्राप्ती की उम्मीद उन्ही को हो सकती है जो दिन रात धैर्य और दृढ़ता के साथ सिमरन और भजन में लगे हुए उसकी मेहर का इन्तज़ार करते रहते हैं। हमारा कर्तव्य भजन करना और दरवाज़े को खटखटाना है।

मैनेजर साहिब जी– देख लो भई! यह इन्तज़ार करते रहते हैं। कभी पानी ज़्यादा लग गया, कभी गर्मी लग गई। आहिस्ता-आहिस्ता फूल बनता है। जल्दी का काम नहीं। इस तरह सिमरन भी ऐसे ही बनता है जिस तरह यह पूरा बन गया। इस तरह सिमरन का बूटा बन जाता है। हाँ जीः

पाठी– जो सतगुरु हमारे अन्दर बैठा है वह कभी गलती नहीं करता। वह उचित समय पर दरवाज़ा खोल देता है। हमें अपनी प्रेम और भक्ति को बढ़ाना चाहिए और अपने आपको सतगुरु के हवाले कर देना चाहिए। हम जो कुछ कर रहे हैं सतगुरु उससे बेख़बर नहीं है। वह सदा ही हमारी संभाल करता है। जब सतगुरु के लिए हमारा प्रेम अपने आपके प्रेम से अधिक हो जाएगा और खुदी की भावना ''सब सतगुरु ही है'' में बदल जाएगी तब वह दरवाज़ा खोल देगा।''

मैनेजर साहिब जी– हाँ, अपने बाप की संभाल करते हो न, हम भी बूढ़े हो गए हैं, हमारी भी करो। बच्चों की उसने कर ली अब तू करेगा। हाँ जी। हाय! हाय!

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'छोटा सा हो कर चलो रे मन मेरा'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– इतना बड़ा आडम्बर जो बन रहा है, किस लिए बन रहा है, बताओ? बाकी उस की मौज। भण्डारा तो 1981 में शुरू हो गया। बाकी उसकी मौज़ है। कई उतार चढ़ाव आते हैं। वो एक दूसरे से बातें करते हैं। या तो खाने पीने की, या फिर पीछे से क्या होगा? जो वचनों पर रहेगा। वो सुख उठाएगा। चाहे कोई भी हो। जो वचन को काटता है। वह दुख उठाता है। यहाँ पर ज्ञान आया था। कहने लगा कि मुझे तो यहीं रहना है। वह रो पड़ा। हमने कहा कि भई रह जा। सामान लेने गया डबवाली में कोई साधू मिल गया। बस उसके साथ हो लिया। ऐसे ख़राब होते हैं बस एक दूसरे से मिलकर, बातें कर-कर के। यह जो सेवा है यह निखिध सेवा है, यह संभाली नहीं जाती। अगर सिमरण करके करे तो पता नहीं क्या बन जाए? बस बैठे गपोड़े मारते हैं। बोल भई, सुनो! ऐसे ख़राब हुए हैं, बातें कर करके। अब जो ऐसा करेंगे, निकालेंगे उनको। कोई कहता है कि मेरी इज़्ज़त नहीं, कोई कुछ, कोई कुछ। इज़्ज़तों के लिए आए हैं यहाँ? हाँ, जीः

पाठी– सारी दुनिया शारीरिक और माया की ज़रूरतों में फंसी पड़ी है। वह मालिक सबको रोज़ी देने वाला है। जब जीव पैदा होता है तो उसकी प्रारब्ध उनके साथ आती है।

मैनेजर साहिब जी– यह किस्मत ही है जो इनको लेकर आई है। कोई पुरानी भक्ति है जो लेकर आई है। जिसकी भक्ति न हो, उसे डंडे से सीधा कर लेता है। यहाँ जेल में देते हैं। जिसका जितना समय हो, उतनी जेल दे देते हैं। ऐसे ही किसी को प्यार से ले जाता है। किसी न किसी तरह लेकर ज़रूर जाता है। हाँ, जीः

पाठी– उसके अनुसार दुनिया के सब काम चलते हैं। शरीर के बनने से पहले प्रारब्ध बन जाती है। बल्कि हमारा शरीर भी प्रारब्ध कर्मों के अनुसार ही बनता है। बच्चे

के पैदा होने से पहले ही माता की छाती में दूध बन जाता है। परन्तु यह अपनी अल्प बुद्धि अनुसार धीरज नहीं धरता।

पहले बनी प्रालब्ध, पीछे बना शरीर।
तुलसी यह अचरज है, मन नहीं धारे धीर॥

गुरु अर्जुन साहिब फरमाते हैं कि हे प्राणी! तू क्यों गम और फ्रिक में पड़ा है? जिस सिरजनहार ने तुझे बनाया है, उसको तेरा सब फ़िक्र है। जिस मालिक ने यह सृष्टि पैदा की है, वह सबकी जायज़ संभाल कर रहा है। वह सब दिलों का मालिक है और सबकी परवरिश कर रहा है।

मैनेजर साहिब जी– उसको ही फ़िक्र है। जैसे कोई जवान होता है, जल्दी मर जाता है। छोटे-छोटे बच्चे हैं। लेकिन उनकी भी संभाल करता है। हाँ जीः

पाठी– तू काहे को डोलहि प्राणीआ तुध राखैगा सिरजनहार।
जिन पैदाइश तू किआ सोई देह अधार॥

मैनेजर साहिब जी– उसको कौन सी फ़िक्र नहीं। फिर मन काबू आता है। यह पास बैठे हैं। जो बाहर निकला वे बहुत ही ख़राब हो जाते हैं। यह सिमरण भी कर्मों से मिलता है। ऐसे ही थोड़े बैठे हैं। चार बच्चे संभालने मुश्किल हो जाते हैं। कोई चीज़ है जो पकड़े बैठी है। वो कमाण वाला बैठा है न दिल्ली वाला, घर वाले ही नहीं सिआणते। बोल!

पाठी– जिन उपाई मैदनी सोई करदा सार।
घटि घटि मालिक दिला का सच्चा परवरदिगार॥

इस सम्बन्ध में एक ईसाई फकीर किस खूबसूरती से लिखते हैंः

मैनेजर साहिब जी– इस सम्बन्ध में लिखा है। कोई कमी है क्या? क्यों नहीं मिलती चीज़? इनको सिखाते हैं कि ऐसे वो है। पता नहीं किन नशों में फिर रहे हैं। यहाँ इतनी दुनिया आती है रोज़, देख लो! क्या कमी है? किस लिए आते हैं? यह करता-करता पता नहीं किस कुएं में गिर जाता है?

पाठी–इन्द्रीयों के रस लेने सेः

मैनेजर साहिब जी– इन बूढ़ों को होश नहीं आती। देख लो! बैठे हैं बूढ़े। ऐसे अहंकार में फिरते हैं। जो कोई देख लो बर्दाशत नहीं किसी को भी। यह तो उस को मिलता है, जो नम्र हो, जो मिट्टी बने। हाँ! जिस ने चौघर लेनी है, वह अपने घर जाए। अगर किसी ने कैंची ले ली तो स्यापा डाल दिया। मैं घर जाता हूँ, मैं घर जाता हूँ। गया फिर आ गया। फिर गया फिर आ गया। जा फिर अब वापिस यहाँ पर

नहीं आना दोबारा।

पाठी– ''रूहानी रास्ते पर चलने के लिए परहेज़ और जायज़ तरीके व हक हलाल से पैदा की गई खुराक, कम खाना, कम सोना और इन्द्रीयों भोगों खास कर ज़ुबान के रसों पर काबू पाना यह पहली सीढ़ी है।''

मैनेजर साहिब जी– हाँ यह पहली सीढ़ी है। यही नहीं काबू आता, फिर आगे क्या करोगे? हाँ जीः

पाठी– हज़रत मुहम्मद साहिब फरमाते हैं कि ''जन्नत की कुंजी नमाज़ है। मांस, अण्डे और खट्टे, मिट्ठे, चटपटे रसदायक खाते-खाते मनुष्य हर तरह के रसों में उलझ जाता है और उनका गुलाम बन जाता है। फिर उन रसों को पैदा करने के लिए ज़ोर और ज़ुल्म पर उतर आता है।

मैनेजर साहिब जी– उनको जो रोटी मिलती है, जो पैसे इकट्ठे किए, सब बर्बाद गए। मालिक इनको कभी भी कमी नहीं देता। अगर थोड़ी सी सेवा की उसकी भी मेहनत देता है। यह सबसे बड़ा खज़ाना है।

पाठी– और यहाँ तक बेरहम और दयाहीन हो जाता है कि अपने जैसे बने हाड मांस के मनुष्य का गोश्त खाना शुरू कर देता है। ज़रा भी परहेज़ नहीं करता। इस प्रकार कर्मों के जाल में फंसता जाता है। और जन्म मरण के दुख उठाता है।''

मैनेजर साहिब जी– यह ज़ुबान का रस सबसे बुरा है।

पाठी– ज़ुबान का रस सब इल्लतों की जड़ है। यह छतीस प्रकार के भोजन मांगती है। चाहे उससे नुकसान हो या फायदा। यह चटोरी होने के वजह से खट्टे-मीट्ठे, चटपटे स्वाद ढूँढ़ती है।

मैनेजर साहिब जी– हमारे एक अफसर था। सूद को तो पता है। आम उठा लिया, टट्टी में जाकर खाया। बोलो! चोरी! ऐसे है। हाँ, जीः

पाठी– नशे पीना सिखाती है। इसका सामान जुटाने के लिए।

मैनेजर साहिब जी– एक प्रेमी डेरे जाता था। कहने लगा, मालिक अच्छा है, भई तू तो रोटी नहीं देता। इतने में एक कुत्ता आ गया। उसने एक रोटी लाकर फेंक दी। उसने ना उठाई, उसने फिर आगे कर दी, उसने फिर न उठाई। जब उसने ऐसे करके फैंकी तो पता चला कि यह तो मेरे लिए फैंक रहा है।

एक बार इब्राहीम जा रहा था। उसको कहा एक प्रेमी ने कि इब्राहीम आज मेरे घर रोटी है। वहाँ ले गया, बिठा लिया। अच्छी सेवा की रोटी खिलाई। कहने लगा कि इब्राहीम मैं तेरा गुलाम हूँ। जो कुछ है सब कुछ तेरा है। वो सब कुछ छोड़

कर भागा कि मालिका मैंने रोटी मांगी थी, यह फाहा थोड़े ही मांगा था! देख लो! सुनो!

पाठी– तीन दिन तक आपको खाना नसीब न हुआ। चौथे रोज़ आप बाहर निकले। सड़क पर जा रहे थे कि सड़क पर पड़ा एक रुपया मिला। लेकिन आपने न उठाया कि शायद किसी का हो और ढूंढ़ रहा होगा। आगे गए कि सोचा घास खाकर गुज़ारा करते हैं। तब क्या देखते हैं कि बकरी गर्म-गर्म रोटी का टुकड़ा मुंह में लिए आ रही है। बकरी ने रोटी आप के आगे फैंक दी। आपने उसको छुआ तक नहीं कि किसी की उठा लाई होगी।

मैनेजर साहिब जी– इसका नाम फकीरी है। हाँ जीः

पाठी– तब बकरी ने कहा कि मैं उसकी गुलाम हूँ, जिसका तू गुलाम है। तब आपने रोटी का टुकड़ा उठाकर खा लिया और बकरी अदृश्य हो गई।

मैनेजर साहिब जी– मेहनत से पाया फकीरों ने।

पाठी– आपने ने ऐसे कई व्रत और तप किए।

मैनेजर साहिब जी– हमें एक मिनट की फुरसत नहीं थी। एक बार मस्ताना जी कहने लगे कि भूख लगी है। उन्होंने जान करके कहा है। उन्होंने देखना था। बिना खाए भजन नहीं होता। मैं धीरे से उठा और मूंगी की दाल रखकर आ गया। थोड़ी देर बाद ले आया। कहने लगे, कि यह बना ली। भाग दौड़ में ऐसा होता था। इस तरह गुज़ारे होते थे। कोई चीज़ आती तो कहेंगे कि मैनेजर को दो भई। वह कहेंगे कि जी दे दी, जी। फिर कहते कि मैनेजर क्या खाना जानता है? एक बार मिठाई भेजी थी। गर्मियों में कलाकंद। हमने खाई कि सारी रात सतगुरु, सतगुरु होता रहा। कहते हैं कि कभी-कभी फकीर का प्यार होता है। पराई खुराक तो बेड़ा गर्क कर देती है। हम तो यहाँ संभल-संभल के देते हैं।

पाठी– आपने ऐसे बड़े तप, व्रत किए कि शायद ही किसी ने किए हों। भोजन के लिए जो अपने हाथ से बोते थे और खुद ही पीस कर पकाते थे। और हफ्ते भर में एक ही रोटी खाते थे। कहते थे कि मुझे शर्म आती है कि मैं हर रोज़ पाखाना करने जाता हूँ।

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! देख लो! हाँ जीः

पाठी– आप न अच्छा खाते थे, न अच्छा पहनते थे। आप की मां ने कहा कि बेटा अपने हाल पर रहम कर। तो फरमाया कि मैं अपने हाल पर रहम कर रहा हूँ। दुनिया में थोड़ी सी तकलीफ उठा कर सदा की खुशी का ख्वाहिशमंद हूँ।

मैनेजर साहिब जी– देख लो! यहाँ इतबार नहीं आता। वो नाम भी मिला है जो सब काम करता है।

पाठी– आप को धर्मी इसलिए कहते हैं थे कि आप हमेशा रोज़ व्रत रखते थे और सात अंगूर खाते थे।

मैनेजर साहिब जी– यहाँ पर कितने हैं। वो भेरियां वाली बीबी, सारा दिन बैठी रहती है, न कुछ खाती न पीती। काम भी सारा करती है। यहाँ ले लो पिपली वाली बीबी, आठ दस महीने हो गए कभी एक ब्रेड पीस ले लिया तो ले लिया नहीं तो कुछ भी नहीं खाती। हाँ जीः

पाठी– एक बार अपने सेवक से कहा कि अंगूर लाओ।

मैनेजर साहिब जी– आठ अंगूर लाया। वो सात खाता था, हाँ जीः

पाठी– उस दिन भजन में रस नहीं आया। समझ गए कि आठ अंगूर खाए हैं। सेवक से पूछा। उसने कहा कि जी आप बहुत कमज़ोर दिखाई देते थे इसलिए सात की बजाय आठ अंगूर लाया। आप ने फरमाया कि तू मेरा दोस्त नहीं, दुश्मन है।

मैनेजर साहिब जी– बस, देख लो! जो खिलाने वाला है, वो भी दुश्मन है। जो ज़्यादा खाना सिखाते हैं। वह फकीर नहीं।

पाठी– अगर दोस्त होता तो छः अंगूर लाता सात की जगह।

मैनेजर साहिब जी– बोलो छः अंगूर लाता। एक और था। मैं बड़े आदमियों को सिआणता हूँ। दूसरों को नहीं। बड़े आदमियों से काम तो लेने पड़ते हैं। सुनो! हमदर्दी वो है जो कम खिलाए।

पाठी– एक बार दो साधू आपके दर्शनों को आए। लेकिन आप के स्थान पर पहुँच कर पता चला कि आप बादशाह के पास गए हैं।

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी। क्या? बादशाह के पास गए हैं? कि हाँ जी।

पाठी– साधुओं पर बुरा असर हुआ कि फकीर होकर राजा के पास जाता है। वहाँ से चले गए। रास्ते में कुछ कपड़ा सिलाने के लिए दर्ज़ी की दुकान पर रूके। इत्तफ़ाक़ से दर्ज़ी की कैंची खो गई। और दर्ज़ी उन दोनों को पकड़कर बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने कहा कि इनके हाथ पांव काट डालो। आप भी बादशाह के पास बैठे हुए थे। आप ने कहा कि इनको छोड़ दो। ये निरअपराध हैं। उन साधुओं को कहा कि अब आप समझ गए होंगे कि तुम्हारे जैसे लोगों के लिए मुझे राजा के पास भी आना पड़ता है।

मैनेजर साहिब जी– बोल भई! बता यहाँ से इतने खुश होकर जाते हैं? कोई काम पड़ जाए तो कह देते हैं कि नहीं। हम तो कहते भी नहीं। पूछ तो लो।

पाठी– जब नेकीराम भूरा के घर गया तो नेकीराम से भूरा बोला कि ज़िक्र चला कोई मेरा!

मैनेजर साहिब जी– हाँ, मेरा कोई ज़िक्र चला। कहाँ?

पाठी– तो नेकीराम बोला कि तेरा कोई ज़िक्र नहीं चला। फिर नेकीराम ने आकर मस्ताना जी को बताया।

मैनेजर साहिब जी– क्यों? ज़िक्र चले किसी का? बस सतगुरु, सतगुरु हो।

पाठी– कि भूरा इस तरह पूछा। तो मस्ताना जी बोले कि ''लोग मालिक को क्या पा सकते हैं जो अपना ज़िक्र चलाते हैं।''

मैनेजर साहिब जी– हाँ, जो अपना ज़िक्र चाहते हैं। सब को हाय, हाय लगी पड़ी है। मालिक तो याद ही नहीं।

पाठी– मालिक को वो ही पा सकते हैं, जो अपने आप को गंवा दे और बोले कि हम तो कुछ भी नहीं है। उसने अपने दिल में कुफ्र रखा। उसे भजन मण्डली, रूहानी कॉलेज से बाहर निकाला गया।

मैनेजर साहिब जी– यह दीनता का मार्ग है। जो छोटा होकर चले, वो पाता है। जितने छोटे होंगे, उतना ही पाओगे, बस। कोई पूछता आगे। बाल बच्चों की झिड़के सह लेंगे, मगर फकीरों की नहीं सहेंगे। देख लो! बर्दाशत नहीं है। जिसने इज़्ज़त लेनी है बेशक घर जाए। जिसने खाना-पीना है, बेशक घर जाए। अभी बता देते हैं। दीनता से पाते हैं, पर सब यह झगड़े हैं। उन्होंने नहीं किया तो मैं क्यों करूं। पाएगा वो ही जिसमें दीनता होगी। जो हस्ती को मिटाए, छोटा होवे कि मैं कुछ नहीं जानता। भाई बेला क्या जानता था? सब मखौल करते थे उसको। ज्ञानी ध्यानी रह गए सब। सब कुछ अख्त्यार हो तो भी, फिर नीचा होवे, वो पाता है। छोटा होकर चले। बोल भई! छोटा होना तो सीखा नहीं। सुनता कोई नहीं। कह देते हैं कि रोज़ ही सुनते हैं, बस। जो बाहर से आते हैं वो तो रखते हैं दिल में। सेवा का फल है, भावें जैसी भी हो फल ज़रूर मिलता है। कोई कैसे भी सेवा करे। धक्के से लेकर जाता है, सतगुरु।

पाठी– छोटा सा होकर चलो रे मन मेरा। तज दे गर्व गुमाना।

मैनेजर साहिब जी– छोटा सा होकर चले। मस्ताना जी कहते थे कि साधुओं के पीछे, पीछे नाचते थे। सच्चे पातशाह के आगे कि कोई खुशी ले लें। उन्होंने कहा

कि निकल जा यहाँ से। कभी बिस्तर उठा कर चल पड़ते। कभी छिप जाते, कभी फिर आ जाते थे। सच्चे पातशाह फिर रख लेते थे। फिर चले जाते, फिर आ जाते थे।

एक कामिल फकीर था। उसने साधुओं को रोटी की। जब वो आए तो कहने लगे क्यों बाप का धन छोड़ गए थे? वो बेचारे चले गए। फिर बुला लिया। वो फिर आ गए। फिर कहने लगे कि लो यह खा लो पत्ते आगे कर देते। सब दौड़ गए। सिर्फ एक फकीर रह गया। उसने पीछा न छोड़ा। उसको पूछा कि भई क्यों! सब चले गए तू क्यों नहीं गया? कहने लगा एक आप को देखा अगर कोई फकीर है तो आप हैं। उसने पूछा कि क्या देखा? मैं तो कुत्तों जैसा बर्ताव किया। जैसे कुत्ते को दुर-दुर करो तो भाग जाता है, पूच-पूच करो तो वापिस आ जाता है। यह हो, वो ही पाता है।

पाठी– बिछौना और तकीया बिल्कुल नहीं था।

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! वहाँ रोड़ियों का बिस्तरा देते थे मस्ताना जी।

पाठी– खुद कभी करते, लेटने का तो लेटते नहीं थे। नींद का कलवा आना तो बैठे-बैठे सो जाते। अकसर दस-दस, बीस-बीस, दिन कुछ नहीं खाते थे। अत्यन्त सन्तोषी थे। सल्तनत के अमीर-उमराआं हर तरह के तोहफे व पदार्थ भेजते थे। मगर मौलाना अपने पास कुछ नहीं रखते थे। जो चीज़ आती, फौरन सलाउदीन जखोध के पास भेज देते। कभी तंगी होती तो उनके पुत्र सुलतान वल्द बहुत कहते तो कुछ रख लेते थे।

पाठी– देख लो! और चीज़ नहीं रखते थे। इतना कुछ आता था। तभी तो उसके पुत्रों ने शम्मस तबरेज़ की खाल उतारी थी। देख लो! ऐसे ही फकीरों को तंग करते हैं। यह सोचते है कि खाने पीने में ही फायदा है।

पाठी– जिस दिन घर में खाने का सामान नहीं होता। उस दिन खुश होते थे कि आज घर में दरवेशी की बू आती है।

मैनेजर साहिब जी– हाँ, दरवेशी की बू आती थी।

पाठी– हर वक्त मुंह में हरड़ या बहेड़ा रखते थे।

मैनेजर साहिब जी–यह हरड़ जो पीले रंग की होती है, मुंह में रखते थे। पूछो क्यों?

पाठी– जब कुछ लोगों ने पूछा तो उन्होंने कहा कि हम यह नहीं चाहते कि मुंह का जायका भी मीठा हो।

मैनेजर साहिब जी– देख लो! मुंह का जायका भी मीठा न हो। ऐसे पाया है जिन्होंने

पाया है मेहनत कर-कर के। रोज़ आप को इतना खिलाएं तो आप क्या बनोगे, संढ़े बनोगे। फिर गए काम से। कुछ सीखो उनसे। बस ऐसे खा खाकर ख़राब हुए हैं। वचन मानोगे तो सुख पाओगे वरना दुख उठाओगे सुनो! हाँ जीः

पाठी– यदि कोई सवाल करता तो जो कुछ पहना होता, कुर्ता, चोगा उतार कर उसे दे देते।

मैनेजर साहिब जी– मस्ताना जी को सत्संग के लिए भेजा था। वहाँ आकर एक ने सतगुरु का यश किया आपने उसको कोट उतार कर दे दिया। जो अभी नया बनवाया था। साधुओं ने आकर शिकायत की। जी ऐसे करता है। यह तो ख़राब करेगा। उन्होंने कहा कि तुम ने क्या किया सतगुरु के नाम पर बता? हाय! हाय! खा, खाकर दुनिया ने गन्दगी पैदा की। सत्संग में मस्ताना जी ने कई बार फरमाया कि जिस पर मेहर होती है, दया होती है, उसको गरीबी, निरादरी और बीमारी देता है। यह दया है।

पाठी– आप सूखी रोटी पानी में भिगो कर खा लेते थे, जब ज़रूरत होती थी।

मैनेजर साहिब जी– बाबा जैमल सिंह जी स्टेशन पर से रोटियां ले जाते थे। जब ज़रूरत पड़ती थी, तो इतना सा टुकड़ा भिगो कर खा लेते। वहाँ की रोटियां मशहूर हैं, देख लो!

पाठी– और फरमाते हैं कि जो इस पर सब्र करेगा, वह इस दुनिया से बेपरवाह हो जाएगा।

मैनेजर साहिब जी– दुनिया से बेपरवाह हो जाएगा। जिसको कुछ नहीं चाहिए, वो ही शहनशाह है, देख लो!

पाठी– फरमाया कि मनुष्य वही भाग्यवान है।

मैनेजर साहिब जी– सुनो! कि मनुष्य वही भाग्यवान है।

पाठी– जो सुबह को भूखा उठे और रात को भूखा सोये।

मैनेजर साहिब जी– हाँ, जी। जो रात को भूखा सोये।

पाठी– ऐसी हालत में मालिक की तव्वज़ो उन बंदों पर और बंदों की तव्वज़ो मालिक पर होती है।

मैनेजर साहिब जी– बस मालिक तभी मेहर करेगा अगर तो भूख होगा। फिर मालिक भी देखना है कि मेरे पीछे है।

पाठी– फरमाया कि ज़ुबान को हिफाज़त में रखना, माया और ज़र की हिफाज़त से ज़्यादा मुश्किल है।

मैनेजर साहिब जी– हाँ कि ज़्यादा कठिन है। बाहर से संभाला जाता पर यह कठिन है। अभी सुनाया था कि एक आफिसर था उसने आम उठाकर टट्टी में जाकर खाया। हमारे अफसर का बाग था। सूद तो जानता है। यह सुनो कीमती बात है।

पाठी– एक दफा एक औरत ने आप को धोखेबाज़ के नाम से पुकारा। आपने फरमाया कि बीस साल हुए किसी ने मुझे मेरे असली नाम से किसी ने नहीं पुकारा।

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! देख लो!

पाठी– लेकिन मुझे मालूम हो गया कि मैं कौन हूँ?

मैनेजर साहिब जी– मुझे मालूम हो गया कि मैं कौन हूँ, देख लो! हाय! हाय! यह सुनो।

पाठी– आदणीय मैनेजर साहिब जी को गुनहगार लादूराम की धन धन सतगुरु अर्ज़ है।

आगे समाचार यह है कि पहले सुना था कि कामिल सन्तों के चिताए हुए जीवों के पास काल, महाकाल नज़दीक नही आता। पर सूक्ष्म में आपने इस बेईमान को दिखा दिया कि सुबह तीन बजे का समय था। गुनहगार नहा कर बाहर दरवाज़े पर गेट के आगे खड़ा था। इतने में एक बच्चा आया करीब दस बारह साल का होगा, भाग कर आया और कहने लगा कि लादूराम वो देखो काल आ रहा है और हम सब को खाएगा। मैंने कहा कि कहाँ पर है? उसने कहा कि घर से आगे की गली में कुछ दूरी पर एक मोड़ है उस मोड़ पर पहुँचा हुआ है। वो सब घबरा गए। तो लादूराम ने कहा कि हमारे सन्तों का कहा हुआ है कि पूर्ण सन्तों के चिताए हुए जीवों के पास काल, महाकाल, यमदूत नहीं आते। तो काल वहीं खड़ा हो गया और गुनहगार ने कहा कि ज़ोर से नारा लगाओ ''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'' ज्यों ही नारा बोला तो काल वहीं से भाग गया। जो पास खड़े थे कहने लगे कि लादूराम धन हैं आप के फकीर।

जिसने आप को नाम बख़्शा। इस बेईमान को तो बाबा जी ने नाम बख़्शा ही था। तब से ही भरोसा भारी था क्योंकि आपने इतनी तकलीफ से इतनी तसल्ली दिला थी कि बाबा जी अगर भजन नहीं बनता तो कहा कि क्यों फ़िक्र करता है? आप की तो पहले भजन की बोरियां भरी पड़ी है! और फकीरों के बारे में पूछा था तो कहा कि लादूराम, फकीर अपने जीवों को 50% बातें बताते हैं, बाकी अपने पास रखते हैं।

मैनेजर साहिब जी– हमें तो ख़्याल ही नहीं किस समय हुआ, हाँ जीः

पाठी– परन्तु मैंने तो खोल कर सारी बातें आप को बता दीं। सिर्फ 10% अपने पास रखी हैं। बाकी वक्त आने पर बता देंगे। और आपने इस पापी की संभाल कदम-कदम पर की है। और इतना प्रेम, प्यार दिया है कि पहले जन्म में आपने भक्ति की और इस बेईमान ने आपके जोड़ों की सेवा की होगी। वो तो आप ही जाने इसका, आत्मा को।

मैनेजर साहिब जी– पुरानी भक्ति जिसकी होती है, वो ही आते हैं। ऐसे थोड़े ही आते हैं, थोड़ी या ज़्यादा हो। जब तक पाँच-छः जन्म की भक्ति न हो फकीरों के दरबार में कदम ही नहीं रख सकता, नाम नहीं मिलता। जब तक सात-आठ जन्म की भक्ति न हो दरबार में नहीं रह सकता। सबको दौड़ा रहा है कभी किसी बहाने कभी किसी।

पाठी– यह आत्मा मालिक से बिछुड़ी हुई है। उसको मिलने के लिए तड़पती है, लेकिन मन नहीं मानता। आपके साथ ही थोड़ा रहता। लेकिन कैदखाने में तो वही हाल है। परन्तु आपका वचन है कि घर में रहकर लेने देने भी खत्म करने हैं।

मैनेजर साहिब जी– वो आना चाहते हैं। यहाँ जो रहते हैं वो रहना नहीं चाहते, दौड़ते हैं। देख लो! हाय! हाय! कई हैं, हाँ देख लो। घर बार छोड़कर आए। अब मां का ख़्याल आ गया देख लो! किधर बैठा है वो। जो बोओगे वही काटा जाएगा। यह भक्ति है, सेवा है। यहाँ एकाउंट ऐसे ही चलता है। मन सौ बहाने ढूंढ़ता है। जैसे कभी माँ का ख़्याल आ गया। जैसे काम नहीं करेगा सौ बहाने करेगा। मेरे दर्द हो गया, देख तो सही मन के मकर। हाँ, बड़ा होशियार है यह मन! बस तौबा, तौबा करते हैं, मन से। बहुत अज़मायइश है। पता नहीं कौन सी घड़ी यह बदल जाए? आखिर तक इस का भरोसा नहीं किया। जो मालिक की दरगाह में फकीर जाते हैं जब वापिस आते हैं तो हमें इसे साथ लाना पड़ता है। ऐसे काम नहीं चलता। उनको भी धोखा देना चाहता। फिर दुनिया का तो हाल ही क्या है। पहले तो यही कहा करते किः

'मन ही रब्ब है'

है तो ठीक कबीर साहिब ने कहा है कि चार राम हैंः

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में बैठा।
एक राम का सगल पसारा, एक राम त्रैगुन से न्यारा॥

घट घट में बैठा हैः

जीउ एकु अरु सगल सरीरा॥ इसु मन कउ रवि रहे कबीरा॥ (330/12 कबीर)

सब को उंगुलियों पर नचाता है। हाँ जी। छोटा बनोगे तो पाओगे।

खाक आपको समझना अकसीर है तो यह है॥
इखलाक सबसे रखना तशगीर है तो यह है॥
नजदीक आरफ़ो के तदबीर है तो यह है॥

यह अपने आप को मिट्टी समझे। यह मन विषय का अन्तर। सब से प्यार करें।

सब काम अपना करना तकदीर के हवाले॥
नजदीक आरफो के तसवीर है तो यह है॥

फकीरों की सोहब्बत में रहे।

लीरां किया जो आपको हस्ती पे नजर पड़ी।

आपने जब हस्ती पे नज़र डाली, तब अपने आप को बर्बाद किया। एक नई ज़िन्दगी मिल गई पुरानी कहावत हैः

दाना खाक में मिलकर गुलो गुलजार होता है।

पहले दाना सड़ गल जाता है फिर बड़ा बूटा बन जाता है। फिर बनता है। यह भी गल कर मिलता है। ऐसे नहीं।

देखा खाक तो आगे मुकाम था॥

यह मुकाम है, साधू की चरण धूड़ बनना। यह आला मुकाम है।

ज्यों ज्यों बुलंद हुए पस्ती नजर पड़ी।

जरा भी अहंकार न आया कि मैं कुछ हूँ। अगर अहंकार आ गया तो बस गया। हाँ जीः

पाठी– छोटा सा हो कर चलो रे मन मेरा, तज दे गर्व गुमाना॥
तेरा सरीका कितना चला गया धर के देख ले ध्याना।
अवतार सरीका रहन न पाया अपना क्या अनुमाना॥
छोटा सा हो.....

पाठी– मस्ताना जी ने फरमाया कि मालिक के घर सब कुछ है पर दीनता नहीं है। क्रोध, अहंकार को मारने के लिए दीनता करना खास हथियार है। लेकिन इसको इस्तेमाल पूरा गुरुमुख या पूरा फकीर ही कर सकता है। यह खास शेरों का काम है। दीनता से हृदय ठण्डा रहता है। हृदय ठण्डा रहने से इश्क में तरक्की होती है। जब तक महबूब न मिल जाए दीनता को न छोड़े। पीछे आप फकीरों की ज़िन्दगी से मुलाहज़ा करें तो देखोगे कि कैसे दांत तुड़वाए, जिस्म की खाल उतरवाई और

गर्म तवे पर बैठ गए बेखौफ होकर, लेकिन दीनता न छोड़ी। सच्चे पातशाह की शरण में रहता हुआ, उनकी मौज़ में रहता हुआ, काल को दीनता से मारे, वो ही पूरा आशिक है।

पाठी– सत्संग कर पर सार न जाणी, न छुटा अभिमाना।
नहीं कोई भजन बना नहीं बन्दग़ी, फिर चौरासी आना॥
छोटा सा हो.....

मैनेजर साहिब जी– वचन पर रहते नहीं फिर ऐसे ही धक्के खाते हैं, और कई-कई जन्म लग जाते हैं। अगर वचनों पर चलें तो जल्दी पहुँच जाएं। नाम ही ऐसा है, फिर छोड़ता नहीं। धर्मदास आठ जन्मों में गया है। अभी तक गुरुनानक साहिब और कबीर साहिब की रूहे पड़ी हैं। हाँ जीः

पाठी– पत्थर में दाता कर जाना अपने में क्यों नहीं जाना।
मन की गड़बड़ मिटि न वासना पूजत फिरे पाहाना॥
छोटा सा हो.....
योगी हो कर युक्त न जाणी कैसा रंगा लिया बाणा।
योगी होना बहुत कठिन है जीवता ही मर जाना॥
छोटा सा हो.....

मैनेजर साहिब जी– 'सार वचन' तो ला, ओ वकील! 'सार वचन' ला। ओ वकील! ओ बेइमान! इसने भी नहीं सुना।

पाठी– कहें रामानन्द सुनो भाई साधो गुरु देत एक सैना।
बनके कबीर सुनो भाई साधो दरसे अगम निशाना॥
छोटा सा हो.....

सेवक का धर्म है कि सिवाय सतगुरु के और सब की शरण छोड़ दे। और सतगुरु को ही मुख्य रखे। जो सेवक ऐसा करेगा उसको अपनी दया से आप ही पकड़ेंगे। उसको ज़रा तकलीफ न होगी। सकल पसारा आदि से अंत तक मांस का है। पर इसमें नाम उत्तम है। सो जिन्होंने सतगुरु को मुख्य पर लिया वो ही बचेंगे, नहीं जैसे और जीवों का मांस पकाया जाता है, ऐसे ही उनका मांस भी चौरासी की अग्नि में पकाया जाएगा।

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! देख लो भाई!

पाठी– उपर ज़िक्र हुआ कि सतनाम स्थान जिसको सतलोक या सचखण्ड भी कहते हैं, निहायत ऊँचा है। फरमाया कि परचा लेने वाला कोई भक्त होवे, तो परचा लेवे।

मैनेजर साहिब जी– जो मेहनत करते हैं, उनको मिलता है इस कद्र भक्ति किसी को भी नहीं मिलती जो परचा देवे। जो तुम कर रहे हो यह नकल है। सो कोई चिन्ता की बात नहीं। अबकै ऐसे ही मौज़ है सबको तारेंगे।

पाठी– सतगुरु को दीनता पसन्द है। दीनता सच्ची है तो मन की चंचलताई का फ़िक्र न करो रास्तों को देखो। जब तक स्वास है, गुरुभक्ति किए जाना चाहिए। गुरु भक्ति कुल मालिक की भक्ति तो है, और उनसे कुछ न मांगे। उनको अख्त्यार है कि जब अधिकारी देखेंगे, जो चाहे बख़्श देंगे।

मैनेजर साहिब जी– बस! लगा रहे, बस अचनचेत सब कुछ मिल जाता है।

पाठी– करनी और दया दोनों संग-संग चलेंगे। दया बिना करनी नहीं, करनी बिन दया नहीं होगी। जो दया को मुख रखेंगे तो आलसी हो जाओगे, और करनी नहीं होगी। सन्त करामात नहीं दिखाते। वह अपने स्वामी की मौज़ बरतते हैं, और गुप्त रहते हैं। जो अपने स्वामी को प्रगट करते हैं उनका मन्जूर होवे तो करामात दिखाते हैं वरना गुप्त रखते हैं। क्योंकि करामात दिखाने से सन्तों को जल्दी ही गुप्त होना पड़ता है और सच्चों का अकाल और झूठों की भीड़-भाड़ होती है। इस वक्त में करामात को दिखाने का हुक्म नहीं। जो करामात देखने की चाह रखते हैं, वो परमार्थी भी नहीं। इस जीव के सब बैरी हैं, कोई मित्र नहीं। मन जो तीन गुणों से मिला हुआ है वो इस जीव को ऐसे देखता है जैसे बिल्ली चूहे को खाने का इरादा रखती है। सिवाय इसके जो काल के जीव हैं, उसका हुक्म मानते हैं। यानि मन के कहने पर चलते हैं, तो भी काल उनको दुख देता है।

मैनेजर साहिब जी– दुख उन जीवों को भी देता है। सोच लो!

पाठी– इस तरह दुखी रहते हैं। पर जो जीव सतगुरु के हैं काल भी उनसे डरता है और उनका सहायक रहता है। इसलिए उनको चाहिए कि सतगुरु की शरण लेवें हर वक्त उनकी। यहाँ भी और वहाँ भी रक्षा होगी। हाँ जीः

पाठी– ईश्वर के दरबार के दरबानी ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, खुद ईश्वर हैं। पर सन्त दरबार के दरबानी उनके सेवक हैं और उनका दर्जा इतना ऊँचा है कि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव खुद ईश्वर भी इनको नहीं रोक सकते। और न ही उसका मुकाबला कर सकते हैं क्योंकि सन्त सबसे बड़े हैं। और सन्तों के सेवकों को भी वही दर्जा मिलता है। लेकिन उनकी बराबरी देवता नहीं कर सकते।

मैनेजर साहिब जी– देख लो! ईश्वर खुद, देवता भी बराबरी नहीं कर सकते।

पाठी– किसी तरह की जब तकलीफ होवे, तो हजूर सतगुरु निज रूप में मौजूद

हैं काल और धर्मराय उसके पास नहीं आ सकता। दूर-दूर से ही डराते हैं, और आप डरते हैं। फिर सतगुरु की गोद में किसी तरह का डर नहीं। सतगुरु हर समय रक्षक मौजूद है और संभाल अपने सेवक की करते हैं। मौज़ और मसलत सेवक नहीं जान सकता, पर वे खूब जानते हैं और जो मौज़ होवे तो सेवक को जना दें।

मैनेजर साहिब जी– किसी मौके पर होता है ऐसे! यह सुनो क्या कहता है? हाँ जीः

पाठी– इससे पहले कि मैं सत्संग शुरू करूं। मेरे पीछे से जिसने जाना है चले जाएं। थोड़ी सी संगत रह जाएगी। उनका ख़्याल रखा जाएगा। नहीं तो पीछे से खुल खेल तो है ही। (भाई गोकल चंद की तरफ इशारा करते हुए) क्यों गोकुल चंद तू इन्तज़ाम कर लेगा?

गोकुल चंदः नहीं हजूर।

मैनेजर साहिब जी– ऐसे साधू वहाँ भी बातें करते रहे हैं।

पाठी– नहीं हजूर, भाईया जी कर लेंगे। हजूर जी ने फरमाया कि रजिस्टर रखो और हाज़री लगाओ। दो घण्टे नहीं तो कम से कम एक घण्टा ज़रूर बैठो ताकि पता लगे कि कौन-कौन से भजन नहीं करते। बाकी रहा सत्संग वो बाबू गुलाब सिंह के सिवा कोई भी सत्संग न करे। बाबू जी को चाहिए कि नोट करें कौन-कौन से नहीं आते। क्योंकि मुझे पता लगा है कि बहुत से सत्संग में नहीं आते।

मैनेजर साहिब जी– मस्ताना जी सारी रात बैठे रहे। जाने वाले चले गए। आखिर में कहने लगे कि क्यों मथा मार रहे हो। यह तो समझ लिए। यह हाल है।

पाठी– हज़ारों ब्रह्मा, हज़ारों गोरख, हज़ारों नाथ, हज़ारों पैग़म्बर तृष्णा की आग में जल रहे हैं क्योंकि उनको सतगुरु नहीं मिले।

मैनेजर साहिब जी– अगर कोई यह सवाल करे कि ऐसे बड़ों को जब सतगुरु की पहचान न हुई तो फिर जीव कैसे पहचान सकता है? उसका उतर यह है कि यह सब अपने अहंकार में रहे। इनको सतगुरु पर निश्चय नहीं आया। और किसी समय पर आपने इनपर प्रगट नहीं किया। क्योंकि वो रचना के काम के अधिकारी थे। उनसे यही काम लेना मंजूर था। अगर उनको निश्चय सतगुरु पर जाता तो रचना का ही नहीं चलता। और दुनिया का सन्तुलन बिगड़ना भी मंजूर नहीं था। जो जीव संसारी है उनके लिए यह लोक पैदा किए कि जीव की संभाल करे। उनके लिए सतगुरु का उपदेश नहीं है। और न वो इस उपदेश को मानेंगे और न ही सतगुरु का भाव उनके मन में समाएगा। अब सतगुरु पुकार-पुकार कर कहते हैं

कि ऐसे बड़े-बड़े जिनका निश्चय हज़ारों जीव बांधे हुए हैं कि चौरासी के चक्कर और नरक और दोज़ख की आग से न बचे, तो जीव भला कैसे बचे? पर वचन की प्रतीत वो ही जीव लेवेंगे जिनका भाग परमार्थी है और चौरासी से छुटकारा होने वाला है। जिनको सच्ची और निर्मल चाह मिलने की है। जिनको सांसारिक वासना अनेक तरह की फंसी हुई है, वो सतगुरु की प्रतीत नहीं कर सकते।

मैनेजर साहिब जी– बस याद रखो अच्छी चीज़ मिली है।

पाठी– ज़ुबान का रूप सब इल्लतों की जड़ है। जीभ छत्तीस प्रकार के भोजन मांगती है।

मैनेजर साहिब जी– ज़ुबान का रस, तन का प्यार यह सब माया जाल है।

'जेते सुख संसार के सब ही माया जाल'

यह दादू साहिब ने कहा है। सब माया का जाल है। यह सुख मांगता है। जितनी तकलीफ हो उतना ही फायदा है। हाँ जीः

पाठी– चाहे इससे नुकसान हो या फायदा। यह चटोरी होने के कारण खट्टे, मिट्ठे, चटपटे पदार्थ चाहती है। नशे पीना सिखाती है। इस के सामान के लिए मनुष्य चोरियां-ठगीयां करता है, झूठ बोलता है और आखिर नरकों में जाता है।

मैनेजर साहिब जी– इसको क्या इसने तो रस लेना है। हाँ जीः

पाठी– जिसने जीभ के रसों पर काबू पा लिया। वह बाकी इन्द्रीयों पर आसानी से काबू पा सकता है। वह भक्ति करके मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

जिनि जीता इस जीभ को तिन जीती सब देह।
चरणदास सुकदेव कहत है मुक्ति धाम फल लेह॥

मैनेजर साहिब जी– देख लो इतने बड़े आफिसर होकर चोरी कराई कि नहीं यह सब ज़ुबान के रस ने करवाया।

पाठी– यही ईसाई महात्मा का कहना है कि जिसने जीभ की इन्द्री पर काबू पा लिया, वह दूसरी इन्द्रीयों पर आसानी से काबू पा लेता है।

एक सूफी साहिब बहुत मजबूर करने पर किसी की मेहमान नवाज़ी पर गए और थोड़ा सा खाकर उठ खड़े हुए। मेहमान नवाज़ ने हैरानी से पूछा कि बस सिर्फ इतना ही! तब आपने फरमाया कि भई इन्द्रीयां एक बदमाश घोड़े की तरह हैं। यह तो मौका देखती हैं। इसलिए सदा इन की लगाम को मजबूती से व चुस्ती से पकड़ कर रखता हूँ। अगर लगाम को थोड़ा सा ढील दे दूं या एक आध चाबुक लगा दूँ यह पता नहीं कि यह दुष्ट सवारी मुझे किस खाई में जा फैंके।

मैनेजर साहिब जी– हाँ, देख लो! बस। मानोगे तो सुख पाओगे नहीं तो दुख पाओगे। यह ईर्ष्या सबको साड़ देती है। किआ कराया सब बर्बाद कर देती है, हाँ जीः

पाठी– कहे रामानन्द सुनो भाई साधो दरसे अगम निशाना।
छोटा सा हो कर चलो रे मन मेरा तज दे गर्व गुमाना।
ऐ सरीरा मेरीआ इसु जग महि आई कै, किआ तुध करम कमाइआ।
लाहनत ओए लाहनत तेनूं कर्मा दिआ मारिआं।
अपना तूं चंगा मंदा कुछ न विचारिया।
गफलत दी चादर ओऐ तू सो गया तान के।
पैरी कुहाड़ा मारिया अपने तू जाण के।
भजन न कीता ऐवैं वक्त गुजारिया॥ लाहनत.....
आकड़ के तुरदा जावे ठोकरां तू मारदा।
हस्ती नूं अपनी बंदे क्यों नहीं पछाणदा।
जिस ने गरूर कीता बाज़ी ओह हारिया॥ लाहनत.....

मैनेजर साहिब जी– उलटा रास्ता है फकीरी का। बाहर कौन सा है? खाना-पीना होवे, ऐश होवे। यहाँ पर तो दास हो तब है।

दासनिदासु होवै तां हरि पाए विचहु आपु गवाई। (600/12 मः3)

खाना, पीना छोड़े। हाँ जीः

पाठी–पाए चमकीले वस्त्र इतर लगाए तू।
काल नगारा वजे फिर पछताए तू।
छड्डना जदों पै गया कोठा लिपया सवांरिया॥ लाहनत.....
वडे वडे राजां दे न दिसदे निशान जी।
जित्थे सन खड़े हसदे ओथे शमसान जी।
कबरां सन ओथे जिथे महल उसारिया॥ लाहनत.....

मैनेजर साहिब जी–देख लो! भई।

पाठी–विषय ते विकारां वल मन तेरा जांवदा।
गुरु दे भजन वल क्यों नहीं आंवदा।
शर्म हया न आवे तेनूं ओए नकारिया॥ लाहनत.....

पाठी–ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे तेरे कम आवेगा।
सुन्दर महल मकान ऐथे छड जावेगा॥
जदों काल वली ने आउना, तेनूं जुरजां मार डराउणा।

तेरे कोल होणगे सारे तैनूं किसे न फेर छुडौणा, बहुत दुख पावेंगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी– कोई तरसता है रहने को, कोई दौड़ता है। यह देह भी छोड़ जानी है। इसको पाल-पाल कर थक गया। सारा दिन भागता दौड़ता है।

पाठी– क्यों करदा ऐ मेरा मेरी, हो जाएगी खाक दी ढ़ेरी।
एह मानस जन्म है बन्दया इक जोगी वाली फेरी, फेर नहीं आवेंगा॥
सुन्दर महल.....
जिस धन जौबन ते फुलया सब ऐथे ही छड जाना।
बंदे नाम की कमाई कर लै इक नाम ने साथ है जाना।
होर की लै जावेंगा॥
भजन बिना इंसान गोते खावेंगा, सुन्दर महल.....

पाठी– मन का मुकाबलाः – मैंने रसोइए को आज्ञा दे रखी थी कि मेरा खाना बना कर रख दिया कर। मुझे बुलाया न कर। जब मैं उठूंगा तो ठंडा ही खा लूंगा। गर्म हमारे भाग्य में नहीं है।

मैनेजर साहिब जी– देख लो! सच्चे पातशाह की बात है। कहते हैं कि गर्म हमारी किस्मत में नहीं ठण्डा ही खा लिया करेंगे तू बना कर रख दिया कर।

पाठी– मैं दफ्तर से आकर, कपड़े बदल कर, पानी वगैरह पीकर भजन में बैठ जाता था। जब तक भजन में रस नहीं आता उठता न था। नौकर बेचारा बैठा रहता। नौकरी को मैंने खेल समझ रखा था। मेरे अफसर मुझ पर बहुत खुश थे। मुझ पर कोई हुक्म न था। मेरे सतगुरु ने भी मुझे लाडला रखा। मुझे कीया कराया दिया।

मैनेजर साहिब जी– देख लो! अहंकार न था। मस्ताना जी कहते थे कि यह बख़्शीश है। हाँ जीः

पाठी– अपना कीया कराया दिया मुझे नाम का खज़ाना।

मैनेजर साहिब जी– 'काल न मिलिया शेर न मिलिया चिंता जिन की करी,
दया करी मेरे सतगुरु'

पाठी– यह सब सच्चे पातशाह की मेहर का फल है, मैं किस लायक था। शरीर से सेवा हो रही है। हमारे सतगुरु का शुक्र कीजिए। जिन्होंने दया करके साध संगत की सेवा दी है। यह शरीर जो है यह साध संगत का है। मैं तो उनका सेवादार हूँ। मेरे से जितनी सेवा साध संगत की होगी मैं करने को तैयार हूँ। शरीर तो अपना

नहीं बाकी यह सेवा में लगे तो अच्छा है।

मैनेजर साहिब जी– हाँ, जी। साध संगत में लगे बस। हाँ जीः

पाठी– सन्तान की अपेक्षा सत्संगी भाई अधिक प्यारे होते हैं क्योंकि सत्संगी भाई दीन के दोस्त और औलाद दुनिया के दोस्त। कुत्ते में दस बातें होती हैं।

मैनेजर साहिब जी– सुनो भाई कुत्ते में दस बातें हैं।

पाठी– कुत्ते में दस बातें होती हैं। जो इन्सान में कम होती हैं। इसलिए कुत्ता मनुष्य से हज़ार दर्जे अच्छा है। जिसमें दस बातें पाई जाती है। जो इन्सान में कम ही मिलती है।

पहली बात यह है कि कुत्ता भूखा रहता है, भूखा रहना संयमी व्यक्ति का लक्षण है।

मैनेजर साहिब जी– देख लो रोटी उठाकर रख देंगे, खाते नहीं।

पाठी– **दूसरी बात** यह कि कुत्ते का कोई निज स्थान नहीं होता यह सन्तोषी का लक्ष्ण है।

तीसरी बात– कुत्ता रात को कम सोता है यह रात को जागरण करने वाले अभ्यासी का लक्ष्ण है।

चौथी बात– यह है मरने के बाद कोई सम्पति नहीं छोड़ता जिसके लिए उत्तराधिकारियों में लड़ाई हो।

पांचवीं बात– यह है कि अपने मालिक से कभी बेवफाई नहीं करता। वह चाहे कितना ही क्यों न मारे, कितना ही क्यों न खफा हो। यह सच्चे शिष्य का लक्ष्ण है।

मैनेजर साहिब जी– प्यार से पुच-पुच करो तो पास आ जाता है। दुर दुर करो तो चला जाता है।

पाठी– **छटी बात** यह है कि दूर और तुच्छ जगह पर बैठता है। यह अतिथि सत्कार में तत्पर रहने वालों का लक्ष्ण है।

सातवी बात– यह कि जो जगह जाती रहती है। जिस जगह पर यह सोया, बैठा करता था। उसको छोड़कर दूसरी जगह पर बैठ जाता है। वह मालिक की रज़ा में राज़ी रहने वालों का लक्ष्ण है।

आठवीं बात– यह है कि इसको मारने के बाद टुकड़ा रोटी का डाल दे। पुचकार कर बुला ले। दुम हिलाता हुआ झटपट आता है और मार का या नराज़गी का कोई ख़्याल नहीं करता। यह लक्षण दीनता का है।

नवीं बात– यह है कि इसका मालिक खाने बैठता है तो दूर बैठकर देखता है। यह लक्ष्ण शीलवान पुरुषों का है।

दसवीं बात– यह है कि जिस जगह को छोड़ देता है। उसका कभी भी ख़्याल नहीं करता। यह लक्ष्ण एकदम एकान्त में रहने वालों का है।

पाठी– आपका पड़ोसी एक यहूदी था। आपके मकान की मेहराव अपना पखाना बनाया हुआ था। रोज़ मैला वहीं डाल देता था। बहुत अरसे तक ऐसा चलता रहा, मगर आपने किसी से ज़िक्र नहीं किया। एक दिन उस यहूदी ने पूछा कि मेरे पाखाने से किसी तरह की तकलीफ तो नहीं। आपने फरमाया कि नहीं मैंने एक बर्तन और झाड़ू रख लिया है कोई तकलीफ नहीं। मालिक को प्यार करने वाले शिकायत नहीं करते। सब तकलीफ बर्दाशत करते हैं। मुंह से तो हम मालिक की इबादत करते हैं और उसी से मदद चाहते हैं। लेकिन बात यह है कि छोटी-छोटी बातों के लिए हम दूसरों से उम्मीद और सहारा रखते हैं।

फरमाया कि जिसको मालिक के गुणनावाद और भजन बन्दग़ी के बनिसबत लोगों से बातें करने में ज़्यादा मज़ा आता है, उसकी उम्र बर्बाद, और इल्म थोड़ा और दिल अंधा होता है।

मैनेजर साहिब जी– बस, हाय! हाय! नाम भी मिला पर मन करने नहीं देता।

पाठी– विसरि गई सब ताति पराई॥ जब से साध संगत मोहे पाई॥

(1299/13 म:5)

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'दरस तेरे की प्यास मन लागी'

सत्संग के वचन

मैनेजर साहिब जी– देखो भई! सारी दुनिया बाहर ही बाहर फिर रही है। किसको मिलता है? सच्ची तड़प वाले को, लगन वाले को। सोचो मीरां भागती दौड़ती फिरती थी।

'हेरी मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द ना जाने कोय'

कौन सा दर्द था उसको? मालिक के मिलने का! सोचो! कहती है, मैं बहुत जगह गई, सब ठगी निकली। पहले मैं समझी, हीरे जैसा रास्ता है, फिर समझा सोने जैसा है, फिर समझा ये है, वो है, सब ठगी निकली। चीज़ रविदास से मिली। जो सच्ची तड़फ से पुकार करता है उसको चीज़ मिलती है, वैसे नहीं। गर्ज़ ही नहीं। ऊपर-ऊपर से गर्ज़ है, सब दुनिया बे-गर्ज़ है! बाहर की चीज़ की गर्ज़ है! अगर याद भी करती है! बाहर की चीजों के लिये, मालिक अपने, उसके लिये नहीं! देख लो भई!

दरस तेरे की प्यासी.....

हाँ, हाँ सुनो ये प्यास लगे तो पानी-पानी करता फिरता है। हाय! पानी, हाय! पानी, हाय! पानी, फिर उसको मिलता है! गर्ज़ ही नहीं दुनिया को! देख लो प्यास होगी तो ही पीयेगा, प्यास ही नहीं, गर्ज़ ही नहीं किसी को! हाँ, हाँ जी, बोल भई, हाँ बोल ओ ही प्यास, ओ ही.....

पाठी– दरस तेरे की प्यास मन लागी।
सहज आनन्द वसे बैरागी, दरस तेरे॥

मैनेजर साहिब जी– हाँ, हाय! हाय! हाँ देख लो भई.....

'दरस तेरे की प्यास मन लागी'

देख लो दुनिया की चीजों के लिये गर्ज़ है। उनकी प्यास है। गुरुद्वारे की तरफ जाता है भई! जो बड़ी मुश्किल से मिलते हैं! उसकी गर्ज़ किसी को भी नहीं। क्या कहते हैं? हाँ जीः

पाठी– यही कबीर साहिब कहते हैंः

मैनेजर साहिब जी– हाँ बोल, हाँ जीः

पाठी– मेरे अन्दर ज्ञान रतन की खान खुली है। जिसको मैं मुफ्त देता हूँ।

मैनेजर साहिब जी– मुफ्त देता है, वो लेते भी कुछ नहीं और छोड़ते भी कुछ नहीं, लेते भी कुछ नहीं और छोड़ते भी कुछ नहीं। राजा जनक को मालिक के मिलने का शौक था। अष्टावक्र के पास गया। उसने कहा भाई उसकी दक्षिणा भी होती है। कि क्या? कि तन, मन और धन। कहने लगा देने को तैयार हूँ। कि मुश्किल है! कि नहीं। संकल्प कर। संकल्प कर दिया। कहने लगा कि तन मेरा है? कि जी हाँ। कि जा जूतियों में बैठ। एक राजा का रईयत के सामने जूतियों में बैठना आसान है? लोक लाज हटाने के लिये, सोचो! बैठ गया। फिर उसका ख़्याल महलों में जाए, खज़ानों में जाए, औरतों में जाए! हाँ कि दौलत मेरी है? खज़ाने मेरे हैं? कि इस तरफ ख़्याल ना ला। उसको रोका! अब मन संकल्प विकल्प उठाता है! कि मन मेरा है? कि जी हाँ! इससे संकल्प विकल्प ना उठा। ये सबसे मुश्किल काम हैं। ये ही मुश्किल काम है। मन से लड़ाई की, संकल्प-विकल्प निकाले, ख़्याल ऊपर चला गया। पूछा! ज्ञान हो गया! कि जी हो गया। कोई कसर? कोई कसर नहीं। देखो! कोई कसर नहीं! कि संभाल अपना तन-मन-धन। उन्होंने क्या करना है? बोलो भई! अपना न समझना! सेवादार बनके काम करना। बोलो क्या लिया, क्या छोड़ा? कि हमारे बन्धन छुड़ाने आते हैं। रात भी सुनाया थाः-

बंधन मात-पिता संसारि॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि॥
बंधन करम धरम हउ किया॥ बंधन पुतु कलतु मन बीआ॥ (416/14 मः1)

इन बन्धनों के रस्से पड़े हुये हैं। इसे तोड़े, अपना ना समझे! रहने का तरीका क्या है? कैसे फंसे हैं? बच्चा पैदा होता है, लड़का या लड़की उसकी मौज़। बीमार हो गया उसकी मौज़, राज़ी हो गया उसकी मौज़, मर गया उसकी मौज़। थोड़ा देवे उसकी मौज़, उसकी मौज़ में रहने का तरीका है! फंसे कैसे हैं? पहले तो हमें अपने तन का प्यार, खुल खुल करता है, कोई नहीं रोटी अच्छी तरह देता। फिर भी कहता है मैं मरूं ना। देखा मरना! देखो! यह ऐसा प्यार है। क्योंकि तन चाहता है, इसलिये तन मिलता है! कैसे मिलता है! अगर माया जोड़ी इसकी तरफ ख़्याल हैः

अंति कालि जो लछमी सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
सरप जोनि वलि-वलि अउतरै॥ (526/5 त्रिलाचन)

तन मिल गया। सांप बनाकर ऊपर भी बिठा दिया, पेट भर लिया। यही महात्मा चरण दास कहते हैं :-

द्रिव्य जोत मर जाए ता हो बैठे नाग।
नारी में जो चित्त रहे होये कुक्कर काग॥

अगर लड़को की तरफ ख़्याल हैः-

अंति कालि जो लड़िके सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/10 त्रिलाचन)

सुअर की जूनी पीछे बच्चे ही बच्चे फिरते हैं!

तन छूटे सुत में रहे एक नर तेरी आस॥
जन्म जो सूकर को लहै मुए नरक निवास॥

बोलो भई! फकीरों ने नतीजे निकाल के लिखे हैं सारे!

अंति कालि जो मंदर सिमरै अैसी चिँता महि जे मरै॥
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/11 त्रिलाचन)

बाबे की मड्डियां हैं घर-घर में, खेतों में, देख लो भई, ऐसे फिरता है। सतगुरु की तरफ ख़्याल हो तो सतगुरु ही आयेगा। फिर बस यह बात है? यह सच्ची तड़फ ये है। सच्ची लगन ये है! कहते हैं न.....

'अन्त मता सोई गता'

जब इसकी रूह निकालते हैं। सारी जिस्म से निकल जाती है। आगे काल क्या करता है? जितने उसने कर्म किये हैं सबका निचोड़ निकालता है। इसके मुताबिक ये संकल्प बुद्धि बनती है। इसके मुताबिक अगला जन्म मिलता है। इसमें ही चक्कर खा गये बस! इसी तरह धक्के खा रहा है। हाँ, देख लो! प्यास अन्दर हो, गर्ज़ हो मालिक की, वो तड़फता फिरे, उसको ज़रूर मिलता है।

अब मैं कउनु उपाउ करउँ॥
जिह विधि मन को संसा चूकै, भउ निधि पारि परउ॥
जनम पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ॥ (685/6 मः9)

कौन सा भला? आत्मा का कल्याण नहीं हुआ। बांकि भले सारे चाहते हैं, तन के हैं। वो तो आत्मा का कल्याण नहीं हुआ! जिसको दोगे उससे लोगे, जिससे लोगे उसको दोगे। यह सिलसिला ऐसे कर्मों का है। कर्मों के जाल में इसी तरह युगों-युग से फिर रहा है। हर रोज़, हर महीने पढ़ते हैंः-

किरति करम के बिछड़े कर किरपा मेलहु राम॥
चारि कूंट दह दिस भ्रमे थकि आये प्रभ की साम॥

इस जन्म में कितने आदमियों से ताल्लुक पड़ा होगा? बोलो भाई! किसी से खाया किसी को खिलाया, किसी को कुछ किसी को कुछ। किसी से गालियां खाई, किसी को गालियां दीं, किसी से प्रेम किया। कोई कहीं गया कोई कहीं गया। हर्जाना देना पड़ेगा। यह हर्जाना देना पड़ता है। इसी चक्कर में युगों के युग हो गये। कुछ कर्म रह जाते हैं, कुछ कर्म भुगत जाते हैं। इसी तरह चक्कर में पड़ा है। आप कोई कारखाना चलाते हैं कोई और चीज़ है। घर में ही पैसे रखते हैं कि कोई और किसी मौके पर काम आ जायेंगे! देखो भई! काल ने भी संचित कर्मों का स्टोर रख छोड़ा है। कुछ भुगता लेता है और कुछ आगे के लिए रख लेता है, बस! इसी तरह चलता है काम। इस कर्मों के जाल से सतगुरु निकाले तो निकाले, नहीं तो निकल ही नहीं सकता। कितने युग हो गये मालिक से बिछड़े? कहाँ-कहाँ गये? किस किससे ताल्लुक पड़ा। धृतराष्ट्र से पूछा गया तू अंधा क्यों हुआ है? कहने लगा कि मुझे पिछले 100 जन्मों की ख़बर है, कोई कर्म ऐसा नहीं जिससे मैं अन्धा हूँ। जब कृष्ण भगवान ने तवज्जों दी, तो पता लगा, एक सौ छः जन्म पीछे कोई कर्म किया था, जिसका बदला आज भुगत रहा है। बोलो भई! इसी चक्कर में पड़ा है। इसी चक्कर से निकलना था। यही वक्त है चौरासी से निकलने का। एक सतगुरु की भक्ति है। इसमें भी कई जन्म लग जाते हैं। धरमदास आठ जन्मों में गया है। कई बच्चे आते हैं। दो चार ऐसे मिले हैं। गुरु नानक साहब के चिताये हुये हैं। बोलो! अभी कोर्स पूरा नहीं हुआ। एक छोटी सी लड़की है। सिवरण-सिवरण गांव है एक। वो कहने लगी कि मैनेजर साहिब से कहो कि मुझे गुरुनानक साहब की वो फोटो दें! ये तो सबने देखी है। हाथ वाली। बोली! वो ऐसे हैं। बोलो हमने तो देखी नहीं। वो ऐसे हैं। वो लेकर दे। बोलो भई! छोटी सी बच्ची है। तीन साल की होगी ज़्यादा से ज़्यादा बोलो, देख लो। ऐसे कई छोटे-छोटे बच्चे आकर बताते हैं। ये पुरानी भक्ति वाले हैं। वो फिर आते हैं, वो फिर आते हैं। फिर कोर्स। महकमा छोड़ता नहीं। ये महकमा ही अलग है, छुड़ाने का। हाँ ये अकाल पुरख का है, दूसरा काल का है। अकाल पुरख ने चलाने का हुक्म दिया तो ऐसा चलाया है कि निकलने का राह ही नहीं छोड़ा। हाय! हाय! कोई एक तरफ से निकल जाये तो दूसरी तरफ बंधन है। कर्मों के जाल में ऐसा फंसाया है। दादू साहिब कहते हैं:

दादू जीव जंजालो पड़ गया उलझा नौ मण सूत॥
कोई इक उभरे सावधान गुरु बायक अवधूत॥

सोचो! नौ मण सूत उलझा हो, एक ऐसे गांठ खोलते हैं दूसरी तरफ लग जाती है। दूसरी तरफ खोलते है, तीसरी तरफ बंध जाती है। इसी तरह हमारा हाल हुआ है। सतगुरु आगे बेनती करे। इसी तरह मीरां का तड़फना था।

हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरा दर्द न जाणे कोय।

क्या दर्द था? मालिक के मिलने का।

अब मैं कउनु उपाउ करउँ॥

सोच लो! इतनी तड़फ हो, फिर वह मेहर करता है। वो किस पर मेहर करे? जब गर्ज़ ही नहीं किसी को। इसकी तो गर्ज़ ही नहीं। आगे पढ़ भई, हाँ, हाँ। हाफ़िज़ साहिब क्या फरमाते हैंः

पाठी– हॉफिज साहब फरमाते हैं, ''या खुदा चारों तरफ अंधेरा छा रहा है। सबके सब, बिल्कुल कोरे व रूहानियत से बिल्कुल बे-ख़बर नज़र आते हैं, और इस दौलत का कोई ग्राहक नहीं है।''

मैनेजर साहिब जी– ग्राहक कोई नहीं! बोलो भई! ग्राहक ही नहीं इसकाः-

ऐसी दुनिया भई दिवानी भगति भाव ना बुझे जी॥
कोई आवे तो बेटा मांगें यही गोंसाई दीजे जी॥
कोई आवे है दुःख का मारा हम पर किरपा कीजै जी॥
कोई आवे तो दौलत मांगे भेंट रुपया लीजे जी॥
कोई करावे ब्याह सगाई सुनत गोसाई रीझै जी॥
सांच का कोई गाहक नाहीं, झूठे जगत पतीजै जी॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो अंधो का क्या कीजै जी॥

किसी से पूछ लो! मन्दिर मिल जायेंगे, गुरुद्वारे मिल जायेंगे, मथा टेकेंगे, गर्ज़ से टेकेंगे, गर्ज़ हो। मालिक की गर्ज़ नहीं, और चीजे मांगेगा। उसको मांगे तो वह तैयार है। गर्ज़ ही नहीं किसी को। हाँ बोल भई। कहता है मैने अन्दर देखा है सतगुरु को, वो अन्दर है। वो सतगुरु चौथे लोक में रहता है। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो इसके अन्दर ना हो।

काइआ अंदरि सभु किछु बसै, खंड मंडल पाताला।
काइआ अंदरि जग दाता जीवनदाता बसै, सभना करे प्रतिपाला।
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भँडारा।
इसु काइआ अंदर नउ खण्ड प्रिथमी हाट पटण बाजारा।
इसु काइआ अंदरि नामु नउनिधि पाईअै गुर कै सबदि वीचारा।

काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा।
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सब ओपति जितु संसारा।
सचै आपणा खेलु रचाया आवागउणु पसारा॥

(754/11)

अजीब खेल है इसके अन्दर, पता कोई नहीं। शहर भी हैं, बदमाश भी हैं, भलेमानस भी हैं। इसके अन्दर सब कुछ है। रोम-रोम, रोम-रोम सोचो! रोम-रोम में त्रिलोकी की रचना है इसके अन्दर। होश नहीं। भाई गुरुदास ने लिखा हैः

रोम रोम विचि रखिओनु करि ब्रहमँड करोडि समाइआ।

बोलो भई, देख लो! रोम-रोम में इतना खेल इसके अन्दर है, सोच लो!

अवधू अन्धा-धुन्ध अंधियारा, कोई जानेगा जाननहारा।
या घट भीतर बन और बस्ती याही में झाड़ पहारा।

वन, बस्ती भी इसके अन्दर हैं। बाग बग़ीचे भी इसके अन्दर हैं।

या घट भीतर बाग बग़ीचा याही में सींचनहारा॥

एक मुसलमान फकीर ने लिखा हैः

अंदर आं बहरो-बीआबान-ओ-ज़िबाल।
मुनक्तअ मी गरदद औहामो-ख़याल॥

इस काया के अन्दर बड़े-बड़े बीयावान, जंगल, पहाड़ हैं, जिनकी तरफ हम ख़्याल भी नहीं कर सकते हैं। देख लो! कोई कहेगा इसके अन्दर पहाड़ हैं। आजकल तो सांईस भी साबित करती है। क्यों भई! पहले तो कहते थे कि सूई के नाके पे लाखों जीव बैठ जाते हैं। देख लो! इन्होंने बताया कि अमेरिका में गुलाब के फूल के ऊपर से ओस का कतरा लेकर दिखाया है। ऐसा लगता है शहरों के शहर बसे पड़े हैं। यह तो बाहर हैं, बाहरमुखी हैं। देखो भई! इतना खेल इसके अन्दर है। हमें तो यह पता नहीं कि यह लुकमा, यह बुरकी अन्दर डालते हैं किधर जाती है। इतना बड़ा खेल इसके अन्दर है। बोलो ये फिरता बाहर है।

सभ किछु घर महि बाहरि नाही। बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही।

(102/3 मः5)

सबके अन्दर अमृत बरस रहा है, खुशियों का भण्डार है। ये देखने थे। सोचो! उल्टा और बढ़ता है। ये वक्त था चौरासी से निकलने का और बढ़ता ही जा रहा है और फंसता ही फंसता जा रहा है। एक तरफ से निकलता है, दूसरी तरफ फंस जाता है। गुरुनानक साहब भी लिखते हैंः-

बिखु बोहिथा लादिया दीआ समुंद मंझारि॥
कंधी दिसि न आवई ना उरबारु न पार॥
वंझी हाथि न खेवटु जलु सागरु असरालु॥
बाबा जगु फाथा महा जालि॥
गुरु परसादी उबरे सचा नाम समालि॥

(1009/11 मः1)

किस्तियां है दरियां में, समुद्र में जहाज़ हैं। उनके साथ कोई गाईड होता है, पार लगा देता है। ये किस्ती ऐसे ही रूढ़ी जा रही है, कोई है ही नहीं। हाँ संभाले कौन? इधर से आई उधर चली गई, उधर से आई इधर चली गई, इसी तरह धक्के खा रही है। कभी कीड़ा, कभी पंतगा, कभी हाथी, कभी घोड़ा कभी कुछ, इसी तरह धक्के खा रहे हैं। हाँ, मीरां कहती है मैंने अन्दर देखा है। हाँ और क्या देखा है उसने? हाँ, हाय! हाय!.... इसके अन्दर ये है देखो भई! किसी ने डॉक्टरी का कोर्स किया, वह डॉक्टरी से काम लेता है। इसके अन्दर ही डॉक्टरी इंजीनियरिंग है। वो कोर्स किया, ये भी कोर्स करना पड़ता है। देवी-देवता इसके अन्दर हैं। वो कोर्स कर लो, कोई कर लो। त्रिलोकियां ही त्रिलोकियां हैं। रोम रोम में त्रिलोकी की रचना है। बोलो भई! हाँ जीः..हाय! हाय!

या घट भीतर बाग बग़ीचा, याही में सिंचनहारा॥
या घट भीतर सूरज चन्दा याही में नौ लख तारा॥

हाँ! तारे देखते हैं ना। मुसलमान भी देखते हैं। हम भी देखते हैं।

तारा चड़िआ लंमा किंउ नदरि निहालिआ राम॥

सोच लो! आधी रात को गुरुनानक साहब ने गुरु अंगद देव से कहा था, कि बच्चों से पूछा कि सूरज चढ़ा है? कि जी नहीं। गुरु अंगद देव से पूछा। कहा, हाँ चढ़या है। वह अन्दर की बात थी, वह देखना था।

या घट ब्रह्म बिसनु, सिव सनकादि अपारा॥

सब इसके अन्दर हैं।

या घट भीतर आये लेत है, राम कृष्ण अवतारा॥

सब इसके अन्दर हैं।

कहें कबीर सुनो हो अवधू याही मैं गुरु हमारा॥

हाँ! गुरु मुक्ति वाला! गुरु चौथे लोक में है, जिसके मुतल्लक रोज़ पढ़ते हैं।

अनंदु भइआ मेरी माए, सतगुरु मैं पाइआ॥
सतगुर त पाइआ सहज सेती मनि वजीअया वाधाईआ॥

(917/2 मः3)

सहज अवस्था में है। कहाँ है सहज अवस्था? चौथे लोक में :-

त्रिह गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ।
पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ मुढहु घुथा जाइ॥
चउथे पद महि सहजु है गुरुमुख पलै पाइ॥

(आदि ग्रन्थ)

वहाँ जाये तो आनन्द मिले। कभी ख़्याल किया है? रोज़ पढ़ते हैं:

अनदु सुणहु वडभागी हो सगल मनोरथ पूरे॥

कब हुये?

पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे॥ (917/17 मः3)

कहते हैं ब्रह्म है, पारब्रह्म है, ईश्वर है, परमेश्वर है, अल्ला है, अल्लाहू है, हू है, अल्लाहू अकबर है। ये एक ही हैं सारे। पारब्रह्म में जायें, वहाँ देखें।

दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी॥

वहाँ कुदरती बाणी आ रही है। वो लिखने-पढ़ने की चीज़ नहीं। वो सब दुख दूर कर देती है। ये जो वाणी पढ़ी, दुःख दूर हुये?

न सबदु बुझै न जाणै बाणी, मनमुखि अंधे दुखि बिहाणी॥

इस वाणी को पढ़ के, विचार के, अक्ल करे, अन्दर जाये फिर दुख दूर हों! कि ऐसे ही? मिलती कैसे है?

संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी॥ (917/18 मः3)

सरसे का मतलब सरसा शहर या इलाका नहीं। यह शुरू में अमरदास का है। जब सन्तों की शरण में जाकर तन मन के बंधन तोड़े, उनको खुश किया, फिर चीज़ मिलती है। सरसे का मतलब खुश किया। हाँ, फिर चीज़ मिलती है। यह तन मन के बंधन तोड़े, कितनी मेहनतें की उन्होंने, तब चीज़ हाँसिल की, कि ऐसे की? जिसने पाया मेहनत से पाया है।

बिन मेहनत किसे ना पाया रब्ब दा नाम खज़ाना॥
करम करतूति अमृत फल लागा, हरिनामु रतनु धन पाइआ॥

बस बाहर मेहनत करता है। इसके लिये कोई नहीं करता। ये थोड़ी-थोड़ी भी करे! हाय! हाय! ठीक फकीर मिल जाये, यह लफ्ज़ों पर नहीं, लफ्ज़ बदलते

रहे और बदलते रहेंगें, बाद में कौम मज़हब बन जाते हैं।

सिमरण वो है, अगर अथोरिटी वाला फकीर हो, उसके बताये हुये लफ्ज़ काम करते हैं। बाकी तो ऐसे ही चलते हैं। शांती तो आ जाती है थोड़ी बहुत! लेकिन जन्म मरण के बंधन नहीं छूटते। सोचो! हाँ, आगे बोल। फिर बोल, वो बोलीं शब्द, हाँ, हाँ जी, जिसको बख़्शो भई! हाँ होगी।

पाठी– भोली भोली दुनिया द्वारका ने जाती तीर्थ कर कर आती॥
गंगा रे जमुना म्हारे घट में बसत है नहावण करूं दिन राती॥
सावरियां मीरां हरि चरणों की दासी॥

मैनेजर साहिब जी– ये तो नमूने हैं। इसमें नहाये। इसमें कब नहाओगे? वो कहती है मैं रोज़ नहाती हूँ, सारा दिन। बोलो भई! वो प्रयाग अन्दर है। जैसे प्रयाग तीन नदियों का संगम है, वह अन्दर है। यह नमूना है।

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि वसहि इक ठाई।
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई॥

(974/6)

उसमें कब नहाओगे? वो हज्ज, वो तीर्थ अन्दर है। वो अमृतसर अन्दर है। ये जो अमृतसर है, गुरु रामदास ने बनाया है। गुरुनानक साहब ने ज़िक्र किया है, नामदेव ने ज़िक्र किया है, गुरु अमरदास ने ज़िक्र किया है।

काइआ अंदरि अमृतसर साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हो।
अंतरु निरमलु अमृतसर नाए सदा सूचे साचि समाए॥

(1046/3)

ओ बोलीं, अमृतसर नहाये, सुनो हाँ, हाय! हाय!

पाठी– जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिख गुरु मनि भावै।
गुर सतिगुर का जो सिख अखाए, सु भलके उठि हरि नामु धियावै।
उधमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै॥

(305/16.19 म:4)

मैनैजर साहिब जी– बोलो भई रोज़ अमृतसर जाकर नहा सकते हैं? देख लो! अमृतसर वाले नहीं नहा सकते! वो अमृतसर अन्दर है। सिमरण कर कर देह खाली करे। आगे जाये उस अमृतसर में नहाये वो कर सकता है, जो साथ है। वो कहती है गंगा यमुना मैंने अन्दर देखी हैं। इस अमृतसर में नहाये तब है। बाहर नहा भी लो, पाप निकल गये? वो पाप निकालने वाला नाम का तीर्थ है।

अठसठ तीर्थ हरिनामु है किलविख काटनहारा॥ (1009/3)

वो पाप निकालता है। चीज़ अन्दर है। फिरता बाहर है। कैसे मिले? बोलो भई! कोई चीज़ ऐसी नहीं जो न हो। जितने ग्रन्थ शास्त्र हैं, इसके अन्दर से, हमारे समझाने के लिए, अन्दर से निकले, कि बाहर से? कोई डॉक्टरी करता है, जब मर्ज़ी डॉक्टरी किताब लिख ले। इंजीनियरिंग करता है इंजीनियरिंग की किताब लिख ले। इसी तरह ये है। वाणी इतनी ऊँची है, इसका कोई ठिकाना नहीं, मगर समझना मुश्किल है। डॉक्टरी की किताब पड़ी है। हम समझ लेंगे? डॉक्टर ही समझा सकता है। इसी तरह कोई फकीर मिले वो ही समझा सकता है। बाकी पता ही नहीं वाणी क्या है? इतनी ऊँची है, कोई बात छोड़ी बाणी में? हाय! हाय! मगर नहीं! वो सिमरण, वो चीज़, वो रास्ता, कामिल फकीरों के ज़रिये मिलता है। अगर मालिक मेहर करे तब! सोचो! जो सच्चे दिल से पुकार करता है उसके लिये मेहर करता है, उसको मिलता है, बाकी को नहीं। बाकी कितना ही कर लें।

आखण वाला क्या बेचारा॥ सिफति भरे तेरे भण्डारा॥
जिस तू देहि तिसै का चारा॥

जिस पर वो मेहर करे!

नानक सचु सवारणहारा॥

ये सब दात उसने अपने हाथ में रखी हैं।

आपे करता पुरखु विधाता जिनि आपे आप उपाइ पछाता॥
आपे सतिगुर आपे सेवकु आपे सृशटी उपाई हे॥

बोलो भई आपे फंसाया है, आपे निकालने वाला है!

आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपै ही जपु जापै॥ (605/14 मः4)

कैसे? आपे ही जप जापे। नाम तो लिया। कैसे आपे? मन लगे ना। मन करता नहीं। मन लगे ना लगे हुक्म माने बैठाये ज़रूर। उसकी मज़दूरी देगा। जो करते हैं, उसको मिलती है। ये ही आपे और नहीं। सोच लो! ऐसे आपे सतगुरु मेहर करेगा। मेहर सिमरन से मिलनी है, मेहनत से मिलनी है। मेहर ऐसे नहीं मिलती। मास्टर के पास जाओ मास्टर से कहे, मैंने पढ़ना तो है नहीं मुझे पास कर दो, हो जायेगा? ये भी ऐसे ही है। मेहनत करे इसको पता लगने लग जाता है, कि अन्दर कोई चीज़ है। ये मेहनत ही ना करे तो कैसे पता लगे? हाँ, बाहर तजुर्बे करते हैं। अन्दर तजुर्बे करें। अजीब खेल है अजीब! कबीर साहब ने तो ऐड़ी से लेकर चोटी तक का हाल लिख दिया है। फलानी जगह फलाना बैठा है।

फलानी जगह फलाना महकमा है। फलानी जगह फलाना। सब लिख दिया। हाय! हाय! हाँ जीः

काइआ अंदरि सभु किछु बसै, खंड मंडल पाताला।
काइआ अंदरि जग दाता जीवनदाता बसै, सभना करे प्रतिपाला।
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भँडारा।
इसु काइआ अंदर नउ खण्ड प्रिथमी हाट पटण बाजारा।
इसु काइआ अंदरि नामु नउनिधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा।
काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा।
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सब ओपति जितु संसारा।
सचै आपणा खेलु रचाया आवागउणु पसारा॥

(754/11)

पैदा करना, पालना, मारना ये महकमे हैं। जैसे सिविल के हैं, मिलिट्री के हैं, और हैं। पटवारी के, कर्नल के, और हैं। इसी तरह अन्दर भी हैं। काम करने वाले सेन्टर के भी हैं मुलाज़िम, सूबे के भी हैं। देखो भई! त्रिलोकी के भी है! मालिक अकाल पुरख के भी हैं। यह क्या है? सेन्टर का मुलाज़िम हो, सूबे में गलत काम करे, सज़ा तो पायेगा देखो! सूबे वाले तो कुछ नहीं कर सकते! कोई भागों वाला अकाल पुरख के महकमे में आये। उसका नाम दर्ज हो उसको छोड़ते नहीं। फिर काल उससे हिसाब नहीं मांगता। सज़ा देनी होगी तो आप देगा अकाल पुरख। देखो गुरुनानक साहब का जीव था खोटे कर्म किये, नरकों में भेजा गुरुनानक साहब ने, सज़ा दिलवाकर निकालकर लाये। बोलो! काल के हाथ नहीं दिया। ये महकमा ही अलग है। ये महकमा ही अलग है अकाल पुरख का। सतगुरु का अलग है, काल का अलग है। हाय! हाय! अजीब खेल डाला है। मालिक ने खेल भी अजीब डाला मालिक ने! तोबा है! हाँ जी, हाय! हाय! आ पढ़ तां भई!

जा कउ मुसकलु अति बणे ढोई कोइ ना देह॥

लो आम पढ़ते हैं। चौथी पांचवी कड़ी क्या कहती है हाँ पढ़ः

किरपा करे जिसु पारब्रहम होवै साधू संग॥
जिउ जिउ ओहु वाधाईऐ तिउ तिउ हरि सिंउ रंगु॥
दुहा सिरिआ का खसमु आप अवरु न दूजा थाउ॥
सतगुरु तूठे पाइआ नानक सचा नाउ॥

साधुओं के ज़रिये मिलता है। साधू कहते किसे हैं? रंगे कपड़ों का नाम साधू

नहीं। जो पारब्रह्म में जाता है, उसका नाम साधू है। ब्रह्म देश के पार जाकर अमृतसर में नहाता है। वहाँ जाकर साफ होती है रूह। वहाँ जाकर साधू बनता है।

पारब्रहम साध रिद बसै नानक उधरै साध सुनि रसै।

सन्त–जो शब्द गुरु को प्रगट कर लेता है, उसका नाम सन्त है। ऐसे नहीं।

जिन कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति।

ऐसे तो सारे बने हुये हैं। कोई विरला! एक दो होंगे। हमेशा रहते हैं। कभी कहीं, कभी कहीं। ये उसकी मेहर पर है। उसकी मेहर पर ही मिलता है, बस! जिसको वो बख़्शे, जिसको सच्ची तड़फ है, सच्ची लगन है। मीरां की तरह, गुरु तेग बहादुर की तरह! उसको मिलता है, बाकि किसी को नहीं। ये सच्ची तड़फ पर है, बस। सच्ची लगन पे है, हाय! हाय! हाँ हाँ.....

पाठी– यदि मनुष्य काम क्रोध.....

मैनेजर साहिब जीः- ये देखो कीमती बात सुनो दोनों। जो आम सिमरण करते हैं, और जो उनका बताया हुआ सिमरण है। उसमें क्या फर्क है। हाँ.....

पाठी– यदि मनुष्य काम, क्रोध और मोह के बस में आ गया हो, कंजूसी की वजह से लोभ से अधिक प्यार हो गया हो, चारों किस्म के पापों, चोरी करना, शराब पीना, पर-स्त्री गमन और पर हत्या में लीन हो गया हो, दूसरों की तबाही के लिये राक्षस बुद्धि बन गई हो, कभी किसी धर्म पुस्तक का कोई वचन भी न सुनता हो, यदि वो क्षण मात्र भी सच्चे दिल से यह सिमरण करे तो उसका निस्तारा हो जाता है।

मैनेजर साहिब जी– हाँ यदि भागों से कोई फकीर मिल जाये, साधू, तो उसका बताया सिमरण करे तो उसका निस्तारा हो जाता है। बीमार है, जैसी बीमारी है उसी का इलाज है। थोड़ा है, उतना ही जल्दी चला जाता है। अगर ज़्यादा कर्म हैं तो भुगताने के लिए कई-कई जन्म लग जाते हैं। पर ये महकमा छोड़ता नहीं। दूसरी तरफ जो आम करते हैं, हाँ सुनो.....

पाठी– इसके उलट यदि किसी ने शास्त्र स्मृतियों और चारों वेदों को जबानी याद कर रखा हो, तपस्वी बनकर तपस्या करता हो, योगी बनकर योग साधता हो, अठसठ तीर्थों की यात्रा करता हो, खट-कर्म यानि यज्ञ करना और कराना, दान लेना और दान देना, वेद पढ़ना और पढ़ाना करता है, विधिपूर्वक कर्म-धर्म और पुजाएं भी करता हो।

मैनेजर साहिब जी– ये ही करते हो, पहले सारे, हाँ.....

पाठी– यदि उस पर मालिक की याद, यानि सिमरण का रंग नहीं चढ़ा, तो निःसन्देह

नरकों को जायेगा।

मैनेजर साहिब जी– बोलो भई! जो वो रास्ता, सिमरण बताते हैं उसके आगे कोई काल, महाकाल कोई नहीं ठहरता। आराम से जाते हैं। अगर कर्म होगा कोई तो भुगता लेगा सतगुरु, लेकिन आराम से ले जायेगा मौत के वक्त। आम दुनिया को देखो, क्या हाल होता है? कोई गमी की बात आ जाये चेहरा मुरझा जाता है। खुशी की आ जाये चेहरा खिल जाता है। जब काल आता है, सबकी टट्टी पेशाब निकल जाता है। जब सतगुरु, जिस पर मेहर करता है, उसे फकीर के रूप में आकर ही संभालता है। जब वो देखता है तो खुशी चढ़ जाती है, खुशी-खुशी जाता है। ये उसकी निशानी है। उसके चिताये हुये जीव आराम से जायेंगे, मौत के वक्त उनके चेहरे पर खुशी होगी। जिस्म नहीं जल्दी अकड़ता बोलो! हाँ जी बोल! ओ ही बोल! स्वास स्वास संभाले.....अनेकों रुकावटें हैं अन्दर। गुरुनानक साहब आप खुद अकाल पुरख आए। वापस जाने लगे रिद्धियों-सिद्धियों ने घेरना चाहा! वो तो उनकी चाल से वाकिफ थे निकल गये, बाकी किसकी ताकत है निकल जाये। बड़े-बड़े ऋषी, मुनि, पीर, पैगम्बरों को रोके रखा है इसने। बड़ी-बड़ी शक्तियों को रोक रखा है।

विखड़े दाउ लंघावै मेरा सतगुरु सुख सहज सेती घरि जाते॥
रगड़ा है भारी। कोई समझे सन्त सुझान, रड़बड़ मच रही भारी॥

(1185/13 म:5)

अजीब रड़बड़ है अन्दर, अजीब धोखे हैं। हाँ जी बोल! हाँ सुनो! सिमरण कैसा है? कैसे मिलता है? क्या करता है? हाँ हाँ.....

पाठी– सिमरो सिमरि सिमरि सुखु पावो सासि सासि समाले। (679/8 म:5)

मैनेजर साहिब जी– ये खास सिमरण की चीज़ है। आप कोई सिमरण भी कर सकते हैं। कोई सिमरण भी स्वास स्वास करो प्रेम से आंखों तक आ जायेंगे। शांती आ जायेगी! लेकिन जन्म-मरण के बंधन नहीं छूटते। आगे रास्ता नहीं मिलता, धोखे हैं आगे। ऐसी शांती आयेगी आप कहेंगे, शायद मुक्ति हो गई। कोई सिमरण कर लो अच्छी तरह से। जो ये सिमरण है मालिक के हुक्म से उसमें, 'सासि सासि समाले' हाँ, मिलता भागों से है। ये हाँ हाँ.....

पाठी– इह लोकि परलोकि संग सहाई जत कत मोहि रखवाले।
सिमरो सिमरि सिमरि सुख पावो सासि सासि समाले।

मैनेजर साहिब जी– लोकि परलोकि संग सहाई.....

जैसे मुलाज़िम को क्या नाम चिट मिल जाती है, कागज़ मिल जाता है, एथॉरिटी मिल जाती है। कागज लेता है ना! एडेन्टीकार्ड! ये भी एडेन्टीकार्ड है। काल इसके नज़दीक नहीं आता।

प्रभ कै सिमरनि दूःखु जमु नसै॥ प्रभ कै सिमरनि कालु पर हरै॥

(262/14)

पढ़ते हैं, इसके नज़दीक नहीं आयेंगे। प्रेमी सिमरण करता हो, ठीक नाम मिला हो, गैर संत्संगी की मौत हो कमरे में। कमरे में जमदूत नहीं आयेंगे उस कमरे में। इतनी ताकत है उसमें, हाँ जीः

पाठी– इह लोकि परलोकि संग सहाई जत कत मोहि रखवाले।
सिमरउ सिमरि सिमरि.....

मैनेजर साहिब जी– हाँ दादू साहब कहते हैं, क्या...हाँ जीः

पाठी– इसके बारे में दादू साहिब फरमाते हैं कि ''ये मंत्र गुप्त भाषा योग्य है। जो सिर्फ उत्तम जिज्ञासुओं को ही मिलता है।

मैनेजर साहिब जी– उत्तम जिज्ञासुओं को, हरेक को नहीं। स्कूल में दाखिल करते हैं। नौकरी में भी दाखिल करते हैं। वो भी देखते हैं कि चल पड़ेगा कि नहीं। इसी तरह जिसकी भगती होती है, तड़फ होती है, उसी को चीज़ मिलती है। जो भी सच्चे दिल से पुकार करता है। हाँ जीः

पाठी– यह मंत्र जन्म मरण के फन्दे काटकर अमर करता है।

मैनेजर साहिब जी– उनको फौज भरती करनी होती है? वो भी देख-देख के करते हैं। बाद में कौम मज़हब बन जाते हैं बस! मुसलमानों के 72 फिरके बन गये बोलो भई! एक मुहम्मद एक कुरान! 72 फिरके देख लो भई! शिया सुनी को देखते हैं। वो कहता है वो ठीक है, वो कहता ये ठीक है। देखा किसी ने भी नहीं! मन बुद्धि अज्ञानता ने सबकी मिट्टी पलीत की है। हाँ, हाँ जीः

पाठी– दो चिती की हालत मिटाकर सदा एक रस हालत में रहने वाला बना देता है। सबसे निर्भय बना देता है, और राम बना देता है। जिस तरह लकड़ी में आग रमी होती है। उसी तरह आत्मा को सब जगह रमा देता है। और आत्मा को निज स्वरूप से मिला देता है। यह मंत्र सदा की ज़िन्दगी प्रदान करता है। अखुट बल वाला बना देता है। आत्मा को सुन्दर बना देता है। सबका शिरोमणी अर्थात सबसे बड़ा बना देता है और ऊँची पदवी तक पहुँच देता है। निर्मल और पाक कर देता है और निरंकार की प्राप्ति करा देता है। उसको जपने वाला अलख यानि किसी

के लखने से परे हो जाता है। अक्ल कुल हो जाता है अर्थात कुल अक्लों का मालिक बन जाता है। उसकी तह तक कोई नहीं पहुँच सकता। उसका कोई पार नहीं पा सकता। ऐसी जगह पहुँच जाता है अर्थात जहाँ तक कोई नहीं पहुँच सकता। उसका कोई पार नहीं पा सकता। यह मंत्र आत्मा के अन्दर नूर पैदा करता है। इसके तेज को बढ़ाता है। इसके अन्दर ज्योति को प्रगट करता है। और अन्दर प्रकाश कर देता है। और सभी स्थानों पर सहायता करता हुआ परम धाम पहुँचा देता है।

मैनेजर साहिब जी– सभी स्थानों पर सहायता करता हुआ, लोक परलोक बोलो भई! देख लो, गुरु अंगद साहब ने लिखा है। लोक परलोक सभी स्थानों पर सहायता करता हुआ, हाँ छोटी सी चीज़ देखो! ये मन नहीं करने देता। पुठे लटक लो। सब करने देगा! पर यह नहीं करने देगा! मन दुश्मन है। मन दुश्मन है। यह काम नहीं करने देगा फकीरों वाला। बाकी सब! गुरुनानक साहब तो ले जाते! और ले जाते फकीर! दस पातशहियां हैं। कोई विरले गये हैं। कोई विरले के हिस्से में आती है चीज़! ऐसे नहीं। हाय! हाय! जितने कर्म-धर्म, जप-तप, पूजा-पाठ, यज्ञ-योग, पुण्य-दान करते हैं, सब काल के दायरे के हैं। इससे चंगी जून मिल जायेगी, स्वर्ग मिल जायेंगे, लेकिन जन्म-मरण के बंधन नहीं छूटते। चौरासी नहीं खत्म होती। हाँ जीः

करम धरम सभि बंधना, पाप पुँन सनबँधु॥
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्रु सु धंध॥
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबँधु॥
नानक सचे नाम बिनु बरतणि वरतै अंधु॥

(551/3 मः3)

ये सिमरण करो। सच्चे नाम से ताल्लुक रखो। कई दफा काल, याद रखो! प्रेमियों को कई दफा काल, फकीरों का अपने मुर्शद का रूप धार कर भी धोखा दे जाता है! याद रखो सिमरण ना छोड़े उस वक्त! सिमरण के आगे नकली सूरत नहीं ठहरेगी। सभी को धोखा दिया। देखो भई! सच्चे पातशाह ने खुद देखा है। जब टांग पर चोट लगी थी। डॉक्टर ने कहा कि मांस खाओ। कि जी हमें तो हुक्म नहीं। पूछ लो। सच्चे पातशाह ने जब ध्यान किया! फरमाया हमने बाबा जी का सरूप का ध्यान किया! सरूप आ गया। कहने लगा कि ऐसे मौके पर खा लो कोई हर्ज़ नहीं। जब सिमरण किया तब भाग गया! बोलो भई कैसे है? मोहन पढ़ा है न! सिमरण ना छोड़े बस! याद रखो, धोखे हैं अन्दर बड़े-बड़े। हाँ हाँ! ये सिमरण

ऐसा है। हाँ आगे पढ़ भई! किसी कामल उस्ताद को देखो। याद रखो कि नाम मिला कितनी ऊँची चीज़ है! सुनो हाँ!

पाठी– किसी कामिल उत्साद के बताये हुये सिमरण की बिजली से लगाई हुई एक मशीन से तुलना की जा सकती है। जिस तरह बिजली की मशीन हाथ से लगाई गई मशीन के सैकड़ों गुणा ज़्यादा काम करती है। यदि वो किसी चीज़ को बनाने वाली मशीन है, तो वह मिनटों में चीजें बना-बनाकर ढ़ेर लगा देती है। यदि वह काटने वाली मशीन है, तो वह मिनटों में चीज़ काट-काटकर कर मिनटों में ढ़ेर लगा देती है। इसी तरह कामिल फकीर के बताये हुए सिमरण का हाल है। दादू साहब फरमाते हैं, ''नाम लेकर सिमरण न करने का पाप इतना ज़्यादा है जितना की सारी दुनिया में हो रहा है।

मैनेजर साहिब जी– देख लो भई! सिमरण ना छोड़ो फिर भी रियायत करता है। हाँ आगे और हाँ जीः

पाठी– और उस सिमरण के करने का लाभ इतना ज़्यादा है कि मिनट-मिनट पर सैकड़ों जन्मों की मन की मैलें साफ करता जाता है।''

मैनेजर साहिब जी– साफ करता जाता है। जेता.....

पाठी– जेता पाप सब जग करे, तेता नाम विसारे होई॥
दादू राम संभालिये, ऐता डारे धोई॥

मैनेजर साहिब जी– बोलो भई! आसान भी कितना है। घर नहीं छोड़ना, बाल-बच्चे नहीं छोड़ने, लेने-देने भी मुकाने हैं। हाँ! लगा रहे। बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, लगा रहे। ज़्यादा से ज़्यादा, जितना टाइम मिले करो। खेती कैसे बनती है। खेती की तरफ ख़्याल रहता है। बीज कौन-सा अच्छा है? देखो भई! कौन सा ज़्यादा पानी मांगता है? आज पानी देना है, ये करना है, वो करना है। सोचो भई! इससे तैयार होती है। ये भी, सत्संग में जाना है, ये करना है, बैठेंगे चार, प्रेम के साथ-साथ बात करेंगे। करते-करते बनने लग जाता है। ये भी इसी तरह तैयार होती है। जल्दी न कभी बना है, न बनना है। यह सिमरण ऐसी ताकत है। बोलो भई! देखो। थोड़ा भी करे। इसको खुराक मिलती है। बोलो भई! गुरु अर्जुन साहब का अन्धले को देखो सुनो कीमती बात। हाँ सुनो कीमती बात! हाय! हाय!

पाठी– निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले।

मैनेजर साहिब जी– फिर बोल.....हाय! हाय!

पाठी– निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले।

मैनेजर साहिब जी– देखो भई! बच्चा दूध पीये, उससे ताकत आयेगी कि नहीं बच्चे को मां के दूध से। इस सिमरण करने से आत्मा को भी ताकत मिलती है। हाय! हाय! टूटा-फूटा भी हो तब भी मिलता है। लगा रहे जल्दी का काम नहीं हाय! हाय! देख लो हाँ जीः

निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले।

बोलो भई! हाँ जीः

पाठी– निरधन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले।
सागर महि बोहिथु पाइयो हरि नानक करि क्रिपा किरपाले॥

मैनेजर साहिब जी– आगे भी रुकावटें आती हैं। वहाँ भी मदद करता है। काल नज़दीक नहीं आता। कई प्रेमियों को आये यमदूत लेने, कहते नहीं जाते तेरे साथ! चरण सिंह महात्मा था ना, उसकी मां ने सेवा की थी कुछ दिन! तीन दिन आते रहे कि नहीं तुम्हारे साथ नहीं जाती, बाबे के साथ जाऊंगी। बोलो किसी की ताकत है, देख लो! हाय! हाय! हाँ ये है, इतनी ताकत है! अगर ठीक फकीर मिल जाये। पर मिलता उसकी मेहर से है। सच्चे दिल से पुकार करे, वो अन्दर ही बैठा है सतगुरु। जिसका दिल सच्चा हो उसी को चीज़ मिलती है।

हिरदै सचु एह करणी सारु॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु॥

(1343/15)

यह दिल की सच्चाई पे है। सच्ची तड़फ हो, सच्ची लगन हो, मीरां की तरह, गुरु तेग बहादुर की तरह! जो भी गया तड़फ से गया, प्रेम से गया। तड़फ ही भजन कराती है। देखो! गर्ज़ ही नहीं। जिसने पुकार की उसको नाम मिला, हरेक को नहीं मिलता। हाय! हाय! मिल भी जाता है। तो ये इधर-उधर हो जाये तो ये तो खाल भी उतार देता है। नाम तो ऐसा है। हाय! हाय! हाँ बोलः

पाठी– जे कोई अपनी ओट सवारे.....

मैनेजर साहिब जी–ये कीमती वचन है! सुनो हाँ.....

पाठी– जे कोई अपनी ओट सवारे अपनी ओट सवारे॥
जैसा वित तैसा होये वरतै अपना वलि नहीं हारे॥

मैनेजर साहिब जी– इसका रोज़गार नहीं चलता, हमारे काम नहीं चलता, लगा रहता है। कोशिश तो करता रहता है। ऐसे तुम भी लगे रहो हाय! हाय!

जे कोई अपनी ओट सवारे अपनी ओट सवारे॥
जैसा वित तैसा होये वरतै अपना वलि नहीं हारे॥

अपनी तरफ से कोशिश करो बाकी उसकी मौज़ पे है। वो सच्ची लगन देखता है, तड़फ देखता है। फिर क्या पता किस वक्त मेहर कर दे। बीज डाला देखो भई! बीज डाला, पानी दिया, गोडी की। फिर छोटा सा पौधा बन गया। फिर पुई निकल आई, फूल बन गया। इसी तरह बूटा बनता है। अन्दर भी इसी तरह राम बनता है। आहिस्ता-आहिस्ता अन्दर शांती आने लग जाती है। काम क्रोध की अग्नि बुझने लग जाती है। हाँ! देखो भई आहिस्ता-आहिस्ता जिस्म खाली होने लग जाता है। ये ज़िन्दा मरने का सवाल है। ज़िन्दा मरना, ये नहीं कि कब्रों में जाना है।

जीवतु मरै मरै फुनि जीवै तां मोखंतरु पाये॥ (550/3 मः4)

मौत के वक्त क्या होता है? सारा जिस्म खाली हो गया। इस तरह सिमरण कर-कर के ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। इसे कहते हैं 'ज़िन्दा मरना'। और कब्रों में जाना नहीं, जड़ चेतन की गांठ खोलना!

दादू पहले मर रिहे पाछे मरे सब कोय॥

यही मुसलमान फकीर कहते हैं :-

मौतोवा किवलअनत मौतोवा॥

कि तू मरने से पहले मर, फिर शब्द से ताल्लुक पड़ेगा। यही मौलवी रूम ने कहा हैः

वमीर ऐ दोस्त पेश अज़ मर्ग गर में खुआही ज़िन्दगी॥

कि ऐ दोस्त अगर तू मरने से पहले मर गया, तुम्हें एक नई ज़िन्दगी मिल जायेगी।

मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ॥
गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बुझै सोइ॥
नानक अैसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ॥

(555/म 3)

देखो, जब मरता है! इसमें कोई खास बात नहीं। इसमें थोड़ी सी तकलीफ लगती है। जब हमें कोई बात समझ नहीं आती तो ऐसे बैठ जाते हैं ना! हाथ-पांव सो जाते हैं। काफी जिस्म सो जाता है। देख लो हाथ-पांव काम नहीं करते। फिर इस ओर तवज्जों दो, काम देने लग जाते हैं। कोई फर्क तो नहीं पड़ा। बस! इसी तरह सिमरण कर-कर देह को खाली करे। फिर जब मर्ज़ी आये, जब मर्ज़ी जाये। अभ्यास की ज़रूरत है। ख़्याल टिकाने की ज़रूरत है। ख़्याल को टिकाने की ज़रूरत है। यहाँ आए, अजीब खेल है। यहाँ से फिर शुरू होती है रूहानियत! रात भी अर्ज़

की थी, कि मन्दिरों में जाओ, गुरुद्वारों में जाओ, मस्जिदों में जाओ, गिरजों में जाओ, शिव-दयालों में जाओ! आपको दो किस्म की शक्लें मिलेंगी, गुम्बद होगी, लम्बूतरी शक्ल होगी, जैसे शिव-दयालों की। सबके अन्दर जोतें जग रही हैं। ये घण्टे संख बज रहे हैं, मृदंग बज रहे हैं, कीर्तन हो रहे हैं। ये हैं क्या? ये स्कूल थे हमारे लिये। ये समझाने के लिये स्कूल थे। जैसे बच्चों को पढ़ाते हैं। मिट्टी के केले बनाकर, ये केला है, ये सन्तरा है, है तो नहीं, है तो मिट्टी! ये इसी तरह था! असली मन्दिर ये शरीर है।

Body is the Temple of God.

हरि मंदरु एहु सरीर है गिआनि रतनि प्रगटु होइ॥
मनमुख मन मूलु न जाणनी माणयि हरि मंदरु न होइ॥

(1346/4म:3)

शरीर मन्दिर है, आदमी का बनाया नहीं। ये गुम्बद है, ये लम्बूतरी शक्ल है जिसे कृष्ण भगवान ने कहा है नासिका के अग्र भाव आओ। वहाँ आये। कुदरती जोते जग रही हैं। घण्टे संख बज रहे हैं।

घंटा जा का सुनिए चहु कूंट॥

मुसलमान फकीर कहते हैं:

कस नदा निस्त कि मन्ज़िल राहे, माशूक कुजा अस्त॥

कि उस खुदा का घर किधर है। उससे घण्टे की तरह आवाज़ आती है। पहले आवाज़ है। अन्दर जोते जग रही हैं। एक फकीर हुआ है। उसने कहा है:

माई मोरे मन्दिर में जोत जगे.....

पाठी– माई मोरे मन्दिर में जोत जगे।
बिन दीपक बिन बाती घृत के।

मैनेजर साहिब जी– बिन दीपक बिन वाती घृत के.... हाँ हाँ बोल..

पाठी– बिन दीपक बिन वाती घृत के झिलमिल जोत जगे।
इस जोती का सकल उजारा देखत तिमर भगे।

मैनेजर साहिब जी– इस जोती का सकल उजारा देखो! ये तो कमरे में रोशनी नहीं देता, कभी दीया टूट गया, कभी तेल खत्म, कभी बाती खत्म, वो हर वक्त जारी है। हाँ जी....

पाठी– इस जोती का सकल उजारा देखत तिमर भगे।
माई मोरे मन्दिर में जोत जगे।
अनहद बाजे बजें कुदरत से।

मैनेजर साहिब जी–अनहद बाजे बज रहे हैं वहाँ। हाय! हाय! हाँ कुदरती।

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले॥
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे॥
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे॥ (347/14 म:1)

वो कब सुनोगे? हाँ हाँ जी:

पाठी– अनहद बाजे बजें कुदरत से, बिन कर ताल बजे।
माई मोरे मन्दिर.....

मैनेजर साहिब जी– यही पलटू साहब कहते हैं-

उल्टा कूँआं गगन में तिस में जरै चिराग।

मुसलमान चिराग कहते हैं। ईसाई कैन्डल कहते हैं।

उल्टा कूँआं गगन में तिस में जरै चिराग॥
तिस में जरै चिराग बिना रोगन बिन वाती।
छः रितु बारह मास रहत जलत दिन राती॥

बोलो भई छः ऋतु बारह मास!

सतगुरु मिला जो होय ताहि की नजर में आवै।
बिना सतगुरु कोउ होय नहीं वा को दरसावै॥
निकसै एक आवाज़ चिराग की जोतिहिं माहीं।

उसमें से आवाज़ें भी आ रही हैं।

अन्तर जोत निरन्तर वाणी

पढ़ते हैं। वो सतगुरु की जोत है।

एक ही की सेव सब ही को गुरदेव एक।
एक ही सरूप सबै एक जोत जानवो॥

उसकी जोत सब में काम कर रही है। वो जोत देखनी थी! उस जोत को देख ले फिर खालसा बनता है।

पूरन जोत जगै घट में तब खालसा ताहि नखालस जाणै॥

ये ज़िन्दे मरने का सवाल है।

अब मनु उलटि सनातनु हूआ॥ तब जानिया जब जीवत मूआ॥

जड़ चेतन की गांठ खोली, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा किया। फिर ये सनातनी बन गया! यहाँ रूह काफी साफ हो जाती है। फिर ये आर्य बन गया। पाक बन गया। सोचो! वो राम नाम।

राम नामु है जोत सवाई, ततु गुरमति कढ़ि लईजै॥

फिर नामधारी बन गया। देख लो! यही सच्चा सौदा है। बिल्डिंग तो नहीं! बाहर तो कूड़ है।

कूडु राजा कूडु परजा कूहु सभु संसारु॥ (468/5 म:1)

प्रलय आई, सब फनाह! बोलो भई कौन सा सच है? सत देश, चौथा लोक। ये कूड़ के लिये मर गई सारी दुनिया! देख लो भई! कूड़ पीछे! अन्दर सत् ताकत देखनी थी। कूड़ के लिये मर गई, बाहर ही बाहर भटकती है। सच्चा सौदा इसका नाम है।

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु बीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥

(646/8)

देख लो फिर सब कुछ बन जाता है। फिर यहाँ से निरंकारी बन जाता है।

गुरुमुखि राग सुआद आन तियागे, गुरुमुखि इह मनु भक्ति जागे।
अनहद सुणि मानिआ सबदु विचारी, आत्मु चीनि भये निरंकारी॥

आत्मा देखी नहीं फिर निरंकारी कैसे बन गये भई! फिर सब कुछ बन जाता है। शम्स तबरेज़ ने लिखा है। कि *"बन्दों को इन्सान बनने के लिये सैकड़ों साल चाहियें।* डॉक्टरी, इंजीनियरिंग का कोर्स करते हैं। कितनी मेहनत करते हैं। सैकड़ों साल चाहिये *फिर इन्सान को मुसलमान बनने के लिये फिर सैकड़ों साल चाहियें।* बोलो भई! ऐसे ही बने फिरते हैं कोर्स किसी ने भी नहीं किया। ऐसे ऊपर-ऊपर से बने फिरते हैं। ऐसे ही ठेके लिये बैठी है दुनिया। फिर सब कुछ बन जाता है। फिर दुई निकल जाती है। देखता है, सबके अन्दर है। जब तक वो नहीं देखता दुई नहीं निकलेगी। फिर निकलती है दुई। नहीं, निकलती नहीं। हाय! हाय! देख लो! जो साधू आते हैं, यही शिक्षा देते हैं।

बिसरि गई सब ताति पराई॥ जब ते साध संगति मोहे पाई॥

साधू क्या शिक्षा देते हैं कि तूने क्या लेना है, दुनिया से? तू सतगुरु-सतगुरु कर, जैसे चलता है चलने दे। सबके साथ दीनता से गुज़ारे, अपना सिमरण-भजन किया। फिर कहता है सबके अन्दर मालिक देखता हूँ, फिर निकलती है दुई। ऐसे कितना कह ले, फिर निकलेगी! वो देखते सबके अन्दर हैं। भले-बुरे सबके अन्दर है। ये हस्ती मिटाये तब है। सबसे हाथ बांध कर गुज़ारे। फकीर हाथ बांध-बांधकर, गुज़ार गुज़ार के गये हैं। सोच लो! अगर फकीर हाथ न बांधे, उनके अन्दर नम्रता

न हो, सोचो! हमें कौन सिखाये? मस्ताना जी कहते थे, 'हम हैं सेवाधारी, फिर हमें जोड़े झाड़ने वाले कहा करो! बोलो भई! हाथ बांध बांधकर गुज़ारी। दीनता का मार्ग है। किसी चीज़ का रूप बनने के लिये वो गुण चाहिये जो गुण उसके लिये ज़रूरी हैं। मालिक का रूप बनने के लिये वो गुण चाहिये जो मालिक में हैं। वो क्या हैं भई....

कबीर रोड़ा होइ रहु वाट का तजि मन का अभिमानु॥
अैसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु॥

(1372/6 कबीर)

कबीर रोड़ा हो जा रास्ते का, हरेक की ठोकर खा। पहले तो यही मुश्किल है। फिर कहता यह नहीं रोड़े से चोट लग जायेगी।

कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइया पंथी कउ दुखु देइ॥
अैसा तेरा दासु है जिउ धरनी मंहि खेह॥

खेह बन जा फिर कहता है, ये भी नहीं। खेह से कपड़े ख़राब होंगे, हाथ पैर ख़राब होंगे!

कबीर खेह हूई त किआ भइआ जउ उुड़ि लागै अंग॥
हरिजनु अैसा चाहीअै जिउ पानी सरबंग॥

फिर कहता है पानी जैसा बन जा। फिर कहता है ये भी नहीं।

कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ॥

ठण्डे की जगह गर्म मिल गया, गर्म की जगह ठण्डा मिल गया वो भी दुःख।

हरिजन अैसा चाहीअै जैसा हरि ही होइ॥ (1372/9 कबीर)

जैसे मालिक ने हस्ती मिटाई हुई है। कोई निशानी है? कोई गालियां निकाले किसी की रोटी बन्द की है? इतनी हस्ती को मिटाये तब है। देख लो भई! हाय! हाय!

बुरा देखने मैं चला बुरा ना मिलया कोय।
जब दिल खोजा आपना मुझ से बुरा ना कोय॥
कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ।
जिनि अैसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ॥

(1364/16 कबीर)

वो जायेगा मालिक की दरगाह में है! देख लो भई इतनी हस्ती को मिटाये तब मालिक का रूप बनता है।

गरीबी गदा हमारी। खंना सगल रैनु छारी॥
इसु आगै को न टिके बैकारी, गुरु पूरे अैह गल सारी॥

बोलो भई! तब चीज़ मिलती है। सबसे दीनता से। सबके घरों में झगड़े हैं। दीनता से उनसे गुज़ारे। अपना सिमरण चलते-फिरते लगा रहे, बस! ये तो झगड़े भी आयेंगे। जिसको दुःख दिया है, दुःख लेना है। जिससे सुख लिया है, सुख देना है। बस लगा रहे। याद रखो! दीनता सब से बड़ा हथियार है। दीनता रखो और सिमरण करो। फिर देखो क्या शांती मिलती है। हाँ हाँ जी, बोल भई केहड़ा..

पाठी– अचल राम इस काया मन्दिर में, सब कुछ साज सजे॥
माई मोरे मन्दिर में जोत जगे॥

मैनेजर साहिब जी– वो जोत देखे, फिर सब कुछ बनता है। देख लो भई! यहाँ से मार्ग शुरू होता है। वो जोत देखनी थी। जब तक वो नहीं देखता एक कदम भी नहीं चला गया। ये तो पहला कदम है। हाँ, ऐसे परमार्थ के ठेके लिये बैठा है। बस हाँ, हाँ जीः हाँः

पाठी– मन्दिर में जोत जगे।

मैनेजर साहिब जी– ये मन नहीं करने देता है। मन हमारा दुश्मन है। और उससे कुछ करा ले, ये सिमरण नहीं करने देता। इससे सख़्त लड़ाई करनी पड़ती है।

मन ही नालि झगड़ा, मन ही नालि सथ॥ (87/13 मः3)
मन जीतै जगु जीतु॥

इसका कहना ना माने, एक तन, एक मन। ये भी सारा दिन, तन कहता है, मेरे लिये ये कर, मेरे लिये ये कर। ये कर ले फिर अपने करेंगे, ये आराम कर ले फिर करेंगे। ऐसा करता है मन, बोलो! ऐसे आसान होता! किल्ली से केस क्यों बांधते? लगा रहे बस!

फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीअै कउणु।
कंनी बुझे दे रहां किती वुगै पउणु॥

(1382/10 फरीद)

कि तन सारा दिन मांगता है, ये कर, ये कर। मैं इसकी सुनता ही नहीं। कानों में बुझे दे लिये। हाय! हाय! वो हासिल करता है। हाँ...हाँ जी बोल हाँ...

पाठी– पूरा हो गया जीः

मैनेजर साहिब जी– हो गया है, इस काया मन्दिर में...हाँ...

पाठी– अचल राम इस काया मन्दिर में...

मैनेजर साहिब जी– काया में, बाहर-बाहर के न, काया मन्दिर में, हाय! हाय!
पाठी–सब कुछ साज सजे।
मैनेजर साहिब जी– हाँ... बिन कर ताल हाँ.... बिन कर ताल हाँ हाँ बोल...ये हाथों पैरों के राग नहीं। ये तो सुने! बल्ले-बल्ले बल्ले बड़ी खुशी आई, बड़ा आनन्द आया। फिर आनन्द कहाँ गया? टैम्प्रेरी हुआ। फिर कहाँ गया? अगर वो सुन ले! तो वो जाये ही ना! वो राग सुनना था। हाय! हाय!। चलो, दे उधर दे फिर देखोगे, फिर देखोगे! लगता लगता मुश्किल है। ये है भी मुश्किल, पर आसान भी है। इससे आसान रास्ता भी कोई नहीं। लगा रहे थोड़ा-थोड़ा भी करे, देख लो! कई लड़के हैं। एक साल में दो-दो, तीन-तीन जमातें कर जाते हैं। कई चार साल में एक जमात नहीं कर सकते। ये लगा रहे, फिर सब कुछ हो जाता है। बस लगा रहे।

जैसा वित तैसा होये बरते आपना वलि नहीं हारै॥

हाँ, हाँ जीः

पाठी– साधो भई बन जाओ वीर लड़ाका।
जम नै मार जीत जाओ युद्ध में खेलो ज्ञान झड़ाका।
साधो भाई बन जाओ वीर लड़ाका।
मैनेजर साहिब जी– मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ॥

रोज़ पढ़ते हैं। हाय! हाय! सख़्त लड़ाई करनी पड़ती है बस ये ही दुश्मन है। बस हाँ जीः

पाठी– जम ने मार जीत जाओ युद्ध में खेलो ज्ञान झड़ाका॥
साधो भाई बन जाओ वीर लड़ाका॥
शील, सन्तोष, दया, सत, धीरज एह शस्त्र झगड़े का।

मैनेजर साहिब जी– ये दुश्मन भी अन्दर हैं, हथियार भी अन्दर हैं। हाय! हाय! देख लो भाई। मारने वाले, तंग करने वाले, और हथियार भी अन्दर है। छुड़ाने वाले, शील, सन्तोष, धीरज, विवेक भी अन्दर हैं। जब भी सिमरण कर ले।

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।
काम क्रोध मद लोभ विसारो, शील सन्तोष क्षमा सत धारो।
मद्य मांस मिथया तज डारो, हो ज्ञान घोड़े असवार भरम से न्यारा है॥

यही गुरु नानक साहब कहते हैं। गुरु अंगद साहब ने कहा हैः

कामु क्रोधु परहरू पर निंदा। लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥

काम छोड़ दे, काम किसे कहते हैं जितनी कल्पना हैं सब काम हैः

काम, काम सब कोई कहे, काम न चीन्हे कोये।
जितनी मन की कल्पना काम कहावे सोये॥

ये चीज़ है, ये हो! ये है! ये सारे ख़्याल, काम तो अपनी जगह है, ये सारी कल्पनाएं है। इसी तरह काम, क्रोध, मोह छोड़ दो। एक दफा झगड़ा पड़ा, पता नहीं कहाँ से कहाँ जाता है। कई अपनी तबाही आप ही कर लेते हैं, गुस्से में।

क्रोध भूत जब ता पर आवे तन मन की सुधि विसरावै॥
वो आत्म घाती जानौ वो महा मुड़ पहिचानौ॥

हाँ, पराई निंदिया कर करके दुनिया काली हुई पड़ी है। फलाना यू हैं, फलाना यूं है। कौम, मज़हब भी एक दूसरे की देखो भई! बसाना था मालिक! जिसको याद करोगे वो ही बसेगा। बोलो! सोचो! वहीं बसेगा!

निंदा भली किसै की नाहि मनमुख मुगध करनि।
मुंह काले तिन निदंका नरके घोरि पवंनि॥

बोलो! उल्टा काम कर लिया निंदा कर-कर के। फकीर तो अपनी निंदा पसन्द करते हैं, क्योंकि निंदक उनके पाप उठाते हैं।

निदंउ-निदंउ मोकउ लोगु निंदउ। निंदा जन कउ खरी पिआरी॥
(339/2 कबीर)

देखो हाँ! हाय! हाय! एक अखबार में किसी ने अखबार पहले निकाला फिर तो ठीक हो गया कि ऐसे पकड़ेगा, ऐसे पकड़ेगा सत्संग में आया। बुलाया कभी तूने, हमारी मशहूरी की है? मस्ताना जी ने उसके गले में नोटों के हार डाले। देखो!

कामु क्रोधु परहरू पर निंदा। लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥

लोभ छोड़ दे। पैसा-पैसा करता, पत्थर दिल बन जाता है। पैसा-पैसा ही रह जाता है। हाय! हाय!

भ्रम का संगलु तोड़ निराला....

बाहर भ्रम है, कूड़ है–

कूडु राजा कूडु परजा कूडु सब संसार॥ (468/5 म:1)

कौन है इसका! ये लेने देने के सम्बन्ध से इकट्ठे हुये हैं। कोई मां बनी, कोई औरत बनी, कोई कुछ बना, ये सब लेने देने के सम्बन्ध हैं। आखिर बस गये। इनसे भी गुज़ारा हो। लेने-देने भी खत्म करने है। दीनता से गुज़ारा हो! हाय! हाय!

भरम का संगलु तोड़ निराला। हरि अंतरि हरि रसु पाइआ।

फिर अन्दर रस आना शुरू हो जायेगा।

निसि दामिनि जिउ चमकि चंदाइणु।

जैसे अंधेरी रात में बिजली के चमकारे देखे! वैसे तुम्हारे अन्दर भी लश्कारे आ जायेंगे, वो जोत आ जायेगी। हाय! हाय!

अहिनिस जोति निरंतरि पेखै।
आनंदु रूपु अनूप सरूपा गुरु पूरे देखाइआ॥

जिस फकीर से काम लेता है सतगुरु, उसी रूप में काम लेता है। फिर आगे संभाल करता है। बाहर कोई रूप नहीं उसका। उसी रूप में आकर मिलता है। तभी उन्होंने कहा हैः

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ॥
ओइ जीवंदे बिछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़॥

(1102/3मः5)

सजण सेई नालि मैं चलदिआ नालि चलँनि॥
जिथै लेखा मंगीअै तिथै खड़े दिसनि॥

(729/2 मः1)

वो भी उसी रूप में आकर संभाल करता है। मास्टर पहले, पहली दूसरी पढ़ाता है, फिर तीसरी, चौथी। फिर एक एक करके अपना रूप बना लेता है। इसी तरह सन्त भी इसे अपना रूप बना लेते हैं अन्दर चीज़ है वो तो! देह तो नहीं! देह तो औजार है। हाय! हाय! बस, हाँ हाँ ये लड़ाई करनी पड़ती है। हाँ..... लगा रहे। है भी मुश्किल, पर लगे रहो बस। वो भी देखता है कि सख़्त दुश्मन है, वो भी मेहर करता है। फिर हाय! हाय!

पाठी–शील, सन्तोष, दया, सत, धीरज, एह शस्त्र झगड़े का।

मैनेजर साहिब जी– यह कार्य सबसे बुरा है। ज़रा सा इधर झगड़ा पड़ा, कुल के कुल खत्म हो गये। देखो भई! मामूली चीज़, देखो! मामूली बात, कुलों के कुल खत्म हो जाते हैं। खानदान तबाह हो जाते हैं। यह बर्दाशत किया फिर बस, हाय! हाय! हाँ, हाँ जीः

यह जीभ क्या? यह जीभ सबसे बुरी है, यह खाना-पीना है। कुछ हो यह तो अपनी लज़्ज़त चाहती है, इसको क्या?

कुटील इन्द्री जीभ की चाहे षट रस स्वाद।
गुण हो या दोष होवे या जन्म जाये बर्बाद॥

हमारे एक अफसर था। किले में बड़ा अफसर था। किले में हर चीज़ होती

है। उसने आम उठाया टट्टी में जाकर खाया। जीव की ये दशा किसने करायी जीभ ने। देखो क्या नहीं कराती! ये इसी तरह है। ये सबसे बुरी है।

जिन जिता जीभ को तिन जिति सब देह।
चरण दास यूं कहते है मुक्ति धाम फल लेह॥

यह सबसे बुरी है। ये ले आ मेरे लिये, ये ले आ। बस! सादा खाओ, सादा पहनो, याद रखो। कम सोओ, कम खाओ, रात को जागो देखो फिर क्या मज़ा है! हाँ जीः

पाठी– शील, सन्तोष, दया, सत, धीरज एह शास्त्र झगड़े का।
इन पाँचो को बांध खड़ा हो जा रण में, पीस के जाड़ कड़ाका॥
साधो भाई बन जाओ.....
बर्छी विचार, क्रोध को मारो वो करता नित हांका।
बड़े-बड़े भगतो.....

मैनेजर साहिब जी– कल रात फरमाया, किसी ने बाप और बेटे का किसी बात पर झगड़ा हो गया। बाप का कत्ल कर दिया, बोलो भई! कहीं शराब पी, बोलो! ज़रा सी बात पर बात बढ़ा देता है काल! बोलो भई! हाय! हाय! ये हाल है दुनिया का! याद रखो, दीनता, नम्रता यह बड़ा हथियार है, यह बड़ा हथियार है।

पाठी– बर्छी विचार क्रोध को मारो, वो करता नित हांका।
बड़े-बड़े इन भगतों को ठगिया फंद रोप स्वर्गों का॥
साधो भाई बन.....
त्याग तलवार लोभ के मारो, आठ संगाती है जाँ का।
रीस, झूठ, दुतिया और निदिंया, तिमर मिटा दो तांका॥
साधो भाई बन.....
मोह, मलेश पारधी है पूरा अण जाल बिछा के राखा।
सिद्ध साधक तेरा पीर औलिया सगलां नै जाल में नाखिया॥
साधो भाई बन.....

मैनेजर साहिब जी– पहले ये होता है बाहर। बाल, बच्चे, पीर औलिया बाहर जाते हैं तो मन्दिर-मस्जिदों के झगड़ों में, चेलों के झगड़ों में। बड़ी बला है, किसी न किसी झगड़े में फंसाए रखता है। ये सन्त मत है! ये बड़ी भक्ति है। हाँ जीः

पाठी– सिद्ध साधक तेरा पीर औलिया, संगला नै जाल में नाखिया॥
साधो भाई बन.....

सत छुरी से जाल हम काटिया, बन्धन छुड़ाया जीवाँ का।
भोलागर जी रिपुदल जितिया शिष्य मौज़ दरिया का॥
साधो भाई बन.....

मैनेजर साहिब जी– ये दुश्मन हैं, मन के साथी हैं–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। सबके अन्दर अमृत बरस रहा है। ये पी कर हमारी मिट्टी पलीत कर रहे हैं। रखे इसके लिये हैं:

घर महि अंम्रितु तसकरु लेई॥ नंना कारु न कोई करेई॥ (221/13 मः1)

सबके अन्दर अमृत बरस रहा है। होश ही नहीं किसी को, भई मैं लूटा जा रहा हूँ। जितने स्वास थे जो खा गया! एक-एक स्वास की कीमत त्रिलोकी जितनी है। बोलो भई.....

कहता हूं कहि जात हूं कहाँ बजाऊँ ढोल।
सुआंसा खाली जात है तीन लोक का मोल॥ (कबीर)

दस रुपये गिर जायें, कितनी चिन्ता फ़िक्र लगी रहती है। सारा दिन कहाँ गिरे, कैसे गिरे! ये हुआ वो हुआ। कितने स्वास हर रोज़ गुम करते हैं। किसी को टाइम नहीं। ताश खेलने को टाइम है, और बातों को टाइम है, अखबार पढ़ने के लिये है, मालिक के लिये कोई टाइम नहीं! देखो भई! निकालो वक्त, ज़ाहिर ना करो। बस याद रखो! जितना निकाल सको, जल्दी जाओगे! नहीं कई-कई जन्म लगते हैं। ये महकमा छोड़ता तो है नहीं। लगे रहो बस! चलते बैठते खाते पीते बस!

नामा कहे तिलोचना मुख ते राम सम्हालि।
हाथ पाउ करि काम सब चीत निरंजन नालि॥

क्या पता कब मेहर कर दे। एक मुसलमान फकीर हुआ है। उसने लिखा है:

'शाह हुसैन गध्धा' कि मैं गधे जैसा था।
'जिन हंगदेयां अल्ला लद्धा॥'

टट्टी फिरते ख़्याल अन्दर! वहाँ पर टट्टी फिर रहा था। ख़्याल मालिक की तरफ था। उसी वक्त मालिक के दर्शन हो गये। क्या पता कब मेहर कर दे? सोचो! क्या पता? देखो भई यहीं देख लो। बूटा खिला, पता लगता है कब पुई निकल आती है? बोलो भई! फिर फूल बन जाता है, पता लगता है? इसी तरह क्या पता कब मेहर कर दे। ये दिल की सच्चाई पर है। हाँ, चलो इहनूं दे, किला बनावे. .... फेर बस करते हैं। तबीयत ठीक नहीं, पता नहीं किवें आ गये। सच पूछो आने को दिल नहीं था रात से, आने को दिल नहीं था। आना पड़ा, फिर सतगुरु की

मेहर ही है तबीयत ठीक नहीं हाँ.... ये किला बनाओ हाय! हाय!

पाठी– भजन गढ बांधो रे मेरा भाई।

आगे यम संग होगी लड़ाई रे भजन गढ़ बांधो रे मेरा भाई॥

मैनेजर साहिब जी– बाहर किसी से झगड़ा हो जाये कितने बन्दोवस्त करते हैं भई! देखो कितना बन्दोवस्त करते है! ये तो आयेगी लड़ाई, इसका ख़्याल है किसी को? बड़े बड़ों को खा गया। बोलो, सोच लो! बड़े-बड़ों को खा गया। ये तो आयेगी लड़ाई, कभी सोचा है? हाँ फिर क्या कर? आगे जम संग होगी लड़ाई हाँ.....

पाठी– राम नाम का किला बना ले नेम से करत चिनाई॥

मैनेजर साहिब जी– नेम से करत चिनाई॥

गरीब आदमी है। नौकरी करता है। या कोई और काम करता है। घर में मकान बनाता है। देखो एक दो घण्टे भी लगाता है दीवार खड़ी हो जाती है। वक्त निकाले, कि फुर्सत ही नहीं मिलती। ये भी लगा रहे। ये भी दीवार खड़ी हो जाती है।

नेम से करत चिनाई॥

आ पढ़ भई.....हाय! हाय!

पाठी– सतगुरु के प्यारे महात्मा सरदार चनन सिंह जी लिखतम सावन सिंह आगे मिले भाई चनन सिंह जी सतगुरु दीन दयाल की दया मेहर पहुँचे। ऐह ताकीद है, नित नेम नाल भजन-सिमरण करी जाओ और कोई दिन भजन से गफलत न करो। भजन से गफलत कीतयां ही नाम छुट जांता है। सो आलस ते द्ररिद्र नूं दूर रख के भजन नित नेम से करते जाओ। आप ही इक दिन मन बस हो जायेगा।

मैनेजर साहिब जी– बस, बोलो भई! लगे रहो। तौबा, हाय! हाय! शरीर ढीला पड़ जाता है। मुकाबला रखे! फिर वो जानता है। जब भी इसका ज़ोर पड़ गया फिर हट जाता है पीछे। फिर दबने लग जाता है मन! हाँ.....हाँ जी....

पाठी– राम नाम का किला बनाले नेम से करत चिनाई।

सत शब्द की तोप बनाकर यम की फौज हटाई ॥

भजन गढ़ बांधो रे मेरा भाई.....

ध्रुव ने बांध्यो प्रहलाद ने बांध्यो बांध्यो है मीरां बाई।

बलख बुखारे ऐसो रे बांध्यो छोड़ चल्यो बादशाही॥

भजन गढ़ बांधो रे मेरा भाई.....

मैनेजर साहिब जी– कैसे बांधना है?

पाठी– तन का है घोड़ा मन की जीना सूरतां लगाम लगाई।

मैनेजर साहिब जी–हाँ फेर बोल :-

पाठी– तन का है घोड़ा मन की जीना सूरतां लगाम लगाई।

मैनेजर साहिब जी– घोड़े को खिलाकर काम लेते हैं! इस तन के घोड़े को भी खिलाकर इससे भी काम लो। कहीं जाना हो, बरसीम डालते हैं। मन का कहा न करो! मन के ऊपर बैठो, मन हमारा दुश्मन है। इसको जीन बनाओ देख लो यही नहीं करने देता। सौ बहाने लगाता है। अपनी लात ऊपर रखता है। ये हाँ! इसका कहा न करो। इसके ऊपर बैठकर लगाम पकड़ते हैं ना, भई इधर-उधर ना हो जाये। अच्छी तरह सिमरण करो। ख़्याल को इधर-उधर न जाने दो। कैसे हाँ, हाँ जी आगे...

पाठी– अपने साहब की करो नौकरी बन जाओ सन्त सिपाही॥
भजन गढ़ बांधो रे मेरा भाई.....

मैनेजर साहिब जी– सिपाही खड़े हैं न चौकों पर, किसी कितनी चुस्ती से खड़े हैं? कभी इधर देखते हैं, कभी उधर देखते हैं। कोई एक्सीडेंट न हो जाये। देखो भई! कितनी चुस्ती से ख़्याल उधर है। इसी तरह ख़्याल सिमरण की तरफ रहे। हाँ। देखो सर्दियों में वरफ पड़ती है, पहाड़ों पर सिपाही खड़े हैं चुस्ती से, ठीक है रात को! गर्मियों में इधर देख लो हम अन्दर नहीं खड़ सकते मालिक के लिये! रोटी के लिये, तनख्वाह के लिये, देखो भई! बर्फों में खड़ा है। मालिक के लिये अन्दर नहीं खड़ सकता। हाँ, देख लो, हाय! हाय! गर्ज़ ही नहीं। हाँ, हाँ जीः

पाठी– तन का है घोड़ा मन की जीना सूरतां लगाम लगाई।
अपने साहब की करो नौकरी बन जाओ सन्त सिपाही॥
भजन गढ़ बांधो रे मेरा भाई.....

मैनेजर साहिब जी– इसका नाम है सन्त सिपाही! ख़्याल हर वक्त मन से लड़ाई करता जाये। हाँ जी, हाँ ये वक्त है, करता रहे।

पाठी– ये संसार ओस का सा मोती भोर भयी मिट जाई।
कहें कबीर सुनो भाई साधो साहिब से लगन लगाइ॥

मैनेजर साहिब जी–ओस का मोती! आजकल ओस पड़ती होगी ना बाहर, ज़रा हवा आई बस क्या पता कब दम निकल जाये! कर लो! हाय! हाय! तौबा ऐ हाँ...

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा'

सत्संग के बचन

पाठी–'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

राग मारू सोलहे महला॥

आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा। सभ महि वरतै आपि निरारा॥

मैनेजर साहिब जी–'अंजन' कहते हैं माया को। निरंजन कहते हैं माया से जो रहित हो। वैसे निरंजन का शब्द सन्तों ने काल के लिए प्रयोग किया है, कि वो मालिक जो माया से रहित है। सबकी आदि और अंत है। सबके अन्दर है, सबके साथ है। अब सवाल पैदा होता है कि दुनिया मरती है और पैदा होती है, क्या वो भी मरता है और पैदा होता है? कहते हैं नहीं। वो अन्दर रहता हुआ भी अलग है। ताल्लुक में भी ला-ताल्लुक है। कैसे? जैसे बिजली बन्द कर दो, तो बल्ब बन्द हो जाते हैं। बिजली खत्म हो गई। चालू कर दिया तो चालू हो गई। इस तरह सबके अन्दर है वो।

पाठी– आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा। सभ महि वरतै आपि निरारा॥

वरनु जाति चिहनु नहीं कोई सभु हुकमै सृसटि उपाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि उस मालिक की न कोई कौम है, न मज़हब है, न रूप है, न कोई जात है, न वर्ण है। न सिक्ख है, न ईसाई है। जो कुछ दुनिया में हो रहा है, खण्डों-ब्रह्माडों में हो रहा है, उसके हुक्म से हो रहा है। उसके शब्द से कह लो, नाम से कह लो। जो कुछ हो रहा है, उसके हुक्म से हो रहा है। क्योंकि जब मालिक की कोई जात ही नहीं तो हम इन झगड़ों में क्यों पड़े हैं? सोचो! जो रूहानी फकीर हुए हैं, उनकी तालीम इन मज़हबों से परे है। सबकी सांझी है। चाहे हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, सिक्ख हैं, ईसाई हैं, सब के लिए सांझी है। एक ही रास्ता है। यह मज़हब कैसे बने? जब-जब मालिक के भेजे हुए फकीर आए। प्रचार के लिए डेरे बनाए, लंगर भी चले, नाम भी नया रखा। जो प्रेमी आने लगे, वहाँ भक्ति

भाव की लहरें थी। उनको कोई अजीब चीज़ मिलने लगी। जो-जो ग्राहक थे, चाहे हिन्दू थे, सिक्ख थे, मुसलमान थे, ईसाई थे, किसी भी कौम के हों (यहाँ कोई सवाल नहीं), उनको तसल्लीयां मिलने लगीं तो वो उन्हीं के हो गए। उनके खानदान ही लग गए और एक दूसरे में रिश्ते नाते करने लग गए और वो एक कौम बन गईं। इस तरह कितनी ही कौमें बन गई। जितनी देर कोई कमाई वाला रहा, ठीक रास्ता बताता रहा, बाद में मन और बुद्धि के ज्ञान शुरू हो गए। वो कहता है यह ठीक है, वो कहता है यह ठीक है। कई-कई पार्टियां बन गई, फिर फिरके बन गए। मुसलमानों के कितने बन गए? सिखों के कितने बन गए? ईसाइयों के कितने बने? किसने बनाए? मन-बुद्धि ने। फकीरों की असली तालीम क्या है? कि जिस हुक्म से यह काम चल रहा है, उससे ताल्लुक जोड़ना। यह असली तालीम है।

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि॥
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि॥
हुक्मै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ॥

जब सब कुछ हुक्म में हो रहा है तो फिर झगड़ा किस बात का?

हुक्मै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ॥

(1/7 जपुजी साहिब)

जिसने उसके हुक्म को जान लिया, उसके सब झगड़े दूर हो गए। वो सब भ्रमों से परे हो गया। 'भाणा' कहते हैं मौज़ को। 'मौज़' कब ज़ाहिर होती है? जब हुक्म करे। हुक्म जब बोले 'शब्द'।

सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबद भइआ प्रगास।

(जन्म साखी पन्ना 19)

शब्द की लहर को कहते हैं 'नाम'।

नाम के धारे सगले जँत। नाम के धारे खंड ब्रहमँड॥ (284/11 मः 5)

नाम को अन्दर प्रगट करना। उस हुक्म को प्रकट करना। यह असली भक्ति है, जो जन्म, मरण के बन्धन छुड़ाती है। अब उन्होंने लिखा है:-

बिनु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी। (754/18 मः 3)

शब्द कहो, शब्दगुरु कहो, वाणी कहो, नाम कहो, वो इसके अन्दर है। उसके

मुतल्लक कबीर साहिब जी ने कहा हैः-

नेम धर्म आचार यज्ञ तप, ये उरले व्योहारा।

यह सब नीचे दर्जे की भक्ति है।

जा से मिले अखण्ड मोक्ष सुख सो मारग है न्यारा॥
काल जाल से बांचा चाहे, गहो शब्द ततसारा।
कहहि कबीर अमर कर राखो जो परखो टकसारा॥

शब्द गुरु की भक्ति है जो छुड़ाने वाली है। बाकी सब नीचे दर्जे की भक्ति हैं। उनसे अच्छी योनि मिल जाएगी, स्वर्गों में पहुँच जाएगा, पर जन्म-मरण के बन्धन नहीं छूटते। यह असली भक्ति है।

पाठी– वरनु जाति चिहनु नहीं कोई सभु हुकमे स्रिसटि उपाइदा॥

(1075/13 मः5)

मैनेजर साहिब जी– सोचो! इस की जात कैसे हो सकती है। यह उसकी अंश है।

कहु कबीर इहु राम की अंसु॥ (871/9 कबीर)

जब मालिक की जात कोई नहीं, सोचो! 'कह कबीर इहु राम की अंसु'। ये हमने बनाए हैं सब। ये कौमें-मज़हब, ये जातें, सब हमने बनाई हैं।

पाठी– लख चउरासीह जोनि सबाई। माणस कउ प्रभि दीई वडिआई॥

(1075/14 मः5)

मैनेजर साहिब जी– सारी सृष्टि उस मालिक के हुक्म से, जो काल ने बनाई है, चौरासी लाख जीअ-जून में तकसीम है। तीस लाख प्रकार के पेड़ हैं। सत्ताईस लाख प्रकार के कीड़े, पंतगे। चौदह लाख प्रकार के पक्षी। नौ लाख प्रकार के पानी के जीव। चार लाख प्रकार के भूत, प्रेत, देवी-देवता, किन्नर, गन्धर्व, इन्सान हैवान। इन्सान से ऊँची कोई योनि नहीं, केवल इन्सान ही इन सबसे ऊँचा है। क्योंकि *''लख चउरासीह जोनि सबाई। माणस कउ प्रभि दीई वडिआई॥''* क्या वडिआई मिली है? कि इसी जन्म में जन्म-मरण के बन्धन छुड़ा सकता है और किसी भी योनि में नहीं। यह वडिआई है कि जन्म-मरण बन्धन छुड़ा सकता है। चरणदास जी कहते हैंः

मनुष्य रूप को जन्म दुर्लभ जग माहि है।
देवन हू को कठिन प्राप्त नाहिं है॥
सकल देवा यही भांत मनोरथ नित करें।
मनुष्य जन्म को पाई के भवसागर तरें॥

जब वो, मालिक के चिताए हुए जीव को ऊपर जाते हुए देखते हैं तो वो भी इस योनि को तरसते हैं कि अगर हम वहाँ होते! तो हम भी नाम लेते और अपने छुटकारे का बंदोवस्त करते। इस जन्म में हो सकता है।

पाठी– लख चउरासीह जोनि सबाई। माणस कउ प्रभि दीई वडिआई॥

इसु पउड़ी ते जो नर चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– यह ऊँची से ऊँची योनि है। यह भागों से मिलती है। जब अच्छे से अच्छा कर्म करता है। तब इसको चांस मिलता है। सोचो! बड़ी मुद्दत के बाद वक्त मिलता है। अगर अब भी वक्त हाथ से निकल गया! फिर चौरासी तैयार है। पता नहीं हम कब से मालिक से बिछुड़े हैं? युगों के युग बीत गए। कितने ही सतयुग बीत चुके, कितने ही द्वापर बीत चुके, कितने ही त्रेते बीत गए, कितने ही कलयुग बीत गए। कितनी ही प्रलय हुईं और कितनी महाप्रलय हुईं। कभी तो आदमी की जून मिली होगी। फकीर से भी ताल्लुक पड़ा होगा। सोच लो! हमने उसकी कद्र नहीं की। इसलिए चौरासी में धक्के खाते फिर रहे हैं। अगर अब कद्र न की, फिर चौरासी तैयार है। चौरासी भुगतने के लिए युगों के युग बीत जाते हैं। अगर स्वर्गों में चला जाए तो युगों के युगों तक पड़ा रहता है। अगर नरकों में चला जाए तो युगों-युगों तक पड़ा रहता है। यहाँ देख लो। सांपो की उम्र, बोलो! तीन-तीन सौ साल की बताते हैं। पहले तो हम पढ़ा करते थे कि अमरीका में एक वृक्ष है, चार हज़ार साल का खड़ा है, बोलो! एक अफ्रीका में एक और ने बताया दस हज़ार साल का खड़ा है। बोलो! कब चौरासी खत्म हुई। एक वृक्ष ऐसे ही खड़ा है, कैद इतनी सख़्त सज़ा। क्यों? क्योंकि हमने आदमी की योनि की कद्र नहीं की। फकीरों को कद्र है। उनको दुख है लेकिन हमें दुख नहीं। उनको हमारा दुख है लेकिन हमें हमारा ही दुख नहीं, सोचो! सच्चे सौदे में बाड़ थी। साथ में नाला बहता था पानी का। सड़क कच्ची थी, नाला टूट गया। अब चिकनी मिट्टी थी, वहाँ गाड़ी फंस गई। वो बैलों को डंडे लगाता है बोलो! गाड़ी ऐसे ही फंसी है। हमारे परम सन्तों ने उपर से देखा और ठण्डी आह भरी और कहने लगे कि जब इनको इन्सानी जामा मिला था तब तो कद्र नहीं की। अगर कद्र की होती तो क्यों डण्डे खाते? ऐसे ही बर्बाद कर गया। सो उनको दुख है, हमें दुख नहीं। इसलिए फकीर कहते हैं कि :-

कर ले रे कर ले सौदा पार लंघण दा।

अगे अगे हटड़ी बाजार भी नहियों॥

फिर वक्त नहीं मिलेगा। यह वक्त है। इसकी कद्र नहीं हमें। कोई कौमों में फंस गया, कोई मज़हबों में फंस गया, कोई कहीं तो कोई कहीं। कोई पढ़ने पढ़ाने में, कोई ज्ञानों में फंस गया। बस ऐसे ही धक्के खा रहा है। मैं सब कुछ जानता हूँ। अगर जानता हो तो मालिक के पास न पहुँच जाए। अन्दर शान्ती न आ जाए, मन काबू न आ जाए, काम, क्रोध न बस में आ जाए। ऐसे ही जानता है।

पाठी– इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा॥
कीता होवै तिसु किआ कहीऐ॥ गुरुमुखि नामु पदारथु लहीऐ॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि जिस मालिक ने यह दुनिया बनाई है। वो ऊँचे से ऊँचा है, परे से परे है। हम उसकी क्या भक्ति कर सकते हैं? क्या गुण गा सकते हैं? क्या वडिआई कर सकते हैं?

वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा॥
कोई न जाणे तेरा केता केवडु चीरा॥ (349/1)
सुणि बडा आखै सभ कोई॥ केवडु वडा डीठा होई॥
कीमति पाइ न कहिआ जाइ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ॥
(348/8)

जिसने उसको देखा है, उसको पता है कि कितना बड़ा है। सोचो!

सभि सुरती मिलि सुरति कमाई॥
सभ कीमति मिलि कीमति पाई॥
गिआनी धिआनी गुर गुर हाई॥
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई॥ (349/2)

सोचो! इतनी ऊँची हस्ती है।

जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा॥ नानक सचु सवारणहारा॥
(349/6)

जिसको तूं दे। यह दात उसने अपने हाथ रखी है। यह उसकी दात है। हमारे परम सन्त बताया करते थे कि मालिक ने काल को एक रेत के ज़र्रे जितनी ताकत बख़्शी है। कितने खण्ड, ब्रह्मांड बना दिए। कितनी रचना कर रहा है वो, देखो! बरसात के दिनों बोरी नीचे बिछाते हैं। वहीं दीमक पैदा हो जाती है, बैठे-बैठे। इतना खेल है ज़रा सी ताकत से। एक प्रेमी ने बताया कि गंगानगर में एक प्रोफेसर था बॉटनी का। वो एक मजमून पर लिख रहा था। लिखते-लिखते उसने किताब लिख दी एक वृक्ष पर। कितने वृक्ष हैं, कितनी योनियां हैं। बोलो! इतनी बड़ी हस्ती है।

सो वहाँ तक हम कैसे पहुँच सकते है? बोलो! फिर क्या उपाय करें? किसी गुरुमुख से मिलकर गुरुमुखता का कोर्स करें। सोचो!

कीता होवै तिसु किआ कहीऐ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ॥

नाम प्रगट करके गुरुमुख बने। गुरुमुख कब बनता? आत्मा तीन शरीरों में कैद है। पहले कारण शरीर है। उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है। फिर वह स्थूल शरीर है। और अनेकों बन्धन हैं इसके साथ। क्या? मां-बाप के, बहन-भाई के, कौमों-मज़हबों के, सोचो! इन सब बन्धनों से छूटे। यह पांच तत् का तरुण बन्धन है। इससे छूटे। फिर सूक्ष्म बन्धन है, फिर कारण बन्धन है। इन सबसे छूट कर अमृतसर में नहाए, प्रयाग में नहाए, मानसरोवर में नहाए। फिर आत्मा निर्मल होती है। फिर गुरुमुख बनता है। इस गुरुमुख को इतनी ताकत है कि–

गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावैं एक कणी॥ (आदि ग्रन्थ)

एक कणी देकर लाखों, हज़ारों, जीवों को ले जा सकता है इतनी ताकत है। तब गुरुमुख बनता है। यह हमारा फर्ज़ है कि हम मालिक के आगे बेनती करें। गुरुमुख की तलाश करें। फिर गुरुमुख से पूछकर नाम जपें, अपने छुटकारे का बंदोवस्त करें।

पाठी– कीता होवै तिसु किआ कहीऐ॥ गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ॥
जिसु आपि भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा॥

(1075/15 म:5)

मैनेजर साहिब जी– दुनिया में दो तरह के मत हैं। ऐसे तो अनेकों मत हैं। पर जो असली हैं वह दो हैं, 'मनमत' और 'गुरुमत'। इसी तरह, दो तरह के आदमी हैं, 'मनमुख' और 'गुरुमुख'। जो मनमुख हैं वो भूले हुए हैं, जो गुरुमुख है वो सीधे रास्ते पर लगे हुए हैं। सारी दुनिया मालिक ने भुलाई हुई है। इसकी मेहर के बिना नहीं मिलता। गुरुमुख किसे कहते हैं? मनमुख किसे कहते हैं?

से मनमुख जो सबदु न पछाणहि॥

जिसने शब्द का रस नहीं लिया, नाम का रस नहीं लिया वो मनमुख हैं। जिसने ले लिया वो गुरुमुख है:

गुरमुखि जाता करमि विधाता॥ जुगि चारे गुरु सबदि पछाता॥
गुरमुखि मरै न जमै गुरमुखि॥ गुरमुखि सबदि समाहा हे॥

जो शब्द में समा गए, वो गुरुमुख हैं। मालिक की मेहर के बिना गुरुमुख नहीं मिलता। कब मिलता है? जब सच्चे दिल से पुकारे, रोए, चिल्लाए। जैसे मीरां

ने पुकार की। जिसको सच्ची तड़प है, लग्न है उसको गुरुमुख मिलता है। फिर उन की सोहब्बत करे। उनकी सोहब्बत में मालिक का प्यार उठता है, मालिक का रंग चढ़ता है। जैसी सोहब्बत करोगे, वैसा ही रंग चढ़ेगा। अगर बुरे की सोहब्बत करोगे तो बुरे बनोगे, अगर अच्छे की करोगे तो अच्छे बनोगे। शराबी, कबाबी के पास बैठेगों तो शराबी-कवाबी बनोगे। अगर डॉक्टर के पास बैठोगे तो दवाईयां वगैरह सीखोगे। इस तरह कौमों-मज़हबों के ठेकेदारों की सोहब्बत करोगे तो वो सीखोगे। जो गुरुमुख नाम को अन्दर प्रगट करते हैं, शब्द का रस लेते हैं, वहाँ यह सीखोगे। बस बात तो इतनी है जैसी सोहब्बत करोगे वैसा ही रंग चढ़ेगा। बस जिसने यह गुरुमुखता का कोर्स करना है, वो जितनी गुरुमुख की सोहब्बत करेगा उतना ही फायदा है। उनकी सोहब्बत में जाकर, हमारे दुनिया के ख़्याल निकलते हैं। असली चीज़ का पता चलता है।

पाठी– जिसु आपि भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा॥
हरख सोग का नगरु इहु कीआ। से उबरै जो सतिगुर सरणीआ॥

(1075/16 मः5)

मैनैजर साहिब जी– फरमाते हैं कि यह जो दुनिया है, हर्ष-शोक का नगर है। सुखो-दुखों का घर है, पाप-पुण्य का शहर है, रंज और खुशी का देश है। सारी दुनिया ही पाप और पुण्य से चल रही है। यह एक बीज है।

'पाप पुण्य बीज की पोट' (152/11 मः1)

यही महात्मा चरणदास जी कहते हैं कि–

पाप पुण्य के सत्य ही ठहर रहा ब्राह्मंड।
इन दोनों के मिटत ही होत खण्डु खण्ड॥
विरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ।
सोई उतरे भवजाल से बहुते रहे आरूझ॥

सारी दुनिया पाप और पुण्य से चल रही है। कुल खण्ड, ब्रह्मांड, पाप और पुण्य से चल रहे हैं। इस दुनिया में जिसके सारे पाप हों तो नरकों में जाता है। जिसके सब पुण्य हों वो स्वर्गों में जाता है। इस दुनिया में वो आते हैं जिनके कुछ पुण्य हों और कुछ पाप। जिसके ज़्यादा पाप हैं वो दुखी जीवन व्यतीत करके चला जाता है। जिसके पुण्य ज़्यादा हैं वो अच्छा जीवन व्यतीत करके चला जाता है। सन्त फरमाते हैं कि यह दुख-सुख कर्मों के हिसाब से हैंः-

दुख सुख करतै धुर लिख पाया दूजा भाउ आपि बरताया।
गुरुमुखि होय सु अलिपतो वरतै मनमुख का किया वेसाहा हे॥

यह भुगत ले, यह भुगतने हैं ज़रूरी हैं, तूने किए हैं। हम कहते हैं न 'कर्मा संदड़ा खेत' मुसलमान कहते हैं 'आखरत की खेती' जो देह से बीजे हैं वो देह से ही इसको भुगतने हैं। यह कोई नहीं टाल सकता।

'करम गत टारे न टरै'

यह कोई टाल नहीं सकता। यह ठीक है कि भजन सिमरण से कुछ हल्के हो जाते हैं, पर टल नहीं सकते। कहते हैं कि कर्म भी भुगत ले और मालिक की रज़ा में रहे और क्या करे? सतगुरु के आगे बेनती करे कि आगे के लिए छुटकारे का बंदोवस्त करे। अगर सच्चे दिल से पुकार करे तब फकीर मिलता है। ऐसे नहीं। अपने आप नहीं मिलता है। हाँ अपने आप नहीं मिलता। जब फकीर मिल जाए, उसकी शरण में जाए। उसके हुक्मनुसार भजन सिमरण करे, यह तरीका है छुड़ाने का और कोई तरीका नहीं। वो सतगुरु इसके अन्दर है। जब तक वो मेहर न करे, उसका बख़्शा हुआ फकीर नहीं मिलता।

आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै। (605/ म:4)

आप ही सारी दुनिया बनाई है।

आपे वेखि विगसदा पिआरा, करि चोज वेखै प्रभु आपे।
आपे वणितिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै।

(605/8 म:4)

आप ही गुरुमुखों के अन्दर बैठकर काम करता है। उनके अन्दर बोलता है।

प्रभु जी वसै साध की रसना।

उनके ज़रिये समझाता है। यही मुसलमान फकीर कहते हैं।

गुफताए ओ गुफता अल्ला बवद। गरचे अज हलकूमें अबदुल्ला बवद।

(मौलवीरूम साहिब)

अल्ला का कहा हुआ है जैसे किसी के अन्दर डॉक्टरी बोलने लगती है। किसी के अन्दर इंजीनीयरिंग बोलने लग जाती है। इस तरह जिसने यह काम किया, उसके अन्दर मालिक बोलने लग जाता है।

पाठी– हरख सोग का नगर इहु कीआ। से उबरे जो सतिगुर सरणीआ।
त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरुमुखि सोभा पाइदा।

(1075/16 म:5)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि अगर छुटकारा हुआ तो गुरुमुख का, अगर दुनिया में किसी ने लाभ उठाया तो गुरुमुखों ने। ब्रह्मा की चोटी तक तीन गुण हैं। वहाँ तक मुक्ति नहीं होती। मुक्ति कल्पर्यन्त है। क्या? तकरीबन एक हज़ार चौकड़ी युग की होती है। उसके बाद फिर आना पड़ता है। यही कृष्ण भगवान ने लिखा है और अर्जुन से कहा कि तीनों गुणों से मिले हुए हैं। त्रिलोकी तक सब जीव बन्धन में हैं।

बांधित तीन लोक बापुरा कैसे दरस लहै।
नांव निशान सकल जग उपरि दादू देखत है॥

वहाँ तक शान्ती नहीं। किसी भी जीव को शान्ती नहीं। महात्मा जगजीवन साहिब फरमाते हैं कि-

पपीहा जाहि पुकारिउ पंछीअन आगे रोय।
तीन लोक फिर आइयो हूं बिन दुखु लखियो न कोय॥

कि त्रिलोकी तक देख आया हूँ, कोई जीव सुखी नहीं। किसी को शान्ती नहीं। जिन स्वर्गों का हम वर्णन करते हैं– स्वर्ग! स्वर्ग! उनका हाल पढ़ कर देखो, विशिष्ट योग में क्या लिखा है? कि वहाँ भी सड़-पच लगी हुई है एक दूसरे से। सोच लो! वहाँ भी सड़-पच लगी हुई है। फिर स्वर्गों के सुख भोगे। अच्छे कर्मों का फल खत्म हुआ फिर चौरासी तैयार है। कृष्ण भगवान ने उधो से कहाः-हे उधो! यह जो कीड़ा जा रहा है, कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज यह कीड़ा है, सोच लो! छुटकारा तो न हुआ। क्या फायदा हुआ इन स्वर्गों का? चार दिन सुख के काटे छुटकारा तो न हुआ सोचो! सवाल तो छुटकारे का है कि वहाँ तक किसी को सुख नहीं। इनसे आगे जाए सहज अवस्था में किसी गुरुमुख से पूछ कर, वहाँ जाएगा फिर छुटकारा है नहीं तो नहीं। हाँ, जीः

पाठी– त्रिहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा।
अनिक करम कीए बहुतेरे॥ जो कीजै सो बँधनु पैरे॥

(1075/16 मः5)

मैनेजर साहिब जी– अब कर्मकाण्ड का हाल बताते हैं कि जैसे किसी शाहूकार की बही में लेना देना लिखा होता है। या गवर्नमेंट के दफ्तरों में किसी का लेना देना लिखा है। इस तरह धर्मराय के दरबार में भी लेखा लिखा है, सबका हिसाब देना पड़ता है। अच्छे कर्म, बुरे कर्म दोनों ही हथकियां हैं। सबका लेखा देना पड़ता है।

पुण्यु दानु जो बीजदे, सब धर्मराइ कै जाई।
बिनु सतिगुरु जमुकालु न छोड़ई दूजै भापि खुआई॥

जिन कर्मों-धर्मों पर हम मान करते हैं, यह सब बन्धन हैं। कोई छुटकारे वाला नहीं।

करम धरम सभि बंधना पाप पुंन सनबंधु।
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु बँधु।
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबँधु।
नानक सच्चे नाम बिनु वरतणि बरतै अंधु।

(551/3 मः4)

बिना सच्चे नाम के प्रगट किए बिना छुटकारा नहीं। सब हनेर खाता है। छुटकारा है तो सच्चे नाम की भक्ति का, शब्द गुरु की भक्ति में, बाकी किसी में छुटकारा नहीं। दादू साहिब फरमाते हैंः

करमे करम काटि नाहिं करमे करम न जाई।
करमे करम छूटे नाहिं करमे करम बधाई॥

सोचो! कृष्ण भगवान ने लिखा है कि अच्छे कर्म, बुरे कर्म दोनों हथकड़ियां हैं। एक लोहे की समझ लो, एक सोने की समझ लो। पलटू साहिब लिखते हैंः

पाठी– तीन लोक पेरा गया बिना विचार विवेक।

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि त्रिलोकी तक सब पीड़े जा रहे हैं।

पाठी– तीन लोक पेरा गया बिना विचार विवेक।

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि जैसे चने के साथ घुन भी पीसा जाता है। इस तरह अच्छे, बुरे कर्मों वाले सब पीसे जा रहे हैं। किसी को शान्ती नहीं।

पाठी– बिना विचार बिबेक भए सब एकै घानी।
पीना भा संसार जाठ उपर मर्रानी।
इतना दुख सब सहैं तेहू पर नहीं डराते।
फिर फिर पेरे जायँ कर्म में फिर लिपटाते।

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि पीड़े भी जाते हैं पर फिर भी कर्म नहीं छोड़ते। सब भेड़ चाल है। एक भेड़ शिकार को चल पड़ी, तो सब उधर चल पड़ीं। यह हाल दुनिया का है। हाँ, जीः

पाठी– इतना दुख सब सहैं तेहू पर नहीं डराते।
फिर फिर पेरे जायँ कर्म में फिर लिपटाते।

देखा देखी पड़ै आपु से आपू पेरावै।
पेरे से जो बचै ताहि को हंसी लगावै।

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि जो बचना चाहते हैं, उसका मखौल करते हैं। गुरुनानक साहिब आए, उन्होंने कहा कि बचो भाई! क्या कहते थे लोग क्यों कुराहिइए के पास जा रहा है? कबीर साहिब आए तो उन्होंने कहा कि बचो भाई तो लोग क्या कहते थे कि जुलाहे के पास जा रहा है, उल्टा ज्ञान चला रहा है! पलटू को ज़िन्दा जलाया! उन्होंने भी यही कहा कि बचो भाई! दादू साहिब रो रोकर गए हैः

दादू कहत पुकारी कोई माने नाहि हमारी।
पण्डित काज़ी वेद कतेबे पढ़ पढ़ मुये लवारी।
वह तीरथ वह हज को जाते बूड़े भवजल धारी।
ईसाई सब धोखा खाया पढ़ अंजील वीचारी।
हिन्दु तुरक ईसाई तीनों करम धरम पचहारी।
नूर जहूर खुदा हम पाया उतरै भवजल पारी॥

कहता है कि मैंने नूर ज़हूर खुदा देखा है, तुम भी देखो। कहते हैं कि कोई कर्मों-धर्मों में फंसा पड़ा है, कोई तीर्थों पर जाता है, कोई हज पर जाता है, कोई पढ़ने-पढ़ाने में लगा है, कोई ध्यानों में लगा है। मेरी कोई सुनता ही नहीं। हाँः

पाठी– देखा देखी पड़ै आपु से आपु पेरावै।
पेरे से जो बचै ताहि को हंसी लगावै।
पलटू मैं रोवन लगा चलता कोल्हू देख।
तीन लोक पेरा गया बिना विचार बिबेक॥

मैनेजर साहिब जी– पलटू साहिब कहते हैं कि मुझे उनकी हालत देखकर रोना आता है। मेरी कोई सुनता ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– अनिक करम कीए बहुतेरे॥ जो कीजै सो बंधनु पैरे॥
कुरूता बीजु बीजे नही जंमै सभु लाहा मूलु गवाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि यह कर्म-धर्म पिछले युगों के लिए माकूल थे क्योंकि उमरें लम्बी थीं, चरित्र अच्छे थे। कुछ बन भी सकते थे। लेकिन आज तो बन ही नहीं सकते विधिपूर्वक। क्योंकि कलयुग में पहली बात तो यह है कि उमरें छोटी हैं। इनसे हृदय की सफाई हो सकती है पर नाम नहीं मिलता। वो हृदय की सफाई कराके फिर नाम बख़्शते हैं। फिर यह सिमरण देते हैं कि ऐसे नाम

प्रगट कर। पहले हृदय की सफाई करते थे। आजकल सीधा जपा कर ले जाते हैं पर नाम के बिना छुटकारा नहीं। सच्चे नाम को प्रकट किए बिना छुटकारा नहीं। सोचो!

'नानक के घर केवल नाम'
सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ।
नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ॥

(761/16/मः 5)

बिना नाम के प्रगट किए छुटकारा नहीं। यही रविदास ने कहा है कि :

सतयुग सत, त्रेता युगी, द्वापर पूजा चार।
तीनों दृढ़े नानक कल काले नाम अधार॥

कि सतयुग में सत दिखाते, त्रेते में यज्ञ वगैरह, द्वापर में बाहरमुखी पूजा करवाते थे, फिर नाम बख़्शते थे। फिर ताल्लुक जोड़ना सिखाते थे। कलयुग में केवल नाम जपा कर दुनिया के ख़्याल निकलवा कर फिर नाम से ताल्लुक जोड़ते हैं। आसान से आसान तरीका है और कोई तरीका ही नहीं दुनिया में।

पाठी– कुरूता बीजु बीजे नही जंमै सभु लाहा मूलु गवाइदा॥
कलयुग महि कीरतनु परधाना। गुरुमुखि जपीऐ लाइ धिआना॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि यह कलयुग है। इसमें आला से आला कर्म कौनसा है?—कीर्तन। हम वाणीयों में बाजे बजाने को कीर्तन समझते हैं। पर वो कीर्तन कोई और है:

'कलि कीरति सबदु पछानु। एहा भगति चूकै अभिमानु॥'
'हरि कीरति उत्तमु नामु है विचि कलियुग करणी सारू॥'

उस नाम को प्रगट करना ही नाम का तीर्थ है। वो सबके अन्दर है। न वो हिन्दी है, न पंजाबी, न संस्कृति है, न तुर्की है, न अरबी है। वो अलग ही चीज़ है। सबके अन्दर है। इन लफ़्ज़ों में नहीं। यह बाहर के राग छोड़े तब मिल सकता है।

'राग नाद छोडे हरि सेवीऐ ता दरगह पाइऐ मानु' (849/6 म : 4)

यही गुरुदास जी ने लिखा है कि–

जउ पै नाद बाद सुनि मृग आन गिआने राचै।
प्रान सुख हुइ सब्द बेधी न कहावई॥

कि जैसे हिरण बाजे की आवाज़ सुन कर मस्त हो जाता है और फिर पकड़ा जाता है। इस तरह हम भी बाहरमुखी रागों से पकड़े जाते हैं। इस दुनिया से ताल्लुक

नहीं टूटता। सच्चे नाम को प्रगट नहीं कर सकते। सच्चे शब्द के भेद को नहीं पा सकते। यह सब कुछ छोड़कर ही मिलता है। वो कीर्तन सबके अन्दर हो रहा है।

सो दर तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले।
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे।
कते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे।

(347/14 मः 1)

कितने अन्दर गाने वाले हैं, कितने बजाने वाले हैं? एक मुसलमान फकीर ने लिखा हैः-

औलियां रा दर दरूं हम नगमहास्त।
आशंका रां अज़ां हियाते बेबहा अस्त॥
नशनुद आं नगमहा रा गोशे हिस्स।
कि अज़ सितमहा गोशे हिस्स बाशद नजुस॥ (मौलवी रूम)

कि अन्दर कुदरती राग हो रहे हैं उसको सुन। वो आशिकों की ज़िन्दगी है। वो प्रेमीयों की ज़िन्दगी है। वो एक नई ज़िन्दगी बख़्श देते हैं। वो अन्दर गा कर मिलती है। कैसे मिलती है?

'गुर गुरु जपीऐ लाइ धियाना।'

जब किसी फकीर से पूछ कर ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, सब ख़्याल निकाल दे। तब सुनता है।

'गुर गुरु जपीए लाइ धियाना।'

ऐसे नहीं कि मन कहीं फिर रहा हो ज़ुबान कहीं फिर रही है। गुरुनानक साहिब कहीं बाहर गए। वहाँ नवाब ने कहा कि तू हमारे साथ नमाज़ पढ़। चलो भई! तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ पढ़ने लग पड़े। गुरुनानक साहिब पीछे खड़े हो गए। बाद में जब नमाज़ पढ़ चुके तो उन्होंने पूछा कि आप ने तो नमाज़ पढ़ी ही नहीं। गुरु साहिब ने पूछा कि किस के साथ पढ़ता? कि हमारे साथ? तो उन्होंने कहा कि आप तो काबुल में घोड़े खरीद रहे थे। मौलवी के साथ पढ़ते। उसको बछेरे का फ़िक्र था कि कहीं खड्डे में न गिर जाए। बस! यहाँ से पढ़। एक बार ख़्याल टिक जाए फिर बस। इसको टिकाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे नहीं।

पाठी– कलजुग महि कीरतनु परधाना। गुरमुखि जपीअै लाइ धिआना॥

(1075/19मः5)

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं जिनको फ़िक्र है वो एक मिनट भी नहीं विसारते। गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि–

'एकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा।'

(601/3 मः 3)

पचास साल का वकवा पड़ गया। अब तो फ़िक्र ही नहीं किसी को, बोलो! गुरुनानक साहब को मोदी खाने लगा दिया तो तोलते, तोलते भूल गए। मिसालें कायम कर गए बोलो! जब तेरहवां पलड़ा आया तो भूल गए बस! फिर तेरा तेरा ही रह गया। यह है तड़प, यह है लग्न, यह है ध्यान हाँ, जीः

पाठी– आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पत सिउ जाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि जो यह कीर्तन सुनता है, वो जन्म मरण से परे हो जाता है। उसके सब बन्धन छूट जाते हैं। इसके अन्दर शान्ती आ जाती है। आप ही नहीं तर जाता बल्कि कुलों को तार देता है। जिस रास्ते से जाता है, रास्ते में ब्रह्मलोक, इन्द्रलोक, शिवलोक सब उसको मुबारकबाद देते हैं कि तू मुबारक है भई, जिसने यह काम किया। सब उसकी इज़्ज़त करते हैं। जैसे यहाँ कोई जीत हो जाए एम. एल. ए. की या चीफ मिनिस्टिर की, उसकी सब इज़्ज़त करते हैं, बधाइयां देते हैं, ऐसे ही उसको भी देते हैं।

पाठी– आप तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा॥
खंड पताल दीप सभि लोआ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ॥

मैनेजर साहिब जी– अब आगे इस राज़ को अच्छी तरह खोलते हैं कि जितने भी खण्ड, ब्रह्मांड हैं, जितना रचना का काम है उस सतपुरुष ने, उस सतगुरु ने, उस काल के हवाले किया है।

खंड पताल दीप सभि लोआ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ॥

उसने रचना चलाने के लिए जीवों को लेकर कैद किया हुआ है। तीन शरीरों में और क्या किया है? पाप पुण्य का जाल डाला है। कबीर साहिब लिखते हैंः

'ऐ जीअरा तू अमरलोक को, आये परे बस काल हो।'

कि तू काल के बस में पड़ा है और उसने क्या ठगी की है?

जोग जाप नेम व्रत पूजा बहुत प्रपंच पसारा हो।
जैसे बधिक ओट टाटी के, देहि बिसवासे चारा हो॥

कि जैसे एक शिकारी जाल तान कर नीचे दाने डाल देता है। जानवर आता तो पेट भरने के लिए है उल्टा फंस जाता है। इस तरह सब फंसाने वाले हैं। यह

काल की भक्ति है। नेम, व्रत, यज्ञ, योग से रिद्धियां-सिद्धियां आ जाएंगी पर छुटकारा नहीं। यह भी एक जाल है।

जोग जाप नेम व्रत पूजा बहुत प्रपंच पसारा हो।
जैसे बधिक ओट टाटी के, देहि बिसवासे चारा हो॥

यह तो समझता है कि मैं जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाऊंगा, उलटा फंस जाता है। जितने कर्म-धर्म हैं सब बन्धन हैं। उल्टा फंसता ही फंसता है, यह छुड़ाने वाली नहीं है। छुड़ाने वाली एक शब्द गुरु की भक्ति, सतगुरु की भक्ति है।

पाठी–खंड पताल दीप सभि लोआ॥ सभि कालै बसि आपि प्रभि कीआ।

मैनेजर साहिब जी– और उसने क्या किया है? देवी देवता बना दिए। सोच लो! जैसी-जैसी पूजा करेगा वहाँ जाता है। भूतों की पूजा करता है भूतों के पास जाता है। पित्तरों की करता है तो उनके पास जाता है। देवी-देवताओं की करता है तो उनके पास जाता है। छुटकारे वाली कौन सी है? बोलो!

पाठी– निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा॥

मैनेजर साहिब जी– वो निश्चल ताकत शब्दगुरु कहो, सतपुरुष कहो, सतगुरु कहो सबको ज़िन्दगी और ताकत देने वाला है। जो उसकी पूजा करता है वो उसके पास जाता है। जैसा-जैसा ख़्याल है, वैसे-वैसे ही जाता है। जिसकी पूजा करता है वहीं जाता है। जिस ने भूत बनना है बेशक भूतों की पूजा करे। जिसने पित्तर बनना है, पित्तरों की करे, जिसने देवी देवता बनना है उनकी करे, जिसने छुटकारा करना है तो सच्चे नाम की करे। इसके लिए गुरु गोविन्द सिंह जी ने लिखा हैः-

जागति जोत जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आने॥

वह जोत जो सबके अन्दर काम कर रही है। उसके सिवा किसी को भी न माने।

पूरण प्रेम प्रतीत सजै व्रत गोर मड़ी मठ भूलि न मानै॥
तीरथि दान दइआ तप संगम एक बिना नहि एक पछाणै॥

सब खण्डन कर दिए।

पूर्ण जोति जगै घट मैं तब खालसा ताहि नखालस जाणै॥

यहाँ जोत जगती है तब यह सनातनी बनता है, तब खालसा बनता है। फिर आर्य बनता है, फिर यह आगे जाने के काबिल बनता है। जो जैसी करे, सब दुकानें खुली हैं, इसके लिए।

पाठी– निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा।।

मैनेजर साहिब जी–गुरुनानक साहिब फरमाते हैं कि 'मुक्ता सैवे मुक्ते होय। बोलो! जो चीज़ खुद मुक्त है, आज़ाद है, जन्म मरण के बन्धन छुड़ाता है, वही हमारे जन्म मरण के बन्धन छुड़ा सकता है। यह भक्ति है छुड़ाने वाली।

पाठी– हरि का सेवकु सो हरि जेहा॥ भेदु न जाणहु माणस देहा॥
जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि जो उस निश्चल ताकत की पूजा करता है, सेवा करता है, वो मालिक का रूप जाता है। देखने में यह देह है। फरमाते हैं कि डॉक्टर है देखने में तो हमारे जैसा ही। लेकिन जो उसके अन्दर जो इल्म है वो डॉक्टरी का रूप बन गया। इस तरह वो भी मालिक का रूप बन जाते हैं। जैसे पानी में हवा भरी बुलबुला या लहर बन गई। फिर उसी में समा गई। इस तरह वो भी मालिक में समा जाते हैं। जब देह छूटी मालिक में समा गए। वो मालिक में मिल चुके हैं। इस देह से जब मर्ज़ी निकलें, जब मर्ज़ी चले जाएं। उसका रूप क्या है? 'शब्द'।

नानक आदि अंगद अमर सतगुरु सबदि समाइअउ।
धनु धंन गुरु रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ॥

(अर्जुन साहिब)

वो शब्द का रूप बन गए, नाम का रूप बन गए। वो 'शब्द' देह धार कर हमारे समझाने के लिए आया। फिर गुरु अंगद साहिब को तैयार किया। उसके अन्दर बैठ गया। क्यों बैठा? फिर तीसरी बाडी गुरु अमरदास में बैठ गए। फिर रामदास में बैठ गए क्यों? कौन समझाए? यह ऐसे ही सिलसिला चलता है। यहाँ देखा है, भीड़ है, कोई ग्राहक नहीं, फिर और शक्ल बदल लेता है। लेकिन उसके बिना छुटकारा नहीं। कभी ईसा का, कभी मुहम्मद का, कभी किसी का, कभी किसी का, कभी पलटू का, कभी दादू का, कभी शम्मस तबरेज़ का, कभी किसी का। उनका रूप क्या है? 'शब्द'। ईसा ने यहीं कहा है:–

"The Word was wade flesh & dwelt amongst us."

वह शब्द देह धार कर हमारे बीच में रहा। अगर वो न आए तो हमें समझाने वाला कोई नहीं।

पाठी– जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– जिसने डॉक्टरी की वो डाक्टर बन गया, सोच लो! कोई कर ले–हिन्दु हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो, ईसाई हो। जिसने कोर्स किया। इस तरह यह है।

पाठी– जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा॥
इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै॥ जा प्रभ भावै ता किरपा धारै॥

मैनेजर साहिब जी– गुरु अर्जुन साहिब मालिक के आगे बेनती करते हैं कि मालिक याचक भिखारी बन कर आया हूँ। क्या मांगते हैं? तेरी मेहर तो यह दात बख़्श। क्या मांगते हैं वो? हम क्या मांगते हैं। देखो! कबीर साहिब फरमाते हैंः

ऐसी दुनिया भई दिवानी, भगती भाव न बूझै जी॥
कोई आवे तो बेटा मांगे, यहीं गोसाई दीजै जी॥
कोई आवे दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी॥
कोई आवे तो दौलत मांगे, भेंट रूपईया लीजै जी॥
कोई करावे बिआह सगाई, सुनत गोसाई रीझै जी॥
सांच का कोई ग्राहक नाहीं, झूठे जगत पतीजै जी॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, अंधो को किआ कीजै जी॥

हम यह चीजे मांगते हैं वो क्या मांगते हैं?

पाठी– देहु दरसु जितु मनु त्रिपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि वो अपना दर्शन दे, जिससे मन को तृप्ती आ जाए? शान्ती आ जाए, धीरज आ जाए। वो कीर्तन सुना, वो मीठे से मीठा राग सुना। जिससे मन काबू आ जाए। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार सब सो गए। बाहर के कीर्तन से तो दो मिनट की तो शान्ती है, फिर शान्ती कहाँ गई? सोचो! अगर वो सुन ले तो कभी खत्म ही न हो। उससे तो सारा दिन नशा चढ़ा रहे। *''नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिनु रात''* फिर तो बस यह मांगते हैं। और हम क्या मांगते हैं। तभी तो मिलता नहीं। मालिक के घर किसी चीज़ की कमी नहीं। जो मांगो देने को तैयार है। मांगते और चीजे हैं।

पिता कृपाल आगिआ इह कीन्ही। बारिकु मुखी मांगै सो दीन्ही॥

हम मांगते और चीजे हैं। अगर उसको मांगे तो वो तो तैयार है। दोनो हाथों से लिए खड़ा है।

सतगुरु सब को देत है लेता नाहिं कोई।
लेता नाहिं कोई शीश को धरे उतारी।
वहीं सख्स को मिले जिन्होंने आशा मारी॥

दुनिया की आशा तृष्णा छोड़े, तन का प्यार छोड़े, तो वो दोनों हाथों से लिए खड़ा है। हम और चीजे मागते हैं। हाँ जीः

पाठी– देहु दरसु जितु मनु त्रिपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा॥

मैनेजर साहिब जी– और-और पाठों से रिद्धियां सिद्धियां तो प्राप्त हो जाएँगी, थोड़ी बहुत मन को शांती भी आ जाएगी, लेकिन जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटते। वह कोई और चीज़ है। यह इसी में खुश रहता है। बस!

पाठी– देहु दरसु जितु मनु त्रिपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा॥
रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै॥
हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै॥

मैनेजर साहिब जी– जिसने वो सरूप मांगा, जिससे शान्ती आ जाए, धीरज आ जाए। वो कीर्तन मांगा, जिससे मन काबू आ जाए, काम, क्रोध सो जाए। उनके अन्दर मालिक बस गया। वो मालिक का रूप बन गए। अब मालिक उनके बस में है। मालिक उनसे काम लेता है। वो मालिक के कारिंदे हैं। इस दुनिया में वो मालिक के एजेण्ट हैं, सोचो! उन से काम लेता है। उनके ज़रिये आगे जा सकता है। वो जो मर्ज़ी रास्ता अख्यार कर लें। वो देखते है कि रूहें कैसे निकलेंगी। वह इलाका ऐसा है, वैसा है। सोचो! इनके हालात ऐसे हैं। फिर वो उसी तरीके से उनको बताते हैं। उनको वो बस एक ही काम है क्या? कि रूहों को मालिक की दरगाह में पहुँचाना, जो भूले भटके हैं। न ज्ञानों का सवाल है, न पढ़े लिखों का, न अनपढ़ों का सवाल है, न किसी और चीज़ का सवाल। न हिन्दू का, न सिक्खों का, न मुसलमानों का, न ईसाई का, न बागड़ी का, सोच लो! यहाँ किसी का सवाल नहीं। वो तो रूहें, जो मालिक के लिए तड़प रही हैं, वो ऐसा रास्ता अख्यार कर लेते हैं वो उनके बस में है। जो मर्ज़ी जैसे कराएं, उनके हुक्म है। वो भी हुक्म नहीं तोड़ते मालिक का। यही पलटू साहिब कहते हैंः

राम समीपी सन्त हैं वो जो करे सो होए॥
वो जो करे सो होए हुक्म में उनके साहिब॥
सन्त कहे सोई करे राम न करते बाइब॥

सोचो! उनके हुक्म में है। वो भी हुक्म नहीं तोड़ते। सोच लो!

राम समीपी सन्त है वो जो करे सो होए॥
वो जो करे सो होए हुक्म में उनके साहिब॥
संत कहे सोई करें राम न करते बाइब॥

सोच लो! तेतीस करोड़ देवता भी उनके हुक्म में हैं।

राम के घर के बीच काम सब संत ही करते॥
देवता तेतीससौं करोड़ संत से सब ही डरते॥

(पलटू साहिब)

यहीं मुसलमान कहते हैं:

औलिया रा हस्त कुदरत अज़ अल्ला। तीर जुस्ता अरन्दश जे राह।

औलिया अल्ला को इतनी ताकत है कि दरगाह से चला हुआ तीर वापिस कर दें। फिर किसी ने सवाल किया कि क्या वो मालिक के शरीक हैं? कहते हैं कि नहीं।

औलिया इतफाले हक्क अंद अै पिसर। हाज़री व ग़ैबो अन्दर नज़र।

(मौलाना रूम)

कि वो मालिक के प्यारे बच्चे हैं। प्यारा बच्चा बाप से जो मर्ज़ी करवा ले। उनके अख्त्यार है। हाँ जी। उनके ज़रिये दुनिया में काम चलता है और कोई तरीका ही नहीं।

पाठी– कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा॥
जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी॥ तिथै हरि धिआईऐ सारिंगपाणी॥
जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छड़ाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि उन सन्तों से पूछकर नाम जपते हैं। यहाँ मुसीबत आती है। उनको याद करते हैं, सिमरण करते हैं, वहाँ कोई न कोई रूप धार कर खड़ा हो जाता है, उनके लिए। बल्कि सन्तों का रूप धार ही खड़ा हो जाता है। उनको बचाता है। धर्मराय के दरबार में जब नरकों में भेजना चाहता है, तो वहाँ भी आकर खड़ा हो जाता है। तभी उन्होंने ने कहा है कि–

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पाकिआ।
ओइ जीवंदे बिछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि।

(1102/3 मः1)

सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलँहि।
जिथै लेखा मंगीअै तिथै खड़े दिसंहि।

(729/3 मः1)

उनका हिसाब किताब सब खत्म करवाते हैं। मौत के समय उनको कोई तकलीफ नहीं होती। आम दुनिया को देखो, जीवों को! रोते हैं, चिल्लाते हैं, टट्टी, पेशाब निकल जाता है। सोच लो! टट्टी पेशाब निकल जाता है। चेहरा काला पड़

जाता है। जिस्म अकड़ जाता है। लेकिन जो नाम जपते हैं, सन्तों से पूछकर, उनका और दुनिया का रास्ता ही अलग है।

जिह पैडे लूटी पनिहारी सो मारगु सँतन दुरारी।

वह रास्ता ही अलग है। उनके लिए यमदूत नहीं आते। वो आराम से जाते हैं। अगर कोई कर्म काटना हो तो वो पहले ही कर्म कटवा लेते हैं, लेकिन मौके पर आराम से जाते हैं। उनका चेहरा काला नहीं पड़ता, पहले से वो अच्छा होगा। उनका जिस्म जल्दी नहीं अकड़ता। एक प्रेमी की मौत हुई। मास्टर जी बैठे हैं। मिर्जाणे वाले करनैल सिंह, इधर आ भई, सुनो! देखो ऐसे होता है।

'धन धन सतगुरु जी तेरा ही आसरा।'

प्रेमी– यह पिछले महीने की बात है जी हमारी बहन ने नाम लिया था। मेरे भतीजे की शादी थी। मेरी बहन कुछ बीमार थी। सारा परिवार शादी पर आ गए। वो अकेली घर में रह गई। बाद में उसी रात को चोला छोड़ गई। विवाह तीन दिन रहा। तीसरे दिन जाकर दरवाज़ा खोला तो पता चला कि उस रात का ही दूध ढका पड़ा, रात को बारिश आई, चूल्हे वगैरह उसी तरह ढके हुए थे। तीसरा दिन भी गुज़र गया। हमने कुर्सी पर बिठा कर फोटो खींची उसकी। बस, ऐसे ही बैठी और शरीर वैसे ही पड़ा था।

मैनेजर साहिब जी– यह है, सतगुरु संभाल करता है। वो कदम-कदम पर रक्षा करता है, बस।

पाठी– जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छड़ाइदा॥
वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ किउ मिलीअै प्रभ बेपरवाहा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि वो मालिक ऊँचे से ऊँचा है। बड़े से बड़ा है। अगम है। मन बुद्धि की पहुँच ही नहीं वहाँ तक। हम विचार ही नहीं कर सकते उसके मुतल्लक। हम सोच नहीं सकते। वो अथाह है। सोचो! उस तक हम कैसे पहुँच सकते हैं? कैसे मिल सकते हैं? कैसे भक्ति कर सकते हैं? इसका क्या इलाज है? हाँ जी।

पाठी– काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि जिसके जन्म मरण के बन्धन छुड़ाना चाहते हैं, उसको ही गुरुमुख मिलाता है। उसको ही परम सन्त मिलाता है। और कोई रास्ता ही नहीं। साधुओं के संग में आकर पापी पाप छोड़ जाते हैं, चोर चोरी छोड़ जाते हैं, डकैत, डकैती छोड़ जाते हैं। तभी उन्होंने लिखा है:-

कोटि अपराधी सँत संगि उधरै, जमु ताकै नेड़ि ना आवै।
जनम जनम का बिछुड़िआ होवै। तिनु हरि सिउ आणि मिलावै॥

एक कहानी आती है। सुलतान महमूद हुआ है। बड़ा ही असूल पसन्द था। रात को अकेला ही गश्त पर जाता था। एक दिन जा रहा था। भेष बदला हुआ था। पांच आदमी और जा रहे थे। राजा ने पूछा कौन हो भाई? उन्होंने उतर दिया कि हम चोर है। तुम कौन हो? राजा ने कहा कि मैं भी चोर हूँ। चलो फिर मिलकर चोरी करते हैं। अब छः आदमी हो गए। अब सरदार की ज़रूरत थी कि सरदार किसे बनाएं? अपनी-अपनी सिफत बताओ।

एक कहने लगा कि "मैं ऐसी कंमद लगाता हूँ, एक बार रस्सा फैंकता हूँ, जितने मर्ज़ी आदमी चढ़ जाए, रस्सा नहीं हिलेगा।

दूसरा कहने लगा कि– मैं ऐसी पाड़ लगाता हूँ कि ज़रा भी शोर नहीं होने देता हूँ। मिनटों में पाड़ लगा देता हूँ।

तीसरा कहने लगा कि–मैं सूंघ कर बता देता हूँ कि कीमती माल कहाँ है? सोना चांदी वगैरह।

चौथा कहने लगा कि मैं कुत्तों की बोली समझता हूँ कि क्या कहता है। मैं बता सकता हूँ।

पांचवां– कहने लगा कि जिस को एक बार देख लूं, चाहे कितना भी अंधेरा हो। मैं उसे पहचान लूंगा कि यह फलां आदमी है, फलां जगह देखा है। अब बादशाह सोचने लगा कि मैं क्या कहूँ। अब बादशाह कहने लगा कि मेरी दाढ़ी में यह सिफत है कि हज़ारों आदमी फांसी पर चढ़ रहे हों तो ज़रा सी हिला दूं तो सब फांसी से मुक्त हो जाएं। वो कहने लगे कि यह सिफत भी बड़ी अच्छी है। भई! चोरी तो हमने करनी है। इसको सरदार बना लो। सरदार बना लिया और चल पड़े चोरी करने। पास ही बादशाह का महल था। आज राजा के महल में चोरी करते हैं। राजा भी रज़ामंद हो गया। चले गए। रास्ते में कुत्ता भौंका। उन्होंने पूछा कि यह क्या कहता है। उसने कहा कि कुत्ता कहता है कि तुम्हारे में कोई बादशाह है। सब ने इस बात को हंस कर टाल दिया। अब कदम वाले ने कंमद लगाई। पाड़ लगाने वाले ने पाड़ लगाई, सूंघने वाले ने सूंघ कर बता दिया कि माल कहाँ है, सारा माल उठा लिया। अपना-अपना माल ले लिया। अब राजा ने भी पते तो उनके पहले ही पूछ लिए थे। सुबह होने पर हुक्म दिया कि जाओ उनको पकड़ कर लाओ पकड़कर ले आए। जो पांचवा था, कहता था कि अन्धेरे में भी देख लूं तो झट

पहचान लूं। और उसने झट पहचान लिया कि यह तो रात वाला साथी है। वही है जो तख़्त पर बैठा है। वो सोचने लगे कि अब तो कोई चारा नहीं इससे माफी मांगो। गले में पल्ला डालकर खड़े हो गए कि बादशाह सलामत तू हमें बख़्श दे। हम आइंदा चोरी नहीं करेंगे। हम जेलों में तुम्हारे गुलाम बनकर रहेंगे। आइंदा चोरी नहीं करेंगे। वो तो जानते थे कि चोरी करना गुनाह है पर छोड़ी तो नहीं। वो जानते थे कि जेलों में जाएंगे, फांसी पर लटकेंगे पर छोड़ी तो न। जब राजा सामने आ गया। अब कैसे करें, बोलों इस तरह जब सन्तों के संग में आता है तो इसको पता लग जाता है कि यहाँ कोई निराली चीज़ है। जो सब कुछ जानती है। फिर यह चोरियां बन्द करता है। नहीं तो नहीं करता। हमारे वहाँ एक प्रेमी था लुधियाने में। उसके पास एक सोना बेचने वाला आया। उसने कहा कि भाई धर्म कांटे पर तुला कर ले आ। वो तुला कर ले आया। जब उसने तोला तो सोना ज़्यादा था। मन बड़ी बला है। उसने सोचा कि मेरा तो कसूर नहीं है, धर्म कांटे का कसूर है। उसने धर्म कांटे के अनुसार पैसे दे दिए। अब दिल में तो पाप था ही। जब डेरे के दरवाज़े पर आया तो अन्दर से पाप खाए। जब मस्ताना जी बाहर आए। उसने आकर धन धन सतगुरु बुलाई। मस्ताना जी ने दूसरी तरफ मुंह कर लिया। वो दूसरी तरफ गया उस तरफ से धन धन सतगुरु बुलाई तो मस्ताना जी ने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया। फिर मस्ताना जी बाहर सैर को चले गए। वहाँ टिब्बे पर जाकर बैठ गए। वहाँ अक्सर बैठा करते थे। फिर उसको बुलाया। कहने लगे कि अब तूं चोरियां भी करने लग गया। सोचो! फिर तो वो घबराया सोचा कि बस, अब तो मेरी मिट्टी प्लीत कर देंगे। यह मस्तानी मौज़ ही ऐसी है। यह किसी का पर्दा नहीं रखते। कहने लगे कि फ़िक्र न कर तेरा पर्दा नहीं उठाते। आइंदा ऐसे काम नहीं करना, बोलो! भाई जोगा सिंह को पकड़ा उसने। कहाँ गुरु गोविन्द सिंह जी। इस तरह सब सन्तों के समय हआ है। परमसन्त सावन सिंह के समय में भी ऐसा हुआ है। और सन्तों के समय में भी ऐसा हुआ है। पूज्य मस्ताना जी के समय में भी और और सन्तों के समय में भी जिनसे मालिक काम लेता है उनको उसी रूप में आकर पकड़ता है। फिर हटता है ऐसे नहीं हटता यह।

पाठी– काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– परम सन्त सावन शाह के समय का एक ज़िक्र है। एक सरदार आया कोटे से। नाम लेने के लिए बैठ गया। अब जो साथ आए थे, इसकी जमानत दो भई। खाए पीएगा तो नहीं। अब साथ वालों ने देखा कि यह तो खाने पीने

का आदी है। इसने बन्द तो होना नहीं। अगर इसकी सिफारिश करूं तो भी बुरा, न करूं तो भी बुरा। वो नीचे मुंह करके खड़ा हो गया। सच्चे पातशाह जी ने उसकी तरफ देखा। वो समझ गए असली बात को। उन्होंने पूछा कि भाई खाने पीने का क्या है, कि जी पहले तो खाता था। अब नहीं खाता कि देख ले। कि नहीं जी। सच्चे पातशाह कहने लगे कि अच्छा देखेंगे, इतनी दूर से आया है। फिर बैठ गया नाम ले लिया। थोड़े दिनों बाद फिर खाने पीने लग गया उसी तरह। कोई भी प्रेमी उसके पास न जाए, वो खाट पर पड़ा था। एक प्रेमी जा रहा था। वो आवाज़ें दे रहा कि देख मेरा मुंह लाल पड़ा है। ऐसा मारा है सतगुरु ने। यह है अब कैसे खाए पीएगा। उसको अन्दर से तकलीफ देता है। अन्दर से पकड़ता है। कबीर साहिब ने कहा है कि–

गुरु से कपट साध से चोरी। या होवे अंधा या फिर कोढ़ी॥

जब सज़ा पाता है तब हटता है। ऐसे तो हटता ही नहीं।

पाठी–हुकमु बूझै सो सेवकु कहीअै। बुरा भला दुइ समसरि सहीअै॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि सन्तों का असली सेवक कौन है? जो हुक्म कहो, शब्द कहो, नाम कहो, उसको प्रकट करता है, वो सेवक है। ऐसे तो सारे सेवक हैं। पर असली वो है जिसने अन्दर नाम को प्रकट कर लिया। वो सेवक कब बनता है? जब सुख दुख आए, मालिक की मौज़ में रहे। नाम प्रकट करने का यत्न करे। जब प्रकट कर लेता है फिर तो दुख सुख से परे हो जाता है। फिर भला बुरा रहता नहीं उसके लिए। वो कैसे होता है?

पाठी– हउमै जाइ त एको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– जब यह अपनी हौमें छोड़े। इस हौमें ने सारी दुनिया मार दी। पहले हौमें छोड़े, दीनता से मालिक के आगे बेनती करे। फिर उसको गुरुमुख मिलता है। फिर हौमें छोड़कर दीनता से उनके हुक्मानुसार भजन करे। चाहे सेवा कराएं, चाहे भजन कराएं। वो जानते हैं कि कैसे सेवा लेनी है, कैसी सफाई करनी है। जिसने तन से पाप किया, उससे तन से लेते हैं। जिसने धन से किया, उससे धन से लेते हैं। जिसने मन से, उससे मन से पढ़े-पढ़ाने का, वाणीयों का। असली सेवा जो है वो सुरत की है। वो तब हो सकती जब वह तीनों साफ हों।

गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ। सेवा सुरत एक लिव लाइ॥

असली सुरत टिकने पर। कब टिकता है? जब तन का प्यार छोड़े, लोभ छोड़े, विषय विकार छोड़े। उनकी तरफ ख़्याल ही न जाए।

पाठी– हउमै जाइ त एको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– हमें धन की सेवा के सिवाय और कुछ सिखाया ही नहीं जाता। सोच लो! बाहर देख लो! बड़ा सेवादार है इसने सब कर दिया। या थोड़ी बहुत तन की कर ली। वो भी नहीं करता। तन को दुख नहीं दे सकता। पैसे की सेवा करना आसान हैं तन की मुश्किल है। फिर मन की और मुश्किल है। असली है सुरत की तभी गुरुनानक साहिब ने लिखा हैः

संतन की सरणाई पड़िआ॥ जीउ प्राण धनु आगै धरिआ।
सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइआ किरमाइणा॥

कि मैं तो गन्दगी का कीड़ा हूँ, जानता ही नहीं कि सुरत की सेवा क्या है?

निरगुण कउ संगि लेहु रलाए॥ करि किरपा मोहि टहलै लाए।
पंखा फेरउ पीसउ संत आगै चरण धोइ सुखु पाइणा॥

उनकी शरण में जाकर साध संगत की सेवा करो, पंखा फेरो।

बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइआ॥ तुमरी क्रिपा ते तुम सरणाइआ।

कि युगों-युगों से बिछुड़ा हूँ, धक्के खा रहा हूँ, मालिक की मेहर हुई तो आप के चरणों में आया हूँ।

सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नामु दानु देवाइणा।
भए क्रिपाल गुसाई मेरे॥ दरसनु पाइआ सतगुर पूरे।
सुखु सहजि सदा आनंदा नानक दास दसाइणा॥

(1078/13 मः 5)

फरमाते हैं कि हर वक्त यहीं मांगता हूँ कि तेरे चरणों में रहूँ। आपके साथ रहूँ। कितनी बार भागा मरदाना बोलो! यह जल्दी का काम नहीं। यह दिनों में कोर्स नहीं होता सोच लो! बारह-बारह साल पानी ढोया है। तब जाकर हासिल हुआ है। ज़िन्दगी में जिसने हासिल करना है उसे सख़्त मेहनत करनी पड़ती है। नहीं तो कई-कई जन्म लग जाते हैं। सोच लो।

बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइआ॥ तुमरी क्रिपा ते तुम सरणाइआ।
सदा सदा संतह संगि राखहु। एहु नाम दानु देवाइणा।
भए क्रिपाल गुसाई मेरे॥ दरसनु पाइआ सतगुरु पूरे॥

जब उनकी सोहब्बत में जाकर सेवा की तन साफ किया, विषय विकारों से दूर हो गया, लोभ छोड़ा तो अन्दर सतगुरु आ गया।

सूख सहजि सदा आनंदा नानक दास दसाइणा।

हमेशा का सुख मिल गया। हमेशा की ज़िन्दगी मिल गई फिर यह है हाँ, जी।

पाठी– हरि के भगत सदा सुखवासी॥ बाल सुमाइ अतीत उदासी॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि मालिक के भक्तों को दुख आता ही नहीं। पहले तो अगर कर्मों के हिसाब से आए भी उनकी 'विल पॉवर' आत्मिक शक्ति इतनी मज़बूत हो जाती है कि उनको दुख महसूस ही नहीं होता।

हरि के भगत सदा सुखवासी। बाल सुभाइ अतीत उदासी॥

अतीत किसे कहते हैं? 'माया' को। क्या? वो माया से रहित होते हैं। उनको कोई लालच नहीं होता। किसी से दुश्मनी नहीं होती, किसी से दोस्ती नहीं होती। सब झगड़ों से परे हैं। इनको तन का प्यार ही नहीं छोड़ता। यह तन का प्यार ही है जो इसे भजन नहीं करने देता।

देह प्यारी जीव को निस दिन सेवा माहिं।
दादू जीवन मरन लौ कबहू छाड़े नाहिं॥

सारी उमर इसी की सेवा की, सोच लो! कहते हैं न कि हाय दर्द है, सोचो! तन का प्यार ही नहीं इस को छोड़ता।

देह प्यारी जीव को जीव प्यारा देह।
दादू हर रस पाईए जो ऐसा होए सनेह॥

(दादू साहिब)

जैसे इसको तन का प्यार है, ऐसे ही प्यार मालिक को मिलने का हो, सोच लो! मालिक के लिए प्यार हो तभी मालिक को पा सकता है।

पाठी– हरि के भगत सदा सुखवासी॥ बाल सुभाइ अतीत उदासी॥

मैनेजर साहिब जी– 'बाल सुभाइ' क्या छोटा बच्चा है। उसको चाहे जैसे मर्ज़ी करो। लकड़ी देकर सोना ले लो उससे, सोच लो! इस तरह उनका स्वभाव है। वो दुनिया से बंधे नहीं। हाँ, जीः

पाठी– अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा॥
अगम अगोचरु कीमति नहीं पाई॥ ता मिलीअै जा लए मिलाई॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि वो मालिक की मौज़ में रहते हैं। जो मालिक करता है हमारे फायदे के लिए करता है।

केतिआ दूख भूख सदमार॥ ऐहि भि दाति तेरी दातार।

(जपुजी साहिब 5/13 पउड़ी 25)

अगर मालिक दुख में हमारा फायदा समझता है तो दुख देता है। अगर सुख में समझता है तो सुख देता है। वो हमारा ही फायदा करता है। वो उसकी रज़ा में रहता है। हाँ जीः

पाठी– अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा॥
अगम अगोचर कीमति नहीं पाई॥ ता मिलीअै जा लए मिलाई॥

मैनेजर साहिब जी– फिर फरमाते हैं कि वो मालिक 'अगम' क्या? मन बुद्धि की गमता से परे है। वहाँ बुद्धि पहुँचती ही नहीं। हम रोज़ पढ़ते है किः

'सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि।' (जपुजी साहिब)

यह अकले वहाँ काम नहीं करतीं। भाई बेला क्या जानता था? सोचो! क्या जपा उसने?

'वाह भाई बेला न वक्त पछाणे न बेला।'

यह तो प्रेम का सौदा है। हमारी बुद्धि का काम नहीं।

'भोले भाउ मिलै रघुराई'

यह तो भोले को मिलता है। अकलें छोड़े तब मिलता है। मनबुद्धि की गमता से परे हैं।

अगोचर– क्या? इन आंखों से देखा नहीं जाता। इन कानों से सुना नहीं जाता। यह हाथ वहाँ काम नहीं करते। यह पांव वहाँ काम नहीं करते।

बिन पग चले सुने बिन काना। कर बिन करम करे विधि नाना।
(तुलसी साहिब)

यही गुरुनानक साहिब कहते हैंः

अखी बाझहु वेखना विणु कंना सुनणा॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा॥
नानक हुक्मु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा॥

(139/2 मः2)

यह सारे ताल्लुक तोड़े तब है। तब वो मिल सकता है। कब मिल सकता हैः

'ता मिलीऐ जा लए मिलाई'

वो आप ही गुरुमुख मिलाता है। कोई भागों वाला हो उसको गुरुमुख मिलता है। जिसके अच्छे नसीब हो। बाकी नहीं।

पाठी– अगम अगोचरु कीमति नहीं पाई॥ ता मिलीऐ जा लए मिलाई॥
गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि कौमों की कौमे, मज़हबों के मज़हब, गुरुमुखों से खाली हैं। कोई बिरला है, जिनके अच्छे नसीब हैं उनको मिलता है। होते ज़रूर हैं दुनिया में, पर नसीबों से मिलते हैं। जिनके अच्छे नसीब हैं।

धुरि कर्म पाया तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागै।
कहै नानक तह सुखु होया तितु घरि अनहद बाजै॥

वो इस भक्ति में लगे। यहाँ कौमों मज़हबों का सवाल नहीं। भागों का सवाल है। मालिक की मेहर का सवाल है।

पाठी– गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा॥
तू आपे करता कारण करणा स्रिसटि उपाइ धरी सभ धरणा॥

मैनेजर साहिब जी– गुरु अंगद साहिब फरमाते हैं कि तूने सारा खेल किया, तूने सारी रचना की, तूने ही काल के हवाले किया है। तेरे सब अखत्यार है। मैं तेरी शरण में आया हूँ। तूं मेरी लाज रख ले। मेरे छुटकारे का भी बंदोवस्त कर। यह सब तेरे अख्त्यार में है। हाँ जीः

पाठी– तू आपे करता कारण करणा॥ स्रिसटि उपाइ धरी सभ धरणा॥
जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– फरमाते हैं कि सब कुछ तेरे अख्त्यार में है। मैं तेरी शरण में हूँ। तू मेरी लाज रख। यह दात उसने अपने हाथ में रखी है। जो रचना का काम है। वो काल के सपुर्द है।

दातै दाति रखी हथि अपणे। जिसु भावै तिसु देहि॥

देता किसको है? सच्चे प्रेमी को, जिसे सच्ची लगन है, जिसे सच्ची तड़प है, जो इसकी इच्छा करे, उसको देता है।

पाठी– जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा॥

मैनेजर साहिब जी– (एक प्रेमी नियम तोड़कर पश्चाताप के लिए माफी मांगने के लिए अर्ज़ करता है तो मैनेजर साहिब कहते हैं) अन्दर माफी मांग। हमारा तो कोई कसूर नहीं किया, अन्दर वाले का क्या किया? अपना तन ख़राब किया। वो अन्दर बैठा है, सोचो! अन्दर माफी मांग सच्चे दिल से, अगर दिल सच्चा है, और दो-दो चार-चार घण्टे भजन कर, तब ठीक कर। अब कपड़े गन्दे होते हैं और खुद ही धोते हैं। अन्दर तो पहले ही मैला है। यह सिमरण से ठीक होगा।

प्रभु कै सिमरनि मन की मलु जाइ। अंम्रितु नामु रिद मांहि समाइ॥

वो माफी देने वाला है। अगर भजन नहीं करते तो कोई माफी नहीं। फैसला है। माफी होगी, तो भजन से। चलो इतना तो करता रहा। सेवा किस लिए। सेवा करते करते तन की होश ही नहीं रहती। दुनिया के ख़्याल नहीं आते पाप नहीं आते। सारा दिन पर रात ही लगा रहा। सारा दिन भर रात ही लगा रहा। घर जाकर सोया तो आधी रात की नींद में उठकर दे मिस्त्री गारा, दे ईंट। इसकी मां ने फिर सुलाया। इसके अन्दर गारा, ईंट ही रह गए। और तो कुछ न और सब ख़्याल निकल गए। या तो सिमरण रहेगा, या सतगुरु का ख़्याल रहेगा, या फिर साध संगत का ख़्याल रहेगा, या फिर ईंट, गारे का रहेगा। और तो ख़्याल नहीं रहता। फिर यह सेवा है। हाँ जी! तू भी है। कहाँ से धूकियांवाली? से पता लगा तुझे अब। देखो भाई! चोर भी अपने शुरू हो गए। तकलीफ आती है कि नहीं। तकलीफ! अन्दर माफी मांग। अगर सिमरण नहीं करते तो कोई माफी नहीं। यह मस्ताना जी ने कहा कि कोई माफी नहीं। बस! फिर सच्चे दिल से अन्दर पुकारोगे तो है। फिर उसकी मौज़ है। नहीं तो कोई माफी नहीं। अन्दर माफी मांग। दो दो चार चार घण्टे भजन कर। सुन तो ले, चलता-फिरता, उठता-बैठता जैसे भी हो फिर ठीक होगा, ऐसे नहीं। सुनो भाई! नाम लेकर कोई करे तो सज़ा तो सबको मिलती है। कर्म का बदला ज़रूर मिलता है। कर्म तो सब को ही भुगतने पड़ते हैं। बदला ज़रूर देना पड़ता है। अगर ख़्याल भी बुरा आ जाए तो भी उस का बदला ज़रूर देना पड़ता है। चाहे कर्म करे भी न। सबको भुगतने पड़ते हैं। जिसको नाम मिला है सतगुरु इसी जन्म में भुगता देता है, कोशिश करता है। इसलिए उसको फौरन सज़ा देता है। किसी को देर से देता है, देता ज़रूर है। वो चाहता है कि साफ होकर दरगाह में चले जाए। पहले भी कर्मों का स्टोर बहुत पड़ा है। धृतराष्ट्र से पूछा गया कि तू अंधा क्यों हुआ है? उसने कहा कि मुझे एक सौ साल तक के जन्म की ख़बर है। मैंने कोई ऐसा पाप नहीं किया कि जिससे मैं अंधा हुआ हो। कृष्ण भगवान ने तव्वजों दी तो पता चला कि एक सौ छः जन्म पहले कोई कर्म किया था उसका फल भुगतना पड़ा। इतना स्टोर काल ने रख छोड़ा है ताकि कोई जीव निकल न जाए। कुछ कर्म भुगता देता है। कुछ जमा कर लेता है। जैसे रिर्जव फण्ड रखते हैं। जिसको सिंचित कर्म कहते हैं। उसका स्टोर आगे पड़ा है। इसको सतगुरु खत्म करे तो करे।

पाठी– दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का उठा उस के बिठाने के लिए॥

मैनेजर साहिब जी– फकीरों के पास हर तरह के लोग आते हैं। यह तुलसी साहिब का 'शब्द' है। उनके पास मुसलमान आए। उनको समझाते हैं कि दिल की कोठी को साफ कर। यह ख़्याल निकाल। कुत्ता भी पूंछ मारकर बैठता है। मालिक कहाँ बैठे? सोचो! अन्दर तो गन्द भरा पड़ा है। अन्दर तो काम है, क्रोध है, मोह है, लोभ है, अहंकार है। सोचो!

पाठी– जब तलक विषयों से यह मन विरक्त हो जाता नहीं।
तब तक साधक विचारा सच्चा सुख पता नहीं॥
चश्मे दिल से देख यहाँ जो जो तमाशे हो रहे। जो जो...
दिलस्तां क्या क्या हैं तेरे दिल सताने के लिए॥
दिल का हुजरा...

मैनेजर साहिब जी– जो कुछ दुनिया में हो रहा है सब तेरे सताने के लिए है। जितने मां बाप, बहन भाई जिनसे ताल्लुक है, सब ताल्लुक तोड़े तब है। यह बुरे, अच्छे कर्म सब इसके लिए बन्धन हैं सोच लो! लाइट है इस पर टाट डाल दो तो भी ढक जाएगी, रेशमी कपड़ा डाल दो तो भी ढक जाएगी। इस तरह अच्छे कर्म भी आत्मा को ढकते हैं और बुरे कर्म भी आत्मा को ढकते हैं। यह सब बन्धन हैं। इन सब से परे हो। सब ख़्याल निकाले तब देख सकता है। कैसे देखे? नाम देव को पूछा गया कि तेरा बेढ़ी कब आता है। तब उन्होंने कहा किः-

लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो।
सारे बन्धन तोड़े तब है।
बंधन माता पिता संसारि॥ बंधन सुत कंनिआ अर नारि॥
बंधन करम धरम हउ कीआ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ॥
बंधन बेदु बादु अहंकार॥ बंधनि बिनसै मोह विकार॥
(416/14 मः 1)

किसी को लोकलाज का, किसी को किसी का, सारे बन्धन तोड़े तब है, तब मालिक आए। कैसे आए?

पाठी– एक दिल लाखों तमन्ना उसपे और ज़्यादा हवस।

मैनेजर साहिब जी– रोज़ पढ़ते हैं हम। किस लिए?

कूड़ु राजा कूड़ु परजा, कूड़ु सभु संसारु॥
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसण हारु॥

सोचो मड़प, माड़ी सब कूड़ सोचो! उनके पुजारी। जिनके हम ठेके लिए बैठे हैं। सोचो!

कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु॥

सोना चांदी सब कूड़।

कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु॥

पूरो के पुर खत्म हो गए।

नानकु बखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु॥ (468/मः आसा दी वार)

मालिक के सिवा सब कूड़ है। सो कूड़ से ताल्लुक तोड़े तब है। हाँ जीः

पाठी– एक दिल लाखों तमन्ना उसपे और ज़्यादा हवस।
फिर ठकाना है कहां उसके बिठाने के लिए॥
दिल का हुजरा.....

मैनेजर साहिब जी– इधर से निकलता है कि तो मन्दिर-मस्जिदों, कौमों के झगड़े पड़ जाते हैं। इसके ठेके ले लेता है। आखिर यह सब बन्धन हैं, कूड़ हैं। इनसे निकलता है, जब आंखें बन्द कीं, तो कौन सी चीज़ साथ जाएगी? यह कौमें जाएंगी? देश जाएंगे? बहन-भाई, मां-बाप, यार-दोस्त जाएंगे?

जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ॥

(726/ मः 9)

तन भी साथ न गया, जिसकी सारी उमर सेवा की। क्या जाएगा साथ? कहते हैं कि ''एक दिल लाखों तमन्ना'' कितनी ख्वाहिशें अन्दर, फिर अगर पूरी होती हैं तो ''उसपे ज़्यादा और हवस'' फिर मालिक कहाँ आए? कहाँ बैठे मालिक?

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा

सत्संग

'हम कुक्कर तेरे दरबारि'

सत्संग के बचन

मैनेजर साहिब जी– परम सन्त पहले लिख गए, हाँ जीः

पाठी– भाई बाले की जन्म साखी में आया है कि गुरुनानक साहिब ने फरमाया कि कलयुग में सन्तों ने बहुत से अवतार धारण करके जीवों का उद्धार करना है। तो भाई आदिते ने अर्ज़ की पूरे सन्तों की क्या पहचान होगी?

मैनेजर साहिब जी– इन शरीयत वालों ने वाणीयां ही बदल डालीं। मुसलमान फकीरों ने भी बताया कि नई और पुरानी जन्म साखियों में बहुत फर्क है। हाँ, जीः

पाठी– ''तो भाई आदिते ने बेनती की कि महाराज जी पूरे सन्तों की क्या पहचान होगी? कौन सा शब्द बरतेगा? और गुरुमुख सिक्ख पूरे गुरु की कैसे पहचान करेगा? गुरु जी ने उत्तर दिया कि जब-जब सन्त जामा पहनकर प्रकट होंगे, तब-तब नकली शरीअत वाले मज़हबों के पाबन्द लोग सन्तों की निन्दा करेंगे और सन्तों का संग कोई विरला सिक्ख ही करेगा। जो कोई विरला सिक्ख आएगा उसकी नकली सिक्ख बहुत ही बेअदबी करेंगे।

मैनेजर साहिब जी– बस! फैसला। मैनेजर साहिब जी हंसकर कहने लगे कि फैसला है।

पाठी– अर्थात सन्तों का संग करने वालों को बुरा मानेंगे। उस समय सुरत शब्द के अभ्यास को भूल कर लोग बाहरमुखी बन जाएंगे, वाणीयां पढ़ेंगे, नमाज़ें करेंगे। और अनहद शब्द का रास्ता गुप्त ही जाएगा अर्थात और-और मंत्र जपने में लग जाएंगे, और अन्तरमुखी भक्ति से बांझ (वंचित) रहेंगे। जब अनहद शब्द का रास्ता बन्द हो जाएगा, तब मैं सन्तों का रूप धार कर प्रगट हूँगा और वहाँ पर अनहद शब्द बरतेगा और वहाँ पर मेरा ही स्वरूप जानना।

मैनेजर साहिब जी– बस भई! बस फैसला है। एक ग्रन्थ है। उसमें साफ ही लिखा है कि ऐसे खालसा बनेगा, मानता ही नहीं कोई। उसकी नकल तो आई थी हमारे

पास। ग्रन्थ भी मिल जाता पढ़ने को। पर उस समय पढ़ने के लिए वहाँ चेत सिंह था, वो कहने लगा कि उनको तो दे दूंगा पर और किसी को नहीं देना। लिखा था कि ऐसे 'खालसा' बनेगा। बस इन सबको अक्लों ने मार दिया। वो एक्सीडेंट हुआ, कैसे हुआ, बचत रह गई। कईयों के ऐसा हुआ है। गाड़िया चूर-चूर हो गईं, पर आदमी बच गए। (हँसकर मैनेजर साहिब जी ने कहा) शुक्र कर कि आने तो देता है, नहीं तो आने ही नहीं देता था। तौबा है, बस भई! क्यों? तू फिर ख़राबी करता होगा। कोई मंत्र मारता होगा। हाय! हाय! रुकावट तो काल डालता ही है। हाय! हाय! तौबा है। बस जब आज़ादी ली है, प्रेम के साथ समझाते थे। तुझे माहवारी दें, तहसीलदार बना दें, मिनिस्टर बना देते हैं। अगर न माने तो खानदान तक तबाह करने जाते हैं। यह काल का भी ऐसे ही है। यह आज़ादी लेनी कोई आसान है? हाय! हाय! तौबा है। इस लाईन में हो जाती है। नहीं नहीं एक को ही मरना है। बाकी प्रेमीयों में हो जाती है। एक बीबी ने चोला छोड़ना था। पहले तो किसी को बताया नहीं। फिर वो बता बैठी। उसका पति कहने लगा कि तेरे बच्चे अभी छोटे हैं। वो कहने लगी कि नहीं मुझे जाने दो, संगत इकट्ठी हो गई। दो आदमी और थे उनकी ख्वाहिश रह गई। सतगुरु ने ख्वाहिश पूरी करवा कर छुटकारा करवाया। इस लाइन में तो हो जाती है, बाकी में नहीं। कोई एक केस होगा आम नहीं। चिट्ठी लिखी थी मस्ताना जी ने प्रेमी को।

पाठी–''एक और नई बात है। जो हम भजन, मण्डली में शामिल करते हैं। हमारा मन गवर्नमेंट से यह सवाल है कि तू हमारे घर से निकल जा ताकि हम अपने सतगुरु, (परमेश्वर एक ही चीज़ है) का कारज करें। हमें तो नाम खज़ाना मिले और चौथे पद में राज करें। जिस तरह अंग्रेज़ गवर्नमेंट से कहते थे कि हमारे मुल्क से निकल जाओ, हम अपना राज खुद करेंगे। और जिस तरह आजकल संघ वाले अपने राज के लिए, सिख खालिस्तान के लिए लड़ते हैं और जेलों में जाते हैं। और जिस तरह अंग्रेज़ गवर्नमेंट, कांग्रेस को राज देना नहीं चाहती थी, इस मुल्क को लूटकर अपना ऐश आराम करना चाहती थी। इस तरह मन और माया, काम, क्रोध की गवर्नमेंट खुद अमृत पीती, खुद ऐशो आराम करती है, और आत्मा को जिसका हक है, उसको अमृत पीने नहीं देते।

मैनेजर साहिब जी–हाँ जीः

घर महि अंम्रितु तसकरु लेई॥ नंना कारु न कोइ करेई॥

(221/12 मः 1)

सबकी मिट्टी प्लीत कर दी इसने, अमृत रखा इसके लिए था पर पी वो रहे हैं।

पाठी– और जिस तरह कांग्रेस वाले जब अपना हकूक मांगते थे तो अंग्रेज़ गवर्नमेंट उन्हें जेलों में डाल देती थी, फांसियों पर चढ़ा देती थी। इस तरह वो आत्मा जो अपना हक मांगती है, तो काल गवर्नमेंट अन्दर से और बाहर से और। इस तरह कांग्रेस वाले जब जेलों में जाते थे तो अपना काम जेलों में भी याद रखते थे और कांग्रेस को राज मिला तो उनको भी सुख मिला और भगतसिंह जैसे फांसी पर चढ़े। वो अपना काम भूल गए। अपना नाम भूल गए। वो सत् को भुलाकर असत् में जा पड़े, जैसे भूरे को हटा कर काल ने अपनी जेल में डाला–

मैनेजर साहिब जी– बड़ा प्रेमी था। पहले यहीं ले गया था। यहाँ पर डेरा बना। यह राज लेना है दीनता से। अगर लड़ाई कर ले तो मिलता? हाथ जोड़-जोड़कर।

दासनि-दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई।

(600/13 मः 3)

हस्ती मिटावे, कोई कुछ कहे तो बर्दाश्त करे। काल तो कदम-कदम पर रुकावट डालता है। फकीरों को तो सूली पर चढ़ा दिया, गर्म तवीयों पर बिठा दिया, हम कौन है? गुरुनानक साहिब को कुराहिया बताया। दूसरी पार्टी वाले आ जाते हैं। कोई कुछ कहता है। वो कुछ कहता है। हाँ ठीक है, यह मन का हाल है। वो कहते हैं कि यह मन सबके अन्दर रम रहा है और अपनी वकालत का काम करता रहता है।

मैनेजर साहिब जी– 'जीउ एक अरु सगल सरीरा। इस मनु कउ रवि रहे कबीरा।'

(330/12)

यह रमी हुई ताकत सब के अन्दर है। हाँ जीः

पाठी– एक तरफ एक प्रेमी के मुंह से कुछ निकलवाता है और दूसरी तरफ दूसरे प्रेमी से हाँ करवाता है। वो सीधे रास्ते पर चलने नहीं देता। सन्तों के हुक्म की पूरी पालना नहीं करने देता। यदि कोई कहे कि स्वयं सतगुरु तारेगा या बाहर की पूजा करो, यही है भजन, पर किसी ने भजन नहीं किया? ऐसे ही बातें की भजन अभ्यासी से पकड़कर दूर फेंक देता है। सन्तों के वाक्य अनुसार भजन सिमरण किए बिना यह मन काबू में नहीं आता। सन्तों का हुक्म मान कर इस को बिठाना ही भजन है। कबीर के ग्रन्थ अनुराग सागर में एक संदर्भ दिया जाता है।

"कि इस तरह काल तरह तरह के रूप धार कर जीवों को सन्तों के हुक्म मानने में रुकावट डालता है। उनको भरमाता है और धोखा देता है। सिमरण नहीं

करने देता। कबीर साहिब धनी धर्मदास को समझाते हैं कि किस तरह काल ने कबीर साहिब पर श्रद्धा रखने वाले जीवों को भरमाने के लिए अंशे पैदा कर रखी हैं। जिनको यह समझाया गया कि वे कबीर के नाम पर पंथ चला दें। वह कबीर के नाम के सिवाय और कोई बात ही नहीं करें। उनके श्रद्धालु कबीर साहिब का नाम सुन कर उनके पास आने लगेंगे। और ऐसा जाल बिछा दें कि वो असली रास्ते से परे हो जाएंगे। कबीर साहिब का यह उपर वाला वचन पूज्य मस्ताना जी अक्सर प्रेमीयों को सुनाया करते थे कि वह सर्तक रहे। किसी धोखे में न आएं। निरंजन का अपनी चार अंशों को चलाने की कथाः

पाठी– धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा
तिन ते कहो सुनहु हो अंशा। तुम तो मोर निज वंशा॥

मैनेजर साहिब जी–हाँ, अपने ही खानदान के हो।

पाठी– तिन ते कहो सुनहु हो अंशा। तुम तो मोर निज वंशा॥
तुम से कहा मानि सो लीजै। आज्ञा मोर सो पालन कीजै॥
वैरी हमार अहै एक भाई। नाम कबीर जग माहिं कहाई॥

मैनेजर साहिब जी– काल के वैरी फकीर ही हैं। कैसे?

पाठी– भवसागर मेटन सो चाहै। और लोक में बसावत आहै॥
करि छल कपट जगत भरमावै। मोर राह ते सबहिं छुटावै॥

मैनेजर साहिब जी– कबीर को भी छल कपट बताता है कि यह छल-कपटी है। फिर कैसे नाचता है? अगर सब चले जाएं तो उस का देश उजड़ जाए। फिर कैसे करे? किस पर राज करे? यहाँ कोई दो साल ज़मीन पर कब्जा कर ले, वो छोड़ता नहीं यह तो युगों-युगों से आ रहा है।

पाठी– करि छल कपट जगत भरमावै। मोर राह ते सबहिं छुटावै॥
सत्य नाम कर टेर सुनाई। जीवन को सो लोक पठाई॥
जगत उजारण सो मन दीन्हा। ताते तुमहिं हम उत्पन्न कीन्हा॥
आज्ञा मान जगत में जाहुं। नाम कबीर पंथ प्रगटाहुं॥
जगत जीव विषया रस माते। मैं जो कहूं करहु सोई घाते॥
पंथ चार तुम जग निरमाओ। आपन आपन राह बताओ॥
नाम कबीर चारों धरि राखो। बिना कबीर न वचन मुख भाखो॥
नाम कबीर जब जिव आवैं। कहो वचन तिनके मन भावै॥
कलियुग जीव ज्ञान सुधा नाहीं। देखा देखी राह चलाहीं॥

मैनेजर साहिब जी– यह राह चला दी। यहाँ तो कबीर, कबीर लगी पड़ी है और कोई बात ही नहीं। हाँ जीः

पाठी– सुनत वचन तुम्हरो हरषावैं। बार बार तुमरे ढिग आवैं॥
जब सरधा तिनकी दृढ़ होई। भेद भाव न मनि हैं कोई॥
तिन पर जाल अपनो डारो। भेद न पावै देखि सम्हारो॥

मैनेजर साहिब जी– बस! इस तरह करता है वो काल। यहाँ पर भी कई हैं। ऊपर-ऊपर से मैनेजर-मैनेजर करते हैं, वहाँ जाकर कहेंगे कई फिरते हैं ऐसे। कई शिकायतें आई हैं। पैसे के लिए ऐसे करते हैं। यहाँ भी होती आई हैं। एक, दो की तो खास शिकायतें आई हैं। फकीर पर्दे डाल देते हैं। यही हाल होता है बाद में। सारी दुनिया बाहरमुखी हो जाती है।

पाठी– ''एक सूफी ख़्वाजा हसन बसरी ने एक बार सत्संग में फरमाया कि अफसोस मुसलमान ज़ेरे खाक हैं और मुसलमानी सिर्फ किताबों में रह गई।

मैनेजर साहिब जी–'ज़ेरे खाक' सब मिट्टी में मिल गए, हाँ जीः

पाठी– ''यह वचन एक किताब 'अवतारे हफताद-ए-औलिया' मसन्नफा आरफ कामिल हज़रत शाह मुराद सहरवर्दी जो साप्ताहिक हमीदत देहली एक्सप्रेस में छपी है से लिए गए हैं। इसके साथ मसन्नफ (सम्पादक) साहिब ने यह नोट लिखा है कि यह पहली सदी हिजरी की बात है जब स्वयं हज़रत राविया बसरी जैसे बज़ुर्ग मौजूद थे।''

मैनेजर साहिब जी– पहली सदी हिजरी में थे। जब मुहम्मद साहिब हुए हैं उस हिजरी में थे।

पाठी– और वो मुबारक ज़माना था। फिर इस चौदवीं सदी का अल्ला हाफ़िज़ था। आज मुसलमान ज़ेरे खाक भी हैं कि नहीं।

मैनेजर साहिब जी– बस! अब तो 15वीं सदी हो गई। उसी वक्त तालीम भी खत्म हो जाती है, फकीरों के बाद। फिर उनके बाद कई-कई गद्दीयां बन गईं। किसी ने कोई राज चला दिया, किसी ने कुछ, किसी ने कुछ। गुरुनानक के लड़के माने? अगर मानते तो गुरु अंगदसाहिब के चरणों में रहते। उनको मानते! क्यों उनके लातें मारते? अब सब ठेके लिए बैठे हैं। पृथ्वी चंद सारी उमर मुखालफत करता रहा। गुरु तेग बहादुर को दरबार साहिब में अन्दर मत्था टेकने नहीं जाने दिया। अब गुरु तेगबहादुर, गुरु तेगबहादुर लगी पड़ी है। पीछे ये हाल होता है, माया घेर लेती है सब को। मन माया से निकलना बहुत कठिन है। कई-कई जन्म लग जाते

हैं। तब जाकर होता है। यह जल्दी का काम नहीं। हाँ! देख लो! हंसकर मैनेजर साहिब जी ने फरमाया कि जबदस्ती अब तो मुक्तियां देते हैं।

पाठी– धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा
हम कूकर तेरे दरबारि॥ हम कूकर तेरे दरबारि॥
भउकहि आगै बदनु पसारि॥ रहाउ॥
संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी॥
दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी॥
हम कूकर.....

मैनेजर साहिब जी– कुत्ता बैठता है न दरवाज़े पर भौंकता है, किसी को अन्दर नहीं आने देता। उस समय ख़बर करता है। इस तरह सन्तों ने डयूटी लगाई है कि यह दरवाज़ा है, इसका कुत्ता बने। यह काम, क्रोध के ख़्यालों को अन्दर आने ही न दे। मालिक मैं चाहता हूँ कि तेरे चरणों में रहूँ, तेरी सेवा करूं हर वक्त। यह करूं वो करूं। भजन सिमरण करूं। यह डयूटी लगाई है। यह ख़्याल ही है जो अन्दर नहीं जाने देते।

पाठी– संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी॥
दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी॥
हम कूकर.....
पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई॥
तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई॥
हम कूकर.....

मैनेजर साहिब जी– फैसला ही कर दिया। पहले के फकीरों का चिताया हुआ हूँ, तेरा भक्त हूँ। तब यह अन्दर धुन ले सका हूँ? जल्दी का काम ही नहीं। धर्मराज आठ जन्मों में गया। यह छोड़ता ही नहीं। यह महकमा ही ऐसा ही है।

पाठी– पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई॥
तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई॥
हम कूकर.....
दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई॥
साधू होई सु भगति पछानै हरि लए खज़ानै पाई॥
हम कूकर.....

मैनेजर साहिब जी– यह कीमती बात है। सुनो!

पाठी– दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई॥
साधू होई सु भगति पछानै हरि लए खज़ानै पाई॥
हम कूकर.....

मैनेजर साहिब जी– दागे क्या? जिन को 'जीयादान' मिला। इनीशियेशन कह लो, बैत होना कह लो। जैसे यहाँ भर्ती करने आते हैं। उनके नाम की लिस्ट चली जाती है गवर्नमेंट के पास। फिर वो कोर्स करते हैं। फिर जाकर उनको नौकरियां मिलती हैं। उनकी गवर्नमेंट जिम्मेवार है। अफसर बदल भी जाते हैं, रिटायर भी हो जाते हैं, मर भी जाते हैं। इस तरह ही यह है। पुराने दागे हुए हैं।

जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती धरि आउ॥
अनंद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ॥

(678/2 म:5)

वो जिन पर दाग लगा दें:-

जो कोई सन्त शरण के दागी, तिन तै काल दूर होई भागी॥
यम की जाल निकटि नहिं आवे, मारगि छाड़ि अलग हो जावे॥

(तुलसी साहिब)

यह महकमा ही अलग है। काल तो रुकावटें डालता ही है। पर यह छोड़ता नहीं। काल के महकमे से उनका महकमा अलग ही है। यह महकमा ही ऐसा है फिर छोड़ता ही नहीं। जो पुराने दागे हुए हैं, जिनकी भक्ति पुरानी है, वो मन का मुकाबला करते हैं। जिन्होंने पुरानी साधना की है, वो जल्दी कामयाब होते हैं। जल्दी का काम नहीं। जिनकी पुरानी भक्ति है, वो जल्दी कामयाब होते हैं लेकिन जो नए हैं उनको देर लगती है। कोर्स तो करना पड़ता है।

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए॥

(749/2 म:5)

जिनको जियादान है, जो पुराने दागे हुए हुए, जिनकी पुरानी भक्ति है वो ही कामयाब होते हैं। जल्दी का काम नहीं। यह लगा रहे। तभी उन्होंने कहा है कि:-

जैसा वित वरते अपना बल नहीं हारे।

एक महात्मा ने लिखा है कि

'भजन करना करड़ा है काम'

तुलसी दास ने लिखा है कि:

भाव कुभाव अलख आलस हूं। नाम जपत मंगलु दस दिसहूँ॥

जैसे भी है बस, लगा रहे, रुकावटें भी पड़ती हैं। दीनता से गुज़ारे सबके साथ। अगर लड़ो तो कामयाबी ही नहीं। फिर झगड़ों में पड़ जाता है आगे से आगे। सब कुछ कर सकते थे। गुरु अर्जुन साहिब ने मिसाल बन कर दिखाया। मीयां मीर ने कहा दिल्ली और लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूं। देख लो! एक झूठा छिलका खाया था। उनमें ताकत नहीं थी क्यों? यह मार्ग ही ऐसा है हस्ती मिटाने वाला। अगर कुछ बना तो बस गया। हाँ, जी, दोस्त हो और दुश्मन सबसे प्यार से गुज़ार कर जाना चाहिए।

पाठी– हाफ़िज़ साहिब फरमाते हैं कि अगर आप दोनों जहानों में सुख चाहते हो तो दोस्तों पर अहसान करते जाओ और प्यार से मिलो।

मैनेजर साहिब जी–बस! खत्म सौदा।

गरीबी गदा हमारी॥ खंना सगल रेनु छारी॥
इसु आगै को न टिकै वेकारी। गुर पूरे इह गल सारी॥
(628/14 म:5)

पाठी– दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई॥
साधू होई सु भगति पछानै हरि लए खज़ानै पाई॥
हम कूकर.....

मैनेजर साहिब जी– यहाँ पर तो ज़िन्दा मरना पड़ता है। मुर्दा बनना पड़ता है मुर्दे को कैसे भी करो।

पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस॥
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि॥ (1102/11 म:5)

तब है देख लो! बस भई! हाँ जी।

पाठी– दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई॥
साधू होई सु भगति पछानै हरि लए खज़ानै पाई॥
हम कूकर.....

''शेख सादी साहिब अपनी बाबत फरमाते हैं कि मैं नम्रता को इस हद तक अपना चुका हूँ कि मेरे भाई मुझे चीटी की तरह अपने पावों के तले कुचल सकते हैं। मैंने भृण्ड (ततैया) जैसी आदत को छोड़ दिया है जो लोगों को डंक मार कर रूलाती है।''

मैनेजर साहिब जी– बस! हाय! हाय! तालीम ही खत्म है।

'दीन गरीबी बन्दगी, सभ से आदर भाव' (कबीर साहिब)

यही तुलसी ने कहा हैः

तुलसी जो तुझ को कांटे बोए वाको बोए तू फूल।
तुझ को फूल के फूल हैं वा को है तरसूल॥

यह है फकीरों की तालीम।

पाठी– हज़रत ईसा मसीह फरमाते हैं ''यदि कोई तुम्हारी दाई गाल पर थप्पड़ मारे तो तुम अपनी बाई गाल भी उसके आगे कर दो।'' एक बार हज़रत मसीह ने फरमाया कि ''जो कोई मेरी तरह ग़रीबी और नम्रता धारण करेगा वही मालिक की दरगाह में बड़ाई पाएगा। इस पर पीटर उठा और पूछा कि 'हज़रत! यदि मेरे भाई मुझे तंग करने से न हटें तो मैं उनको कितनी बार माफ करूं? फरमाया कि, 'सात बार। फिर और स्पष्ट करते हुए फरमाया कि ''मैं तुम्हें केवल एक बार ही सात बार नहीं कहता बल्कि सत्तर बार सात बार कहता हूँ अर्थात् माफ करते ही जाओ।''

मैनेजर साहिब जी– बस! माफ करते ही जाओ!

पाठी– कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि॥
गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु समारि॥ (970/3 कबीर)

मैनेजर साहिब जी–बड़े अर्थ किए ज्ञानियों ने।

''कोठरे महि कोठरी परम कोठी वीचारि।'' (970/3 कबीर)

कहते हैं कि इस तन में दिमाग है। दिमाग में विचार करो। इसमें कोठड़ी है, कोठड़ी में खास जगह। खास जगह में पड़ा है नाम। तब मिलता है।

रामु नामु रतन कोठड़ी गढ़ मंदरि एक लुकानी॥
सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी॥ (1178/4 मः4)

पर हर किसी को नहीं मिलता।

पाठी– शेख फरीद जी प्रश्न करते हुए फरमाते हैं कि, वह कौन सा इल्म है, वह कौन सा गुण है, वह कौन सा शिरोमणि हीरा है, जिसको हम प्राप्त करें? वह कौन सा वेश है जिससे मालिक (प्रीतम) वश में आ जाए?

फिर आप ही उतर देते हुए फरमाते हैं कि, 'वह इलम नम्रता, वह गुण क्षमा और शिरोमणि हीरा मिठास भरी जुबान का है। इन तीनों की पोशाक पहन, तो तेरा प्रीतम तेरे वश में आ जाएगा।''

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु।
कवणु सु वेसो हउ करी जितु बसि आवै कंतु।
निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु।।
ऐ त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु। (1384/14)

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी, वस आवे कन्त! बोलो! कोई वाणी को मानता है? उलटे चलते हैं सब! बताओ भाई! हाय! हाय! यह देख लो!

पाठी– सेंट जेम्ज़ जी फरमाते हैं कि ''मालिक अहंकारी मनुष्यों को स्वीकार नहीं करता, परन्तु दीन और गरीब मनुष्यों को अपनी दया, मेहर बख़्शाता है।''

मैनेजर साहिब जी–बस! हाँ जी, फिर संभाल भी करता है और परख भी करता है कि इतना दीन बनें। यह हमारी परखें हैं। दूसरे के लिए भी इतना दीन बनता है कि नहीं। यह परखें हैं कि इतना दीन बने। फिर संभाल भी करता है। हाँ, जीः

पाठी– ''मौलवी रूम साहिब फरमाते हैं कि, ''ज़ोर छोड़ दे और रोना धारण कर क्योंकि रहम रोने की ओर ही आया करता है। यदि तुम रोना धारण करोगे तो रहम को प्राप्त कर सकोगे। उसके रहम को सदा रोने के ज़रिये चाहते रहो।''

खुदा के पास कैसे जाया जाता है, इसके बारे में सेंट एगस्टन साहिब फरमाते हैं कि ''खुदा के रास्ते को तय करने के लिए पहली नम्रता, दूसरी नम्रता और तीसरी नम्रता की ज़रूरत है।''

पहली नम्रता– तो इसलिए ज़रूरी है कि नम्रता से मनुष्य किसी दूसरे की बात को सुन सकता है। वरना वह अपने घमंड में किसी के पास जाना ही पसन्द नहीं करता। यदि कोई मनुष्य अपने घमंड में रहे कि मैं सब कुछ जानता हूँ तो फिर किसी की वह सुनेगा ही क्या?

दूसरी नम्रता– विद्या की प्राप्ति के लिए ज़रूरी है। बिना इसके कोई किसी की बात सुनकर उसको ग्रहण नहीं कर सकता और उस पर अमल नहीं कर सकता।

तीसरी नम्रता– सफलता हो जाने पर फिर नम्रता की ज़रूरत है। जिस तरह फल लगने से वृक्ष की टहनियां झुक कर ज़मीन से लग जाती हैं। वरना ग़रूर और तक्कबरी हमारे हाथों से उस सफलता को छीन लेते हैं जिस पर खुश हो रहे होते हैं।

मैनेजर साहिब जी– रिद्धियां, सिद्धियां आ गई और झगड़ा पड़ गया। कठिन मार्ग है न? मैनेजर साहिब जी हंसकर फरमाते हैं।

पाठी– हाफ़िज़ फरमाते हैं कि जाहद अर्थात् कर्मी धर्मी लोगों के अन्दर कर्म धर्म का घमण्ड होने के कारण वे परमार्थ के रास्ते को सलामती से तय नहीं कर सकते। भक्तजन दीनता के कारण उसकी दया के पात्र बनकर अपनी मंजिल पर पहुँच गए।

महात्मा हाशम हातम साहिब फरमाते हैं कि, ''पण्डितों, मौलवियों और वैरागियों का अहंकार यदि धनवानों और राजाओं के अहंकार के बराबर तोला जाए तो पण्डितों, मौलवीयों और वैरागियों का अहंकार वजन में ज़्यादा रहेगा।''

मैनेजर साहिब जी– (हंसकर) फरमाते हैं कि फैसला है देख लो! हाँ जी, बोल भई!

पाठी– कोठरे महि कोठरी परम कोठी बीचारि॥
गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु वसतु समारि॥
हम कूकर... (970/3 कबीर)

मैनेजर साहिब जी– इसको संभाल कर रखना। इसका ग्राहक कोई नहीं। सब फैंसले दिए हैं। पर विचारता कोई नहीं। हाँ जीः

पाठी– कबीर दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतकि भागु॥
अँम्रित रसु जिनि पाइआ थिरु ता का सोहागु॥
हम कूकर... (970/4 कबीर)

मैनेजर साहिब जी– देख लो भई! ऐसे प्रेमीयों को विचारना पड़ता है, सबको। इब्राहीम बादशाह जहाज़ में जा रहा था। एक कोने में बैठ गया। एक शाहूकार भी बैठा था, साथ उसके मखोलिए उसको खुश करने के लिए। उन्होंने देखा कि अब कैसे खुश करें। वह इब्राहीम से मखौल करने लगे। उसको तंग कर दिया। मालिक ने आवाज़ दी इब्राहीम! जहाज़ डूबो दूं। वो कहने लगा कि जहाज़ क्यों डूबोता है? इनको अक्ल क्यों नहीं दे देता! यह है फकीरों की तालीम। बस, हाँ जी। गुरुनानक साहिब को कुराइया बताया। कबीर को जुलाहा उल्टा ज्ञान चलाता है। दादू रो-रोकर गया। पलटू को ज़िन्दा जलाया इन शरीअत वालों ने! जीवित को बोलो! हाँ, जी।

पाठी– धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा
बिसरि गई सभ ताति पराई॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई॥
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई॥ बिसरि गई....
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई॥ बिसरि गई...
(1299/13 मः5)

मैनेजर साहिब जी–उन्होंने क्या सुमति दी? कि तू अपना सतगुरु, सतगुरु कर। कोई कुछ करे तूने क्या लेना है? वो बैठा है तो नहीं कर सकता। हम ज़्यादा ठेकेदार बने हैं।

पाठी– जो प्रभु कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई॥ बिसरि गई.....

सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई॥ बिसरि गई.....

मैनेजर साहिब जी– जब सतगुरु, सतगुरु किया तो अन्दर सतगुरु आ गया। दोस्त दुश्मन कोई भी न रहा। सब तात पराई निकल गई। जब तक यह तात पराई नहीं निकलती तब तक कुछ नहीं। जब पूरी निकल गई और जब अन्दर देख लेता है तो न किसी से दुश्मनी रही न दोस्ती।

सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई॥

किसी के अन्दर नाचता है, किसी के अन्दर गाता है, किसी के अन्दर हंसता है, किसी के अन्दर रोता है, किसी के अन्दर बाजा बजाता है। किसी से दोस्ती तो किसी से दुश्मनी। करंट के बिना तो कुछ नहीं होता। यह करंट बन्द कर दो, सब बल्ब, टयूबें, कारखाने सब बन्द हो जाएंगे। वो करंट सबके अन्दर काम करता है। किसी ने कुछ काम लिया तो किसी ने कुछ।

पाठी– सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई॥ बिसरि गई.....

धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

गुरु ने मोहिं दीन्ही अजब जड़ी॥
सो जड़ी मोहिं प्यारी लगतु है, अमृत रसन भरी॥
कायानगर अजब इक बँगला, ता में गुप्त धरी॥
गुरु ने मोहिं.....

मैनेजर साहिब जी– हाँ! यह गुप्त चीज़ है। खास जगह पर है।

गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि। घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ॥

(1334/14)

वो चीज़ मिले तो है। बस फिर सत् ताकत आ जाती है।

माई मैं धनु पाइउ हरिनामु॥
मनु मेरो धावन ते छुटिउ करि बैठो विसरामु॥
माइआ ममता तन ते भागी उपजिउ निरमल गिआनु॥
लोभ, मोहा परस न साकै गही भगति भगवान॥

(1186/13 म:9)

कहते हैं कि नाम आया तो सब भाग गए। यह भी कहता है। हाय! हाय!

पाठी– कायानगर अजब इक बँगला, ता में गुप्त धरी॥
पाँचो नाग पचीसो नागिन, सँघत तुरत मरी॥

या कारे ने सब जग खायो, सतगुर देख डरी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ले परिवार तरी॥
गुरु ने मोहिं.....

मैनेजर साहिब जी–हाँ, जी

कहु नानक कोटन में कोऊ। जो भजनु राम को पावै॥

कोई विरला है। हाय! हाय! बिरले के हाथ में चढ़ी है। यह भजन है असली। अन्दर नाम के प्रगट करना।

जीअरे ओला नाम का॥
अवरू जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का॥ (211/1 म:5)

बस! बाकी हज़ारों यत्न कर लो कुछ नहीं मिलता। अच्छी जून मिल जाएगी देवी-देवता बन जाएगा, स्वर्गों तक पहुँच जाएगा, पर छुटकारा नहीं।

पाठी– 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

एको निश्चल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ॥
इसु धनु कउ तस्करू जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ॥
इहु हरि धनु जीअै सेती रवि रहिया जीअै नाले जाइ॥
पूरे गुरु ते पाइए मनमुख पल्लै न पाइ॥
धन वापारी नानका जिना नाम धनु खटिया आइ॥

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

सच्चे नाम व्यापारी आए हम, सच्चे नाम व्योपारी हो।
और वणज बहुतेरा कीनो, जा में टोटा भारी हो॥
सच्चे नाम.....
कोई कोई बेचे कांसी पीतल, कोई कोई लौंग सपारी हो।
हम को लाधो नाम धनी को विषय लाधे संसारी हो॥
सच्चे नाम.....

मैनेजर साहिब जी– यह तो बाहर के सौदे हैं। यह तो तन के हैं या मन खुश करने के लिए हैं। अगर भक्ति की, कर्म-धर्म वगैरह भी किए, वो तो रास्ते में ही लूट लेते हैं।

करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लुटै॥
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै॥
(747/15 म:5)

निर्वाण कीर्तन कहो, सच्चा नाम कहो, सबके अन्दर है, वो नाम का तीर्थ

है, इसको नहीं लूट सकते। बाकी सब को लूट लेते हैं किसी को नहीं छोड़ते। जब जाता है तकलीफ आती है। भूख लगी है, यहाँ अगर पुलिस पकड़ कर ले जाए तो कहता है कि भूख लगी है, वो पूछते हैं कि जेब में पैसे हैं? गर्मी लगती है पानी पीना है, पैसे हैं जेब में? चला नहीं जाता पूछते हैं कि पैसे हैं? थाने तक जाते-जाते खाली! वहाँ भी यही हाल है। भूख लगी है, फलां पुण्य किया दे दे, कभी फलां दे दें। बस! इसको कोई नहीं लूट सकता। जो अन्दर विद्या है उसको तो कोई नहीं लूट सकता। बस इस नाम को काल नहीं खोह सकता। इसको कोई पूछने वाला नहीं। यहाँ पर शहर में जाओ वहाँ चुगी वाले बैठे हैं, बॉर्डरों पर बैठे हैं। इसको कोई नहीं पूछता। अन्दर भी यही है। बाहर तो यह नकल है। हाँ जी, तभी कद्र है।

जीअरे ओल्हा नाम का॥
अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है यम का॥ (211/1 मः5)

यह असली पूजा है।

'हरि की पूजा दुर्लभ है संतहु कहणा कछू न जाई' (910/5 मः3)

ऐसे ही सारी दुनिया पूजा करती है मगर जो असली है, वह मुश्किल है।

'संतहु गुरमुखि पूरा पाई॥ नामो पूज कराई' (910/5 मः3)

वो नाम की पूजा है।

'बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई' (910/9 मः3)

हाय! हाय! सबसे ऊँची भक्ति है।

करे तपस्या नाम बिन यज्ञ योग और दान।
चरणदास यूं कहत है सब ही थोथे जान॥
कई बार तो यज्ञ करे योग करे चित लाये।
चरणदास कहे नाम बिन सभी अकालहि जाय॥

(महात्मा चरणदास)

हाँ जीः-

पाठी– पूंजी न खुट्टे नफा चौगुना, वणज किया अति भारी हो।
हाट जगाती रोक सके ना, निर्भय राह हमारी हो॥
सच्चे नाम.....
हाल हजूर साहिब के आगे, पट्टा चढ़ो दरबारी हो।
जब साहिब ने पंजा रोपा, जम पर अदल हमारी हो॥
सच्चे नाम.....

मैनेजर साहिब जी– यहाँ पर भर्ती करने आते हैं न, हरियाणे के अफसर भी आते हैं। कोई पटवारी भरती करता है, कोई तहसीलदार भर्ती करते हैं, कोई सिविल सर्विस के आते हैं। कोई कुछ तो कोई कुछ। जो अधिकारी होते हैं, उनका टैस्ट लेकर गवर्नमेंट को लिस्ट भेज दी जाती है। सैन्टर के भी आते हैं, उनकी लिस्ट वहाँ चली जाती है। सैन्टर के भी आते हैं। दोनों अलग-अलग महकमे हैं। हम सब यहाँ मस्त है।

'पट्टा चढ़ो दरबारी हो'

यह लिस्ट भी चली जाती है। जब जीयादान देते हैं। उसके भी फकीर आते हैं। वो जप, तप, कर्म, धर्म सिखाते हैं। जो दरगाह से आते हैं। वो सच्चे नाम के आते हैं। हाँ, बिना 'जीयादान' के आगे जा ही नहीं सकता। आत्मा इतनी कमज़ोर हो चुकी है, वो जब तक इसके अन्दर नाम का इंजैक्शन नहीं देते, कुछ नहीं बनता।

'गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ' (1249/9 मः3)

यही ईसा ने कहा है।

"That which is The born of the flesh is flesh, That which is the born of the spirit is spirit."

जैसे मांस से मांस पैदा होता है। आदमी से बच्चा पैदा होता है। इसी तरह जागी हुई रूह से रूह जागती है। हाँ, जी। इसके अन्दर ऐसा इंजैक्शन देते हैं। न तन में देते हैं, न मन में देते हैं, सीधा आत्मा में देते हैं। अगर जपे न तो भी जाता नहीं। फिर इसको सीधा कर लेता है, छोड़ते नहीं। आगे और खोलते है अब! हाय! हाय!

पाठी– हीरा लाल घट में ही निपजै, भर सुकरत को ठारी हो।
हम को लाधो नाम साहिब रो, धर्मदास व्यापारी हो॥
सच्चे नाम...

मैनेजर साहिब जी– हाँ, जी। हाय! हाय! ऐसा सौदा है। कहते हैं कि कहाँ है? कि घट में ऐसा सौदा रखा है। बस नाम ही नाम रखा है। बाकी सब दूर फैंक दिए। सबको छोड़े दिया। सब ख़्याल निकाल दिए। हाँ, जीः

पाठी– हीरा लाल घट में ही निपजै, भर सुकरत को ठारी हो।
हम को लाधो नाम साहिब रो, धर्मदास व्यापारी हो॥
सच्चे नाम...
लख चौरासी जिया जून से इनसे राह न्यारी हो।

मैनेजर साहिब जी– यह रास्ता ही अलग है। वो काल का है। देवी, देवता, स्वर्ग-नरक

उसके हैं। यह रास्ता ही अलग है। इनसे राह न्यारी हो, हाँ जी!

पाठी– लख चौरासी जिया जून से इनसे राह न्यारी हो।
साहिब कबीर सा मिलिआ गुरु पूरा कबहूं न होय हारी हो॥
सच्चे नाम.....

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

मैनेजर साहिब जी– धर्मदास आठ जन्मों में गया पर छोड़ा नहीं। गुरुनानक साहिब जी का एक जीव खोटे कर्म कर बैठा, सज़ा तो दिलाई, नरकों में भेजा पर फिर भी निकाल कर लाए। यह महकमा ही अलग है। एक लड़का पढ़ता था सरदारों का। था तो कमज़ोर पढ़ने में। आठ, दस तक लगा रहा कोर्स ही नहीं हुआ। जब हो गया तो लग गया। बस यही हाल है हमारा भी। हाँ जीः

पाठी– सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावै सासि सासि समाले।

मैनेजर साहिब जी– वो बोल भई! आप की बातें निकालते हैं।

पाठी– गुर सतगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरिनामु धिआवै॥
उदमु करे भलके परभाती। इसनानु करे अंम्रितसरि नावै॥
सासि गिरासि... (305/16 मः4)

मैनेजर साहिब जी– हाँ जीः

पाठी– उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रितसरि नावै॥

मैनेजर साहिब जी– रोज़ नहा सकते हैं? वो अमृत इसके अन्दर है।

काइआ अंदरि अंम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे।
(1046/4 मः 3)

अंतरु निरमलु अंम्रितसरि नाए। सदा सूचे साचि समाए॥
(363/16 मः 5)

यह तो गुरु रामदास ने बनाया। यह तो नमूने थे। गुरु अमरदास ने ज़िक्र किया है। गुरु अर्जुन साहिब ने ज़िक्र किया। वो प्रयाग इसके अन्दर है।

इड़ा, पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई।
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई॥
(974/6 बैणी)

यह नकल है। यह समझाने के लिए थे। दुनिया इसमें फंस गई। इसका यत्न करे, अन्दर जाए। अमृतसर में नहाए। अमृतसर वाले भी रोज़ नहीं नहा सकते।

पाठी– उपदेसि गुरु हरि हरि जप जापै, सभि किलविख पाप दोख लहि जावै॥

मैनेजर साहिब जी– जो इसको सिमरण मिलता है, उससे सब पाप कट जाते हैं।

सिमरत नामु किलबिख सभ काटे॥ धर्मराइ के कागर फाटै॥

(1348/13 मः5)

पाठी–फिरि चढ़ै दिवसु गुरुबाणी गावै।

मैनेजर साहिब जी– फैंसला ही कर दिया कि फिर दिन चढ़े गुरुवाणी गावे। जो मर्ज़ी करे, देख लो भाई! बस! यह जैसे हम रात को जगाते हैं यह तो प्रैक्टिस है कि ऐसे करो, ऐसे करो। रात को जागो। अगर सिमरण नहीं होता तो कोई पोथी पढ़ ले, जागने के लिए वाणी पढ़ ली, जिससे ख़्याल ठीक रहे। ख़्याल ठीक है तो भजन सिमरण बनेगा नहीं तो बनता ही नहीं। बिना सिमरण के कुछ नहीं बनता। सिमरण के आगे काल, यमदूत, कुछ नहीं आते।

प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै। प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै।

(262/14 मः5)

हाँ जीः

राम नाम गुरवचनी बोलो। संत सभा में एह रस टोलो।

पाठी– उपदेसि गुरु हरि हरि जप जापै, सभि किलविख पाप दोख लहि जावै॥

मैनेजर साहिब जी– फिर भी लगा रहे। हाय! हाय!

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु सँमालि।
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजनु नालि॥

(1376/1 मः5)

पाठी– फिरि चढ़ै दिवसु गुरुबाणी गावै। वहदिया उठदिआं हरि नामु ध्यावै॥
जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी। तिसु गुरुसिखु गुरु उपदेसु सुणाव॥
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिस गुरसिख की। जो आपि जपै अवरह नामु जपावै॥
सासि गिरास धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिख गुरु मनि भावै॥

मैनेजर साहिब जी– यह पुरानी रूह है देख लो! एक और आज आया छोटा सा बच्चा था। चलो-चलो सत्संग पर चलो सत्संग। वो कहने लगे कि यह गड़बड़ हुई पड़ी है। कहने लगा कि फ़िक्र न करो। आप ही सतगुरु ले जाएगा। छोटा सा बच्चा है। तीन बजे सबको उठाता है। सोता ही नहीं। तीन बजे के बाद देख लो! पुरानी भक्ति है।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

सत्संग

'हे हिरदे तोहिं आदि सुनाउँ '

सत्संग के वचन

पाठी– हे हिरदे तोहिं आदि सुनाउँ॥ जीव सुरति की संधि लखाऊं॥
चौथे महल पुरुष इक स्वामी॥ जीव अंस वहि अन्तरयामी॥

मैनेजर साहिब जी– फिर बोल!

पाठी– हे हिरदे तोहिं आदि सुनाउँ॥ जीव सुरति की संधि लखाऊं॥
चौथे महल पुरुष इक स्वामी॥ जीव अंस वहि अन्तरयामी॥

मैनेजर साहिब जी– हिरदे! तुलसी साहिब का शिष्य था। उसने पूछा कि जीव कैसे फंसा है? निकलने का राह क्या है? तो उन्होंने फरमाया कि ऐ हिरदे ये जीव सतपुरुष की अंश है। अकाल पुरुष की अंश है। वो चौथे लोक से आता है।

चौथे महल पुरुष इक स्वामी॥

वहाँ की अंश है। वहाँ से आया है– सचखण्ड कह लो! सतलोक कह लो, मकामे हक्क कह लो। यहाँ आकर फंसा है। पता ही नहीं कि हम कौन है? कहाँ से आए हैं? क्या कर रहे हैं? क्या करना था? कैसे फंसे हैं? अब वो बताते हैं कि जीव चौथे महल की अंश है।

कहि कबीर हमरा गोबिँदु॥ चउथे पद महि जन की जिंदु॥ (871/1 कबीर)

अकाल पुरुष कहो, सतपुरुष कहो, सतगुरु कहो, उसकी अंश है। वो सतगुरु चौथे लोक में रहता है, सहज अवस्था में। जब तक यह अपने घर नहीं पहुँचता, इसको शान्ती नहीं। कहते हैं न कि अपने घर में सुख है। इसका घर भी चौथा लोक है। सोच लो! इसका घर चौथा लोक है। वहाँ सतगुरु रहता है। सहज अवस्था में जिसके मुतल्ल्क रोज़ पढ़ते हैं:

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मैं पाइआ॥
सतिगुर त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ बाधाईया॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ॥

(317/2 अनँद साहिब)

वो खुशी का देश है। जिसके मुतल्लक रविदास ने कहा हैः-

बेगम पुरा सहर को नाउ॥ दूखु अंदोहु नहीं तिहि ठाउ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु॥ खउफु न खता न तरसु जवालु॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥

(आदिग्रन्थ पृ. 345/12)

वहाँ ख़ैर ही ख़ैर है, सुख ही सुख है। वो हमारा देश है। सोच लो! वहाँ पहुँचे तब सुख मिले, नहीं तो बस ऐसे धक्के खा रहे हैं। हाँ जीः

पाठी– हे हिरदे तोहिं आदि सुनाउँ॥ जीव सुरति की संधि लखाऊं॥
चौथे महल पुरुष इक स्वामी॥ जीव अंस वहि अन्तरयामी॥

(घट रामायण, तुलसी साहिब)

दोहा– करता ने काया रची, जुग जुग जुग विस्तार।
सार दियो बिसराय के, घर घर करत पुकार॥ (घट रामायण)

मैनेजर साहिब जी– चौथे लोक से आया है। काल को रचना का हुक्म दिया था। उसने ऐसा फंसाया है कि निकलने का राह ही नहीं छोड़ा। कर्मों का जाल डाल दिया। अब कभी कीड़ा बनता है, कभी पतंगा, कभी हाथी, कभी घोड़ा। कभी कुछ तो कभी कुछ। पांच तत्व के पुतले में कैद है।

पाठी– करता ने काया रची, जुग जुग जुग विस्तार।
सार दियो बिसराय के, घर घर करत पुकार॥ (घट रामायण)

मैनेजर साहिब जी– यही कबीर साहिब ने कहा है कि–

ए जीअरा तू अमरलोक को, आये परे बस काल हो।
मनहिं सरूपी निरंजना तुम्हें राखी भरमाई हो॥

यह मन काल का ऐजेन्ट है। तुम्हें भरमा रहा है। हाँ, जीः

पाठी–''कर्म काया का संग''
पिंड प्रधान बसे तन माही॥ करता ने काया उपजाई॥

मैनेजर साहिब जी– पिंड प्रधान क्या? बुद्धि लगा दी। बुद्धि कभी किधर को, तो कभी किधर। जैसा कर्म करता है वैसी ही बुद्धि बनती है। चक्र में पड़ा है बेचारा। जैसी सोहबत करता है वैसी ही बुद्धि बनती है। हाँ जीः

पाठी– पिंड प्रधान बसे तन माहि॥ करता ने काया उपजाई॥
वेद पुरान कर्म उपराजा॥ या से करे जीव जग काजा॥

मैनेजर साहिब जी– पाप पुण्य का जाल डाल दिया।

''पापु पुँनु बीज की पोट।'' (152/11 मः1)

पाप पुण्य दोनों बीज हैं, जिससे दुनिया चलती है। यही कबीर साहिब ने कहा है कि कर्मों के जाल में फंसा है।

''पापु पुँनु बीज की पोट।'' (152/11 मः1)

यही महात्मा चरणदास कहते हैंः

पाप पुण्य के सत्य ही ठहर रहा ब्राह्मण्ड।
इन दोनों के मिटत ही होत खण्डु खण्ड॥
विरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ।
सोई उतरे भवजल से, बहुते रहे आरुझ॥

पाप को तो सब ने बुरा कहा है किसी ने पुण्य को भी कहा है? कृष्ण भगवान ने कहा है यह भी हथकड़ियां हैं। एक सोने की समझ लो, एक लोहे की समझ लो, है तो हथकड़ी। रहा तो जेली का जेली। किसी को फर्स्ट क्लास जेल मिल गई, किसी को सैकिण्ड क्लास जेल मिल गई, किसी को थर्ड क्लास जेल मिल गई पर रहा तो जेली का जेली। सोच लो! बुरे कर्म किए नरकों में गया। कुछ अच्छे हुए कुछ बुरे हुए तो इस दुनिया में आ गया। अच्छे हुए तो स्वर्गों में चला गया। स्वर्गों के सुख भोगे, कर्मों के जाल खत्म, कर्मों का इवजाना खत्म तो फिर चौरासी। फिर इस तरह धक्के खा रहा है। कृष्ण भगवान ने लिखा कि उधो! यह जो कीड़ा जा रहा है, कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज यह कीड़ा है। सोच लो! इस तरह धक्के खा रहा है।

पाठी– वेद पुरान कर्म उपराजा॥ यासे करे जीव जग काजा॥

मैनेजर साहिब जी– यह उसने विधान चलाए हैं। विधान चलाने के लिए जैसे हमारा विधान है। ऐसे ही उसने भी चलाने के लिए बनाए। इससे ऊपर कोई चीज़ है। कृष्ण भगवान ने अर्जुन से कहा कि ''अगर तू मेरे पास आना चाहता है वेदों की हद से ऊपर आ।''

यह तीन गुणों से मिल बने हुए हैं। यह विधान है। यह कई ग्रन्थ हैं ऐसे हैं, मुसलमानों के भी, इसाईयों के भी हैं। यह विधान चलाने के लिए हैं। इसके ऊपर कोई चीज़ है।

पाठी– वेद पुरान कर्म उपराजा॥ यासे करे जीव जग काजा॥

मैनेजर साहिब जी– हम तो कहते है कि अच्छे कर्म किए जा। चलो भई! मैं बुरा करता ही नहीं। यह करता है, वो करता है बस! यह जितने भी यज्ञ, योग, तप,

सब उसके बनाए हुए हैं।

जोग जाप नेम व्रत पूजा, बहु प्रपंच पसारा हो।
जैसे बधिक ओट टाटी के, देहि विसवासे चारा हो॥

(कबीर साहिब)

बड़े-बड़े योग किए, पूर्ण योगी हुए मन ने मार दिए। अट्ठासी-अट्ठासी हज़ार साल तप, पौणहारी देखो! वृक्ष पर एक बार जीभ मारता था, पानी पी लेता था। उसको मन ने मार दिया। सोच लो! मछंदर इस देह से निकल जाता था। इतनी बड़ी ताकत थी। यह जीव तीन शरीरों में कैद है। पहले कारण शरीर है, उसके द्वारा हम कारण-मण्डलों में काम कर सकते हैं। उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है। उसके द्वारा हम सूक्ष्म मण्डलों में काम कर सकते हैं। यहाँ देवी-देवता, जिन्न, भूत वगैरह रहते हैं। उसके ऊपर यह स्थूल शरीर है, इस दुनिया में काम करने के लिए। इस तरह धक्के खा रहा है। इसके दायरे से न निकला। हाँ जी। स्वर्ग-स्वर्ग तो सब कहते हैं पर स्वर्गों का हाल पढ़कर तो देखो कि क्या है? हाय! हाय!

इँद्र पुरी महि सर पर मरणा॥ ब्रह्मपुरी निहचलु नहीं रहणा॥
सिवपुरी का होइगा काला॥ त्रैगुण माया बिनसि बिताला॥

(237/8 मः 5)

यह देश भी फनाह हो जाते हैं। जैसे यह प्रलय में फनाह हो जाता है। ऐसे वो भी फनाह हो जाते हैं। फिर नई रचना रचता है। वो इस तरह चक्र में रखा उसने। काल के दायरे से निकलना था। इधर एक शब्द गाते हैंः

इक दिन घोघड़ आसी रे, इक दिन काल आसी रे।
तीन लोक और चौदह भवन में, इस घोघड़ का राज॥

त्रिलोकी तक इसका राज है। सबको खा गया, किसी को नहीं छोड़ा। ब्रह्मा को खा गया, शिव को खा गया, विष्णु को खा गया। सबको खा गया। किसी को नहीं छोड़ा।

कबीर सोया क्या करे, सोये हुए अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा, सुनी काल की काज॥

मुसलमानों में कहते हैंः

''मूसा भागा मौत से आगे मौत खड़ी''

यह इतनी बड़ी-बड़ी हस्ती को खा गया। इसके दायरे से निकलना था। हाय! हाय!

पाठी– स्वर्गों का हाल वशिष्ट योग, वैराग प्रकरण प्रथम सर्ग में श्लोक 36 से 39 गीता अध्याय श्लोक 20-21 में स्वर्गों का वर्णन इस प्रकार किया गया हैः-''हर जीव अपने किए गए अच्छे कर्मों के अनुसार सुख व भोग भोगता है। यह भोग और सुख इस संसार के सुखों व भोगों से हज़ारों गुणा अधिक हैं। जिन लोगों ने बहुत उत्तम पुण्य किए हैं, उनको उत्तम सुख मिलते हैं। जिन्होंने मध्यम पुण्य किए हैं, उनको मध्यम सुख व भोग मिलते हैं। जिन्होंने कनिष्ठ पुण्य किए हैं वो कनिष्ठ सुख और भोग पाते हैं। वहाँ के भोगों की मियाद इस दुनिया के भोगों के अनुपात में अधिक है। लेकिन वहाँ भी काम, क्रोध व ईर्ष्या, द्वेष मौजूद है।''

मैनेजर साहिब जी– वहाँ भी काम, क्रोध व ईर्ष्या, द्वेष मौजूद है। देख लो भई! ईर्ष्या द्वैष वहाँ भी मौजूद है। जो ग्रन्थों में लिखा है उस पर विचारते नहीं। जो पढ़ते हैं वो भी नहीं विचारते। हाँ, जीः

पाठी–''जो लोग अपने से ऊँचे बैठे नज़र आते हैं वे उत्तम सुख भोगते हैं। उनको देखकर ईर्ष्या उत्पन्न होती है। उनकी श्रेष्ठता सहन नहीं होती। जो अपने समान हैं और अपने बराबर बैठे हैं, उनको देखकर क्रोध उत्पन्न होता है कि मेरे बराबर क्यों बैठा है और जो अपने से नीचे बैठे हैं, उनको देखकर अभिमान पैदा होता है कि मैं इतना श्रेष्ठ हूँ।''

मैनेजर साहिब जी– यही हमारा हाल है। वहाँ भी यही हाल है।

पाठी–''जब किए गए पुण्य के फल का भुगतान हो जाता है। तो एक क्षण भी वहाँ रहने नहीं देते और इसे मृत्यु लोक में गिरा देते हैं।''

मैनेजर साहिब जी– हाँ मृत्युलोक में गिरा देते हैं। हाँ जी। सोच लो! हाँ, बोल भई! इसी तरह चक्र खा रहा है– कभी स्वर्गों में, कभी नरकों में, कभी मृत मण्डल में, कभी दुखी हो गया, कभी सुखी हो गया, कभी कीड़ा बन गया, कभी पतंगा बन गया। कर्मों के जाल में फंसा पड़ा है। जैसे-जैसे कर्म करता है, भुगतता है।

पाठी– वेद पुरान कर्म उपराजा॥ यासे करे जीव जग काजा॥
करता करम किया बिस्तारा॥ लख चौरासी रूप संवारा॥

मैनेजर साहिब जी– चौरासी लख जीआ जून बना दी उसने कर्मों के हिसाब से। बस इस तरह धक्के खा रहा है। तीस लाख किस्म के वृक्ष हैं। सत्ताइस लाख किस्म के कीड़े पतंगे हैं। चौदह लाख किस्म के पंछी हैं। नौ लाख किस्म के पानी के जीव हैं। चार लाख किस्म के भूत-प्रेत, यक्ष, किन्नर, देवी-देवता, हैवान इन्सान। इनमें चक्कर खा रहा है। जैसे यहाँ डिग्रीयां है, महकमे हैं, ऐसे ही वहाँ हैं।

पाठी– करता करम किया बिस्तारा॥ लख चौरासी रूप संवारा॥

e&s&j lkfgc thu क्या? प्राइम मिनिस्टर या कोई और आफिसर है। जो कर रहा है उसके समझ में नहीं आता। इसका क्या समझ आए बिना वाकिफ के। अभी सुनाया था शब्द बाली ने। क्या? 'तूने रचना बनाई।' उसका क्या पता है? खेल भी उसी ने डाला है, सोचो! उसको क्या समझ सकता है? क्या खेल है? इन ग्रन्थों के अर्थों का ही पता नहीं चलता। डॉक्टरी की किताबें पड़ी हैं। हम कितने ही पढ़े-लिखे हैं, हम समझ नहीं सकते। डॉक्टर ही समझ सकता है। इस तरह ग्रन्थों के अर्थ भी वही समझ सकता है जो वहाँ पर पहुँचा है। भाई गुरुदास ने तो फैसला ही कर दियाः

वेद ग्रँथ गुरु हट है जितु लग भव जल पार उतारा।
सतिगुरु बाझ न बुझीअै जिचर धरे न गुर अवतारा॥ (भाई गुरुदास जी)

जब तक खुद न आए, अपने गुरुमुखों को न भेजे, पता ही नहीं चलता कि क्या है? क्या लिखा है? इसका मतलब क्या है? देख लो! वह ग्रन्थ नहीं समझा सकते, बाहर के इल्म क्या समझे कोई? बस! राम राम ही जपना है बस। कह देते हैं। हाँ जीः

पाठी– करता करम किया बिस्तारा॥ लख चौरासी रूप संवारा॥
काल अपर्बल जाल पसारा॥ उन सब घेरि जीव को मारा॥
कर्म कलंदर आप नचावे॥ बाजी लाय जीव भटकावे॥

मैनेजर साहिब जी– जिस तरह कलंदर बन्दर को नचाता है। इस तरह वो सब को नचा रहा है। यह कर ले, वो कर ले। मन उसका एजेण्ट है साथ। यह कर ले सुख हो जाएगा; वो कर ले सुख हो जाएगा। किसी को मिला? सोच लो! सुख तब मिलेगा जब अपने घर पहुँचेगा। अपने देश, अपने लोक, अपने सतगुरु के पास पहुँचेगा।

पाठी– करम कलंदर आप नचावे॥ बाजी लाय जीव भटकावे॥
कई बंधन से बांधे भाई॥ ऐसे बंध अनेक लगाई॥

मैनेजर साहिब जी– फिर कर्मों का जाल। फिर और बन्धन कर्मों के अनुसार यह मां है, यह बाप है, यह बेटा है, यह बेटी, यह देश है।

बंधन मात पिता संसारि॥ बंधन सुत कंनिआ अरु नारि॥
बंधन करम धरम हउ कीआ॥ बंधन पुतु कलतु मनि बीआ॥
बंधन बेदु बादु अहंकार॥ बंधनि बिनसै मोह विकार॥

(416/20 मः 1)

सोच लो! ज्ञानों के बन्धन। हाय! हाय! मैं सब कुछ जानता हूँ। अगर जानते हो, जिससे पूछो मैं सब कुछ जानता हूँ, अगर जानते हो तो मालिक की दरगाह में न पहुँच जाओ। अन्दर शान्ती न आ जाए। ऐसी ही जानता है। सोचो! जानना तो इसका नाम है जैसे मीरां ने कहा हैः

सांकड़ी गली में मेरा सतगुरु मिलिया किस विधि फिरूं अपूठी॥ (मीरांबाई)

राह खुदा भीहावला राई दसवें भाए।

हाथी मिउ न सकई हउमै रखे अड़ाए॥ (गुरुनानक साहिब)

कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ।

मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै जाइ॥ (कबीर साहिब)

कोई तसल्ली, कोई शांती? कि ऐसे ही जानता है?

पाठी– कोई बन्धन से बांधे भाई॥ ऐसे बंध अनेक लगाई॥
कोई दाँव नहिं मारग पावे॥ धरि धरि देही जन्म सिरावे॥

मैनेजर साहिब जी–हाँ, फिर बोल! सुनो भई कीमती बात है।

पाठी–कोई दाँव नहिं मारग पावे॥ धरि धरि देही जन्म सिरावे॥

मैनेजर साहिब जी– भक्ति करते हैं। कितनी भक्ति की, छुटकारा हुआ? अच्छे कर्म किए, छुटकारा हुआ? योग किए, सोच लो! तप किए सोच लो! मछंदर इस देह से निकल जाता था, मन ने मार दिया। फिर मन ने ख़्याल किया कि विषय भोगें, राजपाट करें। किसी राजे का देहान्त हुआ। अपनी रूह को जिस्म से निकाल कर उसके जिस्म में प्रवेश करके विषय भोगे, राजपाट किया। सोचो! इतनी बड़ी हस्ती को जो देह से निकल जाता था। देख लो!

पाठी– कोई दाँव नहिं मारग पावे॥ धरि धरि देही जन्म सिरावे॥

मैनेजर साहिब जी– जैसे-जैसे कर्म करता है, भुगतता है, उसके अनुसार प्रालब्ध बनती है।

अपना किया आप ही पावै, प्रालब्ध नाम कहावे॥

शेख सादी ने लिखा हैः

करदने खुद पेश में आयद, फलक राह तोहमद असत।

हर चे अन्दाजी मिआने आसिआं आयद बरूं।

कि कर्मों के जाल में जैसा करता है, भुगतता है। और यही नहीं, जो प्रालब्ध है, अब भुगतता है। साथ ही उसने संचित कर्मों का स्टोर रख छोड़ा है कि कोई निकल न जाए। जो लिखवा कर लाए हैं इस जन्म के लिए, अच्छे या बुरे के इस

जन्म में भुगतने हैं। अगर कोई अब कर्म करे जिसका कोई बन्धन न हो फिर तो उसका छुटकारा हो गया। बिना कर्मों के रख नहीं सकता। जैसे कारखाने वाले रिजर्व फण्ड रखते हैं। हम भी पैसे घर में रखते हैं, किसी मौके पर काम आ जाएंगे। इस तरह उसने भी स्टोर रख छोड़ा है। धृतराष्ट्र से पूछा गया कि अंधा क्यों हुआ? उसने कहा कि मुझे सौ जन्मों की ख़बर है कि मैंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया जिससे अंधा हूँ। सोचो! सौ जन्म का। जब कृष्ण भगवान ने तव्वजो दी तो एक सौ छः जन्म पहले का कोई कर्म था जिसका फल आज भुगत रहा है। सोच लो! कितने बड़े जाल में फंसा है। अजीब खेल डाला है उसने।

पाठी– कोई दाँव नाहि मारग पावे॥ धरि धरि देही जन्म सिरावे॥

मैनेजर साहिब जी– उस मालिक की अंश है। देखो! बंधनों का हिसाब है। सब उसी के जीव है। उसकी जोत सबके अन्दर काम कर रही है।

मानस की जात सभै एकै पहिचानबो॥

सोच लो! फिर यहाँ आकर मैं सिक्ख हूँ, यह ईसाई है, यह फलाना है। यह मर्द है यह औरत है। देख लो भाई! यह चूहड़ा है, यह चमार है। ऐसे ही फंसा पड़ा है। हाय! हाय! यह हमारा हाल है। यह उनका धर्म है। धर्म तो आत्मा का कल्याण करना है, छुटकारा करना है। यह धर्म है असली। हाँ बस! और कोई धर्म नहीं। हाँ जीः

पाठी– चौरासी से निकरि न पावे॥ बार बार वहि माहिं समावे॥

मैनेजर साहिब जी–हम पढ़ते हैंः

कई जनम भये कीट पंतगा॥ कई जनम गज मीन कुरंगा॥
कई जनम पंखी सरप होइओ॥ कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ॥
मिलु जगदीश मिलन की बरीआ॥ चिरंकाल इह देह संजरीया॥

(176/10 मः5)

यह मौका है छुटकारे का। जब कीड़े पंगते बने, हाथी, घोड़े बने, फिर कौन सी जात इसकी? सोच लो! ऐसे बन्धनों में फंसा पड़ा है मुफ्त के, सोच लो! जब कीड़े, पंतगे बने तो कौन सी जात हुई? हाँ जीः

पाठी– चौरासी से निकरि न पावे॥ बार बार वहि महिं समावे॥

मैनेजर साहिब जी– कोई फकीर हुआ। फकीर उसके भी आते हैं कोई योग सिखाता है, कोई कुछ सिखाता है और कोई कुछ सीखता है। कर्मों के जाल से निकल न जाए। फिर उन्होंने जो कुछ हासिल किया। यह ऐसे ही है, यह कुल गुरु है। देख

लो! कितने बन्धन हैं।

पाठी– बार बार वहि माहिं समावे॥

मैनेजर साहिब जी– सन्तों का उपदेश सबके लिए एक है। चाहे हिन्दू हैं, चाहे मुसलमान है, चाहे सिक्ख है, चाहे ईसाई है। कॉलेज खुलता है। उसमें सभी बच्चे जाते हैं। हिन्दुओं के भी जाते हैं, सिक्खों के भी जाते हैं, मुसलमानों के भी जाते हैं ईसाइयों के भी जाते हैं। मास्टर भी होते हैं। यह बाद में बने हैं पहले नहीं थे।

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा॥

सोच लो! पढ़ते भी हैः

गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा॥

(747/19 मः5)

हाँ, बोलः

पाठी– चौरासी से निकरि न पावे॥ बार बार वहि माहिं समावे॥

मैनेजर साहिब जी– जेली को सुख होता है कहीं, जेली को सुख है? हम तीन जेलों में है। पहले कारण शरीर है। उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है। उसके ऊपर स्थूल शरीर है। वहाँ तो एक जेल है। यहाँ तीन शरीरों में कैद हैं। साथ काम, क्रोध की हथकड़ियां लगी हैं। वो अपना अपना काम करवा रहे हैं। इन जेलों से निकालना था इस जन्म में आकर। और कोई जन्म नहीं। अगर अब वक्त निकल गया फिर चौरासी तैयार है इसके लिए। पर निकले कोई भागो वाला, हाँ, जी, जो सतगुरु की सेवा करे। उसको प्रगट करना सीखे।

सतिगुर सेविन से वडभागी।

हाय! हाय! कोई भागों वाला हो। हाँ, जीः

पाठी– चौरासी से निकरि न पावे॥ बार बार वहि माहिं समावे॥

मैनेजर साहिब जी– एक जेल से निकालते हैं दूसरी में डाल देते हैं। दूसरी से निकालते हैं तीसरी में डाल देते हैं। कभी कुत्ते की, कभी बिल्ले की, कभी हाथी की, घोड़े की, हैं तो हमारे जैसी रूहें। फकीरों को दुख आता है। जब सच्चा सौदा बना, वहाँ बाड़ थी, कच्ची सड़क थी। साथ नाला बह रहा था। नाले का पानी टूट गया और सड़क पर आ गया। उसमें गाड़ी फंस गई। गाड़ीवाला बैलों को डण्डे मारता है। वो हिल नहीं सकते। पूज्य मस्ताना जी ने बाड़ के ऊपर से देखा और कहने लगे कि देखो भई! जब इनको मनुष्य जन्म मिला था अगर कद्र करते तो क्यों डण्डे खाते? हमें कद्र नहीं कीमती चीज़ मिली है। कभी हमने भी डण्डे खाए होंगे। कभी

हम भी घोड़े, हाथी बने होगे। सोच लो! हाय! हाय! हाँ, यह वक्त है चौरासी से निकलने का।

पाठी– चौरासी से निकरि न पावे॥ बार बार वहि माहिं समावे॥

दोहा– करम सारनी बुधि बसी, सूरति रही अधीन।
आसा के बस में पड़ी, बासा विपति मलीन॥

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भई!

पाठी– करम सारनी बुधि बसी, सूरति रही आधीन।
आसा के बस में पड़ी, बासा विपति मलीन॥

मैनेजर साहिब जी– जब रूह अन्दर जाती है। जब यह अन्दर आ जाती है तो सबका निचोड़ निकालते हैं। कर्मों के अनुसार, उस निचोड़ के अनुसार, इसका ख़्याल उधर जाता है। फिर अगला जन्म मिलता है। इस तरह धक्के खा रहा है। पहले हमें तन का प्यार है। सारी उमर इसकी सेवा की। बुढ्ढा हो गया, खुल खुल करता है, कोई सेवा नहीं करता। फिर भी कहता है कि मरूं ना। यह ऐसा प्यारा है। देख लो भई! बुढढो को, देख लो! मरने का नाम लो बस लड़ने को तैयार रहते हैं। फिर चूंकि तन चाहता है, इसको तन मिलता है। कैसे मिलता है? ख़्यालों अनुसार। माया जोड़ी है, वहाँ ख़्याल है, फिर क्या करते हैं:

अंतिकालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/5 त्रिलोचन)

सांप की देह मिल गई, माया पर बिठा दिया, पेट भर ले भई! यही महात्मा चरणदास जी कहते हैं:

द्रव्य जोत मर जाए ता हो बैठे नाग।
नारी में चित रहे होय कुक्कर काग॥

अगर बच्चों में ख़्याल है।

अंतिकालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/10 त्रिलोचन)

सुअर की जोनि दे देते हैं:

तन छूटे सुत में रहे एक न तेरी आस।
जन्म जो सूकर को लहे मुइए नरक निवास॥

सब फकीरों ने नतीजे निकाल कर लिखा है। अगर मन्दिरों, मकानों में ख़्याल रहा है।

अंतिकालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै॥
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/11 त्रिलोचन)

अगर मन्दिरों, मकानों में ख़्याल रहा तो घर-घर बाबे की मढ़ियां हैं, खेतों में मढ़ियां हैं। इसी तरह बना है सोच लो! यह ख़्याल ही लिए फिर रहे हैं इसको। अगर इसका सतगुरु की तरफ ख़्याल होगा तो सतगुरु के पास जाएगा। यह ख़्याल ही लिए फिर रहे हैं, हाँ जीः

पाठी– कर्म सारनी बुधि बसी, सूरति रही आधीन।
आसा के बस में पड़ी, बासा विपति मलीन॥

मैनेजर साहिब जी– जैसे कर्मों का हिसाब होता है, उसका निचोड़ निकलता है। उसके अनुसार मन इच्छा उठाता है। बेचारी रूह फंसी पड़ी है इसके दायरे में।

पाठी– कर्म अपरबल भारी भोगूं ॥ सब जग जार जबर यह रोगू॥

मैनेजर साहिब जी–प्रबल जाल है यह। हाय! हाय! बड़ा ही जबरदस्त।

पाठी– कर्म अपरबल भारी भोगूं ॥ सब जग जार जबर यह रोगू॥
बिना करम कोई काया नाहिं ॥ जग बस रहा कर्म के माहिं॥

मैनेजर साहिब जी– जैसे कर्म किए हैं, उसके अनुसार प्रालब्ध लिखवा कर लाया है। बच्चों की पैदाइश देखो। इन्सान को देखो कोई काला है, कोई गोरा है। एक एक दाग कर्मों के अनुसार है। एक एक दाग। बच्चा पैदा होता है। किसी का हाथ नहीं होता, किसी की टांग नहीं होती, किसी की आंखें नहीं होती, अंधा होता है। यह सब कर्मों के हिसाब से है। देह भी इसी हिसाब से है।

''कर्मा सन्दड़ा खेत।'' 'कर्म भूमि'

कर्मों के जाल से निकलना था।

पाठी– बिना कर्म कोई काया नाहिं॥ जग बस रहा कर्म के माहि॥
काया बिना कर्म नाहिं होई॥ कर्म बिना काया नाहिं सोई॥

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! कर्मों के अनुसार काया बनती है। फिर काया के हिसाब के कर्म करता है। इस तरह धक्के खा रहा है। हाँ जी, सतगुरु निकाले तो निकाले, तौबा है।

''किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम''

हाय! हाय! हम पढ़ते भी हैंः

''चारि कुँट दह दिसे भ्रमे थकि आए प्रभ की साम''

हाँ जी, वो निकाले तो निकाले। त्रिलोकी तक यहीं हाल है। हाँ, जीः

पाठी– काया बिना कर्म नहिं होई ॥ कर्म बिना काया नहिं सोई ॥
यह अनादि से रचना भाई ॥ जुगन जुगन ऐसे चलि आई ॥
कर्म भूत सब जग को लागा।

मैनेजर साहिब जी– कर्मों का भूत सबको लगा हुआ है। हाय! हाय!

कर्म भूत सब जग को लागा॥

पाठी– या से बची नहीं कोई जागा॥

मैनेजर साहिब जी– चाहे स्वर्गों में हैं, नरकों में हैं, चाहे मृत मण्डल में हैं। कहीं भी हैं। सब कर्मों के जाल में हैं।

पाठी– कर्म भूत सब जाग को लागा॥

मैनेजर साहिब जी– अभी सुनाया था कि स्वर्गों का क्या हाल है। कितने दर्जे हैं, वहाँ। बस! इस तरह से है।

पाठी– कर्म भूत सब जग को लागा ॥ या से बची नहीं कोई जागा॥

मैनेजर साहिब जी– कोई नहीं बचता। कौन बचता है?

''सो नेह करमी जो सबदु बीचारे'' (128/15 म : 3)

शब्द की भक्ति है। सच्चा शब्द है, सच्ची वाणी है, सच्चा नाम है। वो त्रिलोकी से पार जा कर मिलता है। जो उससे ताल्लुक जोड़ता है, जो उसको प्रगट करता है, उसका छुटकारा है। बाकी किसी का छुटकारा नहीं। फिर देखता है कि सबके अन्दर है, फिर कर्मों से रहित होता है। हाँ, जीः

पाठी– कर्म भूत सब जग को लागा ॥ या से बची नहीं कोई जागा॥
कीट पंतग संग सब केरे ॥ तीन लोक अंडा सब घेरे॥

मैनेजर साहिब जी– फिर बोल! कीड़े पंतगे से लेकर। हाय! हाय! अंडा क्या? अंड, सूक्ष्म देश। सब कर्मों के जाल में हैं। यह स्थूल देश है आगे सूक्ष्म देश है। ब्रह्मांड है, कितने अंड हैं, कितने सूर्य हैं, कितने चांद है। अजीब खेल है। हाँ, जीः

पाठी– कीट पंतग संग सब केरे ॥ तीन लोक अंडा सब घेरे॥
सात द्वीप नव खंड कहावे ॥ चौदह लोक कर्म बस गावे॥

मैनेजर साहिब जी– ''सात द्वीप नौ खण्ड कहावे'' हाँ, जीः

पाठी– चौदह लोक कर्म बस गावे॥

मैनेजर साहिब जी– चौदह लोक कहो, चौदह तबक कहो। सबको खा गया, सब को फंसा रखा है।

पाठी– चन्द्र सूर अरु दस औतारा ॥ यह सब बंधे कर्म की धारा ॥

मैनेजर साहिब जी– बड़ी-बड़ी ताकतों को खा गया। दस औतारा, कहाँ राजा रामचन्द्र जी कहाँ बनवास। देख लो! बाली को मारा फिर उसी बाली ने उसको मारा। सब कर्मों के जाल में हैं। हाय! हाय!

पाठी– चन्द्र सूर अरु दस औतारा ॥ यह सब बंधे कर्म की धारा॥

मैनेजर साहिब जी– मच्छ, कछ, वराह सब एक ही ताकत आई, कभी कुछ। हाँ, जीः

पाठी– यह सब बन्धे कर्म की धारा॥

दोहाः अंउ खंड ब्राह्मंड लो, लोक सकल जग जाल।
काल कर्म सिर उपरे, जुग जुग फिरत बेहाल॥

काल के चरित्र– अब यह काल चरित्र लखाऊं ॥ अन्दर प्राण बसे जेहि ठाऊं॥
काया मद्धे काल सतावे। जब वह प्राण लेने को आवे॥

मैनेजर साहिब जी– जब मौत का वक्त आता है तो कोई न कोई बहाना बना देता है। इसको बुखार हो गया जी, कभी ऐक्सीडेंट हो गया। यह हो गया, वो हो गया, कोई न कोई बना देता है। हाँ, जीः

पाठी– सिमटत भास स्वासं उठि जावे ॥ प्राणपती जब सिमटि समावे॥

मैनेजर साहिब जी– जब मौत आती है तो हाथ, पांव से सिमट कर नाभि में आता है। सोच लो! फिर तन खत्म हो जाते हैं।

पाठी– सिमटत भास अकास तत में जाई ॥ तत अकास अंड के माहि॥

मैनेजर साहिब जी– पांच तत्व हैं। नीचे गुदा का है, यहाँ मिट्टी का ज़ोर है। आगे पानी का ज़ोर है। नाभि में अग्नि का ज़ोर है। यहाँ हृदय में हवा का, आगे आकाश। हाँ, जीः

पाठी– जब यह कर्म कला उपजावे ॥ बुद्धि सुरति को आन दबावे॥

मैनेजर साहिब जी– यहाँ आकर इसका निचोड़ निकलता है, बुद्धि का कर्मों अनुसार। बुद्धि अनुसार मन संकल्प उठाता है। फिर अगली योनि। हाँ जीः

पाठी– मैली बुद्धि सुरति के माहिं ॥ वहीं समय में जाय समाई ॥
कर्म अनुसार बसे मन आसा ॥ सुरति मन बुधि बंधन फांसा ॥

मैनेजर साहिब जी– कर्मों अनुसार अगली जोनि मिलती है। मन बुद्धि ने सबकी मिट्टी पलीत कर दी। सबके सब इनके मातहैत चल रहे हैं।

पाठी– सुनत आवाज़ स्याम सठ गांसा॥ घेर घुमरि लावे जहं स्वासा॥

मैनेजर साहिब जी– काल आवाज़ दे रहा है कि इधर आ जा। चाहे किसी रिश्तेदार

का रूप धार लेता है। कई शक्लें बना लेता है फिर, हाँ जीः

पाठी–'दोहा'

कर्म सारनी बुधि बसै, आसा बास निदान।
यह नव द्वारा पिंड में, निकसि जाय ज्यों प्रान॥

चौपाई– यह तो कर्म बुद्धि अनुसारा ॥ अब सुनियो यह काल पसारा॥
अष्ट कंवल दल अन्दर माहिं ॥ वहाँ छिपि बैठा काल कसाई॥

मैनेजर साहिब जी– यह खास जगह है। यहाँ बैठा है काल। बायीं तरफ काल का दफ्तर है, दायीं तरफ सतगुरु का है। हाँ आमतौर पर सब काल के जीव हैं, सब।

पाठी– जब सब भास सिमटि करि आवे ॥ जब सुरति पै बुद्धि पहुंचावे॥
कंवल द्वार पंखुड़ी को रोके ॥ उलटि सुरति काल मुख सोखे॥

मैनेजर साहिब जी– जब वहाँ जाता है तो वो दाढ़ में चबाता है। उस समय टट्टी पेशाब निकल जाता है। आंखों से पानी निकल जाता है। देखो! आम जीवों का यहीं हाल होता है। यह उस वक्त की बात है वो रस लेता है उसका हाँ, जी। फिर कहता है तूने यह कर्म किए हैं। उसके अनुसार अगली जून है। हाय! हाय! हाँ, जी।

पाठी– कंवल द्वार पंखड़ी को रोके॥

मैनेजर साहिब जी– फकीर कहते हैं कि जो अन्दर गए हैं। वो कहते हैं निकलो यहाँ से। बचो इस काल से।

'इस घोघड़ ने सन्तां पकरियो करिओ भजन से काठो'

वो हमें सिखाते हैं तुम भी ऐसे काठो करो। हम ने ऐसे किया है।

पाठी– कंवल द्वार पंखुड़ी को रोके ॥ उलटि सुरति काल मुख सोखे॥
काल दाढ़ में आनी चबानी ॥ जब ढरकै नैनन से पानी॥

मैनेजर साहिब जी– *"काल दाढ़ में आनी चबानी।"* हाय! हाय! हाँ!

पाठी– जब ढरके नैनन से पानी॥
लगे टकटकी दिखे न भाई॥ वाहि समय को करे सहाई॥

मैनेजर साहिब जी– उस समय घर के रिश्तेदार सब ऐसे दिखाई देते हैं जैसे कच्चे को ही खा जाऊं। पहले क्यों नहीं बताया कि ऐसी हालत होगी?

पाठी– काल दाढ़ में आन चबानी॥ जब ढरके नैनन से पानी॥
लगे टकटकी दिखे न भाई॥ वाहि समय को करे सहाई॥
जम के दूत घेर चहुं फेरा॥ निकसे प्राण छोड़ि करि डेरा॥

मैनेजर साहिब जी– सबका अख्त्यार, सब खत्म, बस। यमदूतों के हवाले हैं अब। हाय! हाय! यह रामपुरे का आया था न एक बिहारी कि ऐसे ही डराते हैं। वहाँ सत्संग हुआ था। उसको भी रात को ही पकड़ लिया। फिर कहे कि भई है काल! है काल! मैनेजर साहिब जी हंसकर कहने लगे, तौबा है। याद ही नहीं वो तो। हाँ, जीः

पाठी– जम के दूत घेर चहुं फेरा॥ निकसे प्राण छोड़ करि डेरा॥

''जहाँ आसा तहाँ वासा।''

कर्म सारनी बुद्धि कहाई। जहँ भई आस बास जेहिं माहि॥

दोहा– कर्म आस की बास में, जोनि जोनि समाय।
जो जैसी करनी करे, सो तैसे फल खाय॥

''नरकों के दुख''

जम का जुलम जोर दरसाऊं॥ मारग में जिव विपति बताऊं॥
लोह के खंभ तपत के माहि॥ जहां जीव को ले चिपटाई॥

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! फिर नरकों में जाते हैं। वहाँ लोहे के गर्म खंभ उनसे चिपटाते हैं। जो ज़्यादा विषय भोगते हैं।

बिसार हरि जीउ बिखै भोगहि तपत थम गल लाई॥ (आदि ग्रन्थ)

वाणी में आता है। सब फकीरों ने देखकर लिखा है, जो अन्दर गए हैं। वहाँ यह हाल होता है फिर। सब दुनिया मस्ती में है, किसी को ख़्याल ही नहीं कि यह वक्त भी आएगा।

पाठी– लोह के खंभ तपत के माहिं॥ जहां जीव को ले चिपटाई॥
तड़फ तड़फ जिव जुलम दुखारी॥ तपत खंभ दुख उपजे भारी॥
वहि समय की कहा सुनाई॥ लोहा अग्नि धमन धौकाई॥

मैनेजर साहिब जी– कैसे तपते हैं? जैसे लोहार तपाता है ऐसे तपाते हैं। वह पीछे हटता है फिर लगाते हैं।

पाठी– ज्यों धम्मन से घौंकि लुहारा॥ लोहा जो अग्नि में डारा॥
ऐसे कष्ट जले जीव भाई॥ वही समय की विपति बताई॥
पाया भोग सोग सोई जाना॥ छटपट करे जीव विलखाना॥

मैनेजर साहिब जी– जितनी लज़्ज़तें लेते हो उतने ही दुख उठाते हो। चाहे छोटी हो, चाहे बड़ी हो।

बहु सादहु दूखु परापति होवै॥ भोगहु रोग सु अँति विगोवै॥

(1034/15 मः1)

गुरु अंगद साहिब ने कहा हैः

एक निमख स्वादु कारिण कोट दिनस दुखु पाए।

'कोट दिवस' करोड़ दिन! पच्चीस, तीस हज़ार साल बन जाते हैं। देख लो! हाय! हाय! अब तो बस मस्ती है। सब विषय विकारों के जंगलों में भटकता फिरता है। वो तो कहते हैं कि निकलो यहाँ से।

बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महारसु पीओ॥

(802/18 मः 5)

चलो अन्दर। छोड़ो इन विषयों को सोच लो! जैसे कोई जंगल में फंस जाता है, डाकुओं के हाथ चढ़ जाता है। कभी किसी ने पकड़ लिया, कभी किसी ने, निकलने का राह न मिले। उनकी गुलामी का आदी बन जाता है। बस हमारा भी वही हाल हुआ है। हम भी गुलामी के आदी बने पड़े हैं। हाय! हाय!

पाठी– पाया भोग सोग सोइ जाना॥ छटपट करे जीव विलखाना॥
अब नरकन का सुनो सुभावा॥ कर्मी जीव सहें दुख दावा॥

दोहा– कुम्भी नरक निदान यह पड़े जीव जब जाय.....

मैनेजर साहिब जी– कुम्भी नरक उसमें डाल देते हैं। अती बदबूदार चीजें होती हैं। वहाँ की बदबू सही नहीं जाती। सिर बाहर निकालता है, यमदूत ऊपर खड़े हैं। जूतियां मारते हैं चल अन्दर। हाय! हाय! सुनो! याद ही नहीं किसी को।

पाठी– कुम्भी नरक निदान यह, पड़े जीव जब जाय॥
सिर समेत बूड़ा रहे, सदा नरक के माहिं॥
जबहिं नर्क सिर ऊपर काढ़े॥ जीव ऊपर जूती जम मारे॥
डूबा रहे नर्क के माहिं॥ सिर काढ़े यम मारे भाई॥
कुम्भी नरक कल्प लौ रहा वासा॥

मैनेजर साहिब जी– 'कुम्भी नरक कल्प लौ रहा वासा''

हाँ कल्प! हाय! हाय! कल्प बहत्तर चौकड़ी का युग है। इतनी देर वहाँ पड़ा रहता है।

पाठी– कुम्भी नरक कल्प लौ रहा वासा॥ मुख में नरक नाक में स्वासा॥
कई जुगन लौं रहे बिहाला॥ फिर अधीर नर्क ले डाला॥

मैनेजर साहिब जी– फिर घोर नरक हाय! हाय! वहाँ क्या होता है? हाँ जीः

पाठी– ह्याँको कठिन भोग दुखदायी॥ तन सड़ि मरै उपजि वहि माहिं॥

मैनेजर साहिब जी– तन देते हैं फिर साड़ते हैं। फिर देते हैं फिर साड़ते हैं। यह तन नहीं, वहाँ दो हैं।

पाठी– निकसि न होय कंधी निरबारा॥ गाढ़े बंध बंधे चौधारा॥
पापी जीव अधम है सोई॥

मैनेजर साहिब जी– *पापी जीव अधम है सोई।* जीव चोरियां, ठगियां करते हैं और सौ सियापे देख लो भई! उनका फिर यह हाल होता है।

पाठी– निकसि न होय कभी निरबारा॥ गाढ़े बंध बंधे चौधारा॥
पापी जीव अधम है सोई॥ करम भोग भुगते जो कोई॥
करनी कीन्ह मलीन बनाई॥ जिनकी दशा भोग दरसाई॥

मैनेजर साहिब जी– नास्तिक पुराण में कितने नरक लिखे हैं। यह तो थोड़ा सा दिया है। हाँ, जीः

पाठी–'सोरठा'

नरक अनेकन और हैं, कहँ लग करूँ बयान।
दुख भुगते यह जीव ज्यों, जाने जो भोग समान॥

'खान योनि के कष्ट'

ये भुगताय बहुरि सुनु भाई॥ जानि खानि जुल्म दुखदायी॥

मैनेजर साहिब जी– चार खाने हैं। अंडज, जेरज, सेतज, उत्पज। अंडों से पैदा होते हैं। जेर से, सेतज पसीने से, मौसम की तबदीली से देख लो भाई! अंडज, जेरज, सेतज, उत्पज घास फूस वगैरह, फिर इन में आता है। फिर कहीं जाकर आदमी की योनी मिलती है। फिर छुटकारे का हाल बताते हैं।

पाठी– सन्त छाप एक जीव ने नरक में पड़ कर सब नरकवासियों का उद्धार किया।

मैनेजर साहिब जी– जिन को कोई पूरा सन्त मिला है, चौथे लोक का, उस महकमे में आ गया, उसके पास यमदूत नहीं आते जल्दी। जैसे सेण्टर का मुलाज़म हो, सूबे में गुनाह करे, सज़ा तो पाएगा ही सोच लो! लेकिन हरियाणे वाले तो कुछ नहीं कर सकते। सतगुरु का महकमा ही अलग है। सतपुरुष का कहो, सतगुरु का कहो। काल का अलग है। त्रिलोकी तक उसका दायरा है। हाँ, जीः

पाठी– अब वह कथा कहूं बिस्तारी॥ हिरदे सुनिये ज्ञान विचारी॥

मैनेजर साहिब जी–अब जैसे यहाँ भर्ती करने आते हैं। हरियाणे के भी आते हैं। कोई पटवारी, कोई तहसीलदार, कोई सिविल सर्विस के काम के महकमे के लिए।

यह भी ऐसे ही है। वहाँ सतलोक के भी आते हैं। काल के भी आते हैं। वो अपनी भक्ति सिखाते हैं। जो सतलोक वाले हैं सतगुरु के हैं, वो अन्दर को, शब्द गुरु को प्रगट करना सिखाते हैं। वो असली भक्ति है। वो ऊँची भक्ति है।

पाठी– संत छाप जेहि जीव पै लागी॥ कोई जीव भूलि गया अनुरागी॥

मैनेजर साहिब जी– सन्तों का चिताया हुआ जीव था। खोटे कर्म कर दिये, खोटी सोहबत में गया। उसका हाल बताते हैं अब। हाँ! यह महकमा छोड़ता नहीं फिर।

पाठी– कुसंगति से भूल समानी॥ जाकी कहुं सुनो सहदानी॥
जो कदाचि नरक में जावे॥ सन्त जाय के जहां छुड़ावें॥

मैनेजर साहिब जी– अगर नरक में भी ले जाए तो वहाँ जाकर छुड़ाते हैं। निकालते भी हैं। हाँ जीः

पाठी– सन्त जाय के जहां छुड़ावें॥

मैनेजर साहिब जी– वैसे तो काल नज़दीक ही नहीं आता। अगर सिमरण थोड़ा भी हो तो भी काल नज़दीक नहीं आता। हम पढ़ते हैंः

प्रभ के सिमरणि दुखु जमु नसै। प्रभ कै सिमरणि कालु परहरै॥
(262/4 मः 5)

तुलसी साहिब फरमाते हैंः

जो कोई सन्त शरण के दागी॥ जिति ते काल दूर होइ भागी॥
जम की जाल निकटि नहीं आवे॥ मार्ग छोड़ अलग हो जावे॥

लेकिन बहुत ही ज़्यादा खोटे कर्म हों तब जाता है नरक में। फिर भी छोड़ते नहीं! हाँ, जी।

पाठी– दोहा– साह असामी पै करज, जाय लेइ जहँ होय।
ऐसे संत सुभाव को, परख लीजिये सोय॥

मैनेजर साहिब जी– कोई पैसा ले गया दूर चला गया। वहाँ जाकर लाते हैं उससे। बस सन्त भी ऐसे ही उन जीवों को फिर पकड़ते हैं। उनकी संभाल करते हैं। हाँ, जीः

पाठी– मोहर छाप के काज सिधावें॥ नरक माहिं वे जीव छुड़ावें॥
अंगूठा बोरि नरक के माहिं॥ वहि तत छिन में नरक सुखाई॥
जोनि छूटि नरक से आवे॥ फिर नर देही जोनि जुड़ावें॥

मैनेजर साहिब जी– वहाँ नरक में अंगूठा डूबो कर ठण्डा करके, फिर जीव को निकाल कर लाते हैं। सोचो! फिर उसको आदमी की योनि मिलती है। कोई विरला होगा

जिसको दूसरी योनि मिलती है। बल्कि बाकी जो जीव नरक के हैं, दर्शन कर लेते हैं उनको भी आदमी की योनि मिलती है। हाँ, जीः

पाठी– जोनि छूट नरक से आवे॥ फिर नर देही जोनि जुड़ावे॥

मैनेजर साहिब जी– पुरानी रूहें कितनी फिर रही हैं सिर्फ इसलिए देखो! अगर बच्चा नहीं पढ़ता मास्टर उसे पीटता भी है, कुछ और भी करता है। अगर नहीं सुधरता तो उसको जेलों में डालते हैं। इस तरह फिर यह भी गन्दी-गन्दी योनियों में भेजते हैं। कभी भूखे रखते हैं, कभी कुछ। पर आदमी की योनि से कम नहीं देते। हाँ, जीः

पाठी– एक जीव कारन उपकारी॥ सब छूटे भये जीव सुखारी॥

मैनेजर साहिब जी– राजस्थान का इलाका कैसा है भई! न बारिश, न कुछ, अब तो फिर कुछ है। देख लो भई! भूखे मरते थे। टिब्बे! वहाँ रूहें पड़ी हैं। जिन्होंने ऐसे गन्दे कर्म किए हैं उनको वहाँ भेजते हैं। चिताए हुए सन्त भी हुए हैं। वहीं पूज्य मस्ताना जी को हुक्म था कि बागड़ में जाओ। हाय! हाय!

पाठी– एक जीव कारन उपकारी॥ सब छूटे भये जीव सुखारी॥
अब नानक की साख सुनाऊं॥ सोदर पौड़ी में समझाऊं॥

मैनेजर साहिब जी– कि सौदर पौढ़ी पढ़कर देखो एक जीव के लिए गुरुनानक वहाँ गए। नरकों को ठण्डा करके जीवों को निकाल कर लाए।

पाठी– *'सन्तों की अनूठी दया'*

दोहा– धन धन राजा जनक है, जिन सिमरण किया विवेक।
एक घड़ी को सुमिरते, पापी तरे अनेक॥
ऐसा सुमिरण जानि के, संतन पकड़ी टेक।
नानक सुमिरन सार है, बिसरे घड़ी न एक॥

मैनेजर साहिब जी– राजा जनक जा रहा था। नरकों के पास से गुज़रा। हाय! हूँ! हो रही थी। पूछा कि क्यों? कि भई इनको निकालो! कि जी कोई इवज़ाना देना पड़ेगा। देखो भई! उन्होंने अढ़ाई मिनट का सिमरण दिया। तब उनको निकाला। वो तो विवेक था। गुरुनानक साहिब का बहुत ऊँचे दर्जे का था। 'सार शब्द' यह तो बहुत ऊँची चीज़ है।

पाठी– नानक सुमरिन सार है, बिसरे घड़ी न एक॥

मैनेजर साहिब जी– सार शब्द चौथे लोक में है। सच्ची वाणी, सच्चा शब्द, सार शब्द चौथे लोक में है। वहाँ पहुँचे हैं।

पाठी– नानक जाय अंगूठा बोरा॥

मैनेजर साहिब जी– गुरुनानक साहब का एक जीव था। खोटे कर्म किए। वहाँ से निकाल कर लाए। हाँ जी! हाय! हाय! हाँ जी। 'अंगूठा बोरा।'

पाठी– नानक जाय अंगूठा बोरा॥ नरक जीव के बंधन तोड़ा॥
ऐसे साख समझ कोई बूझे॥ तिमिर जाय आंखी से सूझे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि कोई विरला जान सकता है इस बात को। अभी इसने शब्द बोला था। ''प्रताप तुम्हारा देखकर यमदूत भज्ज जाएँ।'' हाँ, जीः

प्रेमी–''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

कभी तो, अब भी नहीं सच्चे पातशाह जी!

मैनेजर साहिब जी–ओह! बेईमान!

प्रेमी– अभी हमारे एक हादसा हुआ ऐसे ही। मेरे पिता जी काफी समय से बीमार चल रहे थे। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। जिस दिन डॉक्टर ने जवाब दे दिया था कि पांच सात मिनट का है। उस दिन उसी हालत में रहे। तो रात को बारह एक बजे के करीब 'धन धन सतगुरु' का नारा लगाया। कहने लगे कि पूज्य मस्ताना जी आए हैं। हमने पूछा की क्या कहते हैं। फिर एक मिनट चुप रहे फिर कहने लगे कि गुरु मैनेजर साहिब जी आए हैं। नहीं बिल्कुल उन्होंने ऐसे ही बोला। हमने पूछा कि क्या कह रहे हैं? कि पूज्य मस्ताना जी, पूज्य मैनेजर साहिब को कह रहे हैं कि इस को चार साल की उमर दो, कि इसने नाम नहीं जपा। इसको चार साल की उमर दो। कहकर बहोश हो गए।

मैनेजर साहिब जी– नाम नहीं लिया था इनको ही हटाता था।

प्रेमी– हाँ जी! हमसे कभी खुश नहीं हुए थे। हम डेरे में जो आते थे। सच्चे पातशाह ने वहाँ सत्संग भी किया। आपने प्रशाद भी दे दिया था। हमने भी कहा कि नाम ले लो। कहने लगे यह तो पढ़े-लिखे आदमी हैं। आप उनकी बातों में आ जाते हो। ऐसे ही कहा था। अब गलुकोज वगैरह लगा हुआ था। एक डॉक्टर के दो सौ पचास रुपये देने थे। बाकी मेरा दुनिया से हिसाब किताब बराबर हो चुका है। उसके दो सौ पचास देने थे। बाद में बोतलें लगवाई नहीं, कोई दवाई नहीं ली।

मैनेजर साहिब जी– देख लो भई! हाँ, जीः

प्रेमी–उसके दो अढ़ाई सौ रुपये देने थे। न बोतलें लगवाई न दवाई ली। फिर बारह एक बजे रात को फिर नारा लगाया। कहने लगे कि पूज्य मस्ताना जी और पूज्य मैनेजर साहिब भी आए हैं। हमने पूछा कि क्या कह रहे हैं कि पूज्य मस्ताना जी,

पूज्य मैनेजर साहिब को कह रहे हैं कि दस साल उमर दो इसको। इससे नाम जपाना है। पूज्य मैनेजर साहिब कहने लगे कि देखेंगे। मेरा हिसाब किताब होने में चार दिन लगेंगे। हमने पूछा कि वो कैसे? कि एक तरफ तो धर्मराय ने फाइल लगा रखी है। दूसरी तरफ पूज्य मैनेजर ने लगा रखी है हिसाब हो रहा है।

मैनेजर साहिब जी– वो सतगुरु आप ही करता है, बेईमान! हमें तो ऐसे बदनाम करते हैं।

प्रेमी– फिर बाद में बाकी सब पहले की तरह कि ऐसे बरसात होगी ऐसे होगा। यह तो सब मृतकाल का बताते हैं। पूज्य मस्ताना जी और पूज्य मैनेजर साहिब का तो इनको ख़्याल आ गया। आप जाते हो न इसलिए कोई खास बात नहीं। चौथे दिन बरसात भी हुई फिर कहने लगे कि मुझे प्रसाद बनाकर दो। सब कहने लगे कि अब अन्त समय है इनका ख़्याल है। वो भी दे दिया। बाद में फिर उन को इतना ज़बरदस्त बुखार हुआ कि जिसका कोई अन्दाज़ा नहीं। हमने पूछा कि कोई दवाई। कहने लगे न मेरा किसी से लेना देना नहीं है न किसी से दवाई लेनी है। रात को फिर बारह एक बजे नारा लगाया। हमने पूछा तो कहने लगे कि मैनेजर साहिब जी आए हैं। कहते हैं कि दस साल उमर तेरे को देते हैं। वो कहने लगे कि नहीं तीन साल कम कर दो। फिर तीन साल कम कर दिए।

मैनेजर साहिब जी– यह बुढ़ढा बैठा है भई!

प्रेमी– हाँ जी साथ आए हैं लालपुरे की संगत के साथ। फिर नाम लिया और अब हमें दो दिन पहले ही लेकर आए हैं। जो कभी आते ही नहीं थे। फिर और प्रेमीयों ने भी पूछा कि सच बताओ कि पूज्य मैनेजर जी साथ आते हैं। कहने लगे कि मैं सच कह रहा हूँ। पूज्य मैनेजर साहिब ही आते हैं और कोई नहीं।

मैनेजर साहिब जी– वो सतगुरु आप ही रूप धारता है। हमें तो पता भी नहीं। पूज्य मस्ताना जी के वचन हैं। लकड़वाली में उनके रिश्तेदारों की संभाल, उनके पशुओं की संभाल। क्यों खुशीराम! कि हाँ जी! खुशीराम लकड़वाली के वचन। रिश्तेदारों की संभाल, पशुओं की संभाल। हाय! हाय! नारे लगाए थे। रिश्तेदारों की भी संभाल, पशुओं की संभाल जिनका प्रेमी दूध पीते हैं। हाय! हाय!

खुशीराम–''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

शहनशाहों के शहनशाह पूज्य मस्ताना जी उनकी कृपा से। पूज्य मस्ताना जी अन्दर गुफा में थे और फरमाया कि खुशीराम जो आज हम सत्संग स्टेज पर करेंगे। वो अन्दर ही लिखवाते हैं। उन्होंने जो फरमाया नोट हो गया। आप स्टेज

पर आ कर बैठ गए। वो ही जो लिखवाया था पढ़वाया। आप एक लफ़्ज़ भी नहीं बोले। उसके बाद फरमाया कि अब जो सत्संग होगा तो खुशी राम, मैनेजर साहिब, देवी दयाल का माथा और दाढ़ी मुढवा कर ही स्टेज पर जाएंगे हम। कुछ समय बाद पूज्य मस्ताना जी सरसे चले गए और महीने वाला सत्संग रखा गया। अब वो जब सत्संग का समय हो गया तो पूज्य मस्ताना जी ने फरमाया कि देवी दयाल, मैनेजर, खुशी राम आ जाओ। आ गए। मैंने कहा कि जी मेरा माथा और दाढ़ी मुंढवा दो। देवी दयाल भी कहने लगा पूज्य मस्ताना जी कहने लगे कि मैनेजर क्या करेगा? अगर इसकी दाढ़ी और माथा मुंढवा दिया तो दुनिया में एक अजीब नमूना खड़ा हो जाएगा। इसलिए नाई को ले आ बारी-बारी अपना माथा और दाढ़ी मुंढवा ली।

मैनेजर साहिब जी– ओह! बेईमान यह तो गदराने की बात है। (मैनेजर साहिब जी हंसकर कहने लगे)।

खुशीराम– काल तेरे को बारा नहीं देंगे। वचन खाली नहीं जाएगा। तो पूज्य मस्ताना जी ने वो वचन फरमाया उसी हिसाब से अपनी दाढ़ी माथा मुंढवाया। घोन मौन होकर स्टेज पर बैठे आकर। ऐसे-ऐसे खेल करते थे जो बयान से बाहर हैं।

मैनेजर साहिब जी– तौबा है। नहीं तो लकड़वाली में जब वचन हुए थे। माफी हुई थी वो बात थी।

खुशीराम– लकड़वाली में जी। अच्छा! अच्छा।

मैनेजर साहिब जी– हाँ! वो ही कहता हूँ। हाय! हाय! सुनो भई! वो आप ही लाज रखने वाले हैं। हमें 1951 में ही कह दिया था कि हमने तो डेरा बनाकर तुम्हारे सपुर्द कर देना है। तुम जानो डेरा जानो। कर भी गए थे पर ऐसा ही होता आया है। उस वक्त कहा था कि तुम नाम देना ऐसे ही हम संभाल करेंगे। आप ही संभाल करने वाले हैं। हमारा तो बहाना है।

खुशीराम– आप ऊपर चौबारे पर भजन पर बैठे थे। चार बजे के करीब पूज्य मस्ताना जी आए। फरमाया कि खुशीराम जितनी भी संगत आई डेरे में, अन्दर की तरफ धन धन सतगुरु के नारे लगाते जाओ। पहले चक्कर में तुम्हारे कुत्ते, बिल्ले, पशु सब माफ। दूसरे चक्कर में आप की सब कुलें जो हो चुकी हैं वो भी माफ। इस तरह पूज्य मस्ताना जी ने सात चक्कर लगवाए। सातवां चक्कर पूज्य मस्ताना जी ने अपने लिए और फरमाया। तो इस तरह संगत बहुत खुश हुई और नाचने लगे। नाचते-नाचते एक आदमी की पगड़ी गिर गई सिर से। पूज्य मस्ताना जी कहने

लगे कि जटा पगड़ी संभाल बाहर काल खड़ा है। तीन वचन फरमाये पूज्य मस्ताना जी ने। उसने कोई ध्यान नहीं दिया। जब बाहर गया तो उनका वचन तो खाली जाता नहीं। वो और ही चक्कर में पड़ गया। तो संगत बहुत खुश हुई। रात को सत्संग हुआ।

सुबह चार बजे पूज्य मस्ताना जी के पास इस मृतलोक का बादशाह आकर बैठ गया। पूज्य मस्ताना को कहने लगा कि यह अपना खेल संभालो। पूज्य मस्ताना जी पूछने लगे कि क्या बात हुई? कहने लगा कि आप ने एक घण्टे में मेरे नरकों के कुंड के कुंड खाली कर दिए। मैं जीवों को भरमाता हूँ, भटकाता हूँ। बुरे कर्म करवा कर मैं अपने कुंड भरता हूँ। और आपने एक घण्टे में सात चक्कर लगवा कर मेरे कुंडों के कुंड खाली कर दिए! जो जीव सचखण्ड गए हैं उनको वापिस लाकर दो। पूज्य मस्ताना कहने लगे कि यह तो नहीं हो सकता। जो जीव गए है वो वापिस नहीं आ सकते। फिर कहने लगा कि मैं नहीं संभालता। आप ही संभालो। पूज्य मस्ताना जी कहने लगे कि जो हुआ सो हुआ। जब तक हम बॉडी में रहेंगे खास ख़्याल रखेंगे। कोई ऐसा वचन नहीं करेंगे जो तेरे कुंडों के कुंड खाली हों।

पाठी– अंधुला नीच जात प्रदेशी खिन्न आवे तिल जावे।
ताकी संगत नानक रहदा क्यों कर मूढ़ा आवै॥
कवणु सो अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु।
कवणु सु वेसो हउ करी जितु बसि आवै कंतु॥

(1384/14 फरीद)

जो कुछ होवै सब किछु हौवे तुझ ते।
तेरे सब असनाई साहिबा तेरी सब असनाई।
तेरा अंत न जाणा मेरे साहिबा, मैं अंधुले क्या चतुराई मेरे साहिबा।
मैं अंधुले क्या चतुराई॥
जो किछु हौवे.....

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

सत्संग

'झिनां झिनां चोला पहन सखीए'

सत्संग के बचन

मैनेजर साहिब जी– अब दुनिया को पता नहीं दो ताकतें काम कर रही है। एक काल और अकाल। खेल भी सतगुरु ने आप ही डाला है। जो रचना का काम है वो मालिक ने काल के सपुर्द किया है। अब चूंकि सतगुरु का हुक्म है। उसने चलानी है। चलाने के लिए उसने क्या किया है? आत्मा को लेकर तीन शरीरों में कैद किया है।

कारण मण्डल–पहले कारण मण्डल है, उससे हम कारण मण्डलों में काम कर सकते हैं। उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है।

सूक्ष्म मण्डल– इससे हम सूक्ष्म मण्डलों में काम कर सकते हैं। यहाँ देवी-देवता, भूत-प्रेत वगैरह रहते हैं। उसके ऊपर स्थूल शरीर है।

स्थूल शरीर– दुनिया में काम करने के लिए है। और क्या किया उसने? अपना ऐजेन्ट साथ छोड़ा है, 'मन'। इसका काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना। हमें तो अनेकों काम हैं। मगर इसको कोई काम नहीं ताकि कोई जीव निकल न जाए। अगर सारी दुनिया वापिस चली जाए तो खेल ही खत्म हो जाए। उसका काम ही यही है। और क्या किया चलाने के लिए? क्या किया? पाप-पुण्य का बीज डाला है।

''पापु पुँनु बीज की पोट'' (152/11 म:1)

यह बीज है जिससे दुनिया चलती है। और क्या किया? इन्द्रीयां लगा दीं, विषय लगा दिए। यहीं महात्मा चरणदास जी कहते हैं:

पाप पुण्य के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्मण्ड।
इन दोनों के मिटत ही होत खंडु खंडु॥
बिरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ।
सोई उतरें भवजाल से बहुते रहे अरूझ॥

सारी दुनिया पाप पुण्य में उलझी पड़ी है। पाप को तो सब ने बुरा कहा है, किसी ने पुण्य को भी कहा? सोच लो! किसी ने पुण्य को भी कहा है? वो भी आत्मा के लिए हथकड़ी है। कृष्ण भगवान ने लिखा है अच्छे कर्म और बुरे कर्म दोनों ही हथकड़ियां हैं। एक लोहे की समझ लो, एक सोने की समझ लो। किसी को फर्स्ट क्लास, जेल मिल गई। किसी को सेकेण्ड क्लास जेल मिल गई। किसी को थर्ड्ड क्लास जेल मिल गई। रहा तो जेली का जेली। सारे अच्छे कर्म किए, स्वर्गों में चला गया, देवता बन गया। वहाँ भी शांती नहीं। जैसे यहाँ बड़े आदमी एक दूसरे से सड़ते हैं वहाँ भी यही हाल है। किसी भी इतिहास में पढ़कर देख लो! वहाँ भी शांती नहीं। वहाँ भी दर्जे हैं। विशिष्ट योग पढ़कर देखो।

पाठी– ''हर जीव अपने किए गए अच्छे कर्मों के अनुसार सुख व भोग भोगता है। यह भोग और सुख इस संसार के सुखों व भोगों से हज़ारों गुणा अधिक हैं। जिन लोगों ने उत्तम पुण्य किए हैं उनको उत्तम सुख मिलते हैं। जिन्होंने मध्यम पुण्य किए हैं उनको मध्यम सुख व भोग मिलते हैं। जो कनिष्ठ पुण्य वाले हैं, वह कनिष्ठ सुख और भोग पाते हैं। वहाँ के भोगों की मियाद इस दुनिया के भोगों के अनुपात में अधिक है। लेकिन वहाँ पर भी काम, क्रोध व ईर्ष्या, द्वेष मौजूद हैं। जो अपने से ऊपर बैठे नज़र आते हैं व उत्तम सुख भोगते हैं। उनको देख कर ईर्ष्या पैदा होती है। उनकी श्रेष्ठता सहन नहीं होती। जो अपने समान हैं और अपने बराबर बैठे हैं, उनको देखकर क्रोध उत्पन्न होता है कि मेरे बराबर क्यों बैठा है। और जो अपने से नीचे बैठे हैं, उनको देख कर अभिमान पैदा होता है कि मैं इतना श्रेष्ठ हूँ। जब किए गए कर्मों के फल का भुगतान हो जाता है तो एक क्षण भी वहाँ नहीं रहने देते और इसे मृत्युलोक में गिरा देते हैं।''

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी, मृत्यु लोक में गिरा देते हैं। इस तरह कृष्ण भगवान ने कहा है, हे उधो! ये जो कीड़ा जा रहा है, कई दफा स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई दफा सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज ये कीड़ा है। सोच लो! छुटकारा तो न हुआ। त्रिलोकी के दायरे तक यही हाल है। त्रिलोकी के दायरे तक कोई जीव सुखी नहीं। वाणी में भी यही आता हैः

इन्द्रपुरी महि सर पर मरणा॥ ब्रह्मपुरी निहचलु नही रहणा॥
सिवपुरी का होइगा काला॥ त्रैगुण माइआ बिनसि बिताला॥

(237/8 मः 5)

यही महात्मा चरणदास जी कहते हैंः

जो पये काल प्रयन्त नर जीवे कोई, तो भी होवे नाश ब्रह्मा के संग ही।

काल प्रयन्त एक मियाद है जो एक चौकड़ी जुग की होती है।

जो पये देवन के माहिं जायेके उतरे, तो भी न छूटे कर्म मुक्त घर न लहै।

मुक्ति फिर भी नहीं, छुटकारा फिर भी नहीं। ऐसे ही धक्के खा रहा है। अच्छे कर्म किए स्वर्गों में गया, बुरे कर्म किए नरकों में गया, वहाँ के दुख भोगे, सज़ा भोगी फिर चौरासी तैयार है। कुछ अच्छे हुए, कुछ बुरे हुए, मृत मण्डल में आ गया। जिस के पुण्य ज़्यादा हैं पाप थोड़े हैं, वो ज़रा अच्छी ज़िन्दगी व्यतीत कर जाते हैं। जिस के पास पाप ज़्यादा हैं पुण्य थोड़े हैं वो दुखी जीवन व्यतीत करते हैं। सवाल तो चौरासी से निकलने का है। काल के फकीर भी आते हैं। वो अपनी भक्ति में लगाते हैं। दान पुण्य वगैरह में, धर्म-कर्म वगैरह में। और उसने क्या किया है? कबीर साहिब कहते हैं:

'ऐ जीअरा तू अमर लोक को आये परे बस काल हो'

ऐ जीव तू अमरलोक का रहने वाला है, सचखण्ड का रहने वाला है, सतलोक का रहने वाला है, मुकामे हक का रहने वाला है, काल के बस में आया हुआ है।

'मनहि सरूपी निरंजना तुम्हें राखी भरमाई हो'

यह मन काल का ऐजण्ट है। तुझे भरमा रहा है। पहले पाप-पुण्य, विषय-विकारों में फंसा दिया। और क्या किया उसने?

जोग जाप नेम व्रत पूजा, बहु प्रपंच पसारा हो।
जैसे बधिक ओट टाटी के, देहि विसवासे चारा हो॥

(कबीर साहिब)

कि जोग जाप जितने भी हैं सब फंसाने वाले हैं। विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तप किया, मन काबू न आया। मेनका पर मारा गया। श्रृंगी ऋषि ने अट्ठासी हज़ार साल तप किया पर मन काबू न आया। वृक्ष पर एक बार जीभ मारता था पानी पी लेता था। हम कहेंगे कि मन काबू कर लिया होगा। नहीं, वो भी मारा गया। प्रायश्चर जी पूर्ण योगी होकर आए, पूर्ण योगी। रिद्धियां-सिद्धियां प्राप्त की। चुली मार का धुंध कर दी, पानी को वरेती कर दिया, पर मन काबू न आया। मछंदर इस देह से निकल जाता था। फिर भी मन ने ख़्याल किया, विषय भोगें, राजपाट करें। किसी राजा का देहान्त हुआ। अपनी रूह को निकाल कर उसके जिस्म में प्रवेश करके विषय भोगे, राजपाट किया। पर मन काबू न आया। इस तरह धक्के खा रहे हैं। सवाल तो निकलने का है चौरासी से। फिर यही नहीं, पैदायश के वक्त भी कितनी तकलीफ है। इसको पता नहीं यह पढ़ भई, ऊपर से:

पाठी– सुन हिरदै मैं कहां बताऊं॥ जीव बिपत तो को समझाऊं॥
चार खान जीवन की होई॥ उसमें सुखी न देखा कोई॥

मैनेजर साहिब जी– चार खान क्या? अभी सुनाया था। कभी अंडो से पैदा हुए, कभी पानी के जीव बने। चार खाने हैं, पैदायश के चार ज़रिये हैंः

1. अंडज 2. जेरज 3. सेतज 4. उत्पज।

अंडज– जो अंड़ों से पैदा होते हैं।

जेरज– जो जेर से पैदा होते हैं।

सेतज– जो पसीने से पैदा होते हैं या मौसम की तबदीली से।

उत्पज– जो ज़मीन में घास फूस वगैरह।

अभी अंडा गिरता है। उस जगह को आप किसी तरह साफ करते हैं? कच्चा है तो लीपते हैं, पक्का है तो धोते हैं। जब अंड़ों में लिपटे पड़े थे! आगे लिए क्या सोचा है? फिर लिपटना पड़ेगा! जेर तो आप खड्डों में दबाते हैं। ऊपर कांटे रखते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? जहरीली चीज़ है। कोई कुत्ता खाएगा पागल होगा। किसी को काटेगा पागल करेगा। इस जेर में लिपटे रहे हैं तब! आंइदा के लिए क्या सोचा है? सोच लो! सेतज क्या? पसीने से, अभी पसीना आता है नहाते हैं। जब जुएं बने पड़े थे? उत्पज क्या? घास फूस, कैसे रौंदते हैं, कैसे काटते हैं। अफ्रीका में एक वृक्ष खड़ा है दस हज़ार साल का। इतनी लम्बी कैद, देखो! अमरीका में चार हज़ार छः सौ साल का खड़ा है। उसकी फोटो भी आई हुई है हमारे पास। इतनी बड़ी कैद है। इस तरह धक्के खा रहा है। सवाल छुटकारे का है। हम जितनी भक्ति करते हैं सब नीचे दर्जे की हैं, जितनी भी करते हैं सब नीचे दर्जे की हैं। काल के फकीर भी आते हैं। एक शब्द गाते हैं इधर मारवाड़ में–

इक दिन घोघड़ आसी रे, इक दिन काल आसी रे॥
तीन लोक और चौदह भवन में, इस घोघड़ का राज।
आये अचानक यूं पकड़ेगा, ज्यों चिड़ियां ने बाज॥

सबको खा गया।

कबीर सोया क्या करे सोए हुए अकाज।
ब्रह्मा का आसन डिगा, सुनी काल की गाज॥

(कबीर साहिब)

ह्वाँको पर्वत फाड़ते समुद्र घूंट कराए।
ते मुनीवर धरती गले किया को गरभ कराए॥

अगस्त ऋषि ने दड़का मारा, वो पहाड़ अब तक गिरा पड़ा है। अब तक गिरा पड़ा है। समुद्र को भी घूंट करके पी गया। उनको भी काल खा गया। इतनी बड़ी-बड़ी हस्तियां पड़ी हैं। अब कोई ज़रा सी रिद्धि सिद्धि दिखा दे सारी दुनिया उलट पड़ेगी। सब काल की भक्तियां हैं। रिद्धियाँ- सिद्धियाँ आ जाएंगी। स्वर्गों तक पहुँचा सकता है। लेकिन जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटते। सवाल तो जन्म मरण के बन्धन छुड़ाने का है। वो कौन सी ताकत है, उसको क्या तकलीफ होती है?

पाठी– जन्म मरण क्या कहूं ओलेखी॥ पूछो कहीं जाया नहीं देखी॥
जनमत दल माहिं का लेखा॥ जरते जठर अग्नि में देखा॥
ज्यों कीड़े मोरी की माहिं॥ तपत जेठ तपन में भाई॥

मैनेजर साहिब जी– फकीर जो अन्दर जाते हैं वो हमारी हालत को देखते हैं और उन्होंने लिखा है कि ऐसे हालात हैं। अग्नि का ताप चढ़ता है जैसे जेठ का महीना हो। अब नाली में पानी है, दोपहर का वक्त है पानी गर्म हो जाता है। उसमें कीड़े होते हैं। वो तड़पते हैं, ऐसे जीव तड़पता है। गुरुनानक साहिब फरमाते हैं कि टांगे ऊपर को होती है सिर नीचे को होता है। उस समय जो तकलीफ है वो ब्यान से बाहर है। बता नहीं सकता। उस समय तो पुकारता है कि ऐ मालिक इस जेल से छुड़ा। छुटकारे का बंदोवस्त करूंगा, तेरा भजन करूंगा। यहाँ आता है फिर भूल जाता है। कैसे बनता है जीव? अन्दर कहता है कि जठरन का ताप चढ़ता है। यह बाहर कैसे पुर्जे बने हैं। यह नकल है बाहर। वो असली अन्दर है। बाहर जितनी चीज़ है सब नकल हैं। कैसे बने हैं यह? यह लोहा लिया गया, भट्ठी में डाला गया, सांचो में ढाला गया, पानी जैसा बनाकर फिर सांचों में डाला गया। फिर निकाल कर पालिश किया गया। फिर जोड़ा गया, इधर किया उधर किया। इसी तरह अन्दर है। हड्डियां है, गर्दन है इधर उधर घुमाई, ऐसे ही अन्दर बनता है। फिर यह तो आंखों से ओझल है। मौत के वक्त हम खुद देखते हैं कैसे चिल्लाता है? हाय मार दिया। हाय काट दिया। कौन छुड़ाए? उस वक्त बोलो। उस समय टट्टी पेशाब निकल जाता है। सवाल तो इसका बंदोवस्त करने का, छुड़ाने का है। मौत के समय क्या होता है? क्यों टट्टी पेशाब निकल जाता है? जब रूह को निकालते हैं, जब पूरे शरीर से निकली, आंखें के पीछे आई, यहाँ उसकी बुद्धि अलग की जाती है। जितने इसने कर्म किए हैं सबका निचोड़ निकाला जाता है। कहते हैं न।

'अंत मता सोई गता'

सबका निचोड़ निकलता है। उस समय किसी का माया की तरफ ख़्याल है, किसी का बाल बच्चों की तरफ, किसी का कहीं तो किसी का कहीं। यह सब काल की भक्तियां हैं, काल की चीजे हैं उसके अनुसार बुद्धि बनती है। उसके अनुसार मन संकल्प उठाता है। फिर योनि मिलती है। पहले इसको तन का ख़्याल है। यह छोड़ना नहीं चाहता। मरने को मन नहीं करता। कोई रोटी नहीं देता अच्छी तरह। फिर कहता है कि मरूं न। ऐसा प्यार है। चूंकि तन चाहता है, इसको तन मिलता है। ख़्यालों के अनुसार किसी को माया से प्यार है तो उसे सांप की योनि मिलती है, उस पर बिठा देते हैं पेट भर ले भई!

अंति कालि जो लछमी सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/1 त्रिलोचन)

अगर बच्चों की तरफ ख़्याल है तो–

अंति कालि जो लड़िके सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/3 त्रिलोचन)

पीछे-पीछे बच्चे फिर रहे हैं। अगर मकानों में ख़्याल रह गया, खेतों में रह गया।

अंति कालि जो मंदर सिमरै अैसी चिंता महि जे मरै॥
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/4 त्रिलोचन)

भूत प्रेत बनता है। घर-घर में बाबे की मढ़ियां हैं। इस तरह धक्के खा रहा है। यह हमारे ख़्याल ही लिए फिर रहे हैं। यह हमारे ख़्याल ही हैं।

'जहाँ आसा तहाँ वासा'

यह तो ख़्यालों पर है। क्योंकि ख़्याल इधर है। यह काल का माल है। इस पर कब्जा करना चाहता है। यह काल का माल है।

पाठी– यह तो करम बुद्धि अनुसारा॥ अब सुनियो यह काल पसारा॥
अष्ट कंवल दल अन्दर माहिं॥ वहाँ छिपि बैठा काल कसाई॥
जब सब भास सिमटि करिआवे॥ जब सुरति पै बुद्धि पहँचावे॥
कंवल द्वार पंखुड़ी को रोके॥ उलटे सुरत काल मुख सोखे॥

मैनेजर साहिब जी– कई बार आपने देखा होगा कि किसी ख़्याल में बैठे हैं। टांग सो जाती है। काम नहीं करती। उसको दबाओ, ध्यान दो फिर चलने लग जाती है। वहाँ से चेतन सत्यता निकल जाती है। अब मौत के वक्त भी इस तरह खींची जाती है। अब तो वापिस आ गई फिर वापिस नहीं आती। सब दरवाज़े बन्द कर देते हैं।

कंबल द्वार पंखड़ी को रोके॥ उलटि सूरत काल मुख सोखे॥

फिर नीचे नहीं आ सकती फिर क्या बनता है।

पाठी– काल दाढ़ में आन चबानी॥ जब ढरके नैनन से पानी॥

मैनेजर साहिब जी– उस समय आंखों से पानी निकलता है। टट्टी पेशाब निकल जाता है। उसका बचाव सोचना था। उनका तो मतलब है कि यह बचाव कर लो, यह वक्त है। और कोई नहीं। इस जन्म को देवी-देवता भी तरसते हैं। यह सबसे उत्तम योनि है। इसलिए इसे नर-नारायणी देह कहा है। (अशरफ-उल- मखलूकात) कहा है। यह सब योनियों की सरदार है। मुसलमानी किताबों में आया हैः

''खुदा ने मनुष्यों को बना कर फरिश्तों को हुक्म दिया कि इसको सिजदा करो।''

इसी जून में कर सकते हैं और कोई जून नहीं। अगर समय अब हाथ से निकल गया तो फिर चौरासी तैयार है इसके लिए। फिर इसी तरह धक्के खाएगा। छुड़ाने वाली ताकत कौन सी है? वो सतगुरु ने अपने हाथ में रखी है। वो कौन सा सतगुरु है? वो कौन सा सतगुरु है?

आपे दारमदारी मेरा सतगुरु आपे खेल खिलारी हो॥
गगन मण्डल का तम्बू तनाया धरन गलीचा डारी हो॥
चांद सूरज दो मसाल बना दिए तारों की फुलवारी हो॥
दुनिया तेरी है फुलवारी आप बना खुद माली हो॥

वो ज़र्रे-ज़र्रे में है। सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। काल को भी यही ताकत दे रहा है।

खंड पताल दीप सभि लोआ॥ सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ॥

(1076/1 मः 5)

मालिक ने आप भी सब कुछ किया है।

निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइंदा॥

(1076/2 मः 5)

ताकत वहीं से मिलती है। यही कबीर साहिब ने लिखा हैः

'पेड़ पेड़ में पानी लगावै'

चांद, सूरज बनाए। यही गुरुगोविन्द सिंह जी ने कहा है कि तालीम तो एक ही है सबकी, जो फकीर मालिक की दरगाह से आए हैं।

एक ही की सेव सभ ही को गुरुदेव एक।

एक ही सरूप सभै एक जोत जानवो॥

जिस की जोत सब के अन्दर काम कर रही है।

'पेड़ पेड़ में पानी लगावै'

कुछ कहो, वो छुड़ाने वाली ताकत है। बाकी सब फंसाने वाले हैं। देख लो! कितने, कितने गुरु बाहर किए हैं। वो अन्दर वाला एक ही है। उसे तो कोई फर्क नहीं जो सच्चे दिल से पुकार करता है। उसका रूप क्या? कहाँ रहता है वो? तुलसी साहिब लिखते हैं कि वो त्रिलोकी से पार चौथे लोक मे रहता है। उसका रूप क्या है? 'शब्द', वर्ड कह लो, वो कुदरती आवाज़ है। नाम कह लो, शब्द कह लो, वर्ड कह लो, कलाम कह लो, कलामे इलामी कह लो। वो पढ़ने, लिखने की चीज़ नहीं, कैसे है वो? अभी प्राइम मिनिस्टर बोले। एक मिनट में आवाज़ सब जगह फैल जाएगी। जिन अफसरों से ताल्लुक है वो काम करने लग जाएंगे। किसने काम करवाया? उसकी आवाज़ ने, हुक्म ने, उसके शब्द ने। जैसे यह फैल गई, मालिक की आवाज़ भी सब जगह है।

'पेड़-पेड़ में पानी लगावै'

वो भी सब जगह फैली हुई है। उसकी आवाज़ ने सारी रचना की है। जैसे उस प्राइम मिनिस्टर ने काम करवाए। इस तरह मालिक की आवाज़ ने सब काम करवाए।

सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबदु भया प्रकाश॥

(जन्म साखी पन्ना 19)

शब्द की लय को कहते हैं 'नाम'

नाम के धारे सगले जँत। नाम के धारे खँड ब्रहमँड॥

(284/11 मः 5)

ईसा ने वर्ड कहा है। वो कहता है कि "शुरू में कलाम था। कलाम ही खुदा था। कलाम ही खुदा के साथ था। कलाम ने ही सब कुछ बनाया। बिना कलाम के कुछ भी नहीं था।"

मुसलमान कहते हैं कि "एक आवाज़ से सारी दुनिया पैदा हुई है। उससे ही सारा नूर पैदा हुआ है।"

वो कुदरती आवाज़ सब जगह है। सच्चे मालिक की दरगाह से आ रही है। उस को पकड़ना ही सच्ची भक्ति है। यही सतगुरु की भक्ति है। तभी उन्होंने कहा है। गुरुनानक साहिब ने कहा है:

तेरा कवणु गुरु जिसका तू चेला। सबदु गुरु सुरति धुनि चेला।

(942/18 मः 1)

यही कबीर साहिब कहते हैंः

शब्द गुरु के कीजिये, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद में, ठौर-ठौर बटमार॥

यही तुलसी साहिब कहते हैंः

सुरति शिष्य सबदे गुरु मिलि मारग जाना हो।
अलख आकास उंधा कुआं ता में सुरति समाना हो॥

यही पलटू साहिब कहते हैंः

'धुन आने जो गगन की, सोई मेरा गुरदेव'

यह जो हम नारा लगाते हैं, 'धन धन सतगुरु' का। यह किसी बाहर का नहीं इस गुरु का है, जिसने सारी रचना की है।

'पेड़-पेड़ में पानी लगावै'

यह धर्म है सोच लो! इसको कहते हैं 'हाज़िर-नाज़िर ज़िन्दाराम' जो हम सब के साथ है। हम कहते हैं कि गुरुदाता है। बाहर वालों को तो लगी पड़ी है– लिआओ! लिआओ! गुरु अर्जुन साहिब कहते हैः

सतिगुरु मेरा बेमुहताजु॥ सतिगुर मेरा सचा साजु॥ (1142/3 मः 5)

वो बे-मुहताज सतगुरु है। सबको बनाने वाला है। वो बे-मुहताज सतगुरु है। यह कपड़ा किसी ने बनाया। कैसे बना? किसी ने कपास बोई, किसी ने चुगी, किसी ने बेली, किसी ने सूत बनाया, किसी ने रंग बनाया, किसी ने बुना, देख लो! कितने हाथों से निकला? कितने कारीगर लगे? वो बे-मुहताज सतगुरु है जो फूलों में रंग भरता है। अन्दर बैठा ही काम कर रहा है। पीला रंग अन्दर से लाया, हरा रंग अन्दर से लाया। अन्दर बैठा ही कंटिग कर रहा है। उसी ने सारी रचना की है।

'पेड़ पेड़ में पानी लगावै'

कोई चीज़ है जो काम कर रही है। जैसे इसके अन्दर है (फूल की तरफ इशारा करते हुए) पूज्य मैनेजर साहिब फरमाते हैं कि हमारे अन्दर भी है। यह है शब्द गुरु। यह है राम गुरु। वो रमी हुई ताकत सबके अन्दर है। शब्द रूप में सबके अन्दर है। अगर यह निकल जाए! जैसे कहते हैं कि राम निकल गया, मौत के समय। यह है काम देने वाला। जैसे विद्या इसके अन्दर है। देख लो! जैसे यह

उस्ताद के ज़रिये जगाई जाती है। डॉक्टरी इसके अन्दर है, इंजीनियरिंग इसके अन्दर है। और-और सब इसके अन्दर हैं। देख लो! जिस तरह विद्या उस्ताद के ज़रिये प्रकट की जाती है, यह भी उस तरह शब्द रूप में प्रकट की जाती है। जैसे विद्या बसने लग जाती है यह भी बसने लग जाता है। काम देने लग जाता है। जैसे प्रहलाद की संभाल की, नामदेव की छपरी बनाई, धन्ने की गऊएं चराईं, देख लो! इसको खुश करे तब है। यह है काम देने वाला। बिश्नोइयों की किताबों में भी यही है।

'सबदे सुरति धुनि चेला।'

इसको सब छोड़े बैठे हैं। जिस चोले में आता था। उसको गुरु कहते थे। बाद में नकले चल पड़ीं। गुरु पे गुरु चढ़ गए। उस वक्त भी देह को पकड़ कर बैठ जाते थे। वो कहता कि चल अन्दर वो तेरे अन्दर है। जैसे मास्टर के पास गए। उस विद्या ने काम देना है जो मास्टर से सीखी है। मास्टर चोला भी छोड़ जाए पर अपनी विद्या ही काम देती है। इसी तरह यह है। अपना शब्द गुरु ही काम देने वाला है। जिस वक्त मौत आई, मौत अन्दर, यमदूत भी अन्दर हैं। रोता है, चिल्लाता है। कौन छुड़ाए? देख लो! कौन छुड़ाए उस वक्त? धर्म स्थान बाहर, तीर्थ वगैरह बाहर, बाहर वाले गुरु बाहर। यह काम देनेवाला है। यह दारमदारी सतगुरु है। अगर उसको खुश करे तो उसके नज़दीक यमदूत नहीं आते। इस भक्ति से डरते हैं दारमदारी सतगुरु की से। दारमदारी कह लो, सतपुरुष कह लो, सतगुरु कह लो। उसका रूप 'शब्द' है। यह काम देने वाला सतगुरु है। जितना करो उतना ही तुम्हारे अन्दर बसने लग जाएगा।

'जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ-तिउ राम निवास'

जैसे विद्या बसने लग जाती है वैसे ही वो भी बसने लग जाता है। वो शब्द गुरु भी बसने लग जाता है। वो राम गुरु भी बसने लग जाता है। वो काम देने लग जाता है। इसको सब छोड़े बैठे हैं। फकीर आते ही सिर्फ शब्द पकड़ाने के लिए। यह है काम देने वाला, बाकी कोई काम देने वाला नहीं, देख लो! उस समय कौन छुड़ाए? जो इसको जपते हैं चाहे थोड़ा भी है जो इसका सही सिरमण करते हैं। यह मिलता भागों से जो इसका सिरमण करते हैं। उस फकीर की क्या निशानी है? बातें तो सब कर लेते हैं। उसके चिताए हुए जीव, अगर ठीक मास्टर हो तो ठीक विद्या आएगी। वो जो सिमरण बताते हैं उसके नज़दीक काल नहीं आएगा, यमदूत नहीं आएंगे, आराम से जाएगा। उसका जिस्म जल्दी नहीं अकड़ता। अगर कोई कर्म रह गया तो सतगुरु पहले भुगता देगा लेकिन मौत के वक्त आराम से

जाएगा, खुशी-खुशी जाएगा। यह निशानी है उसकी और कोई निशानी नहीं। यह काम देने वाला सतगुरु है। फकीर आते इसलिए हैं कि पकड़ भई! यह तेरे घर का रास्ता है। बाद में दुनिया ने मज़हब बना लिए, फिरके बना लिए, लड़ो और मरो। असली चीज़ छुड़ा दी। यह काम देने वाला है जो निकाले, जो काम ले। सब के अन्दर है। डॉक्टर बन जाए, बातों से तो नहीं बनता।

'अहम् ब्रह्मअस्मि'

ऐसे बातों से तो कोई नहीं बनता। उसको अन्दर प्रकट करे तब है। यह है काम देने वाला बाकी कोई नहीं। यह मौत के वक्त छुड़ाने वाला है। काल ने ऐसा फंसाया है कि निकलने का रहा नहीं छोड़ा। कबीर साहिब कहते हैं किः

तीन लोक का पिंजरा भया, पाप पुन दोउ जाल।
सकल जीव सावज भए, एक अहेरी काल॥

सबको उलझा रखा है। दादू साहिब लिखते हैंः

जीव जँजालों पड़ गया उलझा नौ मण सूत।
कोई इक उभरे सावधान गुरु बायक अवधूत॥

जैसे नौं मन सूत उलझ जाता है ऐसे उलझा पड़ा है जीव। मन दिलासे देता है ऐसा कर ले छुटकारा हो जाएगा, पुण्य दान कर ले छुटकारा हो जाएगा। असली चीज़ ही छुड़ा दी उसने, देख लो! किसी को कहता है जोग कर ले। यह ऐसी बला है। यह काल का ऐज़ण्ट है। सबको नचा रहा है।

जीउ एकु अरु सगल सरीरा। इसु मन कउ रवि रहे कबीरा॥

(330/12)

वो फकीरों की बात मानने ही नहीं देता। कबीर साहिब कहते हैंः

वह गुप्त भापुनि सब के, मन निरंजन जानिये।
मन पुरुष भेद उच्छेद देवे, आपो प्रकट आनिये॥ (26 अनुराग सागर)

यह मानने नहीं देता है। फकीरों के साथ रह कर भी किसी ने नहीं माना। मरदाना सारी उम्र भागता रहा। मन जल्दी काबू नहीं आता। बड़ी मुश्किल से काबू किया है जिन्होंने किया है। इसके साथी हैं काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। जितना काम कर रहे हैं, इनका ही कर रहे हैं। अपना कोई भी नहीं– या काम का, या क्रोध का, या मोह का, या लोभ का, या अहंकार का। औरतें इसके काम की, बाल बच्चे मोह के, ज़मीन जायदादें लोभ की, मान बड़ाई अहंकार की, दुश्मन इसके क्रोध के। आत्मा का कौन सा काम है? सोच लो! इनका काम कर रहे हैं, अपना

तो कोई नहीं। घर बार छोड़ने से कुछ नहीं बनता। फकीर न बाल बच्चे छुड़ाते हैं न घर छुड़ाते हैं। कौन सा घर छुड़ाते हैं? इस शरीर रूपी घर से निकले, जड़ चेतन की गांठ खोले। यह बाल बच्चे नहीं छुड़ाते। क्या छुड़ाते हैं? काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। यह विषय ही पकड़े बैठे हैं। विषयों के लिए फिर माया की ज़रूरत है। माया के लिए फिर चोरियां ठगियां करता है। फिर और फंस गया बेचारा, देख लो! यह छुड़ाते हैं वो।

जग्ग रहो जग्ग ने अलग रहो, जोग जुगती की रीत।
दुलहन हिरदे नाम से, लाई रहो दृढ़ प्रीत॥ (दुल्हनदास)
जिनका मन ब्रिकत सदा, रहो जहां चित लाइ।
घर बार दोऊ एक सा, डारी दुविधा खाइ॥
के घर के बाहर से, जो चित आवे नाम।
दोनों होए बराबरी, के जंगल के ग्राम॥

(महात्मा चरणदास)

यहाँ कोई सवाल नहीं घर बार छोड़कर गया। बना क्या? सोच लो! न घर बार छुड़ाते हैं न बाल बच्चे। यह लेने देने भी खत्म करने हैं। इस दुनिया में आकर इस जन्म में हमारा कितनों से ताल्लुक पड़ा होगा। देख लो! किसी का खाया, किसी को खिलाया, किसी को दुख दिया, किसी से दुख लिया, किसी को सुख दिया, किसी से लिया। यह सब संस्कार और बढ़ गए। कोई कहीं जाएगा तो कोई कहीं जाएगा? कब खत्म हुए? युगों-युगों से आ रहे हैं। इस तरह स्टॉक पड़ा है। इसको पता नहीं, जब इकट्ठे हुए तो भुगत गए। जब भी कोई मिल गया कर्म खत्म। कभी कोई तो कभी कोई। यह खत्म करने हैं। हम लेने-देने के सम्बन्ध से इकट्ठे हुए हैं। इनसे निकलना था। बाकी, यही नहीं, घर में रखते हैं न पैसे कुछ, कोई कारखाना चलाता है, कोई रिजर्व फंड रख लेता है। ताकि कारखाना फेल न हो जाए। आगे भी काम दे। इस तरह काल ने किया है कि जो प्रालब्ध लिखवा कर लाए हैं। वो तो भुगत जाएंगे। फिर आगे के लिए ऐसे कर्म करे जिसका फल न हो फिर तो छुटकारा हो गया, नहीं तो संचित कर्मों का स्टोर रख छोड़ा रिजर्व फंड।

''धृतराष्ट्र से पूछा गया कि तू अन्धा क्यों हुआ? उसने कहा कि मुझे सौ जन्मों की ख़बर है मैंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया जिससे अन्धा होऊं। जब कृष्ण भगवान ने तव्वजों दी तो एक सौ छः जन्म पीछे का कोई कर्म था जिसका फल वो आज भुगत रहा था।''

सोच लो! इतना स्टोर पड़ा है। ऐसे उलझा पड़ा है जीव। तभी उन्होंने लिखा है:

जीव जंजालों पड़ गया उलझा नौ मन सूत।
कोई इक उभरै सावधान गुरु बायक अबधूत॥ (दादू साहिब)

यह सतगुरु ही मेहर करे। जो सच्चे दिल से पुकार करता है। जैसे मीरां ने पुकार की:

'हेरी मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाणे कोय'

क्या दर्द था? क्या तकलीफ थी? सोच लो! गहने कपड़े उसके पास, नौकर-चाकर उसके पास, राजपाट उसके पास, डॉक्टर-हकीम उसके पास, क्या कमी थी उसको? भागती दौड़ती फिर रही थी। मालिक ने मेहर की, रविदास मिल गया। सब कुछ हासिल कर लिया। यह सच्ची तड़प पे है, सच्ची लगन पे है। हमें गर्ज़ नहीं, दुनिया की चीजों की गर्ज़ है। इसकी किसी ने गर्ज़ नहीं की।

ऐसी दुनिया भई दिवानी, भगती भाव ना बूझे जी॥
कोई आवे तो बेटा मांगे, यहीं गोसाई दीजे जी॥
कोई आवे है दुख का मारा, हम पर किरपा कीजे जी॥
कोई आवे तो दौलत मांगे, भेंट रुपईया लीजे जी॥
कोई करावै बिआह सगाई, सुनत गोसाई रीझे जी॥
सांच का कोई ग्राहक नहीं, झूठे जगत पतीजे जी॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, अंधो का किआ कीजे जी॥

(कबीर साहिब)

फकीर आते इसलिए हैं, दात देने के लिए। वो लेने को तैयार नहीं। क्या कहते हैं वो?

पाठी– कबीर साहिब कहते हैं कि मेरे अन्दर नाम रत्न की खान खुली है। जिसे मैं मुफ्त देता हूँ।

मैनेजर साहिब जी– हाँ! मुफ्त देता हूँ फिर भी कोई नहीं लेता।

पाठी– मगर इसका ग्राहक नहीं मिलता।

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी! ग्राहक नहीं मिलता। आगे!

पाठी– नाम रतन धन मुझ में खान खुली घट माहि।
सीत मीत ही देत हूं ग्राहक कोई नाहिं॥

मैनेजर साहिब जी– यह मेहनत का काम है। मीरां कहती है:

पायो रे मैंने नाम रतन धन पाइयो॥
जिस को पाये दुख सुख भूले मन आनन्द रे समाइयो॥
जिस की चोरी कबहूं नहीं होवे ऐसो धन मैंने पाइयो॥
खरचूं लाख खत्म नहीं होवै दिन-दिन बढ़त सवाइयो॥

यह धन हासिल करना था। वो कहता है कि मुफ्त देता हूँ। कोई लेने वाला हो। तन का प्यार छोड़े, विषय-विकार छोड़े। अन्दर जाए, जड़ चेतन की गांठ खोले। तब ले, फिर हासिल करे।

पाठी– हाफ़िज़ साहिब फरमाते हैं कि ''या खुदा! चारों तरफ अंधेरा छा रहा है सबके सब बिल्कुल कोरे और रूहानियत से बिल्कुल बेख़बर नज़र आते हैं और इस धन का कोई ग्राहक नज़र नहीं आता।''

मैनेजर साहिब जी– कोई ग्राहक नहीं मिलता, देख लो! कोई है? कोई विरला है, कोई विरला है जो आए। उसके लिए फकीर आते हैं। मालिक भेजता भी ज़रूर है।

'जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे' (1025 मः 1)

सन्त किसे कहते हैं। यह नहीं कि रंगे कपड़े पहन लिए तो सन्त हो गए। कर्मों, धर्मों, वालों ने कभी कहीं फंसा दिया तो कभी कहीं। वो कहते हैं कि अन्दर चल। वो शब्द गुरु तेरे अन्दर है। जो सतलोक में पहुँचे उसका नाम सन्त है। जो पारब्रह्म में पहुँचा उसका नाम साधू है।

पार ब्रह्म साध रिद वसै। नानक उधरै साध सुनि रसै॥

कबीर साहिब लिखते हैं:

साधू सोई जिन इह गढ़ लीना, नौ दरवाज़े प्रगट कीना।
दसवां खोल जाए जिन दीना, यहाँ कुफल रहा मारा है॥

यह असली मन्दिर है शरीर। इसके नौ दरवाज़े बाहर हैं। दो आंखों के, दो कानों के चार, दो नाक के छः, एक मुंह, दो टट्टी पेशाब के, दसवां अन्दर है। यह खोले।

साध सोई जिन इह गढ़ लीना, नौ दरवाज़े प्रगट कीन्हा।
दसवां खोल जाए जिन दीना, यहाँ कुफल रहा मारा है॥

यह खोले।

आगे सेत सुन्न है भाई, मान सरोवर पैठ नहाई।

मानसरोवर कहो, प्रयाग कहो, अमृतसर कहो इसके अन्दर है। हौज़े कौसर कहो, 'मान सरोवर पैठ नहाई।'

वहाँ अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। अमृत की खुराकें है। यह बाहर नकलों में फंस गया। वो असली प्रयाग है इसके अन्दर। प्रयाग पे जाते हैं। वहाँ क्या होता है? तीन नदियों का संगम। यह नमूना बताया था। यह नमूने में फंस गया।

इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाइ।
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई॥ (974/6)

उसमें नहाए फिर पाप निकलते हैं। वो अमृतसर इसके अन्दर है। नामदेव ने कहा, गुरुनानक साहिब ने कहा हैः

अंतरु निरमलु अँम्रित सरि नाए। सदा सूचे साचि समाए॥
(363/16 मः 5)

यह बाहर का गुरु रामदास जी ने बनाया। गुरु अमरदास जी कहते हैं। अमृतसर तेरे अन्दर है। वो असली अन्दरि है।

अंतरु निरमलु अँम्रित सरि नाए। सदा सूचे साचि समाए॥
(363/16 मः 5)

काइआ अंदरि अँम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे॥
(1046/3 मः 3)

वो इसके अन्दर है। नाम का तीर्थ कहो।

अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटण हारा॥ (1009/3 मः 1)

वो नाम का तीर्थ कहो।

अठसठ तीर्थ तो विखे, बाहर क्यों भटकाए।
चरनदास यूं कहत है उल्टा होए घट आए॥ (महात्मा चरणदास जी)

देख लो! बिश्नोइयों की किताबों में भी यही हैः

अठसठ तीरथ हिरदा भीतर, बाहर लोका चारूं।
(श्री जम्मेश्वर महाराज)

लोकाचारी में रह गई सारी दुनिया। क्या कहती है मीरां। कोई सिमरण करने वाला हो। काल ने बाहर ही बाहर भरमा दिया। असली चीज़ ही छुड़ा दी।

पाठी– 'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

झिनां झिनां चोला पहिर सखी मैं तो झिरमिट खेलन जाजी।
रमती ने खेलजी मिल गयो सांवरियो आए मिलियो रे गलवाती।
सावरियां मीरां हरि चरणां की दासी॥
औरां का पीया प्रदेस बसत है लिख लिख भेजे पाती।

म्हारो पीया रे म्हारो घट में बसत है दर्शन करूं दिन राती।
सांवरियां मीरां हरि चरणां की दासी॥

मैनेजर साहिब जी– जिसको मिला अन्दर से मिला, बाहर किसी को नहीं मिला। तभी कहते हैं कबीर साहिबः

मुझ को कहां ढूंढ़े तूं बन्दे मैं हूं तेरे पास में॥
न तीर्थ में न मूर्त में न एकान्त निवास में॥
न मन्दिर में न मस्जिद में न काशी कैलाश में॥
खोजी होवे तुरत मिल जाऊं पल भर की तलाश में॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो मैं तो हूं विश्वास में॥

यह ईसा ने क्या कहा है?

पाठी– ''मालिक ने दुनिया बनाई है। वह सबका मालिक है। वह इन्सानी हाथों से बनाए हुए मन्दिर, मस्जिदों में नहीं बसता।''

हाफिज साहिब–''सब मन्दिरों और मस्जिदों के फाटकों पर लिख दो कि परमात्मा मनुष्य के हृदय रूपी मन्दिर में निवास करता है और वह मज़हबों और फिरकों से बहुत दूर है।''

मैनेजर साहिब जी– दुनिया ऐसे ही महज़बों और फिरकों में फंसी है। पढ़ते भी रोज़ हैं।

'मानस की जात सभै एकै पहिचानवो'

सबकी एक ही जात है। चाहे हिन्दू है, चाहे सिक्ख है, चाहे ईसाई है, चाहे मुसलमान है।

'कहु कबीर यहु राम की अंसु' (871/9 कबीर)

बाहर की जात बना ली असली जात ही भूल गया। इधर एक फकीर हुआ है।

'तुम जात न जान गंवारा हो'

ऐ गवार तुझे तो अपनी जात का ही नहीं पता।

तुम जात न जान गंवारा हो॥
को तुम आये, कहां ते आयो झूठा करत पसारा हो॥

पता है किसी को कहाँ से आए हो? किस जून से आए हो, किस में जाएंगे? कौन सा हमारा देश है, कैसे बिछुड़े हैं? याद ही नहीं।

माटी की बूंद पिण्ड की रचना, ता में प्राण प्यारा हो॥
लोभ लहर में मोह की धारा, सिरजणहारा बिसारा हो॥

यह पांच तत्व का पुतला है। जैसे गाड़ी चलती है न भाप बनाता है इंजन चलता है आग से। आग और पानी से इसके अन्दर भी प्राण बने हैं। इससे चलता है; चलाने वाला तो ड्राइवर है। इसको पता ही नहीं। देख लो! उसको पता ही नहीं। हम गए टोहाने काफी समय की बात है। पूज्य मस्ताना जी के समय की बात है। किसी प्रेमी ने कहा कि जी गाड़ी आग और पानी से चलती है। कि दिखाएगा? कि जी हाँ जी। जानबूझ कर अन्जान बन जाते थे। स्टेशन पर चले गए। ड्राईवर को कहने लगे कि भई! नीचे आजा। कि अब चलाओ भई! ड्राईवर तो नहीं चलाने वाला कोई और है। उसको तो भूल ही गया।

लोभ लहर में मोह की धारा, सिरजणहारा विसारा हो॥

मालिक ही विसार दिया। बस इसमें फंस गया। इसको पालने-पालने में रह गया। पाल कर इससे काम लेना था। पाल कर इससे काम लेना था। इसने आत्मा से काम लेना था। छुटकारे का बंदोवस्त करना था। राम नाम निकालना था। वो भूल ही गया। पालने-पालने में रह गया।

लोभ लहर में मोह की धरा, सिरजणहारा विसारा हो॥

पालने-पालने में रह गया। आत्मा ने इससे काम लेना था जिस्म से। छुटकारे का बंदोवस्त करना था। यह बन्धन छुड़ाने थे। इस आत्मा से काम लेना था। मिट्टी पलीत ही कर दी इसने।

देह प्यारी जीव को, निस दिन सेवा माहिं।
दादू जीवन मरण लौ कबहुं छांडि नाहिं॥ (दादू साहिब)

इसका खाना पीना नहीं छूटता।

फरीदा इहु तनु भउकणा नित-नित दुखीअै कउणु।
कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु॥ (1382/10)

सारा दिन भौंकता है मेरे लिए यह ला, वो ला। बस सारा दिन इसका बंदोबस्त किया। आत्मा का किसी ने क्या किया? इसके अन्दर है। जिसको मिला है अन्दर से मिला है। यह तन का प्यार नहीं छोड़ता। बैठा नहीं जाता, टांगे दर्द करती हैं। जिन्होंने पाया है मुश्किल से पाया है। मेहनतें की। दिन को काम किया। रात-रात को खूब लड़ाई की मन से, तन से। आहिस्ता-आहिस्ता फिर यह काबू भी आ जाता है। काम थोड़ा-थोड़ा भी करो तो कुछ न कुछ बन जाता है। कमज़ोर से कमज़ोर लड़का भी हासिल कर लेता है आगे रास्ता ठीक हो। कहती है मैंने अन्दर देखा है। यह बाहर क्या था? यह हमारे लिए स्कूल बने थे। बिल्डिंग तो आला से आला

बन गईं पर मास्टर नहीं रहे। क्या कहती है मीरांः

पाठी– औरां का पीया प्रदेश बसत है लिख-लिख भेजे पाती।
म्हारो पीया म्हारे घट में बसत है दर्शन करूं दिन राती॥
सांवरिया मीरां हरि चरणां की दासी॥
भोली भोली दुनिया द्वारका ने जाती तीर्थ कर कर आती।

मैनेजर साहिब जी– सुनो भई! वो कहती है कि मेरा पिया मेरे अन्दर है। मैंने अन्दर देखा है।

पाठी– महात्मा मग़रबी साहिब फरमाते हैं कि "जिसकी तलाश में इन्सान इधर उधर दौड़ता फिरता है जब हम अपने अन्दर दाखिल हुए तो उसको अन्दर ही पा लिया। जिसको हम मुद्दतों से जगह-जगह तलाश करते रहे हैं। उसको आखिर हमने दिल की गली में ही पा लिया।"

मैनेजर साहिब जी– जिसने पाया अन्दर से पाया। कहते हैं जड़ चेतन की गांठ है खोले। खोली किसी ने? यह शिव नेत्र है, तीसरी आंख है, दिव्य चक्षु है, थर्ड आई है। खोलने का यत्न ही नहीं किया। खोले तो देखे! कैसे देखे? यह आंखें तो फनाह हैं, पराए आसरे हैं। अब सूर्य न हो तो हम देख नहीं सकते हैं। रात को, चांद न हो, तारे न हो तो हम देख सकते हैं? लेकिन वह आँख खुद रोशन है। वो खोले तो देखे। वो कहती है कि मैंने देखा है। आगे क्या कहती हैः

पाठी– भोली भोली दुनिया द्वारका ने जाती तीर्थ कर कर आती।
गंगा रे जमुना म्हारे घट में बसत है नहावण करूं दिन राती रे॥
सांवरियां मीरां हरि चरणां की दासी॥

मैनेजर साहिब जी– उसने तसल्ली की। गंगा, यमुना अन्दर देखी। तब लिखा हैः

पाठी– दौड़ी दौड़ी दुनिया द्वारे काने आती तीर्थ कर कर आती।
म्हारो पीया म्हारे घट में बसत है दर्शन करूँ दिन राती।
सांवरियां मीरां हरि चरणां की दासी॥

मैनेजर साहिब जी–बाहर कोई पानी पापों की मैल उतारने वाला नहीं।

भरीऐ हथु पैरु तनु देह॥ पाणी धोतै उतरयु खेह॥
मूत पलीती कपड़ु होइ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ॥
भरीऐ मति पापा कै सँगि॥ ओहु धोपै नावै कै रँगि॥

(4/15 जपुजी साहिब)

नाम के रंग में जाकर साफ होता है। वोह अन्दर है तीर्थ।

पाठी– भोली भोली दुनिया मद पीवण जाती, मैं बिन पीये मदमाती।
मैं मद पीयो म्हारो प्रेम वटी रो, छकी फिरूँ दिन राती रे॥
सांवरियां मीरां हरि चरणां की दासी॥

मैनेजर साहिब जी–यह रास्ता छुटकारे का है। नहीं तो यमदूत तो आएंगे फिर वो ही हाल।

पाठी–'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'
भजनगढ़ बांधो रे मेरा भाई। आगे यम संग होगी लड़ाई॥
भजनगढ़ बांधो.....

मैनेजर साहिब जी– किसी को ख़्याल है कि यह लड़ाई आएगी? किसी को ख़्याल हो तो बंदोबस्त करे। बाहर किसी से झगड़ा हो जाता है कितना बंदोवस्त करेगा! इसका ख़्याल ही नहीं किसी को कि यह वक्त भी आएगा।

पाठी– राम नाम का किला बना ले, धर्म की बुरज चिनाई।
सत्य शब्द की तोप बना ले, यम की फौज हटाई॥
भजनगढ़ बांधो.....

मैनेजर साहिब जी– 'नेम से कर चिनाई' रोज़-रोज़ करे, बस लगा रहे। थोड़ा-थोड़ा भी करे तो कुछ बन जाएगा। यह जल्दी का काम नहीं। दो-दो, चार-चार ईंटें भी लगाए तो दीवार खड़ी हो जाती है। यह फसल है, कितने महीने हो गए इसको? कितने महीने हो गए। कितनी संभाल की है? जिस तरह यह दाना बनता है इस तरह वो भी तैयार हो जाता है। वो फसल भी बन जाती है। कल मामूली सा बीज डाला था, पानी डाला, गोडी की, देखो क्या से क्या बन जाता है? बस इस तरह भजन बन जाता है। इस तरह भजन का बूटा भी खड़ा हो जाता है। इस में फल फूल लगने लग जाते हैं। बाहर तो ज़रूर संभाल करेगा इसकी, देख लो।

पाठी– राम नाम का किला बना ले, धर्म की बुरज चिनाई।
सत्य शब्द की तोप बना ले, यम की फौज हटाई॥
भजनगढ़ बांधो.....

मैनेजर साहिब जी– गा-गा के चले गए किसी ने ख़्याल किया? किसी ने पढ़ लिया, किसी ने सुन लिया, किसी ने गा लिया। क्यों लिखा कि तैयारी कर लो। यह वक्त भी आएगा।

पाठी– ध्रुव बाध्यों प्रहलाद भी बांध्यो, बाध्यो मीरां बाई।
बल्ख बुखारे ऐसो बांध्यो, छोड़ चल्यो बादशाही॥

भजनगढ़ बांधो.....

तन का है घोड़ा मन की जीना, सुरता लगाम लगाई।

मैनेजर साहिब जी– अब बताते हैं कि भजन कैसे करते हैं?

पाठी– तन का है घोड़ा मन की है जीना सुरता लगाम लगाई।

मैनेजर साहिब जी– क्या? कि घोड़े को खिलाते हैं फिर उससे काम लेते हैं। देख लो! बैलों को खिलाते हैं, काम लेते हैं। इस घोड़े से भी काम लेना है यह मन जो भागता दौड़ता फिरता है इस पर बैठ जाओ जीना बना कर। सुरत लगाम बना लो। खूब चुस्ती से भजन करो। घोड़े पर बैठते हैं न चुस्ती से कि इधर-उधर न हो जाए। यह मन भी भागता यह सीधे रास्ते चले, सीधे-सीधे भजन करे। कैसे करो?

पाठी– अपने साहिब की करो नौकरी बन चलो संत सिपाही।

भजनगढ़ बांधो.....

मैनेजर साहिब जी– कैसे चुस्ती से खड़े होते हैं सिपाही कि कोई ऐक्सीडेंट न हो जाए। ऐसे ही वह इधर उधर न हो। हाँ जी, फिर बोलः

पाठी– तन का घोड़ा मन की है जीना सुरतां लगाम लगाई।

मैनेजर साहिब जी– अगर घोड़े को न खिलाएं तो काम देगा? इस घोड़े से काम लेना था तो इसे खिलाना भी पड़ेगा।

घटि वसहि चरणारविंद रसना जपै गोपाल।
नानक सो प्रभु सिमरीअै तिसु देही कउ पाल॥

(गुरु अर्जुन साहिब)

पालना भी ज़रूरी है पर यह तो पालने-पालने में रह गया। इसको पाला, खूब खाया, विषय कमाए और क्या?

पाठी– तन का है घोड़ा मन की है जीना सुरता लगाम लगाई।

अपने साहिब की करो नौकरी, बन चलो संत सिपाही॥

भजनगढ़ बांधो.....

यह संसार रैन का सपना, भौर भए मिट जाई।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, साहिब से लगन लगाई॥

भजनगढ़ बांधो.....

मैनेजर साहिब जी– यह थोड़ा भी है इससे काल डरता है। बाकी किसी से नहीं डरता। हम रोज़ पढ़ते हैं।

प्रभु कै सिमरनि दूखु जमु नसै॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै॥

(262/14 मः 5)

इसके नज़दीक नहीं आता। वो बोल भई! समुंद जहाँ मोती रे।

पाठी– चल हंसा उस देश समुंद जहां मोती रे।

चल हंसा जहां देश निराला। बिनु शशि भानु होत उजियारा॥

नहीं काल की चोट जगामग ज्योति रे॥

चल हंसा.....

मैनेजर साहिब जी– वहाँ चाद की ज़रूरत नहीं, सूर्य की ज़रूरत नहीं, वहाँ खुद ही रोशनी है। वहाँ कुदरती जोतें जग रही हैं। यह जो बाहर हम जोतें जगाते हैं, यह नकल है। नकलों में फंस गई दुनिया, असली इसके अन्दर है। आम गुरुद्वारों में जाओ, शिवदयालों में जाओ, मसीतों में जाओ, गिरजों में जाओ, गुरुद्वारों में जाओ, आपको दो तरह की शक्लें मिलेगी। या गुम्बद होगी, या लम्बोतरी शक्ल होगी जैसे शिवदयालों की है। सबके अन्दर जोतें जग रही हैं। सबके अन्दर घण्टे, शंख बज रहे हैं। मुसलमानों के चिराग जलाते हैं, मृंदग बजाते हैं। यह क्या? वह हमारे समझाने के लिए है। यह शरीर मन्दिर है।

'हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ॥' (1346/4 म : 3)

"Body is the Temple of God."

यह गुम्बद है। (सिर की तरफ इशारा करते हुए) यह लम्बोतरी शक्ल है। जैसे कृष्ण भगवान ने कहा है, 'नासिका के अगर भाव आओ'। यहाँ आए, फिर वहाँ जोतें जगती हैं, चिराग जल रहे हैं। घण्टे, शंख बज रहे हैं। मृंदग बज रहे हैं। सब कुछ अन्दर है। यह जोत, हमने बनाई और हमने ही माथा टेका। बनाने वाला बड़ा कि वो। वो कुदरती जोत सबके अन्दर है। इधर मारवाड़ में एक फकीर हुआ है। उसने कहा है कि–

माई मेरे मन्दिर में जोत जगे।

बिन दीपक बिन बाती घृत के झिलमिल जोत जगे॥

इस जोति का सकल उजारा, देखत तिमर भगै॥

(महात्मा अचल राम)

यह तो कमरे में रोशनी नहीं देती।

इस जोति का सकल उजारा देखत तिमर भगै॥

हाय! हाय! वो जोत देखनी थी। बस बाहर ही बाहर फंसा दिया, बाहर ही

बाहर रह गई सारी दुनिया। यही पलटू साहिब ने कहा हैः

उल्टा कूवा गगन में तिस में जरे चिराग।
तिस महि जरे चिराग बिन रोगन बिन बाती।
छः रितु बारह मास रहत जरत दिन राती।
सतगुरु मिला जो होये ताही की नजर में आवै।
बिन सतगुरु कोऊ होये नाहीं वा को दरसावै।
निकसे एक आवाज़ चिराग की जोतिहिं माही॥

उसमें एक आवाज़ है। वो इसके घर का रास्ता है। गुरुनानक साहिब ने लिखा हैः

'अँतरि जोति निरँतरि वाणी'

हाय! हाय! देख लो! अगर उस जोत को देख ले फिर यह खालसा बनता है।

'पूर्ण जोत जगै घट में तब खालसा ताहि नखालस जानै'

यह जीवित मरने का सवाल है। क्या? कि जड़ चेतन की गांठ खोले। ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। यहाँ आए। इसको कहते हैं ज़िन्दा मरना। ज़िन्दा मरना यह नहीं कि कब्रों में चले जाना है। मरने पर क्या होता है? देशों के ताल्लुक टूट गए, कौमों, मज़हबों के टूट गए, यार दोस्तों के टूट गए। मां, बाप, बहन, भाई सब के टूट गए। देह से भी निकल गया। यह हालत ज़िन्दगी में प्राप्त करे। जब चाहे आ जाए जब चाहे चला जाए। इसको कहते हैं जीवित मरना। जब ज़िन्दा मरा, जोत से ताल्लुक पड़ा। कबीर साहिब कहते हैंः

अब मन उलटि सनातन हुआ। तब जानिआ जब जीवत मुआ॥

यहाँ आकर रूह काफी साफ हो जाती है। जब साफ हुई तो श्रेष्ठ, आर्य, पाक बन गया। यह नामधारी बन गया। राम नाम की जोत सबके अन्दर है।

राम नामु है जोति सबाई।

इसी का नाम है सच्चा सौदा। बिल्डिंगों का नाम सच्चा सौदा नहीं।

सचा सउदा हरिनामु है सचा वापारा राम।
गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम॥

(570/13 मः3)

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि।
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार॥ (646/8 मः3)

यह काम करना था आकर। फिर तो सब कुछ बन गया नहीं तो कुछ भी नहीं। बाहर कैसे बने? जैसे कोई डॉक्टरी में दाखिल होता है। हम उस दिन से ही कहना शुरू कर देते हैं, आओ डॉक्टर साहिब! बना तो नहीं। वह कोर्स करेगा तब बनेगा। ऊपर-ऊपर से तो सब बन गए। कोर्स किसी ने भी नहीं किया। कोर्स किसी ने भी नहीं किया। ऊपर-ऊपर से सब बन गए। देख लो! अगर बन गया तो सब कुछ है। नहीं तो कुछ भी नहीं हाँ, बोल भई! यह काम करना था। सबके अन्दर जोतें जग रही हैं। सबके अन्दर घण्टे शंख बज रहे हैं। सबके अन्दर आरतियां हो रही हैं।

'घण्टा जा का सुनीऐ चहु कूंट'

एक मुसलमान फकीर ने लिखा है कि "किसी को पता नहीं कि खुदा का घर किधर है। यह आवाज़ किधर से आ रही है।।"

कस नदा निस्त कि मंज़िल गहे माशूक कूजा अस्त।
ई कदर हस्त कि बांगे जर्से ने आयद॥

(हाफ़िज़ साहिब)

पाठी– चल हंसा जहां देश निराला। बिनु शशि भान होत उजियारा॥
नहिं काल की चोट, जगामग ज्योति रे।
चल हंसा.....

मैनेजर साहिब जी– कबीर साहिब ने लिखा हैः

कबीर काया समुद्र है, अन्त न पावै कोय।
मृतक होइ के जो रहे, मानिक लावै सोय॥

समुद्र में बतखें भी हैं, मछलियां भी हैं, बगुले भी हैं, हंस भी हैं। महात्मा कबीरदास जी कहते हैं किः

हंसा बगुला एक सा, मानसरोवर माहिं।
बगुला माछुली चुगे, हंसा मोती खाहिं॥

देख लो! कोई विरला हंस है जो अन्दर जाए। वो मोती चुगता है। सब मछलियां खाने वाले हैं। सोच लो! कोई भी ऐसे नहीं मिलती। सब कुछ इसके अन्दर है। इन मछलियों ने फंसा रखा है।

पाठी–मांस, अण्डे, खट्टे, मीट्ठे, चटपटे और मसालेदार पदार्थ और रसदायक पदार्थ खाते-खाते मनुष्य उनका गुलाम बन जाता है। तरह-तरह के रसों में फंस जाता है।

मैनेजर साहिब जी– इनके गुलाम पड़े हुए हैं। देख लो! क्या-क्या नहीं करवाते? वहाँ हमारे किले में एक अफसर था। अब किले में हर चीज़ होती है। उसने आम उठाया और टट्टीखाने में जाकर खाया। किसने चोरी करवाई? देख लो! उसके गुलाम हो गए। सारी दुनिया गुलाम हुई पड़ी है।

पाठी–फिर इन रसों के समान को पैदा करने के लिए ज़ोर ज़ुल्म पर उतर आता है और यहाँ तक कि इतना बेरहम हो जाता है कि अपने जैसे बने मनुष्य का गोश्त खाने से भी परहेज़ नहीं करता।

मैनेजर साहिब जी– देख लो! परहेज़ नहीं करता। खाया है लोगों ने, अखबारों में भी आया है। अजमेर ने चिट्ठी लिखी थी वहाँ से, जब अमरीका गया कि वहाँ बन्दर को जीवित लेकर किसी वलटोही वगैरह में डालकर ऊपर से खूब गर्म पानी डालते हैं। फिर उनका मग़ज़ निकाल कर खाते हैं कि उनका दिमाग चुस्त हो जाए। उसका दिमाग चुस्त है न इसलिए इसका दिमाग भी चुस्त हो जाएगा। यह हालत ऐसी है। हाय! हाय! पूज्य मैनेजर साहिब हंस कर कहने लगे कि यह नहीं नाचेगा जब दिमाग चुस्त हो जाएगा? यह भी नाचेगा। दिमाग चुस्त हुए तो यह गड़बड़ी देख लो! हाँ बता भई! देखो तो सही यह हाल हो गया! आदमी को आदमी खाता है। अखबारों में आया है।

पाठी– चल हंसा उस देश समुंद जहां मोती रे।

मैनेजर साहिब जी– यह विषय विकार छोड़े तो अन्दर जाए। कैसे जाए? बाहर के रस छोड़े तो अन्दर जाए। कैसे जाए? देख लो! और काम है। लड़का पढ़ता है दिन रात लगा रहता है। रोटी भी भूल जाती है। खाता नहीं कि नींद आएगी। तब विद्या आती है। यह भी ऐसे ही है। यह देख लो।

पाठी– समुंद यहाँ मोती रे, चल हंसा.....

मैनेजर साहिब जी– यहाँ आने से रास्ता शुरू होता है। लेकिन जो आला मोती है वह दूर है। यहाँ से मार्ग शुरू होता है। जो आला अमृत है यहाँ से शुरु होता है। गुरुनानक साहिब ने लिखा हैः

नौ दरवाज़े कोट दे दसवां नूर महल।
हौज़ हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

यह मन्दिर है। इसके नौ दरवाज़े बाहर हैं, दसवां अन्दर खुलता है। वहाँ अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। आला से आला और दूर है कमल का देखो! जिसे दसवां द्वार कहते हैं। यह करने नहीं देता मन। लफ्ज़ो-लफ्ज़ो में जकड़ी पड़ी है दुनिया। राम,

अल्ला, वहिगुरु कोई चीज़ है, वो देखे तो है। रोटी-रोटी कहने से तो पेट नहीं भरता, रोटी बनाए तब है। भाई गुरुदास जी ने लिखा है खांड-खांड कहने से मुंह मीठा नहीं होता।

'खांड-खांड कहि मीठो स्वादु न आवे॥' (भाई गुरुदास जी)

रसना राम कहित तहि थाको।

पानी कहित कबहूं पिआस बुझत है, पियास बुझत जब चाखो॥

(यारी साहिब)

जप-तप कर-कर मर गई दुनिया पर अन्दर न गई। ख़्याल ही नहीं कि राम भी कोई चीज़ है, वाहिगुरु भी कोई चीज़ है, अल्ला भी कोई चीज़ है। उसको अन्दर प्रगट करना था। अन्दर जाए तो रस ले।

प्राणी हरि जपि जनमु गइओ।

साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइओ॥ (1126/1 मः1)

पाठी– जब चलने की करी तैयारी, माया जाल फंसा अतिभारी।

मैनेजर साहिब जी– फिर माया घेरती है। रिद्धियां-सिद्धियां आ जाती हैं या तो किसी को कंगाल कर देगा काल, कि रोए-पीटे कि रोटी नहीं चलती या फिर इतना ज़्यादा दे देगा कि उलझा देगा या फिर रिद्धियां-सिद्धियां पकड़ लेती हैं। रुकावटें भी बड़ी हैं।

पाठी– जब चलने की करी तैयारी, माया जाल फंसा अतिभारी।

करती सोच विचार, घड़ी दो सोती रे।

चल हंसा.....

मैनेजर साहिब जी– यह रिद्धियां-सिद्धियां सब धोखे हैं, सब धोखे हैं। मन की शक्तियां हैं।

पाठी–''इस मन को काबू करना सबसे बड़ी करामात है। करामातें सब मन के खेल हैं। जब मन की शक्ति जाग उठती है तो ऐसी शक्तियां पैदा हो जाती हैं जो सब काम कर सकती हैं। चलती गाड़ी को खड़ा कर दे, किसी को लड़का दे दे, किसी को मार दे। किसी को बीमार कर दे, किसी को अच्छा कर दे, किसी को आसमान में उड़ा दे इत्यादि। यह तमाम करामाते हैं।

मैनेजर साहिब जी– पाखंड में कुछ नाहीं रे साधो, पाखंड में कुछ नाहिं रे॥

पाखंडिआ नर भोगे चौरासी खोज करो घट माही रे॥

लाखों रूप बना ले, आसमान में उड़ जाए, चिता जला कर बैठ जाए, जल

पर बैठ जाए। सब पाखंड है। यहाँ कोई ज़रा सी रिद्धि-सिद्धि दिखा दे सारी दुनिया उलट पड़ेगी।

पाठी– यह सभी चमत्कार और करामाते मन के खेल हैं। जिस तरह एक गरीब इन्सान को यदि अनायास ही पद व धन प्राप्त हो जाए तो वह अपनी मान बड़ाई और शोभा बढ़ाने व दूसरों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए किसी पर अत्याचार करने लगता है तो किसी को अनुचित रियायत देने लगता है और इस प्रकार कानून की हद को तोड़कर नुकसान उठाता है। इस तरह कुदरत की ताकतों का अनुचित प्रयोग भी चमत्कार और करामाते हैं। यह ज़ुल्म और कहर है जिसकी सज़ा भुगतनी पड़ती है और मन की यह शक्ति नष्ट हो जाएगी। अक्सर निचले दर्जे के फकीर या तो माया इकट्ठी करने के लिए या अपनी मान प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए इनका प्रयोग करते हैं। बम्बई के एक प्रसिद्ध फकीर श्री मेहरबाबा लिखते हैं कि ''जो जोगी अपनी ताकत का प्रयोग लोगों या शासकों को खुश करने के लिए करते हैं, वे मौत के बाद पत्थर या धातुओं की योनियों में जाते हैं।

मैनेजर साहिब जी–उनका यह हाल है फिर।

पाठी– विकास क्रम में तरक्की करते-करते, लाखों बरस बाद फिर वह इन्सान बन पाते हैं। सच्चे सन्त या फकीर अगर करामात दिखाकर लोगों को शिष्य बनना चाहे तो सारी दुनिया ही उनके पीछे भागने लगेगी। उनके लिए करामातें दिखाना कोई मुश्किल काम नहीं लेकिन सच्चे सन्तों का मार्ग नहीं।''

मैनेजर साहिब जी– हर रोज़ पढ़ते हैं।

पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ॥
पंखी होकर असमानों पर जाओ।
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ॥
बिना खाए पीए ज़िन्दा रहे।
भी तेरी कीमति न पवै हउ केवडु आखा नाउ॥ (14 मः 1)

फिर भी नहीं समझो कि उसके पास नाम आ गया। यह इतनी बड़ी ऊँची चीज़ है। यह नाम की दौलत हासिल करनी थी। जिसके लिए मीरां ने कहा हैः

पाइयो रे मैंने नाम रतन धन पायो।
जिसको पाये दुख सुख भूले, मन आनन्द रे समाइयो।
जिस की चोरी कबहूं न होवै, ऐसा धन मैंने पायो।
खरचों लाख खत्म न होवै, दिन-दिन बढ़त सवाइयो। (मीरांबाई)

इस भक्ति को सब भूले हैं। नाम की शक्ति सब जगह काम कर रही है।

नाम के धारे सगले जन्त॥ नाम के धारे खण्ड ब्रहमँड॥

(284/11 मः 5)

अभी सुनाया था दारमदारी सतगुरु। वही सबको ताकत दे रहा है। यह कीमती बात है समझने की। आप को गर्वनमेंट ने लाइट दे दी। इससे बल्ब जला लो सुख ले लो, ट्यूबें जला लो सुख ले लो, पंखे चला लो सुख ले लो, कारखाने चला लो सुख लो। अगर हाथ लगाओ तो साड़ेगी भी? वो करंट सबके अन्दर है। हम ने लगाया है काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार पर इसलिए सड़ रहे हैं। अगर शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज विवेक, दीनता, गरीबी पर लगाएँ तो शान्ती आ जाए। फिर जैसे इन्होंने कारखाने चलाये, किसी ने रूई का, किसी ने कपड़े का, किसी ने प्लास्टिक का, किसी ने जूतीयों का, किसी ने कोई, किसी ने कोई बिना करंट के तो नहीं चलता। फिर मालिक की दरगाह में पहुँच जाए। फिर जो मर्ज़ी करो। सब दुकानें खुली हैं बाजार में न, इस तरह यह भी खुली है भक्ति की। भूतों के पास जाना है वो कर लो, पितरों के पास जाना है वो कर लो, देवी-देवतों के पास जाना है, नरकों में जाना है खूब विषय भोगें, छुटकारा करना है तो यह कर लो। सब दुकानें खुली हैं।

पाठी– चाल पड़यो तब दुविधा छूटी, पिछली प्रीत कुटुम्ब से टूटी,
हंसन किया उड़ान हंसनी रोती रे॥
चल हंसा.....

मैनेजर साहिब जी– यह कुटुम्ब की प्रीत क्या? यह भी छूट भी जाती है। पर यह छोड़ना नहीं चाहता। यह लेने देने भी खत्म करने हैं। रहने का तरीका क्या है? बच्चा पैदा हुआ चाहे लड़की या लड़का उसकी मौज़, बीमार हो गया उसकी मौज़, राज़ी हो गया उसकी मौज़, मर गया तो उसकी मौज़। यह रहने का तरीका। और कर भी क्या सकता है। उसकी रज़ा में रहे। यह लेने देने के सम्बन्ध हैं और क्या हैं? वो मालिक की मौज़ में रहे। हरदम सेवादार बन कर रहे। जैसे राजा जनक ने किया देखो! सुखदेव को अहंकार था कि मैं त्यागी हूँ। पहले तो जाता ही नहीं था राजा के पास, उसने उसके त्याग की पोल खोल दी। एक आदमी आया कहने लगा कि जी शहर में आग लग गई। वो कहने लगे कि हरि इच्छा। फिर आदमी आया कहने लगा कि जी आग गांव में आ गई, कि जी हरि इच्छा। फिर कहने लगे कि महलों में आ गई, कि हरि इच्छा। फिर कहने लगा कि जी पास कमरों

में आ गई, कि हरि इच्छा। उसने सोचा कि हरि इच्छा-हरि इच्छा कर रहा है, करता कुछ भी नहीं। वो अपना डण्डा झोली उठाकर भागा। राजा जनक ने पकड़ लिया। मेरे तो महलों के महल सड़ गए और तुझे झोली डण्डे की पड़ी है। यह रहने का तरीका है। उसकी रज़ा में रहे और भजन सिमरण करे बस! हाँ जीः

पाठी– चाल पड़यो तब दुविधा छूटी, पिछली प्रीत कुटुम्ब से टूटी।
हंसन किया उड़ान हंसनी रोती रे।
चल हंसा.....

मैनेजर साहिब जी– देख लो! माया रोती है कि मेरे हाथ से निकल गया। सब को फंसा रखा है इसने।

पाठी– जाय कर किया समुंद पर बासा। फिर नहीं आवण की आसा।
गावै भवानी नाथ, मौत सिर जोती रे।
चल हंसा उस देश समुंद जहाँ मोती रे.....

मैनेजर साहिब जी– यह पढ़ भई! वो शक्तियां आकर घेरती हैं रूप धार कर। उसको भेजा कि गिराओ पलटू को, वह जा रहा है। उसने बड़ा ज़ोर लगाया।

पाठी– अपसरा कहे पुकार सुनो सतवचन हमारा।
बनीया डिगै को नाहिं उहाँ न अमल तुम्हारा।
अपना चाहे भला जाय के लावहु सेवा।
उलटि दे बैकुंठ बचे न सुर मुनि नर देवा।
पलटूदास अपार पार न पावै कोई।
कहे अपसरा सोर देवतौं उतरन होई॥

मैनेजर साहिब जी– यह सबको घेरती है तरह तरह के रूप धार कर। घरों में देखे होंगे प्लास्टिक के गमले और फूल? इनसे भी खूबसूरत हैं। यह तो मुरझा जाएंगे, वो मुरझाते ही नहीं। पकड़ लिया न असलीयत से नकल ने। बस! इस तरह सब को पकड़ा है नकल ने, देख लो।

पाठी– जाय कर किया समुंद पर बासा। फिर नहीं आवण की आसा।
गावै भवानी नाथ, मौत सिर जोती रे।
चल हंसा उस देश समुंद जहाँ मोती रे.....

मैनेजर साहिब जी– चलो भई बस! प्रशाद लाओ।

पाठी–'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

हमारे पास एक प्रेमी था। मैनेजर साहिब जी से नाम रास्ता लिया था। उसने

सुबह उठकर बताया कि भई! अब मेरी चलने की तैयारी है। गांव के डॉक्टर ने टीका लगाने की सोची। तो बोला कि भई! टीका किस को लगा रहा है कि मैंने तो जाना है। बाद में शहर में भी लाए। डॉक्टर ने टीका लगाने की सोची तो कहने लगा कि भई! सब लेना देना खत्म है। टीका काम करेगा नहीं और धन धन सतगुरु का नारा लगाकर शरीर छोड़ दिया तो यह सब मैनेजर साहिब जी की दौलत है।

मैनेजर साहिब जी– सतगुरु की मेहर है वो जाने। जिस का काम है वो आप जाने।

पाठी– शाह मस्ताना जी तेरी जात बड़ी है ते बे-परवाह होवे तूँ।
बगदी नदियाँ नूं थल करें ते चलदियाँ नूं सुखावे साइयां।
जग रूसे बंझे साइयाँ कदी न रुस्सीं तूँ।
सारे नजरां फेरियां ते दुश्मन हुआ कुल जहाँ।
चोला तेरे प्रेम दा ते दुनियां करे सलाम।
सारे नजरां फेरियां ते दुश्मन हुआ कुल जहाँ।

अगर मेरा मुर्शिद रुस्स जाए उसको जगह नहीं मिलेगी कहीं। जिसका मौला राज़ी होगा पुत्र तेरा मौला तेरे से राज़ी है। तो बंदे प्रेम करते हैं नहीं तो बंदा एड़ी से चोटी तक गंदा ही गंदा है। तेरा कोई मित्र नहीं बनता। सब मतलब के यार वो नाम प्राप्त होगा जो खण्ड ब्राह्माडों के पार ले जाएगा। तुलसी दास जी फरमाते हैं–

ईश्वर नाम अनमोल है सीस नीचे झुकाए।
जो सन्त की शरण में आवे तो वो नाम पाए॥

फिर क्या?

है घट में सूझत नाही लानत ऐसी जिंद।
तुलसी इस संसार को भया मोतिया बिंद॥

(तुलसी साहिब)

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

सत्संग

'जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए'

सत्संग के बचन

शब्द पाठीः–

कारन करन करीम। किरपा धारि रहीम॥1॥
कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ॥ कोई सेवै गुसंईआ कोई अलाहि॥2॥
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ॥ कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ॥3॥
कोई पढ़ै वेद कोई कतेब॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद॥4॥
कोई कहै तुरकु कोई कहे हिंदू॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदु॥5॥
कहु नानक जिनि हुकमु पछाता॥ प्रभु साहिब का तिनि भेदु जाता॥6॥

(885/8 मः5)

मैनेजर साहिब जी– वह सब गुणों से भरपूर है। सबके अन्दर है और सबके अन्दर उसकी जोत प्रकट है।

अव्वल अल्लाह नूर उपाइया कुदरत के सब बंदे।
एक नूर से सब जग उपजिया कौन भले को मंदे॥

सबके अन्दर है। हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो ईसाई हो, सबके अन्दर उसकी जोत काम कर रही है। हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो, ईसाई हो सबकी पैदाइश का एक ही तरीका है। सबकी मौत का भी एक ही तरीका है। सोच लो! इसलिए मालिक को मिलने का भी एक तरीका है। वह आज का नहीं जब से दुनिया बनी है, उसी वक्त का बना है कोई नया नहीं है। सतयुग में भी वही था, त्रेता में भी वही था, द्वापर में भी वही था, कलयुग में भी वो ही है। उस रास्ते का हमें सही पता नहीं लगा। इसी कारण हम चौरासी में भटकते फिर रहे हैं। सोच लो! बड़े-बड़े जप किये, तप किये, जप किये, जोग किये, पुण्य किये, दान किये, कौमों मज़हबों के ठेके लिये। सोच लो! तीर्थों में गये, छुटकारा नहीं हुआ। साठ-साठ हज़ार साल तप किये, मन को काबू नहीं किया। काम काबू नहीं किया। ऋंगी

ऋषि ने अड्डासी हज़ार साल तप किया सोच लो! मन को काबू नहीं किया। पाराशर जी पूर्ण योगी होकर आये। योग करना कोई आसान काम नहीं। बहुत तकलीफें आती हैं, बहुत कष्ट आते हैं। मन काबू ना किया। बड़े-बड़े गुरु किये। सोच लो! बड़े-बड़े गुरु किये। करते ही आ रहे हैं। फिर भी छुटकारा नहीं हुआ। मछन्दर ने भी किया। वह इस शरीर से निकल जाता था। इतनी शक्ति थी। मन ने कहा राजपाट करें, विषय भोगें। किसी राजे का देहान्त हुआ। अपनी रूह को उसके जिस्म में प्रवेश करके विषय भोगे। सोचो! वह रास्ता ही अलग है। वह चीज़ ही अलग है।

खंड पाताल दीप सभि लोआ। सभि कालै बसि आपि प्रभि कीआ॥

(1076/1 मः5)

काल एक शक्ति है जो मालिक ने आप ही पैदा की है। जितने खण्ड, ब्राह्मण्ड हैं काल के ही सर्पुद किये हैं। रचना का काम उसके सर्पुद है। उसने रचना चलानी है। पहले दो ताकतें पैदा कीः

काल अकाल खसम का कीना इह परपंच वधावन॥

अकाल वह ताकत है जिसको हम सत् ताकत कहते हैं, सतपुरुष कहते हैं, सतगुरु कहते हैं। काल का दायरा फना का है। उसको सृष्टि बनाने का हुक्म है। उसने सृष्टि को चलाना है। चलाने के लिए उसने क्या किया है? आत्मा को लेकर तीन शरीरों में कैद किया है। पहला कारण शरीर है, उसके ऊपर सूक्ष्म शरीर है, उसके ऊपर अस्थूल शरीर है। और उसने क्या किया है? पाप और पुण्य के जाल में फंसा दिया है।

पाप पुनु बीज की पोट। (152/11 मः1)

यह बीज है जिसके सहारे दुनिया चल रही है। अच्छे कर्म और बुरे कर्म यह बीज है। इसके सहारे सारी दुनिया चल रही है।

महात्मा चरण दास कहते हैंः-

पाप पुण्य के सत्य ही ठहर रहा ब्रह्मँड॥
इन दोनों के मिटत ही होत खंडू खँड॥
विरले जन को होत है पाप पुण्य की सूझ॥
सोई उतरे भव जाल से बहुते रहे आरूझ॥

सारी दुनिया इसके बीच उलझी है। पाप को तो सभी बुरा कहते हैं। किसी ने पुण्य को भी कहा है? वह भी इसके लिए हथकड़ी है। कृष्ण भगवान ने कहा

है, अच्छे कर्म और बुरे कर्म दोनों ही हथकड़ियां हैं। एक सोने की समझ लो एक लोहे की, है तो हथकड़ी! किसी को फर्स्ट क्लास जेल मिली, किसी को सेकिण्ड क्लास, रहा तो जेली का जेली, छुटकारा तो नहीं हुआ!

काया अन्दर पापु पुनु दुई भाई। दुहीं मिलिकै सृष्टि उपाई॥
दोवै मारी जाई इकतु घरि आवै। गुरुमति सहज समावणियां॥

जितने भी हमारे शरीर हैं पाप और पुण्य के बने हैं। काले, गोरे, अन्धे, काने, जो भी लगड़े, लूले ये सब कर्मों के हिसाब से बने हैं। इससे निकल कर ही छुटकारा हो सकता है। त्रिलोकी तक कर्मों का जाल है। किसी को भी सुख नहीं है।

पपीहा जाये पुकारिउ पंछीअन आगे रोये।
तीन लोक फिर आइयो हूं बिन दुःख लखिउ न कोय॥

सारी दुनिया जप-जप कर मर गई। कहते हैं ये छोटा सा शब्द सारा निचोड़ निकाला है। कोई राम राम जपता है। कोई अल्ला-अल्ला करता है। कोई खुदा-खुदा जपता है। कोई कुछ जपता है। लफ्ज़ जपकर सारी दुनियां चली गई। किसी को कुछ नहीं मिला। लफ्ज़ कहाँ तक काम करते हैं।

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि॥
ऐ अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन माहि नाहीं॥

(340/3 कबीर)

सोचो! जिस वक्त मौत आई, इसकी चेतन सत्या निकलती है। ये शरीर से निकला, सारा शरीर खाली हो गया। जब ज़ुबान से निकली इसका बोलना खत्म हो गया। कानों से निकली इसका सुनना खत्म हो गया। आंखों से निकली इसका देखना बन्द हो गया। ये लफ्ज़ तो यहाँ ही काम नहीं करते। ये बोलीयां तो यहाँ ही काम नहीं करती हैं। बाकी इसके साथ क्या गया? हमारी पंजाबी बोली इग्लैण्ड में काम नहीं नहीं करती। अगर वहाँ जाना हो तो पहले वहाँ की बोली सीखो। अमरीका में काम नहीं करेगी, जर्मनी में काम नहीं करेगी। अगर इन लफ्ज़ों में हो तो मालिक की एक कौम से दोस्ती हो जाए और एक कौम से दुश्मनी। सोच लो! यह लफ्ज़ों में नहीं है। कहते हैं। सारे जप-जपकर चले गये। कोई तीर्थों पर स्नान करते हैं। कोई हज को जाते हैं। किसी की भी मैल साफ नहीं हुई। तीर्थ क्या हैं? जहाँ जहाँ सन्तों, महात्माओं ने भक्ति की, वो स्थान तीर्थ बन गये। वहाँ पर भक्ति भाव की लहरें थी। मन को शांती आती थी। लेकिन फकीरों का शरीर ही चला गया। यह चीज़ कौन-सी कायम रहने वाली है? पानी से नहा-नहाकर

थके, सोचो! किसी की भी मैलें साफ हुई? मन काबू हुआ? काम काबू हुआ? क्रोध, लोभ काबू हुआ? कुछ तो हो? कुछ शांती आये? दो हज़ार साल पहले ईसाइयों के तीर्थ नहीं थे। 13-14 सौ साल पहले मुसलमानों के नहीं थे। 5-6 सौ साल पहले हमारे (सिखों के) नहीं थे। तीर्थों को बनाने वाले सन्त हैं। फिर कहते हैं कोई तुरक बना, कोई हिन्दू बना, कोई स्वर्ग की इच्छा रखता है तो कोई नरक की। किसी का भी छुटकारा नहीं हुआ। स्वर्गों में गये, नरकों में गये। वहाँ के सुख दुःख भोगे फिर चौरासी तैयार है। कृष्ण भगवान ने कहा है! हे उधो! ये जो कीड़ा जा रहा है, कई बार स्वर्गों का राजा इन्द्र बना, कई बार सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा बना, आज ये कीड़ा है। फिर उन स्वर्गों का क्या फायदा है? सोचो!

इँद्रपुरी महि सरपर मरणा। बहमपुरी निहचलु नहीं रहणा॥
सिवपुरी को होइगा काला। त्रैगुण माइआ बिनसि बिताला॥

(237/8 मः5)

सारे चक्कर में हैं। छुटकारा किसका हुआ?

कहु नानक जिनि हुकमु पछाता प्रभु साहिब का तिनि भेदु जाता॥

हुक्म क्या है? सारी दुनिया उस मालिक के हुक्म से बनी है। हुक्म एक आवाज़ है, एक हुक्म है, शब्द है। नाम वाणी, अमृत, अकथ कथा एक ही चीज़ के नाम है। भाणा कहते हैं किसी की मौज़ को। मौज़ कब ज़ाहिर होती है? जब हुक्म करे।

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई॥
हुकमी उत्तमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि॥
इकना हुकमी बख्सीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि॥
हुकमै अंदरि सभु बाहरि हुकम न कोइ॥

(जपुजी साहिब)

जब हुक्म से ही सब कुछ हो रहा है तो झगड़ा किस बात का है, बोलो भई? सब झगड़े यहाँ ही खत्म हो जाते हैं अगर वाणी को विचारें। अगर ये सब यहाँ खत्म हो जाये बाकी सवाल ही क्या रहा?

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ॥
नानक हुकमै जे बूझै त हउमै कहै न कोइ॥ (जपुजी साहिब)

अगर उस हुक्म को विचार लें तो झगड़े ही खत्म हो जाएं। असली भक्ति उस हुक्म को विचारना है। हुक्म क्या है? कब ज़ाहिर होता है? जब कोई बोले, शब्द।

सबदे धरती सबदे आकास॥ सबदे सबदु भइआ प्रगास॥

(जन्म साखी पन्ना 19)

ये कुदरती आवाज़ है। शब्द की लहर को कहते हैं नाम।

नाम के धारे सगले जँत॥ नाम के धारे खँड ब्रहमँड॥

(284/11 मः5)

एक ही चीज़ के नाम हैं। जो बारीक से बारीक हो जाती है। उसको कहते हैं धुन। क्योंकि वह एक आवाज़ है इसलिए उसको वाणी कहा है। वह वाणी युगों-युग से चली आ रही है। वह शब्द भी युगों-युग से चला आ रहा है।

बाणी बजी चहुं जुगी सचो सचु सुणाइ।

युगों-युग से आ रही है। सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। शब्द कहो, नाम कहो, वाणी कहो सबके अन्दर है। यह एक करंट है। जैसे बिजली की करंट आ रही है। पंखों को, बल्बों को, सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। वो भी देती है। हमें दिखाई नहीं देती लेकिन सबके अन्दर वह करंट है। यहाँ पर कोई कलकत्ते में बोलता है, बम्बई में बोलता है, अमृतसर में बोलता है, इंग्लैण्ड में बोलता है, एक मिनट में आवाज़ सब जगह फैल जाती है। सोचो! इस तरह मालिक की आवाज़ भी सब जगह है। वह हुक्म सब जगह है।

चहुदिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं॥
सभ महि सबदु बरतै प्रभ साचा करमि मिलै वेआलं॥ (1275/10 मः1)

सबके अन्दर रेडियो वेवज की तरह सब जगह है।

रोमि रोमि रविआ हरि नामु। (1144/3 मः5)

रोम-रोम में है, ज़र्रे-ज़र्रे में है। है सब जगह। अब हमारे रेडियो वेवज हैं। लेकिन हम सुन नहीं सकते। जहाँ रेडियो है। हम स्विच लगाते हैं, और आवाज़ सुन लेते हैं। इसी तरह मालिक की आवाज़ भी सब जगह है। उसके सुनने का तरीका भी इसके अन्दर ही है। उस हुक्म के सुनने, शब्द के सुनने का तरीका इसके अन्दर है। वह लिखने और पढ़ने में नहीं आता। ये बाणी बता रही है कि हमारे अन्दर एक और बाणी है।

घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम। (293/16 मः3)

वह शब्द इसके अन्दर है। वह नाम इसके अन्दर है।

नउ निधि अँम्रितु प्रभ का नामु। देही महि इसका बिस्राम॥

सोच लो!

काइआ नगरी सबदे खोजे नामु नंव निधि पाई। (910/1 मः3)

वह शब्द, नाम हुक्म इसके अन्दर है।

हुकमु बूझै सोई परवानु॥ साचु सबदु जा का नीसानु॥ (386/2 मः5)

उसका निशान क्या है? अन्दर शब्द को प्रगट करना है। वह सारे ही है। उसके सुनने का तरीका भी इसके अन्दर है। यह एक घड़ी है। यह टिक-टिक कर रही है। लेकिन सुनाई नहीं देती। अगर हमने आवाज़ सुननी है तो हम कहते हैं चुप करो भई! फिर हमें थोड़ी-थोड़ी आवाज़ सुनाई देती है। कई बार आपने देखा होगा हम खाट पर पड़े हैं। हमें ऐसे मालूम होता है कि घंटीयां बज रही हैं। है वही घड़ी। सोच लो!

इसी तरह वह आवाज़ मालिक की सब जगह है। सुनने का तरीका इसके अन्दर है। मगर हम कैसे, कब सुन सकते हैं। जब हम कहते हैं सारे चुप हो जाओ। सां-सां की आवाज़ भी न हो। इसकी भी सां-सां न हो और सब ताल्लुक टूटें। यह जीवत मरने का सवाल है। तन का प्यार छूटे, विषय विकार छूटें, तन से निकलें, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करें। यहाँ पर उसके सुनने का तरीका है। यहीं गुरु अमरदास ने कहा हैः

नउ दर ठाके धावतु रहाऐ॥ दसवै निज घरि वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद बजहि दिनु राती॥ गुरमती सबदु सुणावणिआ॥

(124/13 मः3)

यह असली मन्दिर है। यह असली गुरुद्वारा है।

हरि मंदरु एहु सरीरु है। गिआनि रतनि परगटु होइ॥ (1346/4 मः3)

बाहर के हमने बनाये हैं। यह मालिक ने बनाया है। इसके अन्दर खुदा बैठा है और आवाज़ें दे रहा है।

"Body is the temple of God."

यह ईसा मसीह ने कहा है। ये मुसलमान फकीर कह रहे हैंः

मसजिदे कोरा जे आबोगिल बबद्द।
मस्जिदे साहिब दिलां दर दिल बबद्द॥

कि जाहिलों की मस्जिद मिट्टी और पानी की बनी है। साहिब दिलों की यह दिल है। इसके अन्दर आये।

'नउ दर ठाके धावत रहाए'

इसके बाहर नौ दरवाज़े हैं। कौन से? दो आंखें, दो कान, चार। दो नाक

के छः, एक मुंह, सात, दो टट्टी पेशाब के। दसवां इसके जाने के लिए इसके अन्दर है। अब हम नौ दरवाज़ों में भटक रहे हैं। आंखों से नये-नये सरूप देख रहे हैं और गन्दे ख़्याल अन्दर ले जा रहे हैं। ये मकान ऐसा है भरता ही नहीं, सोच लो! दुनिया भर के सरूप इसके अन्दर हैं। कानों से सुन-सुनकर ख़्याल अन्दर ले जा रहे हैं। ज़ुबान से खट्टे, मिट्ठे स्वादों के संस्कार अन्दर ले जा रहे हैं। मेन तीन दरवाज़े हैं। आंख, कान और मुंह। तभी उन्होंने कहा है। *'नौ दर ठाके'* बन्द करके बैठ जाये। अब मन इधर-उधर भटकता फिरता है, *'धावत रहाये'* इसको रोको। *'दसवें निज घर वासा पाये'* यहाँ पर ख़्याल को रोको। आंखों के पीछे यहाँ ख़्याल को रोको। यहाँ अगर टिक जाये *'ओथे अनहद सबद बजे दिन राती'* दिन-रात मालिक की दरगाह से आवाज़ आ रही है कि आ बच्चा तूझे ले चलें। वो हुक्म है, शब्द है, नाम है। अगर उस शब्द से तल्लक पड़ जाये तो इसको घर का रास्ता मिल जाये।

'सबदी मिलहि तां हरि मिले सेवा पवै सभ थाई'
सुरत शब्द में राखीऐ तब पहुंचे दरबार।
कहे कबीर तहां देखीऐ बैठा पुरुष हमार॥

गुरुनानक साहिब मक्के गये। फकीरों का जात-पात से कोई ताल्लुक नहीं। यह बाद में बने हैं। वो तो हमें इनसे निकालने आते हैं। हम फिर फंसते ही जा रहे हैं। वो तो अधिकारी रूहें देखते हैं। वहाँ पर तो हिन्दू, मुसलमानों का सवाल ही नहीं। स्कूल, कॉलेज हैं, डॉक्टरी है। वो अधिकारी रूहों को दाखिल कर लेते हैं। इंजीनियरिंग है, उसको दाखिल कर लेते हैं।

इसलिए यह भी उनके लिए है। यहाँ पर भी न हिन्दू, न मुसलमान का सवाल है, न ही किसी और का। यहाँ पर तो अन्दर जाने का सवाल है। वहाँ पर शब्द को, वाणी को मुसलमाने ने कलमा कहा है, कलामे ईलाही कहा है, बांगे आसमानी कहा है। ईसा ने वर्ड कहा है। एक ही चीज़ के नाम हैं। जब गुरुनानक साहिब वहाँ (मक्का-मदीना) गये, वो (काज़ी रुकनदीन) बागें दे रहा था। तो मालिक के मिलने की बात चली। मालिक कहाँ रहता है? गुरुनानक साहिब ने कहा कि मालिक इस जिस्म (शरीर) में रहता है। उसके महल के कितने दरवाज़े हैं कितनी खिड़कियां हैं? कितने किंगरें हैं? कितने बुर्ज हैं? तो फिर गुरु नानक साहिब ने कहाः-

नौ दरवाज़े कोट दे दसवां नूर महल॥
हौज़ हयाती पुर भरे तिस विच कमल अचल॥

कि इसके नौ दरवाज़े हैं। *'नौ दरवाज़े कोट दे'* ये कोट है बाहर। जैसे किलों

के कोट देखते हैं। मिसालें दी हैं फकीरों ने। इसके अन्दर अमृत के हौज़ भरे पड़े हैं। आला से आला है कमल का। जिसको हम दसवां द्वार कहते हैं। वो आला से आला है। वो अमृतसर है। वहाँ अमृत का सरोवर है।

गिर्द महल दे कोट है। बावन किंगरे तिस॥
किंगरे-किंगरे तोपची, बड़न ना दिदें किस॥

महलों में जायें। हम किंगरें देखते हैं। उनके बीच सुराख होते हैं। पुरानी मिसाले हैं। उस टाईम ये ही ज़माना था। वहाँ पर तोपची बैठ जाते थे। क्योंकि कोई तोपची हमला न करे। उसको दूर से रोकते थे।

सात समुंद्र खाईयां नदियां अंत न पार॥
कई रखवाले सूरमे प्यादे ते असवार॥

बाहर खाईयें खोदते हैं ताकि दुश्मन न आ सके। अन्दर भी हैं।

सात समुंद्र खाईयां नदियां अंत न पार॥
कई रखवाले सूरमे प्यादे ते असवार॥

बाहर की प्यादों पर असवार फौजे हैं। ये अन्दर भी हैं। लेकिन हमें पता नहीं है।

बारां बुरज महल दे, नौ दरवाज़े नाल॥

बारां बुरज कौन से? एक ये, एक ये हिस्सा, एक ये हिस्सा, तीन। तीन ईधर; छः। छः लातों के बारह। *"नौ दरवाज़े नाल"*

पांच खवास हैं पाहरू चौकी देन समाल॥

पांच कौन से खवास? ये विषय विकार। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार है। ये अन्दर जाने नहीं देते। हम इनका ही काम करते हैं। हमारे से ज़बरदस्ती करवा रहे हैं। हमें पता ही नहीं। सोच लो! इनका ही काम करते हैं। हमारा कोई काम नहीं है। हम कहते हैं बाल बच्चों का काम करते हैं। या अपना करते हैं या कौमों मज़हबों का करते हैं। किसी का भी नहीं करते। सब मिट्टी का काम करते हैं। कोई इसका अपना काम नहीं।

औरतें इसकी काम की, बाल-बच्चे मोह के, ज़मीन-ज़ायदादें लोभ की, मान-बड़ाई अहंकार की, दुश्मनी क्रोध की, आत्मा का कौन-सा काम है? बोलो! और हमारे से ज़बरदस्ती करा रहे हैं। इसको पता नहीं है। हम जेली हैं। आत्मा को हथकड़ियां लगी हुई हैं। ना आत्मा दिखाई देती है, ना ही काम-क्रोध दिखाई देते हैं और ना ही हथकिड़यां दिखाई देती हैं। दो सिपाहियों ने एक जेली को पकड़ा

है। वो कहते ये कमरा साफ कर, उसका बग़ीचा साफ कर, ये काम कर। करना तो नहीं चाहता लेकिन डण्डा करवाता है। इसलिए ये तो चाहता है मैं किसी के डण्डा न मारूं, जेलों में जाऊंगा, फांसी पर चढ़ेगा, लेकिन क्रोध मरवाता है कि नहीं? करो काबू कौन करता है? ये तो चाहता है चोरियाँ-ठगीयाँ ना करूं, लोभ करवाता है न! मान बड़ाई के पीछे एक दूसरे के कत्ल खून करता है। बोलो भई! करवाते नहीं! करो काबू कौन करता है? ये हमें अन्दर नहीं जाने नहीं देते। अपने काम में लगाये रखते हैं।

काम कहता है, अब तो जवानी है। भजन करने को तो बहुत टाईम है। एक बार फंसा, तो बस! लोभ कहता है पहले पैसा कमा ले, फिर बैठकर भजन करना। पहले तो होता नहीं, फिर तृष्णा और बढ़ जाती है। आगे से आगे, आगे से आगे। कोई बस नहीं चलता। मोह कहता है पहले बच्चे पाल ले। वो कमायेंगे और तूं बैठकर भजन करना। पहले तो उनका गुज़ारा नहीं। अगर हो भी जाये तो ज़बरदस्ती बीच में पड़ता है। सोचो! तुम ने ये काम किया या नहीं किया। सोच लो! ये ज़बरदस्ती हमसे करवाते हैं। ज़बरदस्ती पकड़ा है हमें पता नहीं है। क्रोध कहता है पहले दुश्मन को तो ठीक कर ले, इसने तुझे टिकने देना है? बस एक बार झगड़ा हुआ, कुलों की कुलें खत्म। सोचो! राम ने बाली को मारा! कब मारा? त्रेते में। द्वापर में आकर वो ही बाली ने कृष्ण रूप में मारा। ये संस्कार साथ जाते हैं। इसको पता नहीं। अब जिनसे दुश्मनी बनी है, वहाँ जायेंगे उनको मारेंगे। कभी ना कभी मारेंगे ज़रूर। ये जितनी दुश्मनी है, यह सभी क्रोध के काम हैं। बाकी रहा अहंकार। या तो कुछ करता नहीं, आकर कुछ जप, तप, थोड़ा पुण्य दान किया तो अहंकार खा गया।

तीरथ वरत ओर दान करि मन में धरै गुमान॥
नानक निहफल जात तिह जिऊ कुंचर इसनान॥

बस खत्म! किसके पल्ले रहा? बोलो! ये सारा ही बेड़ा गरक कर दिया।

'कीया कराइआ सब गया जब आया अहंकार'

सोचो! ये सभी छोड़े।

पांच खवास हैं पाहरू चोकी देन संभाल॥

सोचो!

एक महल दो बारीयां शिव शक्ति सुलतान॥

ये महल है। ईसा ने कहा है:

"Eyes are the Window of the soul."

आंखें रूह की खिड़कियां हैं। यह खिड़कियों से देख-देखकर काम करता है।

एक महल दो बारीयां शिव शक्ति सुलतान॥

खिड़की खोल दीदार देन बहुत वधायन मान॥

ये शिव शक्ति है। शिव नेत्र कह लो, तीसरी आंख कह लो। मालिक को देखने वाली आंख और हैः

नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनि डिसंदो मा पिरी॥

वो आंखें बन्द पड़ी हैं।

है घट में सुझत नाहीं लाहनत ऐसी जिंद।

तुलसी या संसार को भया मोतीया बिंद॥

बाहर बाले मोतियाबिंद का फ़िक्र है। 80-90 साल की उम्र है। कहता है अगर ठीक हो जाये तो मैं टट्टी पेशाब जोगा हो जावां। जो जुगों-जुग से बन्द पड़ी है, उसका किसी को फ़िक्र ही नहीं! वो कान और हैं जो मालिक की आवाज़, शब्द को सुनते हैं। यह शरीर तो यहाँ ही छोड़ जाना है। यह नाम इस दुनिया की चीज़ नहीं है। यह तो सूक्ष्म मण्डलों में जाकर मिलता है।

इसु जग महि नामु अलभु है। गुरमुखि वसै मनि आई॥

है ही नहीं इस दुनिया में बोलो! है ही नहीं इस दुनिया में। *'इस जग में नामु अलभु है गुरुमुखि वसै मन आई'* हम रोज़ पढ़ते हैंः

सतगुरु की सेवा सफल है जे कोई करे चितु लाइ॥

बंधन तोड़ै मुकति होई सचै रहे समाइ॥

सतगुरु की सेवा कौन-सी सफल है? ये सेवा नहीं जो हम करते हैं। यह तो खाने-पीने की चीजों से ताल्लुक रखती है। शरीर से ताल्लुक रखती है। यह भी अपनी हद तक ठीक है। मगर असली और है। ''बंधन तोड़े मुक्त होई सचै रहै समाय'' बंधन तोड़े? कौन से बंधन? मोटे बंधन। हैं तो अनेक बंधन इसको पता नहीं है। पहला तन का बंधन, औरत का, बाल-बच्चों का, कौमों-मज़हबों का बंधन, सोचो! फिर खानदान का, देशों का, अनेकों बंधनों में फंसा पड़ा है।

बंधन मात पिता संसारि। बंधन सुत कंनिआ अरु नारि॥

बंधन करम धरम हउ कीआ। बंधन पुतु कलतु मनि बीआ॥

बंधन बेदु बादु अहंकार। बंधनि विनसै मोह विकार॥

(416/14 मः1)

ज्ञानो का बंधन बोलो! ये जितने भी कर्म-धर्म हैं इसके लिए बंधन हैं। इसको पता नहीं है। यह तो समझता है कि मेरा छुटकारा है। किसी का भी छुटकारा नहीं है। सब बंधन में हैं।

करम-धरम सभि बंधना, पाप पुंन सनबँधु॥
ममता मोह सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु॥
जह देखा तह जेवरी माया का सनबँधु॥
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अँधु॥

(551/3 मः4)

सोच लो! सभी अन्धेरे में पड़े हैं।

सभि जप सभि तप सभ चतुराई। उझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बुझे कोई थाई न पाई। नाम बिहूणें माथे छाई॥

(412/2)

किसके माथे में सवाह है? कोई नहीं पूछता इसको। सोच लो! कितने-कितने बड़े जप किये, तप किये, किसी को पूछा, छुटकारा हुआ किसी का? सोचो! सोच लो! किसी का छुटकारा हुआ? ये सभी बन्धन हैं। गुरु अमरदास 72 साल की उम्र तक जप, तप, तीर्थ, व्रत सब कुछ करते रहे। बारह साल कड़ी से कड़ी मेहनत की। रात को किल्ली से केस बांधे। फिर अन्दर मालिक की प्राप्ति की। फिर क्या लिखते हैं, विचारते नहीं हमः

हरि की पूजा दुलंभ है संतहु कहना कछू ना जाई॥ (910/5 मः3)

ऐसे तो सारी दुनिया मालिक की पूजा करती है। मगर असली पूजा है जो दुर्लभ है। मुश्किल से मिलती है। उनको सारे ही तजरबे थे, क्यों? जप, तप, तीर्थ सब कुछ किये थे। इक्कीस बार गंगा स्नान को गये। सोचो! तजरबे के तौर पर लिखते हैंः–

संतहु गुरमुखि पूरा पाई। नामो पूज कराई॥ (910/5 मः3)

उस नाम की पूजा!

बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई॥ (910/9 मः3)

सोच लो!

बिणु नावै दरि ढोई नाहीं तां जमु करे खुआरी॥ (754/18 मः3)

जीआ रे ओल्हा नाम का।

अवर जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का॥

ये नीचे-नीचे की भक्ति है। इसका फल स्वर्ग तक है। असली और है। यही कबीर साहिब कहते हैंः—

नेम धरम, आचार यज्ञ, तप, ये उरले व्योहारा।
जा से मिले अखंड मोक्ष सुख, सो मारग है न्यारा॥
काल जाल से वांचा चाहो, गहो सबद ततसारा।
कहहिं कबीर अमर कर राखो, जो परखो टकसारा॥

एक शब्द गुरु की भक्ति है। सच्चे नाम की भक्ति बंधनों से छुटकारा दिलाती है। बाकी कोई नहीं छुड़ाती। देख लो! फिर कहते हैंः—

ऊपर खासे महल दे, देवे बाग खुदाये॥
सुते बांग ना सुन सकन रिहया खुदा जगाये॥

कि तू यहाँ बांगा दे रहा है। मालिक तेरे अन्दर आवाज़ां दे रहा है। सोच लो! यह मुसलमान फकीर ने कहाः—

बांगे अजब अज आसमाँ दर में रसद हर सायते॥
में नशनूद आँ बांग रा इल्ला के साहिब दौलते॥

कि कुदरती तौर से आसमान से आवाज़ आ रही है। कोई भागों बाला सुनता है। वो इसके घर का रास्ता है।

'सबदि मिलहि त हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥'
सुरत शब्द में राखीऐ तब पहुंचे दरबार।
कहे कबीर तहां देखीये बैठा पुरूष हमार॥

अगर उस नाम से ताल्लुक पड़ जाये, सोचो! ये करंट आ रही है। जिस तरह से करंट है उसी तरह ये करंट सबके अन्दर काम करती है।

'सभै घट रामु बोलै रामा बोलै राम बिना को बोलै रे॥'

इस करंट से आपने सुख ले लिया। पंखे चलाये, बल्ब जलाये, हीटर जलाये सुख लिया। अगर उसको हाथ लगायें? तो साड़ेगी भी! दोनों काम उसने किये। वो करंट सबके अन्दर है। हमने उसे लगाया हैः काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार में। इसलिए हम सड़ रहे हैं। ये शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी में लगाये! तो अन्दर शांती आ जाये। सोच लो! फिर इसके अन्दर शांती आ जाये। अगर कोई ऐसा मैकेनिक मिले, जो हमें करंट पकड़ा दे और जिधर से आ रही है ऊधर चल पड़ें तो कहाँ पहुँचेगे? भाखड़ा! सोच लो! पहुँचोगे ना? इसी तरह कोई ऐसा फकीर मिले, गुरुमुख मिले, जो हमें तरीका बताये। हमारे अन्दर

नाम से, शब्द से ताल्लुक जोड़े, तो हमें घर का रास्ता मिल जाये। सीधा अपने मालिक के घर जायें।

गुरुमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ।
हरिनामु सलाहिनु नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ।
अनहद धुनी दरि बजदे दरि सचै सोभा पाइ।

जिसने इस हुक्म को पछाना, वो मालिक की दरगाह में पहुँचा। बाकी सब यहाँ ही धक्के खाते हैं। किसी के भी पल्ले कुछ न पड़ा। ज़्यादा से ज़्यादा स्वर्गों में चले गये। फिर चौरासी तैयार है। छुटकारा न हुआ। छुटकारे के लिए जन्म मिला था। अगर सभी ग्रन्थों का निचोड़ निकालें तो इनके अन्दर यही है कि तेरा गुरु तेरे अन्दर है। शब्द की लहर आ रही है। उसको पकड़कर अपने घर चल। बस इतना ही है। यह इसके अन्दर है। इसके अन्दर खज़ाने भरे पड़े हैं। इसको पता कुछ नहीं। हर चीज़ इसके अन्दर है। कोई ऐसी चीज़ नहीं जो ना होः—

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला॥
काइआ अंदरि जग जीवन दाता बसै सभना करे प्रतिपाला॥
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भँडारा॥
इसु काइआ अंदरि नउ खंड प्रिथमी हाट पटण बाजारा॥
इसु काइआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुरु कै सबदि वीचारा॥
काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा॥
सचै आपणा खेलु रचाइया आवा गउण पासारा॥

(754/7 मः3)

सब कुछ इसके अन्दर हैः—

या घट भीतर वन ओर बस्ती, याही में झाड़ पहारा॥
या घट भीतर देवी देवा, याही में ठाकुर द्वारा॥
या घट भीतर कांशी मथुरा, याही में गढ़ गिरनारा॥
कहै कबीर सुनो हो अवधु, याही में गुरु हमारा॥

मुक्ति वाला गुरु भी इसके अन्दर है। सोचो! बाहर तो गुरु कर-कर थक गये मुक्ति न हुई। मुक्ति वाला गुरु और है। हाँ पढ़, हाँ सुनों :—

पाठी—धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा।

सोरठ मुहल्ला पहला

जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंम्रितु गुर पाही जीउ॥

(598/4 मः1)

मैनेजर साहिब जी–गुरु नानक साहिब का शब्द है। कहते हैं कि हमें इन्सानी चोला क्यों मिला है? गधे, घोड़े, ऊँट, बैल ये सब हमारी जैसी रूहे हैं। आपको ये चोला क्यों मिला है? एक मौका मिला है, एक मौका मिला है, जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाने के लिए। जुगों-जुग से हम चौरासी में धक्के खा रहे हैं। ऊँट, बैल, हाथी, घोड़े बनते हैं। सोच लो! कभी नरकों में जाते हैं, कभी स्वर्गों में जाते हैं। ये जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा मिल जाए। इसलिए जन्म मिला है। सोच लो! नहीं तो ये भी हमारी जैसी रूहें हैं। यह कई युग के बाद मौका मिला है। मालिक ने दिया है। हर एक को देता है। पता नहीं हमें भी कितनी बार मिला होगा।

'लख चउरासीह जोनि सबाई। माणस कउ प्रभि दीई वडिआई॥'

(1075/14 मः5)

कौन सी बड़ाई कि जन्म-मरण के बन्धन छुड़ा सके।

'इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइंदा॥'

फिर चौरासी तैयार है इसके लिए, अगर अब बन्दोबस्त न किया। सोच लो! आगे करते ही रहे हैं। छुटकारा नहीं हुआ। तभी यहाँ पर बैठे हैं। कभी सोचा है कि मालिक की प्राप्ति नहीं हुई? अगर मालिक की प्राप्ति नहीं हुई, कुछ अन्दर शांती नहीं हुई, तसल्ली नहीं हुई, काम नहीं घटा, क्रोध नहीं घटा, मोह नहीं घटा, लोभ नहीं घटा सोच लो! मालिक का प्रेम भी नहीं उठा। सोचो! कोई प्रेम ही उठे, तड़फ ही उठे मालिक के मिलने की।

सो जपु सो तपु सा व्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ॥
किआ जपु किआ तपु किआ व्रत पूजा। जा कै रिदै भाउ है दूजा॥

(324/12 कबीर)

दुनिया में रह गये। द्वैत में रह गये। ईर्षा में रह गये। ये तुर्क है, ये हिन्दू है। ये फलाना है। सोच लो! इस तरह रह गये। अगर अब जन्म हाथ से निकल गया फिर चौरासी तैयार है। और क्या? युगों-युग से हम काम, क्रोध की आग में सड़ रहे हैं। अन्दर शांती प्राप्त करें। किसी को शांती है? सोचो! माया में फंसे रहे माया इकट्ठी की। किसी को शांती मिली? विषय भोग-भोग कर थक गये, किसी को शांती मिली? जितने विषय भोगे उतने दुःख उठाये।

बहु साहदु दूखु परापति होवे॥ भोगहु रोग सु अंति विगोवै॥

(1034/16 मः1)

जितने विषय भोगता है उतने दुख। अब विषयों की और दुनिया ज़्यादा होती जाती है। हस्पताल पे हस्पताल खुलते जा रहे हैं। बीमारीयां बढ़ती जा रही हैं। सोच लो! कौन खुलाते हैं। ये विषय। गुरु अर्जुन साहिब ने तो यहाँ तक लिखा हैः–

एक निमख स्वाद कारण कोटि दिवस दुख पाई॥

एक निमख भर की लज़्ज़त के लिए कोट दिवस का हिसाब लगा लो, करोड़ दिन, अठाई-तीस हज़ार साल बन जाते हैं। इतना दुःख उठाना पड़ता है। सोचो! कितना अपने लिए जुलम कर रहा है। इसने छूटना था, शांती लेनी थी। इसने और फाहे टांग लिये। पिछली गिल भी गवा ली। कोई अच्छे कर्म किये थे तब कहीं इन्सानी जामा मिला था। फायदा ना उठाया। आगे से भी गया। बेड़ा गरक कर दिया इसने। सोचो! शांती लेनी थी। शांती बाहर ढूंढ़-ढूंढ़कर थके। किसी को मिली? सहजोबाई कहती हैः–

धनवन्ते दुःखीया सभी, निरधन दुःख का रूप।
साध सुखी सहजो कहे पाइओ भेद अनूप॥
ना सुख विद्या के पढ़े ना सुख वाद विवाद।
साध सुखी सहजो कहे लागी सुन समाध॥

ना सुख विद्या पढ़ने-पढ़ाने में है। ना ज्ञानों में सुख है। आपस में लड़ रहे हैं, ज्ञानी। वो कहता मैं ठीक हूँ, दूसरा कहता मैं ठीक हूँ। झगड़े किसने पाये हैं सारी दुनिया में? ज्ञानों ने। मन बुद्धि के ज्ञानों ने। एक-एक मज़हब के कितने फिरके बन गये हैं? पहले मज़हबी लड़ाई थी, अब फिरकों की लड़ाईयां हैं। मुसलमान फकीर हाफ़िज़ ने लिखा हैः–

'जंग हफतादो दो मिलत हमा रा उजर वनेह।'
'चुनीदंद हकीकत रहे अफजाना जदंद।'

कि हमारे बहत्तर फिरके आपस में क्यों लड़ रहे हैं? असलीयत से बेख़बर हैं। बेचारे माजूर हैं तभी लड़ते हैं।

जह जह देखउ तह तह साचा। बिनु बुझे झगरत जग काचा॥

हर एक अपनी-अपनी जगह सच्चा है। जहाँ तक उनकी मन बुद्धि जाती है वहाँ तक अपना अर्थ निकाल लेते हैं। हमने ज्ञानियों के अर्थ किये देखे हैं। वो

कहते हैं इसका ये अर्थ भी हो सकता है और ये भी हो सकता है। सोचो! यहाँ पर डॉक्टरी की किताबे पड़ी हैं। चाहे हमने एम. ए. की, डबल एम. ए. की है, ट्रिपल की है, हम उसका मतलब समझ नहीं सकते। डॉक्टर ही समझा सकता है। इसी तरह ग्रन्थों, शास्त्रों का अर्थ भी कामिल फकीर ही समझा सकता है। दूसरा नहीं। ये सब झगड़े ही मन बुद्धि के पड़े हैं, और किसी के नहीं पड़े। सोच लो! यहाँ पर अक्लों का काम नहीं।

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि॥ (1/4 जपुजी साहिब)

रोज़ पढ़ते हैं। यहाँ पर अक्लों का काम नहीं। यहाँ पर तो अभ्यास का काम है, मेहनत का काम है। जिसने अनुभव किया है, चाहे वह अनपढ़ है, हमें अच्छी तरह समझा सकता है। दो लफ्ज़ों में समझा सकता है। भाई गुरुदास जी ने तो फैसला कर दिया हैः

वेद गरँथ गुर हट है जित लग भवजल पार उतारा॥
सतगुर बाझ ना बुझीअै जिचर धरे न गुर अवतारा॥

(भाई गुरदास जी)

जब तक वह आप आदमी का चोला पहन कर हमें ना समझावे, हम समझ नहीं सकते, सोच लो! ये सब झगड़े इनके पाये हुए हैं। सोच लो! शांती इसके अन्दर है बाहर कहीं नहीं शांती। न ज्ञानों में, न माया में और न ही विषय-विकारों में है। देख लो! ढूंढ-ढूंढ़कर थके किसी को शांती मिली? शांती का खज़ाना इसके अन्दर है।

नामु मिलै मनु त्रिपतीअै बिनु नामै ध्रिगु जीवासु।
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मैं दसे प्रभु गुण तासु॥ (40/4 मः4)

हमारे पास एक नामधारी आया। कहने लगा मैं सत्संग भी करता हूँ। नाम भी देता हूँ। लोग सोलह पहर में अखंड पाठ करते हैं, मैं सात पहर में करता हूँ, लेकिन अन्दर शांती नहीं। शांती कहाँ से आये? जल्दी-जल्दी गए, पढ़ा, विचारा ही नहीं, वाणी क्या कहती है?

नामु मिलै मनु त्रिपतीअै बिनु नामै ध्रिगु जीवासु।

अन्दर नाम प्रकट करे तब शांती आये। इसके अन्दर अमृत है।

नउ निधि अंम्रितु प्रभु का नामु। देही महि इसका विसरामु॥
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मैं दसे प्रभु गुण तासु॥
हउ तिसु विटहु चउ खंनीअै मैं नाम करे परगासु॥ (40/4 मः4)

कहते हैं। कोई ऐसा महात्मा मिले जो मेरे अन्दर नाम प्रकट करके दिखा दे। मैं उस पर जान कुर्बान कर देवां। क्यों? शांती नाम में है। उसमें अमृत है। इस काम के लिए जन्म मिला था। वो अमृत इसके अन्दर है।

घर ही महि अंम्रितु भरपूरु है मनमुखां सादु न पाइआ॥
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरभि भुलाइआ॥

(644/2 मः3)

आज तो अमृत ही और बन गये हैं। अजमेर गये थे। वहाँ काली का मन्दिर है। वहाँ पर प्रसाद कौन सा देते हैं? शराब का अमृत! महा प्रसाद किस का? मांस का प्रसाद बोलो! और के और ही सिआपे पा रहे हैं। कहते हैं इसका क्या डर है। वो अमृत इसके अन्दर है।

अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ (644/6 मः3)

उस शब्द या नाम में अमृत है। कहते हैं आप किसलिए आये हैं। वो अमृत पीने के लिए आए हैं। उस अमृत का दाता सतगुरु भी इसके अन्दर ही है। सोच लो! बाहर वाले गुरुओं का काम नहीं है। मछन्दर अन्दर गया। इस शरीर से निकल जाता था। ठीक है। यह बहादुरी है उसकी। इतना भी उसकी बहादरी है। जल्दी निकला नहीं कोई। ये तो बन्धनों में पड़ा है। आगे संभालने वाला कोई नहीं मिला। गुरु वहीं पर रह गया उसका। मन काबू न हुआ। आगे कौन संभाल करे। आगे अनेकों रुकावटे हैं।

'बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते॥'

(1185/13 मः5)

वो सतगुरु और है। वह चौथे लोक में रहता है। तुलसी साहिब कहते हैंः—

सुन हिरदे सतिगुरु सहदानी, सतिगुरु सतपुरुष को जानी।
चौथे पद में करे निवासा, तीन लोक में काल का बासा॥

उसकी आवाज़ शब्द है। उसका रूप भी शब्द है।

'तिसु रूपु न रेख अनाहदु बाजै सबदु निरंजनि कीआ' (351/2 मः1)

अन्दर भी अनेकों शब्द हैं। बुल्ले शाह ने कहा हैः ''बजदे नाद हज़ार। अनिक अनाहद आनंद झुनकार।'' असली वह आप ही पकड़ाये तो पकड़ाये। आप ही गुरुमुखों का चोला पहनें। आप ही अन्दर संभाल करे। आगे त्रिकुटी का किला है। काल का हैडक्वाटर है। वहाँ से कोई नहीं निकला।

'किउ गुर बिनु त्रिकुटी छुटसी सहजि मिलिए सुखु होई' (18/15 मः1)

आगे कारण मण्डल है। वहाँ पर बहुत रुकावटें हैं। आप ही ले जाये तो ले

जाये बाकी किसी की भी ताकत नहीं। ये उसके अपने हाथ में है। ये दात उसने अपने हाथ में रखी है। जो जन्म-मरण का काम है, सृष्टि चलाने का काम है वह काल के हाथ है। जो जन्म मुकाने का है वह सतगुरु ने अपने हाथ में रखा है।

'दातै दाति रखी हथि आपणै जिसु भावे तिसु देई'

यह उसने अपने हाथ में रखा है। ये बाहर के गुरुओं का काम नहीं। हाँ जीः

पाठी– जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अंमृतु गुरु पाही जीउ॥
छोड़हु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ॥
(598/4 मः1)

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं ये ख़्याल ही निकाल दो। दुविधा ही छोड़ दो। बाहर शांती कहीं नहीं है। शांती कहीं नहीं। ये ख़्याल ही निकाल दो। भ्रम से निकलो। 'छोड़हु वेसु भेख चतुराई' इस चतुराई को निकाल दो। यहाँ अक्लों का काम नहीं है। अक्लें निकाल-निकाल कर सारी दुनिया चली गई। किसी को मिली शांती?

'सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि' (1/4 जपुजी साहिब)

वहाँ पर अक्लों का काम नहीं है। और वेसों, भेखों में शांती नहीं है। सड़पच लगी हुई है। एक दूसरे को देखकर सड़ रहे हैं।

इक भसम लगाये फिरे भेष धारी, बिनु सबदे हौमें किन मारी॥
अनदिनु चलत रहत दिन राती, भरम भेख भरमाई हे॥

वो कहता है हम बड़े हैं, वो कहता है हम बड़े हैं। कुंभ देख लो। उदासी कहते हैं हमने पहले स्नान करना है, हम बड़े हैं। संन्यासी कहते हैं हम बड़े हैं। डण्डे खड़क रहे हैं, बोलो भई! इन सिआपो से निकलना था। कौन पकड़ाते हैं? क्रोध, अहंकार बोलो! फंसते ही जा रहे हैं। ये भेख फकीरों ने नहीं बनाये। फकीरों ने तो इनको छोड़ने के लिए कहा है। हम फिर फंसते ही जा रहे हैं। गुरु गोविन्द सिंह जी ने तो इतनी काट की है कोई ठिकाना ही नहीं। गुरु अमरदास जी लिखते हैंः–

पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि॥
नानक हरि विसराइकै पउदे नरकि अंधार॥ (1426/3 मः5)

कि जितने पंथ हैं, जितने भेख हैं, जो उन पंथों, भेखों में फंसे हैं, वो हृदय प्रेम से खाली हैं। सोच लो! ईर्ष्या, द्वेत, बैर, विरोध में रह गये। लड़ाईयों झगड़ों में रह गये। वो सीधे नरकों में जायेंगे। बोलो! गुरु अर्जुन साहिब जी का फैसला है। बोलो! असली कौन है? पता ही नहीं। अन्दर नाम को प्रकट करना ही असली भक्ति है। ये है सारे बन्धन छुड़ाने वाली। अगर यह अन्दर प्रगट करे, तो इसे शांती

आ जाये। सब भूखें मिट जायें।

हिल मिल खेलूँ शब्दू में, अन्तर रही न रेख।
समझे का मत एक है, क्या पण्डित क्या शेख॥

यह हाफ़िज़ साहिब ने कहा हैः—

नगम हा नेक शुनीदम, व निदाहाए वाफर।
काबा व बुतखाना बनिजदम हर दो शुद काफर॥

''जब मैंने अन्दर के राग-रागनियाँ सुनी, अन्दर के शब्द सुने; काबा और बुतखाना दोनों काफर लगने लगे।'' मौलवी रूम साहिब लिखते हैंः—

'मन्ज़े कुरान मगज रा बरदाशतम। उसतखुआँ पेशे संगा अंदाखतम'

''कि मैंने कुरान के मगज़ को निकाल लिया है, असलियत ले ली है। कलमें को पकड़ लिया है। हड्डीयाँ शरीयत वालों के आगे फेंक दी हैं, लड़ो और मरो।''

असली चीज़ तो अन्दर नाम को प्रकट करना है। और कुछ नहीं है यह ही भगती है। यह भगती है जन्म-मरण के बन्धन छुड़ाने की। इसने यह काम करना था। इसी तरह वक्त ख़राब करके चला गया। सोचो! कौन-सी चीज़ साथ जाएगी? देश साथ जायेंगे? कौमें साथ जायेंगी? कितना बड़ा हिन्दुस्तान था? बोलो! किस चीज़ के ठेके लेकर बैठा है? लंका गई, मलाया गई, ब्रमा गया, पाकिस्तान भी गया, सोचो! फिर पंजाब का क्या रहा छः हिसा! ये तो बदलते रहेंगे। ये तो सब कुछ कूड़ है। कूड़ में ही सारी दुनिया मर गई।

कूडु राजा, कूडु परजा कूडु सभु संसारु॥
कूडु मँडप कूडु माड़ी कूडु बैसणहारु॥ (जपुजी साहिब)

मण्डप माड़ी कूड़ उनके पूजारी कूड़ सोचो!

कूडु मिठा कूडु मखिउ कूडु डोबे पुरु॥

कूड़ों के कूड़ खत्म हो गये इसके पल्ले कुछ ना पड़ा।

नानकु बखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूडु॥ (468/5 मः1)

मालिक के सिवाय सब कुछ कूड़ है। अन्दर नाम को प्रगट करना था। इस कूड़ को छोड़ना था। किसके लिए हम पढ़ते हैं कि ये सब कूड़ है? निकलो यहाँ से, निकलो इस कूड़ से। कूड़ को छोड़ों, चलो अन्दर। सत् ताकत को प्रगट करो। ये काम इसने करना था आकर। हाँ जीः

पाठी– छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जिउ॥
मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ॥
बाहरि ढूंढ़त बहुतु दुखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जिउ॥

मैनेजर साहिब जी– हमारे समझाने के लिए मन को कहते हैं क्या? कि मन तू सोच। बाहर शांती तलाश कर करके थक गया, शांती कहीं से मिली? जुगों के युग बीत गये। तेरे जन्म-मरण नहीं खत्म हुये। तू कर करके थक गया, सोचो!

इसने और उपाय किये, उतनी ही अशांती बढ़ती गई। सोच लो! ये शांती का देश ही नहीं। शांती का देश और है। अगर ये वहाँ चला जाये तो इसका आने को दिल ना करे। अगर ये दुनिया अच्छी होती तो ये पूर्ण ताकतें गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, गुरु गोविन्द सिंह यहाँ न रहते? क्यों जाते हैं वहाँ? ये वैसी चीज़ ही नहीं। गुरु गोविन्द साहिब लिखते हैं:

द्वै तै एक रूप ह्वै गयो। चित न भयो हमरो आवन को॥
चुभी रही सूरति प्रभु चरनन में॥
ज्यों त्यों प्रभ हमको समझाओ। इम कह कै इह लोक पठाया॥

पहले मैं अलग था। जब भगती करके अपने देश पहुँचा तो मेरा आने को दिल नहीं करता था। क्योंकि वहाँ की खुशी, शांती, प्रेम ऐसा ही है कि वहाँ से आने को दिल नहीं करता।

लेकिन मालिक ने जैसे तैसे करके समझाया कि तू तो जब मर्ज़ी आ जा। तेरे को तो रास्ता मिल गया है, उनको भी समझा! शायद कोई मान जाए। उनका इस तरफ आने को दिल नहीं करता।

शम्स तबरेज़ ने कहा है कि मैं मालिक के हुक्म से बंधा हूँ वरना मेरा इस दुनिया में आने को दिल नहीं करता। ये शांती का देश नहीं। वो देश शांती वाला है। उस देश में हमने जाना है। वो देश है हमारा। मिट्टी के देशों के पीछे लड़-लड़कर मर गये। बच्चे खेलते हैं ना, बरसात के दिनों में कूप बनाते हैं। वो उसका गिरा देता है, वो उसका गिरा देता है, लड़ते हैं। हम कहते हैं किसलिए लड़ते हो? चलो अपने घर को।

फकीर भी देखते हैं। ये बड़े कूप हैं। लड़-लड़कर मर गई सारी दुनिया। जो करना था वो तो किया ही ना। इसने आत्मा की आज़ादी लेनी थी। ये आज़ादी किस काम आई बोलो! ये तो सदा का ही गुलाम है। इन्द्रियों में हम उलझे पड़े हैं। आंखों की इन्द्रियां अच्छे-अच्छे रूपों की ओर खिंचती हैं। कानों की इन्द्रियां अच्छे-अच्छे रागों की ओर, ज़ुबान की इन्द्री खट्टे-मिट्टे स्वादों की ओर खिंचती है। हम सदा के ही गुलाम हैं। इन्द्रियों के गुलाम हुए बैठे हैं। हमारे दुश्मन कौन है? मन, काम, क्रोध, मोह, अहंकार इनके साथ लड़ना था। आत्मा को आज़ाद कराना था।

इसको पता ही नहीं मैं कौन हूँ? पूछ लो किसी से? कोई कहता है मैं सनातनी हूँ, कोई कहता है मैं आर्य हूँ, कोई कहता है मैं खालसा हूँ, कोई कहता है मैं सच्चे सौदा वाला हूँ, कोई कहता मैं राधा स्वामी हूँ। कोई कहता मैं नामधारी हूँ। इसको पता ही नहीं मैं कौन हूँ?

कहु कबीर इहु राम की अंसु॥ (871/7 कबीर)

यह राम की अंश है, सतपुरुष की अंश है। इसका देश अति खुशी और शांती का है, आनन्द का है। इसका पिता सतगुरु खुशियों का दाता है। वह इसके अन्दर है।

महरम होय सो जाने साधो ऐसा देस हमारा।
बेद कतेव पार नहीं पावत कहन सुनन से न्यारा॥

यह तो कबीर का है। वाणी में रोज़ पढ़ते हैं:

बेगम पुरा सहर को नाउ। दूखु अंदोहु नहीं तिहि ठाउ॥
ना तसवीस खिराजु न मालु। खउफु न खता न तरसु जवालु॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई। ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥

(345/12 रविदास)

कि उस देश का नाम बेगमपुर है। वहाँ पर कोई गम नहीं, कोई चिन्ता फ़िक्र नहीं, कोई टैक्स नहीं, सोच लो!

न कोई गुनाह करता है न ही गुनाह की सज़ा है। मैं खूब तसल्ली करके आया हूँ। क्या? वहाँ पर खैर ही खैर है, सुख ही सुख है, आनन्द ही आनन्द है। वो देश है, वहाँ जाना है। जिसने अन्दर नाम को प्रकट कर लिया, उसे रास्ता मिल गया। वह अपने घर पहुँच गया। वह सब कुछ बन गया। वह खालसा भी बन गया। इसी चीज़ के मुतल्लक गुरु गोविन्द सिंह साहिब ने कहा है:—

जागति जोत जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै॥

वह जागती जोत, शब्द गुरु जिसके अन्दर काम करता है। उसके सिवाय किसी को न माने।

पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मढ़ी मत भूलि न मानै॥
तीरथ दान दया तप संजम एक बिना नहिं एक पछानै॥

सारे खंडन कर दिए हैं।

पूरन जोत जगै घट मैं तब खालसा ताही नखालस जानै॥

वह जोत अन्दर प्रगट हो तब खालसा बने, बोलो! सोच लो! फिर सच्च ताकत से ताल्लुक पड़ गया। फिर यह सनातनी बन गया।

अब मनु उलटि सनातनु हूआ। तब जानिआ जब जीवत मूआ॥

वह नाम का तीर्थ है जो सब मैले साफ करता है।

अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा॥ (1009/2 मः1)

सोच लो! फिर आत्मा श्रेष्ठ बन गई, पाक बन गई, यह आर्य बन गई। आर्य का मतलब है पाक, श्रेष्ठ। फिर यह नामधारी बन गई। यही सच्चा सौदा है।

सचा सउदा हरिनामु है। सचा बापारा राम॥
गुरमती हरि नामु बणजीअै अति मोलु अफारा राम॥

(570/13 मः3)

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि॥
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भँडार॥ (646/8 मः3)

जो बन गया तो सब कुछ है, नहीं तो कुछ भी नहीं। ऐसे डींगे ही डींगे पल्ले हैं।

बड़े बड़ाई पाय कर रोम रोम अहंकार।
सतिगुरु के परचे बिना चारों वरण चमार॥

सोच लो! चाम के भेष बनाये, क्या बनाया इसने? सोचो! ये बनाना था इसने। कहते हैं मन तूं बाहर ढूंढ़-ढूढ़कर थका शांती कहीं से ना मिली।

मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ॥ (598/5 मः1)

'थिरु रहो' क्या? इसका ठिकाना कौन-सा है? जब हमें कोई बात समझ नहीं आती तो हम बैठ जाते हैं चुप करो भई सोच लो! जो राज़ है यहाँ है। तभी उन्होंने कहा हैः—

नउ दर ठाके धावतु रहाए। दसवैं निज घरि बासा पाये। (124/13 मः3)

यहाँ ख़्याल को टिकाये। जहाँ से आवाज़ आ रही है। दिन पर रात मालिक की दरगाह से जो वह शब्द आ रहा है, नाम आ रहा है, उसमें जोत है।

राम नामु है जोति सबाई॥

सोच लो! उसमें अमृत है।

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु। देही महि इसका बिस्राम॥ (293/16 मः5)

इसको शांती आ जाये। अन्दर रोशनी हो जाये। आदि, अन्त, मध सबका पता चल जाये।

नाइ सुणिअै घटि चानणा आनेर गवावै॥ (1240/17 मः1)

कभी किसी ने सोचा है? हमने तो एक चिंगारी भी नहीं देखी। सोचो! वो कहते हैं *"हरि हरि नामु अंम्रितु रस मीठा"* कभी किसी ने विचारा है कि उसमें

मिठास है। हमारे अन्दर तो मिठास आई ही नहीं। पर क्यों? पढ़ते ही जाते हैं, सोचते ही नहीं। वाणी क्या कहती है? वाणी तो हीरे जवाहरत है, पर इसकी कद्र किसी को नहीं। पढ़ते हैं, विचारते नहीं। अगर विचारते होते तो अमल नहीं करते। विचारे, अमल करे, अन्दर जाये।

रतना रतन पदारथ वहु सागर भरिआ राम॥
बाणी गुरुबाणी लागे तिन हथि चड़िआ राम॥

यह तो हीरे जवाहरात, पर किसके हाथ चढ़ते हैं? जो इस वाणी को विचार कर अन्दर वाली बाणी को पकड़ते हैं, उनके हाथ चढ़ते हैं दूसरों के नहीं। हाँ जीः—

पाठी— बाहरि ढूंढ़त बहुतु दुःखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ॥

(598/5 मः1)

मैनेजर साहिब जी— सोचो! बाहर की जो भी चीज़ है स्वाद लगती है। वह क्यों निकली स्वाद? कभी किसी ने विचारा है? यह भी अन्दर से ही आया है। इसको अच्छी तरह कद्र से देखे। इसकी कोई कद्र ही नहीं। अगर गौर से देखेंगे तभी अच्छा लगेगा। हलवा है बहुत अच्छा। कैसे बनता है? उसमें है क्या? आटा, घी, चीनी, पानी, आग का सेक और तो कुछ नहीं। अगर अच्छी तरह बनाओगे तभी आटा भी अच्छी तरह भुनेगा। अगर अच्छी तरह नहीं बनाओगे तो आटा सड़ जाएगा या कच्चा रह जायेगा। सोचो! अगर अच्छी तरह बन गया तो स्वाद से खाओगे तभी स्वाद लगेगा। ये जल्दी-जल्दी खा लीया फिर तो अच्छा नहीं लगेगा। कपड़ा अच्छा बनाया। अच्छा ले लिया। अगर पहन भी लिया अच्छी तरह तभी अच्छा लगेगा। अगर उलट-पुलट पहन लिया तो अच्छा लगेगा? ये तव्वजो ही काम करने वाली है। तव्वजो का ही सारा खेल है। इस तव्वजो को अन्दर इकट्ठा करे, ख़्याल को। इसको सब कुछ मिल जाये। शांती इसके अन्दर है। बाहर मिट्टी में मिला दी है इसने। इसके ऊपर तव्वजो डाल दो तो अच्छा। नहीं तो चलाकर मारा इसी तरह फंस गई सारी दुनिया। हाँ जीः—

पाठी— अवगुण छोड़ि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ॥

(598/6 मः1)

मैनेजर साहिब जी— ये मन विषय-विकारों का आशिक है। अवगुणों से भरा पड़ा है। जल्दी छूटते नहीं। कहते हैं विषयों की आदत को छोड़। अब छोड़नी भी मुश्किल है। अगर छोड़ता है तो इससे और गुनाह हो जाता है। हो जाता है भूलकर। फिर पछताता है। मालिक आगे बेनती करे। मालिका! तूं छुड़ा तो छुड़ा, मेरे बस नहीं

है। उसके आगे रो, पिट। वो छुड़ाये तो छुड़ाये। सोच लो! गुरु नानक साहिब कहते हैं:—

सरणि परे गुरुदेव तुम्हारी। तू समरथु दइआलु मुरारी॥

कि ऐ सतगुरु! मैं तेरी शरण आया हूँ। तूं हर तरह समर्थ है। तूं दयालू है। तूं मेरे पर भी दया कर। वो किस पर दया करता है? ये दीन बने तो वह दयाल बने। ये गरीब बने तो वह गरीब निवाज बने। हम तो अहंकार में भरे पड़े हैं। मैं गुणी, मैं ज्ञानी, मैं आलम, मैं फाज़ल हूँ। मैं यह जानता हूँ, मै वह जानता हूँ। अगर जानता होता, तो मालिक की दरगाह में न पहुँच जाये। सोचो! यह तो गरीबी का मार्ग है, दीनता का मार्ग है। जितने फकीर मालिक की दरगाह में गये दीनता और गरीबी से गये।

हरि के भगत सदा सुखवासी। बाल सुभाइ अतीत उदासी॥

वह मासूम बच्चों की तरह रहते हैं। कि मालिका हम तो कुछ नहीं जानते सोचो! हम तो कुछ नहीं जानते। तेरी मेहर ही है। तूं ही मेहर कर। यही ईसा ने कहा है:—

"Be like children for they shall enter into the kingdom of heaven."

''कि तुम मासूम बच्चों की तरह बन जाओ तभी तुम मालिक की दरगाह में पहुँच सकते हो।'' ये गरीब बने तभी है। हाफ़िज़ साहिब कहते हैं:—

जुहद गरूर दस्त सलामत न बुरद।
रिंदा रह न्याज़ बदाह उल सलाम रफत।

''कि कर्मी-धर्मी अपने अहंकार में रह गये। भगतजन दीनता के कारण मालिक की दरगाह में पहुँच गये।'' भीलनी क्या जानती थी बोलो! कर्मीयों, धर्मीयों सभी को छोड़ गए। रामचन्द्र जी उसके पास गये। क्या चीज़ थी उसके पास? दीनता और गरीबी, प्रेम। बस जिसके पास दीनता है, प्रेम है, उसके पास मालिक आता है, नहीं तो नहीं। 'दइआल मुरारी' 'मुरारी' क्या? राक्षसों को मारने वाला। कौन से राक्षस? ये ही मन, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये सभी मिलकर आत्मा की मिट्टी पलीत कर रहे हैं। सोच लो! ये आत्मा की मिट्टी पलीत कर रहे हैं। सारे काम इनके करते हैं। हमसे ज़बरदस्ती करवा रहे हैं। पकड़ो कौन पकड़ता है? बाहर गुरु भी किये, पकड़ें? वह अन्दर वाला छुड़ाये तो छुड़ाये, बाहर किसी की भी ताकत नहीं। सोचो! अवगुण करता है। फिर मालिक के आगे पछताता है कि मालिक तूं ही मेहर कर। मैं नहीं छोड़ सकता। मेहनत भी करे, कोशिश भी करे। फिर रहमत मालिक पर छोड़। वह बचाये तो बचाये। सतगुरु इसके अन्दर है। सोचो! मौत

के वक्त कौन काम देगा? कभी किसी ने सोचा है? जब मौत आई, जमदूत अन्दर। यह रोता है, चिल्लाता है। बचाओ कौन बचाता है? पास बैठे हैं। बाहर के धर्म स्थान बाहर। बाहर के गुरु बाहर। उस टाईम अन्दर वाले गुरु ने साथ देना है। अन्दर वाले को तो खुश ही ना किया। सोचो! बाहर वाले गुरुओं को तो लगी पड़ी है, लियाओ, लिआओ, लिआओ। वह दाता इसके अन्दर है। गुरु अर्जुन साहिब लिखते हैंः–

सतगुरु मेरा बेमुहताज। सतिगुरु मेरा सचा साजु॥ (1142/3 मः5)

मेरा सतगुरु बे-मुहताज है। कैसे बे-मुहताज है? यह चादर बनाई है किसी ने। कैसे बनी है? किसी ने कपास बोई, किसी ने चुगी, किसी ने बेली, किसी ने सूत बनाया, किसी ने रंग बनाया, किसी ने बुनी। कितने हाथों से निकली? यह बे-मुहताज सतगुरु है, जो फूलों में रंग भरता है। अन्दर बैठा है, कहीं गया है? लाल रंग अन्दर से लाया, पीला रंग अन्दर से लाया। सोच लो! अन्दर बैठा कटिंग कर रहा है। इस पर कितने कारीगर लगे? कितने हथियार लगे? यह अन्दर बैठा है। कोई है हथियार? मां के पेट में कैसे बच्चों को बनाया? यही सतगुरु है, मुक्ति का दाता। बे-मुहताज है। इसी को हम जिन्दाराम कहते हैं। इसी को सतगुरु कहते हैं। यही शब्द गुरु है।

सबदे धरती सबदे आकास॥ सबदे सबद भइआ प्रगास॥

(जन्म साखी पन्ना 19)

यह मौत के वक्त काम देने वाला है। यही जमदूतों से छुड़ाने वाला है। यही काम, क्रोध से छुड़ाने वाला है। बाकी कोई नहीं। हाँ जीः

पाठी– अवगुण छोड़ि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ॥
सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ॥

मैनेजर साहिब जी– कि अै मन! तेरे को तो भले बुरे का ही नहीं पता। जो तेरे लिए भला है। उसको तू बुरा समझता है। जो बुरा है उसको तू अच्छा समझता है। उलटा ही चल रहा है। फिर कीचड़ में फंस रहा है। ये मुश्किल मार्ग है। गुरुनानक साहिब के साथ मरदाना सारी उम्र रहे। मरदाना कितनी बार दौड़ा, बोलो! सोचो! वह तो निकालना चाहते थे। कितनी बार दौड़ा। सोच लो! वो कहता है मैं वहाँ रहूँगा जहाँ टके सिर खाजा टके सिर भाजी' खूब खाऊंगा। फिर फंस गया ना। वह तो हमें निकालना चाहते हैं। कुछ दात देना चाहते हैं। यह मुड़-मुड़कर फंसते हैं। मुड़-मुड़कर विषय विकारों में फंसते हैं। कूड़ में फंसते हैं। वह कहता है। कूड़ को छोड़। ये मुड़-मुड़कर फंसता है। वह हमें कौमों, मज़हबों के बखेड़ों से निकालते

हैं। ये फिर फंसता ही जा रहा है।

जात पात न पूछे कोइ। हरि को भजे सो हरि का होइ॥

कोई पूछता है ये कौन है? सोचो! जिस वक्त बाबर ने चक्कीयों पर फकीरों को बैठाया, जो कृष्ण के पुजारी थे, उन्होंने कृष्ण को ध्याया। जो राम के पुजारी थे उन्होंने राम को ध्याया। शिव के पुजारियों ने शिव को ध्याया। मच्छन्दर और गोरख के पुजारियों ने उनको ध्याया। जो जिसका था उनको ध्याया। पास आया कोई? गुरुनानक साहब ने ईष्ट को खुश किया। चक्कीयां अपने आप ही चलने लग गईं। जो इस शब्द गुरु, सतगुरु को खुश करे उसका काम करते हैं बाकीयों का नहीं। सोच लो! ये ऐसे ही ठेके लेकर बैठा है। मैं फलाना, मैं फलाना। कोई नहीं पूछता वहाँ। हाँ जीः

पाठी– सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ॥
अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं अन्दर तो मैलों से भरा पड़ा है। इसको मैलों का ही नहीं पता, शरीर नहा आया। बाहर नहा-नहाकर थक गये। किसी का कुछ बना? कौन-सी मैलें हैं?

तन के ज़रिये चोरी करते हैं। चकारी करते हैं। जीव हिंसा करते हैं। दूसरों को दुःख देते हैं। मन के ज़रिये फजूल के बुरे संकल्प उठाते हैं। ईर्ष्या, द्वेत, बैर, विरोध पैदा करते हैं। वचन के ज़रिये; कड़वे वचनों से दूसरों का दिल दुखाते हैं। झूठ बोलते हैं, निंदिया, चुगली करते हैं। धन के ज़रिये, ऐशो ईशरत, बदकारी का सामान खरीदते हैं। सोच लो!

सुरत जो मालिक में लगानी थी, मोह, माया और जड़ पदार्थों में लगाई हुई है। कूड़ में लगाई है। मालिक तो बना ही नहीं। इन मैलों का पता ही नहीं सोच लो! इन मैलों को शब्द गुरु ही धो सकता है, बाकी कोई नहीं। नाम का तीर्थ है, वो तीर्थ इसके अन्दर है।

अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटण हारा। (1009/2 मः1)

हम रोज़ पढ़ते हैंः–

भरीअै हथु पैरु तनु देह। पाणी धोतै उतरसु खेह।
मूत पलीती कपड़ु होइ। दे साबूणु लईअै उहु धोइ।
भरीअै मति पापा कै संगि। ओहु धोपै नावै कै रंगि।

(जपुजी साहिब)

उस नाम के तीर्थ में पाप धोए जाते हैं। बाहर नहा-नहाकर थक गये। पाप

उतरे किसी के? फिर मुड़-मुड़कर फंसे ही जा रहे हैं। फिर मुड़-मुड़ कर हाँ जीः

पाठी– अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ॥

मैनेजर साहिब जी–नाम देव कहते हैः–

गंगा गिआ गोदावरी संसार के कामा।
नारायण सो प्रसन्न ते सेवक नामा॥

कहते हैं अगर इस तरह नहाने से मिले तो मैं उनका सेवक बनने को तैयार हूँ।

अंतरि मैलु जे तीरथ नावै तिसु न बैकुण्ठ न जाना॥
लोक पतीणै कछु न होवे नाही रामु अयाना॥

जिधर दुनिया चल पड़ी भेड़ चाल की तरह, दुनिया का हाल भी यही हुआ पड़ा है। असली चीज़ ही छोड़ दी। जितनी देर कोई फकीर रहा, वो हमें रास्ता बताता रहा। उसके बाद जितना टाईम कोई कमाई वाला रहा, वो हमें रास्ता बताता रहा। बाद में सब भूल गये। सभी मज़हबों का यही हाल है। मुसलमान फकीर ने लिखा हैः–

पाठी– एक सूफी ख्वाजा हसन बसरी साहिब ने एक बार सत्संग में फरमाया कि अफसोस! मुसलमान ज़ेरे खाक भी हैं और मुसलमानी सिर्फ किताबों के बरकों में रह गईं।

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं मुसलमान ज़ेरे खाक हैं। मुसलमानी सिर्फ किताबों के पेजों में रह गई।

अब जो किताब लिखता है, वो लिखता है कि ये सूफी पहली हिज़री(सदी) में हुआ। जब मुहम्मद साहिब हुये, उससे थोड़े दिन बाद। अब तो चौदहवीं सदी है। अब ज़ेरे खाक भी हैं या नहीं। इसको पता ही नहीं। सभी मज़हबों का यही हाल है। असलीयत भी भूल गये हैं। इसी तरह चल पड़ा काम। असली छोड़ ही दिया।

यहाँ भी हम देखते हैं। असली अन्दर शब्द गुरु को प्रगट करना है। अब यह सिमरण करना मुश्किल है। जो भी कहता है होता नहीं। फिर फकीर कहते हैं जितना होता है उतना ही कर। रात को जाग। फिर खा-पीकर जागने लग गया। फिर भी ना हो सतगुरु की बातें कर ली, ख़्याल ही ठीक रहे। सुध तो रहे, सुध ही ख़्याल है। फिर सिमरण थोड़ा भी हो, कुछ न कुछ प्राप्ति हो जाती है। सोच लो! सतगुरु की बातें कर ली। कभी वाणी पढ़ ली। फिर वाणीयां पढ़ने पर हो जाते हैं। असली चीज़ छोड़ दी। बाद में वाणी पढ़नी भी छोड़ जाते हैं। रिकॉर्ड ही रिकॉर्ड भरे पड़े हैं। वाणी पढ़ता ही नहीं कोई। पढ़ना भी छोड़ दिया। बोलो!

सोच लो! पढ़ना भी छोड़ दिया। सभी मज़हबों का यही हाल हुआ पड़ा है। हाँ जीः—

पाठी— निरमल नामु जपहु सद गुरुमुखि। अंतरि की गति ताहि जिउ॥

मैनेजर साहिब जी— कहते हैं, निर्मल नाम को प्रगट करो। सिमरण करके यहाँ आ। तभी छुटकारा है, नहीं तो नहीं। हाँ जीः—

पाठी— परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर वचनी फलु पाही जीउ॥

(598/9 मः1)

मैनेजर साहिब जी— कहते हैं, इसके लिए फिर क्या कर? 'लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु' सोचो! पहले कूड़ छोड़, कूड़ का प्यार छोड़। लोभ छोड़, पराई निदिंयां छोड़। निदिंया कर-कर हम काले हुए पड़े हैं। एक कौम दूसरे की, एक मज़हब दूसरे की सोचो! एक साधू दूसरे की, निदिंया कर-कर काले हुए पड़े हैं, बसाना मालिक को था। निदिंया क्यों करते हैं? कोई बुरा है, तभी करते हैं। अगर बुरे के साथ खाओगे तो बुरे ही होंगे! निदिंया करके अन्दर से काले हुए पड़े हैं। अन्दर और भी ख़्याल पड़े हैं।

जिसको आप याद करें चाहे अच्छा है या बुरा, सपने में भी सामने खड़ा है। सोच लो! अन्दर उसे बसा लिया ना? उसी की तो निदिंया करता है। वो पापी है, बुरा है। अन्दर पाप बसा लिया वो सारा ही।

निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि॥
मुंह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि॥

रविदास ने तो यहाँ तक लिखा हैः—

जे ऊहु अठिसठि तीरथ नावै, जो उहु दुआदस सिला पूजावै॥
जे उहु ग्रहन करै कुल खेति, अरपै नारी सिंगार समेति॥

बड़ा सारा कहकर आगे कहते हैः—

निदंकु सोधि साधि बीचारीआ। कह रविदासु पापी नरकि सिधरिआ॥

सोच लो! निदिंया ही निदिंया लगी पड़ी है। बोलो! क्या है? सोच लो! दादू साहिब कहते हैंः—

तब ही काला होत है, हरि बिन चितवत आन।
किया कहिअै समझै नहीं, दादू सिखवत गिआन॥

कि सारी दुनिया काली हुई है निदिंया कर-करके। बसाना था मालिक को, सतगुरु-सतगुरु करना था, बसा लिया निंदक, बोलो! जो मैला है। कहते हैं सब कुछ छोड़। गुरु नानक साहिब ने कहा हैः—

कामु क्रोधु परहरू पर निंदा। लबु लोभु तजि होहु निचिंदा॥
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला। हरि अंतरि हरि रसु पाइआ॥

कि काम छोड़ दे, क्रोध छोड़ दे, लोभ छोड़ दे। पराई निदिंया छोड़ दे। इस शरीर का प्यार छोड़ दे। सारी उमर इसी की सेवा की। बोलो! और क्या किया? बोलो! जहाँ पर थोड़ी सी तकलीफ होती है वह काम नहीं करता।

देह प्यारी जीव को निसि दिन सेवा माहिं।
दादू जीवन मरण लो कबहुं छाडे नाहीं॥

अखिरी दम तक इसकी सेवा की। इसका प्यार ही इसको शरीर में लाया है और चौरासी की? हमारे ख़्याल या इस शरीर का प्यार चौरासी में लाता है। तन का प्यार ही छोड़ना नहीं चाहता। खुल्ल-खुल्ल करता है, मंजे पर पड़ा है। कोई रोटी नहीं देता, टट्टी पेशाब नहीं अच्छी तरह कर सकता, फिर भी कहता है; मैं मरूं ना। सोच लो! बूढ़ों को मरते देख लो। फिर जैसे ख़्याल हैं। मालिक बेइन्साफ नहीं। क्योंकि ये तन चाहता है, तन मिल जाता है। फिर हमारे ख़्यालों के मुताबिक जोनि मिल जाती है।

अंतिकालि जो लछमी सिमरै॥ अैसी चिंता महि जे मरै॥
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/7 त्रिलोचन)

तन भी मिल गया, माया का प्यार है। सांप बन कर बैठ जा।

अंतिकालि जो लड़िके सिमरै॥ अैसी चिंता महि जे मरै॥
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/10 त्रिलोचन)

सूअर की जोनि मिल गई पीछे बच्चे ही बच्चे फिरते हैं।

अंतिकालि जो मंदर सिमरै ॥ अैसी चिंता महि जे मरै॥
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै॥ (526/11 त्रिलोचन)

सोच लो! यही चौरासी है और क्या? जिसकी पूजा करता है वहाँ जाता है। यही कृष्ण भगवान ने कहा है। जो भूतों की पूजा करता है, वह भूतों के पास जाता है। जो देवी-देवताओं की पूजा करता है, वह उनके पास जाता है। जो मेरी पूजा करता है वह मेरे पास आ जाता है। जो शब्द गुरु की करता है, वह उसके पास चला जाता है। बस! तभी उन्होंने कहा हैः—

जागति जोत जपै निस बासुर ऐक बिना मन नैक न आने॥

किसी को भी न माने और। बस! जो पानी की पूजा करेगा वो पानी का जीव बनेगा। सोचो! हाँ जीः

पाठी– परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु॥

मैनेजर साहिब जी– अगर लोभ या माया के साथ प्यार है तो सांप बनकर बैठेगा। और क्या होगा? बोलो! यहाँ एक प्रेमी बैठा था। लम्बरदार था गोनीयाने का हरबंस सिंह। वहाँ बैठ जा (जब हरबंस सिंह अपना नाम सुनकर खड़ा हुआ। फिर इसको इशारा किया।) वहाँ का हमें किसी ने सुनाया भाई कनहइये का गुरुद्वारा है। वहाँ कमाई वाले रहे हैं अब तक। वहाँ एक फकीर आ गया। वह फकीर उसको कहने लगा 'भई एक बात है मैंने जाना है तीर्थों पर। ये है मेरी गोदड़ी रख लो। मैं कहाँ ले जाता फिरूंगा? अभी तो मुझे ज़रूरत नहीं। बोला अच्छा। तीर्थों पर गये को दो तीन साल हो गये। वो न आया। जब ना आया, तो उसने साथियों को कहा फकीर तो न आया। उसकी गोदड़ी तो लाओ। जब गोदड़ी लेकर आये तो उसमें से सांप निकला। कहते इसको मारना ना फिर कहते गोदड़ी खोलो। जब खोली तो उसमें से मोहरें निकली। ठीक लिखा है उन्होंने?

अंतिकालि जो लछमी सिमरै॥ अैसी चिंता महि जे मरै॥
सरप जोनि वलि वलि अउतरै॥

क्या बना? सांप। किसने बनाया? उन चार मोहरों ने। हमारा क्या हाल है? बोलो! ये ख़्याल ही हैं। जहाँ ख़्याल है वहीं जाएगा। उसका मोहरों में ख़्याल था वहाँ आकर बैठ गया। इसी तरह सारी दुनिया चौरासी में धक्के खा रही है। जो अब थोड़ी सी तकलीफ में कहते हैं उसके पास जाओ। उससे टूना कराकर ले आओ। भूतों-प्रेतों में जाते हैं। फिर भूत प्रेत आप ही बनते हैं। उनको छोड़ते ही नहीं। वह बार-बार बुलाते हैं। छोड़ते ही नहीं। इसी तरह दुनिया फंसी पड़ी है। हाँ जीः–

पाठी– परहरि लोभु निंदा कूडु तिआगहु सचु गुर वचनी फलु पाही जीउ॥

मैनेजर साहिब जी– गुरु अर्जुन साहिब के पास कुछ मुसलमान आये। मालिक के मिलने पर बात चली। तभी उन्होंने कहाः–

अलह अगम खुदाई बन्दे, छोड़ि खिआल दुनिया के धंधे॥

कि ऐ खुदा के बन्दे! ऐ खुदा के मुतलाशी! 'अलह अगम' क्या? मन वृद्धि की गमता से परे है। दूर से दूर है। अपार है। बेअन्त है। ऊँचे से ऊँचा है। वह कब मिलता है? 'छोड़ि खियाल दुनिया के धंधे, बोलो भई! ये दरिआं किसलिए बिछाई हैं कि साफ कपड़े हैं हमारे ख़राब न हों, हम बैठेंगे मिट्टी में। मालिक कहाँ बैठे? अन्दर तो विषय-विकारों के ख़्याल भरे पड़े हैं, कहाँ आकर बैठै? फिर उसके लिए क्या कर?

हो पै खाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु दरा॥

किसी ऐसे फकीर की शरण में जा, कौन-सा? 'फकीर मुसाफिर' जो अन्दर

की मंज़िलों के सफर करता है। उनके बताये तरीके से सिमरण कर। ये भक्ति कबूल है मालिक की दरगाह में।

सच निमाज यकीन मुसल्ला। मनसा मारि निवारहु आसा॥

फिर उन वचनों पर, उन पर, उस फकीर पर पूरा भरोसा रख। जैसे भाई गुरुदास ने कहा हैः—

मुर्दा होय मुरीद न गली होवणा। सबर सिदक सहीद भरम भओ खोवणा॥

पूरा भरोसा रख, उनके वचनों पर चल। सच्च की नमाज़ पढ़, सिमरण कर, ये ना हो कि मन किधर जाता है और तू किधर। गुरुनानक साहिब कहीं गए। वहाँ के बादशाह ने कहा आप भी हमारे साथ नमाज़ पढ़ो। नमाज़ पढ़ने लग गये। अच्छा भई आपके साथ पढ़ते हैं।

गुरुनानक साहिब पीछे होकर खड़े हो गए। वो नमाज़ पढ़ते गये। जब नमाज़ पढ़कर हटे तो कहने लगे, आपने हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी? कि किसके साथ पढ़ता? कहने लगे हमारे साथ। तू तो काबूल में घोड़े खरीद रहा था। मौलवी के साथ पढ़ता। इसको बछेरी का फ़िक्र पड़ा था कि खड्डे में न गिर पड़े। नमाज़ किसके साथ पढ़ता? उसने कहा कि वाक्य ठीक ही है। इस तरह पढ़े कि ख़्याल सिमरण में ही रहे।

सचु निवाज यकीन मुसल्ला। मनसा मारि निवारहु आसा।

दुनिया की आशा तृष्णा छोड़। कहाँ पढ़ निवाज़? कहाँ नमाज़ पढ़ाते हैं? मसीतो में। कौन पढ़ाते हैं? मौलवी!

देह मसीति मनु मउलाणा।

इसमें बैठकर पढ़। मन लाकर पढ़।

कलम खुदाई पाक खरा॥

अगर तू इस तरह नमाज़ पढ़े! वह पाक कलमा जिसे हम शब्द कहते हैं, नाम कहते हैं, उससे ताल्लुक पड़ जाये और तुझे अपने घर का रास्ता मिल जाए। ये तरीका है मालिक के पास जाने का।

पाठी— जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ॥

मैनेजर साहिब जी— अब मालिक आगे बेनती करते हैं कि ऐ मालिक! जैसे तेरी मर्ज़ी है रख। दुःख में रख, सुख में रख। भूखा रख, नंगा रख। जैसे तेरी मर्ज़ी है रख, पर 'सबदि सलाहणा' क्या? अन्दर नाम का प्रगट होना न भूले। इधर लगा रह, क्योंकि इसके वगैर शांती नहीं। यह काम हर वक्त जारी रहे। और सब काम चाहे रह जायें। हाँ जीः—

पाठी– जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ॥
मैनेजर साहिब जी– कुछ खट लो तो खट लो, नहीं तो बस खत्म है। इसी तरह चले जाना है।
शब्दः-इह वक्त गुज़रदा जांदा ए, हर इक नूं सदा सुहांदा ए।
पर लखां विचों कोई विरला मुल्ल वक्त दा पाँदा ए॥

1. किसे नूं वक्त बणावे राजा, किसे नूं दर दर रोले जी।
वक्त किसे दे पैरी पैंदा, किसे दे सिर चढ़ बोले जी।
एह ऐसा नाच नचौंदा ए, किसे हंसदा किसे रूलांदा ए।
पर लखां विचों कोई विरला मुल्ल वक्त दा पाँदा ए॥
इह वक्त गुज़रदा जांदा ए.....
2. इक्क दिन ऐसे वक्त ने यारो, बण बण राम रूलाया सी।
ऐसे वक्त ने हरीशचन्द्र दा राज पाट छुड़वाया सी।
किते नवें महल बणौंदा ए, किते बणे बणाये ढौंदा ए।
पर लखां विचों कोई विरला मुल्ल वक्त दा पाँदा ए॥
इह वक्त गुज़रदा जांदा ए.....
3. गया बचपना आई जवानी, एह भी इक्क दिन तुर जाणी।
बांग बर्फ दे एह भी बन्देया, खुरदी खुरदी खुर जाणी।
किते गया वक्त नहीं आंदा ए, फिर हर कोई पछतांदा ए।
पर लखां विचों कोई विरला मुल्ल वक्त दा पाँदा ए॥
इह वक्त गुज़रदा जांदा ए.....
4. धन उस नर दे जिसने जग विच, मुल्ल वक्त दा पाया ए।
अंदर वाले ज़िन्दाराम दा, रज्ज रज्ज नाम धिआया ए।
जेहड़ा सतगुरु नाम धिऔंदा ए, ओहदा जन्म मरण मुक्क जाँदा ए।
पर लखां विचों कोई विरला मुल्ल वक्त दा पाँदा ए॥
इह वक्त गुज़रदा जांदा ए.....

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

सत्संग

'असुर संघारण रामु हमारा''

सत्संग के बचन

मैनेजर साहिब जी– वो और अच्छा हो तो ज़्यादा बेहतर है। अगर शान्ती न मिले, आराम न मिले, अगर ज़्यादा वक्त मिले तो उसमें ज़्यादा रस आता है। अगर और वक्त मिले तो उसमें ज़्यादा रस आता है। अगर और वक्त मिले तो और लाभ पहुँचे ज़्यादा रस मिले। हम अपना लाभ आप व्यर्थ ही गंवाते हैं।

पाठी–'मारू महल्ला पहला'

असुर संघारण रामु हमारा। घटि घटि रमईआ रामु पिआरा।
असुर संघारण रामु हमारा। घटि घटि रमईआ रामु पिआरा।

मैनेजर साहिब जी– गुरु नानक साहब जी का शब्द है। बड़े ही गौर से विचारने वाला है। दुनिया में दो ताकतें काम करती हैं। 'असल और सुरत', देवते और राक्षस कह लो। शैतान और रहमान कह लो, नेगेटिव पावर और पोजीटिव पावर। गुरुनानक साहिब कहते हैं कि हमारा जो राम है वो राक्षसों को मारने वाला है। अब सवाल पैदा हुआ कि जब वो राक्षसों को मारने वाला है तो उनका राम कोई अलग है? क्या कई राम हैं? सन्तों का राम ही अलग है। राम कहते हैं *''रमेता सो रामा।''*

जो रमी हुई ताकत है। कितनी ताकतें रमी हुई हैं? लेकिन सन्तों वाली ऊँची ताकत है। कबीर साहिब कहते हैं कि चार राम हैं।

जग में चारों राम हैं तीन राम व्योहार।
चौथा राम निजसार है तिन का करो विचार॥

(कबीर साहिब)

कि जग में चार राम हैं। तीन तो करिंदे हैं, काम करने वाले हैं और चौथा असली है। जो उनका (हैड) मुख्य है। कौन से हैं?

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में बैठा।
एक राम का सकल पसारा, एक राम त्रिगुण से न्यारा॥

(कबीर साहिब)

एक तो दशरथ का बेटा था जो हिन्दुस्तान के राजा हुए हैं। अपना काम किया और चले गए। दूसरा मन का राम है। वो सब में रमी हुई ताकत है।

जीउ एकु अरु सगल सरीरा॥ इसु मन कउ रवि रहे कबीरा॥

(330/12 कबीर साहिब)

वो रमी हुई ताकत सबके अन्दर है। अगर देखा जाए तो सबका गुरु परमेश्वर वही है। हम सब इसी के मातहैत हैं। इसी के हुक्म में चलते हैं। अगर भक्ति करते हैं तो इसी की। यह बड़ा चंचल है। अब यहाँ है, और मिनट में इंग्लैण्ड पहुँच जाएगा, कलकत्ते पहुँच जाएगा, अमरीका में पहुँच जाएगा। इसका काम क्या है? जीव को भरमाना और भटकाना और जीव को अपने घर नहीं पहुँचने देना। और कोई काम नहीं इसको। एक ही यह सब का वकील है यह सबको नचाए फिर रहा है। बड़े-बड़े पीर-पैगम्बरों ऋषियों, मुनियों को नचाए रखा। यह ही बड़ी हस्ती है जो सब लड़ाईयां करवाती है। जितने कर्म धर्म हैं सब इसने बनाए हैं। यह काल का ऐजण्ट है। तीसरा ब्रह्म राम है। उसके तीन गुण है। रजो, तमो, सतो। पैदा करना, पालना और मारना। सृष्टि का इन्तज़ाम करना। यह सब कर्म धर्म उसके हुक्म से बने हैं। पाप और पुण्य सब उसके हुक्म से बने हैं। दान पुण्य का एक जाल डाला है। उसने अपनी एक मुक्ति बनाई है जो कल्प पर्यन्त है। क्या? एक हज़ार चौकड़ी युग के बाद फिर चौरासी में आना पड़ता है। उसके बाद चौथा राम है जिसको गुरुनानक साहिब ने सतगुरु कहा है सतनाम कहा है, सतगुरु कहा है, अकाल पुरुष कहा है। मुसलमान इसे हक्क कहते हैं। पूज्य मस्ताना जी ने धन धन सतगुरु कहा है। हाज़िर नाज़िर ज़िन्दाराम कहा है। जैसे बाहर गवर्नमेंट चलती है। इस तरह अन्दर भी गवर्नमेंट चल रही है। जिस तरह सेण्टर का हुक्म सब जगह चलता है पूरे हिन्दुस्तान में, उसके नीचे कितने सूबे है, सूबों में अलग हुक्म चलता है। इस तरह अन्दर भी अलग ही चल रहा है। यही कबीर साहिब ने लिखा है कि जो न्यारा राम है यह सबका सरदार है। सब से ऊँची ताकत है। सबसे बड़ा है यह राम जो सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। सारी दुनिया तीनों राम में फंसी पड़ी है। चौथे का किसी को पता नहीं।

तीन लोक को सब कोई ध्यावै। चौथे देव का मर्म न पावै॥

(कबीर साहिब)

तीन गुणन की भगती में भूल रहा संसार।
कहे कबीर सतनाम बिन कैसे उतरे पार॥

वो सच्चे राम रूप में रमा हुआ है। उसके बिना छुटकारा नहीं। यही तुलसी साहिब ने कहा है अपने शिष्य कोः—

हे हिरदे तोहि आदि सुनाऊं। जीव सुरत की सन्ध लखाउँ॥
चौथे महल पुरुष एक स्वामी। जीव अंस वह अन्तरयामी॥

कि हे हिरदे तुझे बताते हैं कि जीव कहाँ से आया? कि त्रिलोकी से पार चौथे लोक में एक ताकत है जिसे स्वामी स्वामी कहते हैं। जो सब से बड़ी ताकत है। यह जीव उसकी अंस है।

उनकी अंस जीव जग आया। करता पांच तत में लाया॥

यह जीव वहाँ से आए है। करता क्या? ब्रह्म ने इसको पांच तत के पुतले में कैद कर रखा है।

करता ने काया रची जुग जुग विस्तार।
सार देव विसराये के घर-घर करत पुकार॥

कि युगों-युगों से इसको इसी जाल में डाला है कि निकलने का राह नहीं छोड़ा। कभी किसी योनि में तो कभी किसी योनि में। इस तरह धक्के खाता फिर रहा है। यही एक मुसलमान फकीर ने लिखा हैः—

आवारगी नविश्त शुदा खाना फरामोश शुदा।
आं गन्दा पीरे काबली बस सहर करदत्त अज दगा॥

(शम्मस तबरेज़)

"कि हमारे कर्मों की आवरगी क्या? दर-दर भटकना लिखा है। हम घर को भूले हैं। और निकलने का कोई राह नहीं छोड़ा। उस जादूगर ने ऐसा जादू डाला है।" सो यह है न्यारा राम जिसको कबीर साहिब ने कहा हैः—

कहि कबीर हमरा गोबिंदु। चउथे पद महि जन की जिंदु॥

(871/1 कबीर साहिब)

जो चौथे लोक में है। यह सन्तों का राम है। यह जीव उनकी अंश है। यह मुक्ति का दाता है। जिस तरह श्रीराम ने बाहर राक्षसों को मारा। वो हमारे तन को ख़राब करते थे। हमारे अन्दर जो राक्षस हैं उनको काबू करने वाला यह न्यारा राम है। कौन से राक्षस है? मन, काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, माया, काल, महाकाल। जितनी मुखालफित ताकते हैं जो रूह को रोके बैठी हैं। उनको मारने

वाला वो न्यारा राम है, वो सतगुरु है।

पाठी– असुर संघारण रामु हमारा घटि घटि रमईआ रामु पिआरा॥

नाले अलखु न लखीए भूले गुरुमुखि लिखु वीचारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि वो राम ज़र्रे-ज़र्रे में सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। सबके अन्दर है, सबके साथ है। जिसको हम अलख कहते हैं। इनवीजीबल कहते हैं। जिसको हमने देखा नहीं, जिसको लखया नहीं जा सकता। उसको कौन लखते हैं? गुरुमुख। जो अन्दर जाते हैं, वो कहते हैं कि हमने देखा है।

दादू देखा दीदा, सब को कहत सुनीदा॥ (दादू साहिब)

कि सारी दुनिया पढ़या-पढ़ाया, सुना-सुनाया कहती है। मैं आंखों से देखकर कह रहा हूँ। यही गुरुनानक ने कहा हैः–

नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा॥

मैं उसको अच्छी तरह देखता हूँ। 'ज़ाहिरा' देखता हूँ।

'अदृष्ट, अगोचर, अलख निरंजन सो गुरुमुखि देखता आंखी'

वो ताकत अदृश्य है। इन आंखों से देखी नहीं जाती। अगोचर क्या? मन इन्द्रीयों से छुई नहीं जाती। जो लखी नहीं जाती। माया से रहित है। उसको गुरुमुख देखते हैं। वो आंख और है जो हमारे देखने वाली है। वो बन्द पड़ी है। जिन्होंने वो आंख खोली है, वो गुरुमुख है, वो देखते हैं। चूंकि हम अन्दर जाते ही नहीं इसलिए हम देख नहीं सकते। जैसे हम बाहर देखते हैं। अगर हमारी आंखों के आगे पर्दे डाल दें तो बन्द हो जाएगी। ज्यों-ज्यों पर्दे उठाते जाओ, आंखें खुलती जाएंगी, रोशनी होती जाएगी। सब पर्दे उठाए तो वो अच्छी तरह देखने लग जाता है। इस तरह उस ब्रह्म राम ने हमारे ऊपर अनेकों पर्दे डाले हैं। कर्मों-धर्मों के, पुण्य-दान के और-और पढ़ने-पढ़ाने के, कितने ही पर्दे डाले हैं। यह आत्मा तीन शरीरों में कैद है। जब इन शरीरों में से निकलता है। आत्मा निरोल होती है, साफ होती है। तब यह मालिक को देखने के काबिल बनती है। निरोल आत्मा ही देख सकती है। न तन ने देखना है, न मन ने देखना है। यह सब पर्दे हैं आत्मा के। हाँ जीः–

पाठी– गुरुमुखि साधू सरणि तुमारी। करि किरपा प्रभि पारि उतारी॥

मैनेजर साहिब जी– अब मालिक के आगे बेनती करते हैं कि मालिक जो साधू साधना करके अन्दर गए। वो गुरुमुख बने। वो तेरी शरण में आए। तू उनको नरकों में से निकालता है। नरकों से बचा लेता है। जन्म मरण से रहित कर देता

है। अपने साथ मिला लेता है। हम भी उन साधुओं की शरण में आए ताकि हम भी गुरुमुख बनें। तू हमें भी अपने साथ मिला ले। जन्म मरण से रहित कर दे।

पाठी– गुरमुखि साधू सरणि तुमारी, करि किरपा प्रभि पारि उतारी॥
अगनि पाणी सागरु अति गहरा, गुर सतिगुर पारि उतारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– अब उनकी आंख खुली है। सब खण्डों ब्रह्मांडों पर नज़र मारकर कहते हैं कि जितने संसार के जीव हैं कुल ब्रह्माडों के, सब अग्नि और पानी के समुद्र में रूढ़े जा रहे हैं। आग और पानी का समुद्र कौन सा है? दोज़ख। पानी का कौन सा? यह दुनिया और स्वर्ग। और समुद्र कैसा है? उसकी कोई थाह नहीं, इतना गहरा है। उसका कोई किनारा नहीं, कोई नहीं कह सकता कि यह दुनिया कब बनी? कितनी प्रलय हो गईं? कितनी महाप्रलय हो गईं? कितने सतयुग बीत गए? इस तरह हम आग और पानी के समुद्र में रूढ़े जा रहे हैं। अगर पुण्य करते हैं तो अच्छी योनियों में चले जाते हैं, स्वर्गों में चले जाते हैं। पाप करते हैं, नरकों में चले जाते हैं। गन्दी योनियों में चले जाते हैं। छुटकारा नहीं हुआ। रूढ़ते ही रूढ़ते जा रहे हैं। त्रिलोकी तक आग और पानी का समुद्र है। वहाँ तक शांती नहीं। महात्मा जगजीवन दास अन्दर गए। जब देखा तो उन्होंने लिखा हैः–

पपीहा जाहि पुकारिउ पंछीआन आगे रोय।
तीन लोक फिर आउ हूं बिन दुखु लखियो न कोय॥

(जगजीवनदास)

त्रिलोकी तक देख आया हूँ। कहीं सुख नहीं, चैन नहीं। सब जन्म मरण के बन्धन में हैं। चार दिन सुख होता है फिर इसी तरह चौरासी में धक्के खाता है। सो सारी दुनिया इस तरह चौरासी में धक्के खाती है। आग और पानी के समुद्र में गोते खा रहा है। इस चौरासी में से निकालने वाला वो सतगुरु है। वो न्यारा राम है और कोई नहीं। हाँ जीः–

पाठी– मनमुख अंधुले सोझी नाही आवहि जहि मरहि मरि जाही॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि सारी दुनिया मनमुख हैं, अंधे हैं। अंधे आए और अंधे ही चले गए। मन के कहे खाते हैं, मन के कहे पीते हैं। मन के कहे विषय-विकार भोगते हैं। मन के कहे भक्ति करते हैं। मन के कहे कर्मों-धर्मों में पड़े हैं। बार-बार पैदा होते हैं और बार-बार मरते हैं। इस तरह युगों के युग बीत गये। एक महात्मा ने लिखा हैः–

तुम जात न जान गंवारा हो॥

कि ऐ गवार! तुझे तो अपनी जात का ही नहीं पता।

को तुम आये, कहां ते आये झूठा करत पसारा हो॥

तू कौन है? कहाँ से आया है? क्या करना था? क्या कर रहा है? कहाँ जाएगा? यह बाहर की कौमों के पीछे लड़-लड़कर मर गया। बाहर के मज़हबों के पीछे लड़कर मर गया, इसको पता ही नहीं कि मैं कौन हूँ? यह है कौन? बाहर तो कहता है कि मैं आर्य हूँ, कोई कहता है कि मैं सनातनी हूँ, कोई कहता है कि मैं खालसा हूँ। यह है कौन?

कहु कबीर इहु राम की अंसु॥ (871/9 कबीर)

यह राम की अंश है, सतपुरुष की अंश है। यह अपने देश को भूल गया।

माटी की बूंद पिण्ड की रचना ता में प्राण प्यारा हो॥

लोभ लहर में मोह की धारा, सिरजणहार विसारा हो॥

बाहर की कौमों के पीछे, मज़हबों के पीछे, बाहर की जिस्मानी पालना में रह गया। इस तरह गुज़ार कर चला गया। सारी दुनिया मन के मातैहत है। मन की गुलाम है। मन के पुत्रों-धीओं में, कौमों-मज़हबों में, इन झगड़ों में पड़ी है। आत्मा बार-बार पैदा होती है और मरती है। अंधी आई और अंधी चली गई।

पाठी– मनमुख अंधुले सोझी नाहीं, आवहि जाहि मरहि मरि जाही॥

पूरबि लिखिआ लेखु न मिटई, जमदरि अंधु खुआरा हे॥

मैनेजर साहिब जी– जिस तरह हमने पीछे फसलें बीजी हैं। वो दाने हमारे घरों में पड़े हैं। हम खा रहे हैं। आगे को और बीजेंगे वो आगे खाएंगे। फिर बीजेंगे फिर खाएंगे। इस तरह हम ने जो कर्म किए हैं वो अब भुगत रहे हैं। जो अब कर रहे हैं वो आगे भुगतेंगे। फिर करेंगे तो फिर भुगतेंगे। हर जून के बाद मौत आती है। यमदूत आते हैं पकड़कर धर्मराय के पास ले जाते हैं और हमारे कर्मानुसार, हाथी, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ला, इन्सान, हैवान बना देता है। जैसे हमने कर्म किए हैं वैसे ही फल मिलता है, पर छुटकारा नहीं होता। इस तरह धक्के खा रहा है। अगर हमें पता लग जाए कि हमारे कर्मों से ही छुटकारा होता है तो हम बुरे कर्म क्यों करें? नरकों में क्यों जाएं? छुटकारे का बंदोबस्त क्यों नहीं करें? जो समझदार हैं, जिन पर मालिक की मेहर है, किसी फकीर से पूछकर, नाम रास्ता लेकर अन्दर सतगुरु को प्रगट करते हैं। अपने छुटकारे का बंदोवस्त कर लेते हैं। बाकी सारी दुनिया ऐसे ही रूढ़ती जा रही है। हाँ जीः–

पाठी– इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि। किरत के बाधे पाप कमावहि॥

मैनेजर साहिब जी– बाहर के झगड़ों के पीछे, कौमों-मज़हबों के पीछे, बाल-बच्चों के पीछे क्या नहीं करता? यह लेने-देने, झूठ-तूफान, सौ सियापे करता है। हाँ जीः–

पाठी– अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अहंकारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि सारी दुनिया के लोग अंधे हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार ने मिट्टी पलीत की हुई है। लोभ में आ गया, क्या-क्या नहीं करता? एक आदमी ने आकर सुनाया कि एक आदमी ने छः बहुएं और तीन चार लड़कियां मार दीं। क्योंकि एक तरफ से पैसा आता, वो जमा हो जाता। लड़कियों को देना ही नहीं था। कौन करवाता है? लोभ, मान, बड़ाई के पीछे लीडर क्या कुछ नहीं करते? एक दूसरे का कत्लों खून! कौन करवाता है? अहंकार। इस को होश नहीं कि कैसे काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार इसकी मिट्टी पलीत कर रहे हैं। मोह के वश में आकर क्या-क्या नहीं करता? फिर नरकों में जाता है। बोलो! हाय! हाय! हाँ, देख लो भई! लोभ कि मेरा एक दिन का काम क्यों रोका? रामलीला में गया एक दिन ज़्यादा लगा आया। उसने सीरी (नौकर) को मार दिया। हाय! हाय! हाँ, जीः–

पाठी– पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा। पर पिर राती खसमु बिसारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि एक कुंआरी लड़की या विधवा है अगर वो हार सिंगार लगाए भी तो दिखाए किसे? आत्मा का पति परमात्मा है। वो इसके अन्दर है। यह अन्दर जाती नहीं उसके पास। इसने मन को पति बनाकर रखा है। वो उसके कहने पर चलती है। वो अपने बस में नहीं। वो इन्द्रीयों के बस में है। जो इन्द्री चाहती है खींचकर ले जाती है।

सच्चे पातशाह फरमाया करते थे कि एक बादशाह की लड़की थी। उसने किसी शहज़ादे से शादी करके रानी बनना था। उसने प्यार पा लिया किसी चूहड़े के साथ। अब उसके साथ धक्के खाती फिरती है। वो अपने बस में नहीं। वो कंज़रियों के पास जाता है। पीछे-पीछे वो भी धक्के खाती फिरती है। इस तरह यह रूह सतपुरुष की अंश है। इसने मन को पति बनाया हुआ है। मन अपने बस में नहीं। जो इन्द्री चाहती है उसको खींच कर ले जाती है। पीछे-पीछे रूह घूमती है। कहाँ सतपुरुष की अंश, मालिक की अंश, सतगुरु की अंश और कहाँ मन, इन्द्रीयों के काबू में आ गई। कानों की इन्द्री सुन-सुनकर क्या नहीं करवाती? लोभी की बातें सुन-सुनकर उधर को दौड़ाए फिर रही है। दुश्मन की बातें सुन सुनकर के कत्लों खून के लिए तैयार रहती हं। आंखों की इन्द्री सुन्दर-सुन्दर रूप देखकर

उधर फिर रही है। जुबान की इन्द्री खट्टे मिट्ठे रसों के पीछे क्या क्या नहीं करवाती? चोरियां-ठगीयां और-और। इस तरह बेचारे की मिट्टी पलीत है। जो कोई समझदार हैं, मन का ख़्याल रखते हैं। उनको भी मन अन्दर नहीं जाने देता। अपने पति परमेश्वर के पास नहीं जाने देता। कोई जँड़ो में फिरता है, कोई पीपलों की पूजा करता है, कोई तुलसी की। कोई देवी-देवतों में घूमता है। कोई मढ़ियों-मसानों में घूमता है। अपने सतगुरु के पास, प्रीतम के पास नहीं जाने देता। महात्मा चरणदास जी कहते हैं कि–

पति की ओर निहारीए, औरन से किआ काम।
सभी देवता छोड़ के, जपीए हरि का नाम॥

(चरणदास जी)

यही पलटू साहिब कहते हैं–

राम पुरुष को छोड़ि करै देवतन की पूजा।
बिस्या की यह रीति खसम तजि खोजै दूजा॥

(पलटू दास)

अपने पति को बिसार रखा है। अपने सतगुरु को बिसार रखा है। और-और सियापों में पड़ा है। हाँ जीः–

पाठी– पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा। पर पिर राती खसमु बिसारा॥

मैनेजर साहिब जी– जितने बाहर के कर्म-धर्म, पाठ-पूजा हैं यह सब एक किस्म के शृंगार हैं। एक बीबी है, उसको हज़ारों सुख दे दो। पर उसको अगर पति नहीं मिला तो सुख नहीं। इस तरह हज़ारों जप-तप, हज़ारों भेख बना लो। कुछ कर लो, कितने शृंगार कर ले, अगर पति परमेश्वर नहीं मिला तो इसको कहीं सुख नहीं, कहीं चैन नहीं।

पाठी– जिउ बेसुआ पूत बापु को कहीए तिउ फोकट कर कार विकारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– जैसे एक वेश्या के पास हज़ारों आदमी आते हैं। अगर उसके लड़का हो जाए तो उसका बाप कौन कहलाएगा? किसकी जायदाद का वारिश कहलाएगा? इस तरह आत्मा ने मन के कहे लगकर छत्तीस सौं खसम बना रखे हैं। जँड, तुलसी, पीपल और-और, अपने पति को तो छोड़ ही रखा है। अकाल पुरुष को छोड़ रखा है। मौत के समय कौन संभाल करे? कोई कर्म-धर्म नहीं संभाल सकता। कोई पाठ पूजा नहीं संभाल सकती। जब भी संभाल करनी है, अन्दर वाले राम ने करनी है। उसको सब छोड़े बैठे हैं। बाहर के झगड़ों में पड़े हैं।

सभि जप सभि तप सभ चतुराई। उझड़ि भरमै राहि न पाई॥
बिनु बूझे को थाइ न पाई। नाम बिहूणै माथे छाई॥

(412/2 मः 1)

जब तक सतगुरु को या नाम को अन्दर प्रकट नहीं करता, तब तक इसके माथे पर सुआह ही पड़ी है।

जीअरे ओला नाम का॥
अवरु जि करन करावनो तिन महि भजु है जाम का॥

(211/1 म : 5)

एक महात्मा ने लिखा है–

फोकट धर्म पकड़ कर जूझे, बूझे न सबद जुगत मारा।
पानी मथे हाथ कुछ नाहीं, क्षीर मथन आलस भारा॥

बाहर के फोकट धर्मों में घूमता है। अन्दर वाले सतगुरु को प्रगट नहीं करता। बाहर के जितने साधन हैं, सब पानी को मथना है। उसमें से क्या निकलना है? दूध मंथन क्या? कि इस शरीर को मथकर अन्दर से राम गुरु निकाले। तब कुछ हासिल होता है।

जीव अभाग कहूं मैं क्या-क्या, बाहर भरमे भौ जारा।
अन्तर मुख जो सबद कमाई, ता में मन को नहीं गारा॥

कि जो असली भक्ति है वो तो किसी ने की ही नहीं। कौन संभाले फिर मौके पर? कबीर साहब कहते हैं कि–

नेम धर्म आचार यज्ञ तप, ये उरले व्यवहारा।

यह सब उरली-उरली चीज़े हैं।

जा से मिले अखंड मोक्ष सुख सो मारग है न्यारा॥

पाठी– प्रेत पिंजर महि दुख घनेरे नरक पचहि अगिआन अंधेरे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि कितनी रूहें हैं? सबने उस अकाल पुरुष को सतगुरु को, सतपुरुष को छोड़ रखा है। वो मर कर फिर कहाँ जाएंगे? चौरासी में। भूतों-प्रेतों की योनियों में, नरकों में। कहते हैं कि उनको फिर अंधेरी कोठरियों में बन्द किया जाएंगा। वो अंधेरे में आए, अंधेरे में चले गए। दुखों में आए, दुखों में गुज़ार गए, दुखों का सामान पैदा कर के चले गए। हाँ जीः–

पाठी– प्रेत पिंजर महि दुख घनेरे नरक पचहि अगिआन अंधेरे॥
धर्मराइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– मुक्ति नाम में थी, सतगुरु के पास थी। अगर नाम को अन्दर करता, सतगुरु को प्रगट करता तो मुक्ति हो जाती, छुटकारा हो जाता। वो तो किया न, बाहर के साधनों में घूमता रहा। अब जैसे-जैसे कर्म किए, धर्मराय ने उन योनियों में भेज दिया। कभी किसी योनी में तो कभी किसी योनी में। हाँ जीः–

पाठी– सूरजु तपै अग्नि बिखु झाला। अपतु पसू मनमुख बेताला॥

मैनेजर साहिब जी– अब नरकों में क्या होता है? कि आग के सूरज तप रहे हैं। आग के थम तप रहे हैं। आग की लपटें तप रही हैं। अगर वहाँ से एक चिंगारी भी यहाँ आए तो सारी दुनिया को जलाकर राख कर दे। इतनी बड़ी-बड़ी लपटें हैं आग की। उन नरकों में सड़ना पड़ता है। युगों के युग बीत जाते हैं। एक ही युग तक एक नरक में पड़ा रहता है। इतना बुरा हाल होता है। इसको पता नहीं अब तो मस्ती में है। कहते हैं कि यह बड़ा बेशर्म है, अहमक है। सोचता नहीं। मन से प्यार डाला है। वो इसको चौरासी में ले जाता है। नरकों में ले जाता है, दुखों में ले जाता है। सोचता नहीं! मरते हुओं को देखों तो सही कैसे हाय हूँ करते हैं! जो अन्दर वाला सतगुरु है, वो बचाने वाला है। उसको तो खुश न किया। बाहर के सबको खुश किया इसने। मन्दिरों में गए पुजारियों को खुश किया, गुरुद्वारों में गए भाईयों को खुश किया, तीर्थों पर गए उनको खुश किया। मां, बाप, बहन, भाई और बाहर के गुरुओं को खुश किया। लेकिन मौत के समय अब कौन बचाएगा?

पाठी– सूरजु तपै अग्नि बिखु झाला अपतु पसू मनमुखु बेताला॥
आसा मनसा कूड़ु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे॥

मैनेजर साहिब जी– सारी दुनिया कूड़ है, फनाह है। कोई चीज़ कायम रहने वाली नहीं। इसने कूड़ खाया, कूड़ पीया, कूड़ ही इसका ईमान है। कूड़ ही इसके देश हैं, कूड़ ही में प्यार किया, कूड़ ही में पैदा हुआ। कूड़ ही आसा, कूड़ ही मनसा। क्या? यह कूड़ का रोगी है। कूड़ फिर काल का माल है। फिर यह रोता है, चिल्लाता है। वो फिर हिसाब मांगता है। हिसाब तो देना पड़ता है। फिर क्या बनता है? वक्त संभाला नहीं। यह वक्त है। आदमी की योनि सब योनियों की सरदार है। इसे नर-नारायणी देह कहते हैं। इसमें मालिक मिलता है और योनि में नहीं। यह चौरासी में से छुटकारा करने का मौका था। ऐसे ही व्यर्थ गंवा दिया। जो काम करना था वो तो किया ही नहीं। इसकी कद्र साध संगत में जाकर पड़ती है। इस जून की कद्र कि ओहो! कि कितनी मूल्यवान थी यह योनि। दुनिया ऐसे ही व्यर्थ में गुज़ार कर चली गई। भांग के भाड़े गंवा दी। जो गुरुमुख हैं, जो साधू हैं, उनके

संग में जाकर उनको परख पड़ती है।

पूज्य मस्ताना जी एक पुरानी कथा सुनाया करते थे कि एक साहूकार था। उसके लड़का था एक ही। कुछ समय के बाद वो साहूकार मर गया। जो पैसा था वो पहले ही खर्च कर बैठे। मां कहने लगी कि बेटा देख तेरे बाप का एक सर्राफ़ दोस्त था। अपने एक हीरा पड़ा है, बेच आ। यह लाल है इसको बेच आ। कहने लगा कि अच्छा। जब उसके पास गया तो उसने देखा कि लाल तो था, पर खोटा था। उसने सोचा कि इसको अगर बताऊंगा तो इसका मन दुखी होगा और वो सोचेंगे कि ठगते हैं। उसने कहा कि काका इसे तू ले जा। कीमती चीज़ है क्यों गँवा रहा है? चार-पांच सौ रुपये ले जा इससे काम चला और मेरे पास आ जाया कर काम सीख ले कि तुझे कुछ काम सिखा दें। लड़का कहने लगा कि अच्छा। पैसे ले गया और हीरा भी घर ले जाकर रख दिया। जब उसे परख करनी आ गई तो वो कहने लगा कि वो लाल तो ले आ। अब उसने देखा कि यह तो कूड़ा है। इस तरह साधू के पास में आकर ही पता चलता है कि जितने भी काम हैं सब कूड़ हैं। न कौम-मज़हब साथ जाएंगे, न बाल बच्चे ही साथ जाएंगे, न मां-बाप साथ जाएंगे, और किसी चीज़ ने साथ नहीं जाना। जो काम करना था वो तो किया नहीं। न ही कर्म-धर्म साथ जाएंगे। यह भी रास्ते में लूट लेते हैं।

करम धरम पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै॥
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै॥

(747/15 म :5)

जितने भी हैं सब कूड़ हैं। एक ही काम सच्चा है। अन्दर सच्चे नाम को प्रगट करना, शब्द गुरु को प्रगट करना। बाकी सब कुछ यहाँ रह जाएगा। कुछ यमदूत खो (लूट) लेंगे। इसके पल्ले भी कुछ भी नहीं। एक नाम की भक्ति है, शब्द गुरु की भक्ति है। जिसे यमदूत नहीं खो सकते। तभी मीरां ने कहा है:—

पायो रे मैंने नाम रतन धन पायो॥
जिसको पाये दुख सुख भूले, मन आनन्द रे समाइयो॥
जिसकी चोरी कबहूं ना होवे, ऐसा धन मैंने पायो॥
खरचों लाख खत्म नही होवे, दिन दिन बढत सवाइयो॥

(मीरां)

वो ऐसा धन है जिसे न डाकू लूट सकते हैं, न चोर चुरा सकते हैं, न यमदूत खो सकते हैं, न आग जला सकती है, न पानी गला सकता है। किसी के काबू नहीं आता वो सच्चा धन है।

पाठी– मस्तकि भारू कलर सिरि भारा। किउकरि भवजलु लंघसि पारा॥

मैनेजर साहिब जी– कल्लर कहते हैं नेकियों, वदियों को इसने सारी उमर नेकियां, बदियां कमाईआं। जिस समय मौत आई जितना इसने कमाया। इसकी नेकियों, बदियों की गांठ बांधकर इसके सिर रखकर यमदूत कहते हैं, चल! सिर पर बोझ है आगे आग का समुद्र है, चला नहीं जाता! पीछे यमदूत डण्डे मारते हैं। इसके बारे में एक फकीर ने लिखा हैः–

कर्म भार सिर उपर लादा, घेरे फिरे काल का प्यादा।
पियादों के संग इज़्ज़त खोती, सत्य पुरुष दे कुल दी मोती॥

जिस वक्त मौत आयी इसके अच्छे-बुरे कर्मों की गांठ इसके सिर पर रखी।

'घेरे फिरे काल का प्यादा'

पीछे यमदूत हैं आगे आग का समुद्र है, निकला जाता नहीं। कैसे निकले? कहते हैं कि सतपुरुष की अंश कितनी मुसीबत में पड़ी है।

पाठी– मसतकि भारू कलर सिरि भारा किउकरि भवजलु लंघसि पारा॥

सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कि संसार रूपी समुद्र में से निकलने का, मुक्ति का एक ही रास्ता है कि सतगुरु कह लो, राम नाम कह लो, सतपुरुष कह लो, ज़िन्दाराम कह लो, यह मल्लाह है, राम नाम का जहाज़ है। अगर किसी फकीर को पूछकर अन्दर सतगुरु को प्रगट करे तो वो इसको राम नाम के जहाज़ में चढ़ाकर ले जाएगा। वो ले जाए तो ले जाए। आग और समुद्र के पानी से निकल जाए नहीं तो निकलना बड़ा ही मुश्किल है। कोई नहीं निकल सका। एक ही रास्ता है युगों-युगों से एक ही तरीका है। यह आज का नहीं जब से दुनिया बनी है, तब से बना है। किसी सन्त महात्मा का नहीं बनाया हुआ। किसी वली, पैगम्बर का नहीं बनाया हुआ। खुद मालिक का अपना बनाया हुआ है।

जुगि जुगि भगतां की रखदा आइआ॥
दैत पुत्रु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ॥
(1133/13 मः 3)

और कोई तरीका नहीं, हाँ जीः–

पाठी– पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा माइआ मोहु पसरिआ पासारा॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि सारी दुनिया में मोह माया का जाल फैला हुआ है। सारी उमर मोह माया में क्या, सारी उमर बाल-बच्चों के प्यार में, रिश्तेदारों के प्यार में, यार-दोस्तों के प्यार में गुज़ार गया। या ज़मीने-जायदादें बनाईं, शरीर

को पाला या कौमों मज़हबों की सेवा की, वो यहीं रह गए। आगे साथ क्या गया? कुछ भी नहीं। एक बार हम अमरपुरा में थे। फतेहावाद से आगे है। वहाँ के प्रेमी बैठे हैं। वहाँ शाम का वक्त था। एक प्रेमी आ गया। हमने पूछा कि भई! सुना तेरा क्या हाल है? कहने लगा कि क्या सुनाएं? मोहमाया के जाल में फंसे पड़े हैं पल्ले कुछ भी नहीं। इस तरह हमें भी मोह माया का नशा चढ़ा है। पल्ले कुछ भी नहीं।

पाठी– पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा माइआ मोहु पसरिआ पासारा॥
जम के फाहे सतिगुरु तोड़े, गुरुमुखि ततु वीचारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– देख लो! किसी को काम का नशा चढ़ा है। किसी को क्रोध का नशा, किसी को मोह का, किसी को लोभ का, किसी को मान बड़ाई का, किसी को कौमों-मज़हबों का। सबको नशा चढ़ा हुआ है। दुनिया नशे में फिर रही है। किसी को होश ही नहीं। हम तो कहते हैं कि किसी को शराब का नशा है, किसी को अफ़ीम का नशा है। पर सबको कोई न कोई नशा चढ़ा हुआ है। इन नशों का तो किसी को पता ही नहीं। कहते हैं कि यमों से बचाने वाला, उस के फंदों में से निकालने वाला वो अन्दर ही है। उसको न्यारा राम कह लो, सतगुरु कह लो। उसको तो खुश न किया बाकी सारी दुनिया को खुश किया। सारी दुनिया को खुश किया। अगर कुछ फायदा उठाया तो गुरुमुखों ने। फायदा उठा गए तो गुरुमुख। दुनिया की लज़्ज़त भी ले गए और आगे की लज़्ज़त भी ले गए। दुनिया में भी रहे, यहाँ भी गुज़ारे मात्र बरता और भक्ति करके अन्दर सतगुरु को अन्दर प्रकट कर लिया।

'गुरुमुखि ततु वीचारा हे।'

अपनी चेतन सत्या कह लो, सुरत कह लो, उसको निकाल कर शब्द गुरु से मिला दी। वो पा गए बाकी ऐसे ही व्यर्थ गंवा गए।

पाठी– कूड़ि मुठी चालै बहु राही। मनमुखु दाझै पड़ि पड़ि भाही॥

मैनेजर साहिब जी– सब दुनिया कूड़ है। जितने बाल-बच्चे, ज़मीन-ज़ायदादें, घर-बार, हवेलियां, यार-दोस्त, कौम-मज़हब सब कूड़ है। हम रोज़ पढ़ते हैं:–

कूड्ड राजा कूड्ड परजा कूड्ड सभु संसारु॥
कूड्ड मँडप कूड्ड माड़ी कूड्ड वैसणहारु॥

कभी वीचारा है?

कूड्ड मंडप कूड्ड माड़ी कूड्ड वैसणहार॥

इन में फंसे पड़े हैं।

कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैनणहारु॥
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु॥
कूड़ु मीआं कूड़ु बीबी खपि होए खारु॥
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु॥
किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु॥
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु॥
नानकु बखाणै बेनती तुझु बाझु कूड़ो कूड़ु॥

(468/5 मः1)

मालिक के बिना सब कूड़ है। सारी दुनिया कूड़ में फंसी है। यह कूड़ ही इकट्ठा किया। इस कूड़ के पीछे ज़ुल्मो-सितम किए। इस कूड़ के पीछे कत्लों-खून किए। कूड़ साथ नहीं गया। आखिर नरकों का सामान पैदा कर के चला गया। महमूद गजनवी ने सत्तारह हमले किए। सब माल मन्दिरों से भी लूट कर ले गया। जब मौत आई तो कहने लगा कि मुझे यह पूरा माल दिखाओ। बाजारों के बाजार लग गए, मीलों तक सामान लग गया। पालकी में बिठाकर ले गए। ऐसे हाथ बाहर निकाल कर कहने लगा कि इस दौलत के पीछे मैंने हज़ारों औरतों को विधवा किया, हज़ारों बहनों के भाईयों को अलग किया, हज़ारों बच्चे यतीम किए। आज यह सब मेरे साथ नहीं जाते। कहते हैं सारी दुनिया कूड़ में फंसी पड़ी है। कूड़ के पीछे ज़ुल्मों-सितम करती है, पाप करती है। नरकों का सामान पैदा करती है।

पाठी– कूड़ि मुठी चालै बहु राही मनमुख दाझै पड़ि पड़ि भाही॥
अंमृत नामु गुरु बडदाना नामु जपहु सुख सारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि अगर शान्ती देने वाला कोई सामान है, सुख देने वाला कोई सामान है तो वो नाम है। वो अमृतरूपी नाम इसके अन्दर है। उसका दाता भी इसके अन्दर है। किसी कामिल फकीर को पूछ कर अन्दर नाम को प्रगट करे। वो नाम बख़्श दे, तो वो अन्दर की खुशी में पहुँच जाए। फकीरों ने अपनी तरफ से कुछ नहीं देना। वो तो कहेगा कि मैंने इस तरह सतगुरु को खुश किया है तुम भी इस तरह प्रकट कर लो। मेहनत करे तो सतगुरु आ जाएगा। फिर सतगुरु बड़ा दाना है पर वो ऐसे ही दरवाज़ा नहीं खोलता। किसी सच्चे दिल वाले के लिए खोलता है। यहाँ पर तो सच्चे दिल का सवाल है।

हिरदै सचु एह करणी सारु। होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु॥

(1343/15 मः 1)

रुकावट क्या है? मन। यह हमें बाहर ही बाहर लिए फिर रहा है। हमें अन्दर

नहीं जाने देता। जिस तरह खज़ाना कहीं दबा हो तो उस पर सांप बैठा होता है। उसको मारे या पकड़ें, तब खज़ाना ले सकता है। जब खज़ाने पर जाता है तो वो फुंकारे मारता है, डंक मारता है। जब तक पकड़ा नहीं जाता खज़ाना नहीं ले सकते। इस तरह अन्दर वाले खज़ाने पर भी, सतगुरु के खज़ाने पर भी मन रूपी सांप बैठा है। यह भी डंक मारता है, फुंकारे मारता है कि सतगुरु को प्रगट करता है, रात को जागता है। कल का काम कैसे करेगा? बाल-बच्चों की पालना करो। बस यही भक्ति है। किसी को कुछ, किसी को कुछ। बस इसी तरह भरमा रहा है। दुनिया से प्यार किया है, मन के कहे चलते हैं। अन्दर जाते नहीं फिर खज़ाना कहाँ से मिले? जितने फकीर आए हैं उन्होंने कहा है कि तू नाम जप। मन रोता है तो रोने दो, पिटता है तो पिटने दो। इसके साथ सख़्त मुकाबला करना पड़ता है।

मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ॥ (87/13 म :3)

बिना झगड़े से काबू नहीं आता।

पाठी– सतिगुरु तुठा सचु दुड़ाए सभि दुख मेटै मारगि पाए॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि अब सतगुरु की मेहर पर है। जो सच्चे दिल से पुकार करता है, उस पर मेहर करता है। उसको कामिल फकीर मिलाता है। वो नाम जपता है तो और मेहर होवे तो इसे दरगाह में ले जाता है। तब सब दुख दूर हो जाते हैं। यह उसकी मेहर पर है। मेहर उस पर करता है जो सच्चे दिल से पुकार करे। हाँ जीः

पाठी– कंडा पाइ न गइई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं जो नाम लेकर सिमरण करते हैं, रात को जागते हैं, वो कहीं भी जंगलों, पहाड़ों, वीयावानों में कहीं भी जाए, वो सतगुरु साथ है। जो उसको प्रगट कर लेते हैं, वो उसको देखते हैं। जब चाहे बातें कर लेते हैं और वो देखते हैं कि सतगुरु उनके पांव में एक सूल तक भी चुभने नहीं देता। हरदम साथ है। कदम-कदम पर संभाल करता है। एक मिनट नहीं छोड़ता। हरदम उसकी तरफ नज़र रखता है। जो कम करते हैं, भजन करते हैं पर अन्दर दिखाई नहीं देता। पता उनको भी लगता है कि हमारी संभाल हो रही है जिस तरह बच्चा है। उसके मुंह पर मक्खियां बैठती हैं। मां मुंह पर से मक्खियां उड़ाकर कपड़ा मुंह पर डाल देती है। उसे पता नहीं चलता। पर अहसास होता है कि मक्खियां नहीं बैठतीं। इसी तरह इसे पता नहीं लगता। यह तो कहता है कि सतगुरु दिखाई नहीं देता। पर हमें इतना पता चलता है कि कदम-कदम पर सतगुरु संभाल करता है।

बुरा भला जो गुरु भक्त, कबहूं नरक न जाइ॥

(कबीर साहिब)

यह नरकों में लेकर नहीं जाता। नरकों के नज़दीक नहीं आने देता। हाँ जीः–

पाठी– खेहु खेह रलै तनु छीजै मनमुख पाथरू सैलु न भीजै॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि यह शरीर, आग, पानी, हवा, मिट्टी, आकाश से बना हुआ है। जब मौत आई, (मौत ने तो ज़रूर आना है) आग, आग में मिल गई, पानी, पानी में मिल गया, आकाश, आकाश में मिल गया, हवा, हवा में मिल गई। फिर इससे कोई फायदा उठा ले, तभी है। इसको पाल-पालकर थक गया। इसको संभाल कर थक गया। आखिर आग के खाजे में गया। यह एक नौकर था, काम लेना था। इससे फायदा उठा लो, नहीं तो कल को यह आग में जाएगा। जिस तरह हम चाहते हैं कि नौकर काम करता रहे, रोटी खाने में भी ज़्यादा समय न लगाए! बस लगा रहे। इस तरह इससे भी फायदा उठा लो, नहीं तो कल को आग में जाएगा। एक मुसलमान फकीर ने लिखा है–

जान बजाना देह वगरना अज़ तू बिसतानद अजल।
खुद तू मुनसिफ बाश ऐ दिल ई निको या आं निको॥

(हाफ़िज़ साहिब)

''क्या ही अच्छा होगा कि तू अपनी जान मालिक या सतगुरु पर कुर्बान कर दे, वरना तेरी जान को मौत एक दिन अवश्य ले जाएगी। तू स्वयं इन्साफ कर कि सतगुरु के हवाले कर वो अच्छी है या मौत के मौत के हवाले करे तो अच्छी है।''

पूज्य मस्ताना जी कहने लगे कि एक बार रात को सिमरण करते-करते बाहर निकल गए। आगे गए तो लालटेन जल रही थी। वहाँ जाकर देखा कि क्या? एक आदमी ऊंट को बड़े चाव से चारा अपने हाथ से खिला रहा है। हमने पूछा कि भई! यह क्या? कहने लगा कि इस समय यह मेरा दादा है। सुबह मैं इसका दादा हूँ। डण्डा उठाता हूँ और दस रुपये निकालता हूँ। उसने खिला कर दस रुपये तो निकाले, हमने खिलाकर क्या निकाला? सारी उमर पाल कर आखिर में आग हवाले हुआ। वो जड़, हम चेतन। वो जड़, चेतन से काम ले रहा है देखो! लेना तो हमने काम आत्मा से था इस शरीर से, उलटे यह हमसे ले रहा है। उलटे रास्ते पड़ा है, उलटा काम हुआ पड़ा है।

एक बार फरीद साहिब जा रहे थे। एक वेश्या नौकरानी को पीट रही थी। उन्होंने पूछा कि क्यों पीट रही है? कि इसको सुरमा रगड़ने के लिए दिया था।

इसने मोटा पीसा है। मेरी आंखों में चुभता है। फरीद साहिब फिर वापिस आए तो पूछा कि वो वेश्या? की जी वो मर गई। उसकी कब्र पर गए, कब्र खोदी। देखा कि जिन आंखों में सुरमा चुभता था, उसमें जानवरों ने घर बनाए हुए हैं। फरीद साहिब ने फिर वहाँ फरमाया कि–

फरीदा जिन लोइण जगु मोहिआ से लोइण मैं डिठु॥
कजल रेख न सहदिआ से पंखी सुइ बहिठु॥

(1378/12 फरीद)

''कि यहाँ सुरमा लगाती थी वहाँ जानवरों ने आलणे बना लिए है।'' इससे कोढ़ी अच्छा है जो नाम जपता है।

नाम जपत कोढ़ी भला, चोइ चोइ पड़े जो चाम।
कंचन देहि किस काम की जा मुख नाहीं राम॥

(कबीर साहिब)

देखो! सतगुरु को प्रगट नहीं किया तो क्या फायदा? इससे तो कोढ़ी अच्छा जो सिमरण तो करता है। जो मनमुख है, पत्थर दिल है। उन पर असर ही नहीं होता। कहते हैं कि खाओ पीयो मौज़ करो। कौन सा परमात्मा है? नाम के, गुरु के तो नज़दीक ही नहीं आते।

पाठी– खेहु खेह रलै तनु छीजै मनमुखु पाथरू सैलु न भीजै॥
करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते कि इतना कुछ किया, पर अन्दर सतगुरु को प्रगट नहीं किया। तन का प्यार दिया, पर सतगुरु को खुश नहीं किया। बाहर मन को खुश किया। खाने-पीने में पड़ गए, विषय-विकारों में पड़ गए और इनमें ही खुश होते हैं। फिर बाहर के कर्मों-धर्मों में गुज़ार गया। फिर इन कर्मों के अनुसार अगली जून मिल जाएगी लेकिन छुटकारा नहीं होगा। छुटकारा देने वाला अन्दर शब्द गुरु है और कोई नहीं। बल्कि कर्मों-धर्मों से आदमी की योनि भी नहीं मिलती। यह अच्छी जून भी नहीं मिलती।

''एक इब्राहीम की किताब पड़ी है। एक बार वो शिकार करने पहाड़ी के दूसरी और निकल गया। वहाँ एक फकीर बैठा था। उसने दो कुत्ते बांध रखे थे दो कीलों से। एक कीला खाली पड़ा था। वो उनको पुलाव खिला रहा था। वो खाएं न। वो उनको मार-मार कर खिला रहा था। अब उसको चोट लगानी थी। उसने पूछा कि आदमियों का खाना इन कुत्तों को क्यों खिला रहा है। कहने लगा कि इनको खाना ही पड़ेगा। कि क्यों? कि इन्होंने कर्म ही ऐसे किए हैं कि उनका

इवज़ाना इनको लेना ही पड़ेगा। कि यह हैं कौन? इब्राहीम पर मालिक की मेहर थी और चोट भी लगानी थी। कहने लगा कि यह इब्राहीम का बाप है, यह दादा है। कि यह तीसरा कीला किस लिए लगा रखा है? कि यह इब्राहीम के लिए, वो भी कर्मी-धर्मी है।''

जिसने कहानी लिखी है वो नीचे लिखता है कि आधे से ज़्यादा कर्मी-धर्मी कुत्ते क्यों बनें? यही बात पूज्य मस्ताना जी ने टेप में कही है जब दिल्ली गए। जितने भी फकीर हुए हैं सब देखकर ही बात खोलते हैं। ऐसे ही जा रहे थे। एक तांगा जा रहा था। एक प्रेमी बैठा था कहने लगा कि इस में कतूरे (कुत्ते के पिल्ले) हैं। दस-दस हज़ार के आए हैं। पूज्य मस्ताना जी कहने लगे कि दिखाओ भई! उसने कहा आगे की ओर तांगा खड़ा कर लिया। पूछा कि कहाँ लेकर जा रहा है। कि जी अस्पताल लेकर जा रहा हूँ ज़रा बीमार हो गए हैं। गर्मीयों में उनके लिए कूलर और सर्दीयों में हीटर। फिर बड़े-बड़े गद्दे। पूज्य मस्ताना जी वापिस कार में आकर बैठ गए और कहने लगे कि देखो भई! जो सतगुरु के दरबार में जाते हैं। और उनके हुक्म से बताते हैं कि बड़े-बड़े सेठ साहूकार जो कर्मी धर्मी हैं, पुण्य दान करते हैं टाटा बिरले की तरह, लेकिन काल फिर भी उनको आदमी की योनी नहीं देता। फिर भी आदमी की जूनी नहीं मिलती, छुटकारा नहीं होता इन चीजों से। अब उस फकीर का और पूर्ण ताकत का सबका एक ही मत है। सब फकीरों का एक ही मत है। जो अन्दर देखते हैं वो ठीक बनाते हैं। हाँ जीः–

पाठी– माइआ बिखु भुइअंगम नाले इनि दुबिधा घर बहुते गाले॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि मोहमाया के जाल में से सतगुरु निकाले तो निकाले। इसने बड़ों-बड़ों को खत्म कर दिया। यह बस दुनिया को खा गई। यह एक सपणी है जो पराए देश में घूम रही है। आगे से आगे। मन दुश्मन, साथ माया है। मन और माया का मेल है।

इहु मनु पंच ततु ते जनमा॥ (415/10 मः 1)

मन पांच तत्वों का अंश है। यह माया की तरफ जाता है। इसका काम यही है। हम रोज़ पढ़ते हैंः–

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत॥
नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीत॥

(1428/5 मः 9)

जिस तरह दीवार पर तस्वीर है। उसको कहे कि हमारे पास आ जा। वो नहीं आ सकती। इस तरह मन माया को छोड़ता नहीं बार-बार माया की तरफ

जाता है। यह ऐसी लिपटी हुई है। यह जहर की सपणी है। सब जीवों को लिपटी हुई है। सब जीवों की मिट्टी पलीत की हुई है। यह बड़े-बड़े पीर-पैगम्बरों, ऋषियों-मुनियों को खा गई।

माया मन की मोहनी, सुर नर रहे लुभाय।
माया इन सब खाइया, माया कोइ न खाय॥

कहते हैं कि बड़े-बड़े भक्तों, अक्लमंदों को खा गई। एक तरफ से निकलता है:

निकरे घर से तोर भया मन त्याग में॥
मारग पकड़न कठिन धसे वैराग में॥
माया आगे मिली रहे ललचाय के॥
अरे हाँ पलटू! धसे जगत में फिर महती पाय के॥

(पलटू दास)

एक तरफ से निकलता है दूसरी तरफ फिर फंसा लेती है माया। हाँ, जीः—

पाठी— माइआ बिखु भुइअंगम नाले। इनि दुबिधा घर बहुते गाले॥

मैनेजर साहिब जी— ओह! बस भई, यहाँ मत्थे नहीं टेकने, चढ़ावा नहीं चढ़ाना, यहाँ चढ़ावा नहीं लेते। सब को खा गई यह माया। यह नमूना सामने आ गया न। यहाँ तो ढेर लग जाएँ माया के। बस!

क्या गृहस्थी क्या त्यागी। जहां देखो बाहर भीतर घट-घट माया लागी॥

(दुल्हन दास)

माया की चीज़ हैं सब। चाहे मन्दिर हैं, चाहे तीर्थ हैं सब माया के लिए बैठे हैं। यह सब को खा गई। यह बड़ी बला है। जहाँ जाओ माया का जंजाल है। और है क्या इस में? सब को खा गई यह। हाय! हाय! यह चाकू से काटी जाए तो सारी दुनिया काट ले। हाय! हाय! तौबा है। सतगुरु अपनी मेहर से बचाए तो बचाए, नहीं तो तौबा है। हाय! हाय!

पाठी— माया किन्ह जीतया।

मैनेजर साहिब जी— यह लक्ष्मी का घर है।

पाठी— माया को लिया बुलाय गोद लै पूछन लागे॥
तीन लोक की बात प्रगट करो मेरे आगे॥
माया रोवन लागि खोल कर मूँड़ दिखावै॥
दै जूतिन की मार मोहि बनिया डरावै॥

मैनेजर साहिब जी— पलटू! इसने मेरी खाल खींची है बाकी किसी से भी नहीं हुआ।

पाठी– माया रोवन लागि खोल कर मूँड़ दिखावै॥
दै जूतिन की मार मोहि बनिया डरावै॥
दिहा इन्द्र त्रास अपसरा तुरत पठावौ॥
नाना रूप बनाय जाइ के तुरत डिगावो॥

मैनेजर साहिब जी– कि जाओ पकड़ो कैसे भी। यह जा रहा है। हमारे जाल से निकल रहा है।

पाठी– उतरी अपसरा आय अवधपुर जहाँ वा बनिया॥
सो रहो किये चन्द्रमुख मधुर बचनीयाँ॥
छुद्रघंटिका पायल बाजै रत्न जड़ाऊँ॥
ऋतु बसन्त की आनी मोतिन से माँग भराऊँ॥

मैनेजर साहिब जी– बहार का मौसम बनाया। अच्छा मौसम बनाया। अच्छे शृंगार किए।

पाठी– नाचै गावै राग भाव धै बाँह बतावै॥
बनियाँ लाय समाधि डिगै ना लाख डिगावै॥

मैनेजर साहिब जी– लाख यत्न करे वो समाधी में से न उठा।

पाठी– क्या तुम भए फकीर नारी तुम सुन्दर विलसौ॥
सोना रुपा लेहु माया को जनि तुम तरसौं॥
इन्द्रलोक तुम लेहु होहु बैकुंठ के राजा॥
ताको हमरी ओर तुम्हें हम बहुत निवाजा॥

मैनेजर साहिब जी– हाँ, कि इन्द्रलोक ले ले, स्वर्ग में चला जा। हम तुम्हारी सेवा करेंगे। सोना ले, चांदी ले पर भक्ति न कर।

पाठी– रिद्ध सिद्ध तुम लेहु मुक्ति तुम लेहु अघाई॥
तीन लोक में फिरै तुही ना आन दुहाई॥

मैनेजर साहिब जी– त्रिलोकी तक तेरा राज हो जाएगा। मुक्ति कौन सी? इस देह को छोड़कर जाना मुक्ति नहीं। असली मुक्ति तो कोई और चीज़ है। फकीरों ने यह मुक्ति तो मानी नहीं।

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरण कमलारे।

(534/3 मः 5)

यही उन्होंने मांगा। क्या? कि चरणों की प्रीत मिले। यही पलटू साहिब फरमाते हैं:–

संत न चाहें मुक्ति को नहीं पदारथ चार॥

नहीं पदारथ चार मुक्ति संतन की चेरी॥
रिद्ध सिद्ध पर थूकें स्वर्ग की आस न हेरी॥

यह मुक्ति नहीं वो और है। यह कल्प पर्यन्त होती है। फिर चौरासी में आना पड़ता है।

पाठी– रिद्ध सिद्ध तुम लेहु मुक्त तुम लेहु अघाई॥
तीन लोक में फिरै तूही, न आन दुहाई॥
हम सब दाबहिं गोड, फूलन की सेज बिछाई॥
मानो वचन हमार तुम्हैं है राम दुहाई॥
बनियाँ हंसा ठठाई पलक को नाहीं उघारी॥
तुहरे बहुत भतार, रहिओ न तूही कुआरी॥
आगि लगै बैकुण्ठ लौंडी है मुक्ति हमारी॥
इहाँ से होहु तू दूरि माया तू भई अनारी॥
हम जोगी वेकाम खसम तुम खोजो मोटा॥
ब्रह्मा बिस्नु महेश तुम्हारा लायक ढोटा॥

मैनेजर साहिब जी– हाँ जी, उनके पास जा। हम कोई नहीं चाहते।

पाठी– हमरे सबद बिबेक, लगहि चूतर में सोंटा॥
आबरुह लै भाग पकरि, के कटिहों झोंटा॥

मैनेजर साहिब जी– कि तेरी चोटी पकड़कर काटूंगा। अच्छी तरह अपनी इज़्ज़त लेकर चली जाओ। हमारे पास तो शब्द गुरु है। बस और कुछ नहीं। सब शब्द गुरु से डरते हैं। बाकि किसी से काबू नहीं आता। जितने भी मन, माया, काल, महाकाल किसी के काबू नहीं आते। यह कर्मों-धर्मों को भी खा गई। यह सब फकीरों को खा गई। जहाँ देखो माया ही माया लगी है।

पाठी– चली अफसरा हारि जाय बैकुंठ में भागी॥
ब्रह्मा, बिस्नु, महेस की, रहै कचहरी लागी॥
अफसरा कहै पुकार सुनो सत वचन हमारा॥
बनिया डिगै को नाहिं उहाँ न अमल तुम्हारा॥

मैनेजर साहिब जी– वहाँ तुम्हारा बस नहीं चलता।

पाठी– अपना चाहो भला जाई कै लावहु सेवा॥
उलटि देइ बैकुंठ बचै न सुर मुनि देवा॥

मैनेजर साहिब जी– कहती है कि वो तो बैकुठों तक उलटा दे इतनी शक्ति है। उसकी मिन्नत करो अब और तो कोई रास्ता नहीं।

पाठी– पलटूदास अपार पार न पावे कोई, करै अफसरा सोर॥

मैनेजर साहिब जी– यह शब्द गुरु से काबू आती है बाकी किसी से नहीं। यही इसको काबू कर सकता है बाकी नहीं। सबको खा गई। जिसके अन्दर सतगुरु आ जाए, सच्चा नाम आ जाए। वो माया से परे होता है, नहीं तो नहीं। सबको खा गई। हाँ जीः–

पाठी– माइआ बिखु भुइअंगम नाले इनि दुबिधा घर बहुते गाले॥
सतिगुरु बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि बिना सतगुरु की मेहर से इसका प्यार नहीं छूटता। जब सतगुरु मेहर करता है तब कामिल फकीर मिलाता है। उनकी सोहब्बत में जाकर भक्ति का रंग चढ़ता है। ज्यों-ज्यों रंग चढ़ता है, त्यों-त्यों माया का प्यार कम होता जाता है और सतगुरु का प्यार बढ़ता जाता है। जब सतगुरु का ख़्याल बढ़ गया, माया का ख़्याल निकल गया। जब सतगुरु प्रकट हो गया तो माया का ख़्याल कम हो गया। ये लज़्ज़तें फीकी लगने लगीं। जब लज़्ज़तें फीकी लगने लगीं तो माया की ज़रूरत ही नहीं। इन लज़्ज़तों के पीछे ही ज़रूरत है माया की। जो भक्ति करते हैं वो सतगुरु को प्यारे लगते हैं। सतगुरु उनको पास बिठाता है। आगे ले जाता है। दरगाह में इज़्ज़त मान देता है। उनकी सोहब्बत में आकर ही, साध संगत में आकर ही भक्ति का रंग चढ़ता है और कहीं नहीं चढ़ता। असली रंग तब चढ़ता है जब यह अन्दर जाता है। पहले तो सोहब्बत में आकर इसको शौक पैदा होता है। ज्यों-ज्यों भजन सिमरण करता है, अन्दर जाता है; माया का प्यार कम होता है, भक्ति का रंग चढ़ता जाता है। जिन पर भक्ति का रंग चढ़ता है, सतगुरु उन पर मेहर करता है। उनको प्यारा लगता है। उनको पास बिठाते हैं। दरगाह में मान पाते हैं। बाकी दुनिया ऐसे ही चक्करों में घूमती है। सबको माया खा गई। हाँ जीः–

पाठी– साकत माइआ कउ बहु धाबहि नामु विसारि कहा सुखु पावहि॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि सुख कहाँ है? अन्दर नाम को प्रगट करने में। जो साकत है वो बाहर ढूंढ़ते रहे। माया के समानों में सुख ढूंढ़ते हैं। अगर माया में सुख होता तो अमरीका सबसे अमीर देश है और फोर्ड सबसे अमीर आदमी। वो कहता है कि मुझे कोई शान्ती दे दे और मेरा धन ले ले। कोई सुख दे दो। एक संतरे की फाड़ी के लिए तड़पकर मर गया। अगर सुख होता तो क्यों लिखता? क्यों कहता कि सुख दे दो? यह जब भी मिलना है अन्दर से मिलना है। अन्दर नाम को प्रगट करने और सतगुरु को अन्दर प्रगट करने में ही सुख है, बाहर कहीं

सुख नहीं। जो मनमुख हैं वो माया और माया के सुख ढूंढ़ते हैं। किसी को मिला?

पाठी– साकत माइआ कउ बहु धावहि, नामु विसारि कहा सुखु पावहि॥
त्रिहुगुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– हम माया में ढूंढ़ते हैं। माया के ख़्याल में रहे। जब मौत आएगी फिर आगे क्या आएगा? माया और माया के सामान! वो ख़्याल आया तो बार-बार पैदा होता है और मरता है। त्रैगुण क्या? पैदा होना, मरना, पालना। जन्म मरण से छुटकारा नहीं हुआ। इस तरह चौरासी में धक्के खाता है।

पाठी– कूकर सुकर कहिअहि कुड़िआरा भउकि मरहि भउ भउ भउहारा॥

मैनेजर साहिब जी– कई बार आपने देखा होगा कि कुत्ता एक हड्डी उठाकर ले जाता है। दूसरा आता है उसको खोस कर ले जाता है। तीसरा आता है खोसकर ले जाता है। कभी उसके पास तो कभी उसके पास। हड्डी का तो कुछ नहीं बिगड़ता सोच लो! हड्डी तो वहीं की वहीं। उस चीज़ का भी अन्दर से स्वाद आता है। चीज़ वहीं की वहीं रहती है। इस तरह माया के लिए हम कुत्ते, बिल्लों की तरह लड़कर मरे। उनकी तरह काम किया। इस तरह माया का हाल है। कभी किसी के पास, कभी किसी के पास। यह काम नहीं आई। कुत्ते, बिल्लों जैसे काम किए तो कुत्ते, बिल्ले ही बनेंगे। फिर गन्दी योनियों में गए। कई बार आपने देखा होगा कि जीप जा रही है। हाथी जा रहा है, कार जा रही है। कुत्ते भौकते हैं, पीछे ही जाते हैं। वो आगे निकल जाते हैं। इस तरह यह भी भौंक-भौंककर चले जाते हैं। यह माया के पीछे भौंक-भौंक कर चला जाता है। अगर यह साथ जाती तो यह दुनिया ही से खत्म हो जाती।

पाठी– कूकर सूकर कहिअहि कुड़िआरा भउकि मरहि भउ भउ भउहारा॥
मनि तनि झूठे कुडु कमावहि। दुरमति दरगह हारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि जिनका मन झूठा है, तन पापी है सारी उमर कूड़ में लगाया है। कूड़ में रहे। अगर भक्ति की तरफ आया भी, तो भी इसने कूड़ ही मांगा। यही कबीर साहिब ने कहा है:–

ऐसी दुनिया भई दीवानी, भगती भाव ना बूझै जी॥
कोई आवे तो बेटा मांगे, यहीं गोसाई दीजै जी॥
कोई आवे दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी॥
कोई आवे तो दौलत मांगे, भेंट रूपईया लीजै जी॥
कोई करावै बिआह सगाई, सुनत गोसाई रीझे जी॥

कहते हैं कि सच का कोई ग्राहक नहीं:–

सांच का कोई ग्राहक नाहीं, झूठे जगत पतीजै जी॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, अंधो का क्या कीजै जी॥

आखिर दरगाह में मुंह काला हुआ।

पाठी– सतिगुरु मिलै त मनुआ टेकै। राम नामु दे सरणि परेकै॥

मैनेजर साहिब जी– मन ही हमारा दुश्मन है, और कोई दुश्मन नहीं। अगर यह काबू आता है तो सतगुरु से, बाकी किसी से नहीं। जब तक अन्दर सतगुरु प्रगट नहीं होता यह काबू नहीं आता। अगर थोड़ा काबू आता है तो सिमरण से। जब अन्दर सरूप आ जाता है फिर काबू आता है। फिर जब असली शब्द आता है, सच्चा शब्द जो असली सरूप है, सन्तों का कह लो, सतगुरु का कह लो, जब यह सरूप आता है तब काबू आता है। जब आता है तो राम नाम के जहाज़ में बिठाकर दरगाह में ले जाता है, और किसी साधन से काबू नहीं आता।

पाठी– सतिगुरु मिलै ता मनुआ टेकै राम नामु दे सरणि परेकै॥
हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि नाम एक अमोलक से अमोलक वस्तु है। कीमती से कीमती है। आला से आला चीज़ है। त्रिलोकी की दौलत भी दे दो तब भी नहीं मिलती। मिलती कब है? दुनिया और-और चीजों की ग्राहक है। माया की ग्राहक है, बाल-बच्चों की ग्राहक है, कपड़ों की ग्राहक है, बीमारियों को दूर करने की ग्राहक है। पर सतगुरु की कोई ग्राहक नहीं। कोई बिरला है। यह बढ़िया से बढ़िया लज़्ज़त है। त्रिलोकी की दौलत भी दो तो भी नहीं मिलती। हाँ जीः–

पाठी– राम नामु साधू सरणाई, सतिगुरु बचनी गति मिति पाई॥

मैनेजर साहिब जी– कहते हैं कि वो रमा हुआ नाम कह लो, सतगुरु कह लो। कब मिलता है? किसी कामिल साधू की शरण में जाकर मिलता है। उनके अन्दर वो सतगुरु प्रगट है। उनके अन्दर वो सतगुरु बोलता है।

प्रभ जी बसहि साध की रचना॥ (263/4 मः 5)

यहीं मुसलमान कहते हैंः–

गुफताए ओ गुफता अल्ला बवद। गरचे अज़ हलकूम अबहुल्ला बवद॥
(मौलाना रूम)

उनका कहा अल्ला का कहा हुआ है।

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो॥
(722/15 मः 1)

जब उनकी शरण में जाता है तो वो तरीका बताते हैं। हमारी जो आत्मा

है वो मुर्दा हो चुकी है। उठने के काबिल नहीं है। मालिक के पास नहीं जा सकती। इतनी कमज़ोर हो चुकी है कि उठ ही नहीं सकती। जब तक इसके अन्दर ज़िन्दगी का इंजैक्शन न दिया जाए यह उठ ही नहीं सकती। वो फकीर मालिक के हुक्म से ही इसके अन्दर ज़िन्दगी का इंजकैशन देते हैं। न तन में देते हैं, न मन में देते हैं, सीधा आत्मा देते हैं, जो आत्मा का उद्धार करता है। इस तरह अगर यह सिमरण न करें तो जो वो इंजैक्शन देते हैं वो असर करता रहेगा। इस का नाम है नाम।

गुरु का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ॥ (1249/8 मः 3)

यही ईसा ने कहा हैः–

"That which is the born of the flesh is flesh, That which is born of the spirit is spirit."

''कि जैसे मांस से मांस पैदा होता है, आदमी से बच्चा पैदा होता है। इस तरह जागी हुई रूह से रूह जागती है।'' इसका नाम, नाम है। वो किसी साधू के ज़रिये मिलता है।

पाठी– राम नामु साधू सरणाई सतिगुर बचनी गति मिति पाई॥

नानक हरि जापे हरि मन मेरे हरि मेले मेलणाहारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– गुरुनानक साहिब कहते हैं कि अगर तूने उस राम को मिलना है, उस राम को प्रगट करना है तो किसी साधू की शरण में जा। वो जो तरीका बताते हैं, उसके अनुसार मेहनत कर। एक मिनट भी न छोड़े। उठते-बैठते, चलते-फिरते किसी भी स्वास में न छोड़े, तब मालिक को मिल सकता है। वो कहते हैं कि तब तू उस राम को प्रगट कर सकता है। जो काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार जैसे राक्षसों को मारने वाला है। काल, महाकाल को मारने वाला है। तब तू जा सकता है।

पाठी– नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलेणहारा हे॥

मैनेजर साहिब जी– जिसके अन्दर उस ज़िन्दगी का इजकैशन मिल गया। उसका नाम सतगुरु के दरबार में लिखा जाता है। अगर थोड़ा भी करता है तो भी सतगुरु आकर संभाल करता है।

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि॥

तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि॥ (516/मः 3)

फिर वो यमदूतों के हाथ नहीं जाता।

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

''परम सन्त पूज्य मैनेजर साहिब की साखीयां''

''नाम लेने के बाद भरम का दूर होना''

तुलसी दास दलाल ने अर्ज़ की कि मैं पहले बहुत दिनों तक किसी मन्दिर या गुरुद्वारा को नहीं मानता था और ना ही वहाँ जाता था। क्योंकि मुझे पता ही ना था कि मन्दिरों के अन्दर किस तरह पूजा की जाती है, या घर में कैसे व्रत रखे जाते हैं। ना ही इनके बारे में मेरे दिल के अन्दर ख़्याल ही आया, और ना ही मुझे इन बातों के अन्दर यकीन था। मुझे तो यह सारा पड्यंत्र (धोखा) ही नज़र आता था।

एक दिन मेरा हिस्सेदार डॉ. राम किशन कहने लगा कि आप कभी मन्दिर या गुरुद्वारा गये हो? मैंने साफ इन्कार कर दिया। फिर वह बोला, कि आपके पास शीशगंज गुरुद्वारा है, वहाँ हर रोज़ जाया करो। तो मैंने उससे कहा कि मुझे वहाँ के रस्मों रिवाज का पता नहीं है। फिर वह (डॉक्टर) मेरे साथ गया और कहा कि ग्रन्थ साहिब को इस जगह पर मथ्था टेका जाता है और पूजा भी चढ़ाई जाती है। उसके बाद मैंने रोज़ाना गुरुद्वारा जाना शुरू कर दिया। उसके बाद कुछ दिनों के बाद वो ही (डॉक्टर) मेरे को गौरीशंकर मन्दिर ले गया। वहाँ पर देवी देवतों की पत्थर की मूर्तियां थीं। मैं मन्दिर में भी जाने लग गया। और हर रोज़ रात को 8-9 बजे वहाँ पर आरती करके आता। सुबह को हर रोज़ गुरुद्वारा जाता और शाम को गौरीशंकर के मन्दिर में हाज़री देता था।

उसके बाद एक दिन मुझे सेठ मखनलाल जी मिले। वो मेरे को भैरों के मन्दिर में ले गए। फिर मैं कुछ दिनों के बाद लाल किला के पास बालाजी का मन्दिर है, मैं वहाँ जाने लगा। इसी तरह करते-करते कोई 7-8 साल बीत गये। पर मन को शांती कहीं से भी ना मिली। इत्तफाक से होली का त्यौहार आ गया, और मेरी भेंट अचानक तेज राम और रतन चन्द से हो गई। तब मैंने उनसे कहा कि बालाजी के मन्दिर जाना है। तब रतन चन्द जी ने कहा कि क्या रखा है इन मन्दिरों में? और उसने मुझे एक किताब 'डोली हुई दुनिया का सहारा' पढ़ने के लिए दी और कहा कि हमारा तो यही मन्दिर है। इस किताब के अन्दर मैनेजर साहिब की फोटो को देखकर मैंने कहा कि इनके दर्शन हो सकते हैं क्या? तो तेजराम जी ने कहा कि हर महीने सत्संग होता है। बहुत शानदार (आलीशान) डेरा है। गेट का जो

नक्शा (नमूना) है, उस जैसा सारे हिन्दुस्तान में भी नहीं मिलेगा। वहाँ पर हज़ारों की गिनती में संगत आती है। कुछ दिनों के बाद सत्संग का दिन नज़दीक आ गया। तो रतन चन्द जी ने मुझे कहा कि उस दिन सत्संग पर जाना है, आप भी तैयार रहना। मेरी माली हालत कमज़ोर थी। मैंने उससे कहा कि मेरे पास तो सिर्फ 20 रुपये ही हैं। तो रतनचन्द ने कहा कि इस बात की आप फ़िक्र ना करें। सतगुरु के घर पर कोई कमी नहीं है। उसके बाद जब हम डेरा आ गए तो डेरा को देखकर ही मन को तसल्ली हो गई कि ज़रूर यहाँ पर पूर्ण ताकत काम करती है। बाकी उसके बाद जब प्रेमियों से मिला और उनसे डेरा के बारे में बातें सुनी, तो दिल की और भी तसल्ली हो गई। जब मैनेजर साहिब के दर्शन करने के बाद जब उनसे बातें हुई तो दिल को शांती आ गई। मन के अन्दर खुशी की लहरें दौड़ने लगीं। सत्संग के बाद नामदान लेकर हम सब वापिस दिल्ली चले गये, और जाते समय मैनेजर साहिब ने फरमाया कि ''सतगुरु-सतगुरु किया करो। दिल्ली में कुछ दिनों के बाद लाला अर्जुन दास जी मिले। तो मैंने उनसे अर्ज़ करी कि अभी तक मुझे कुछ नज़र नहीं आया। तो उसने (अर्जुनदास) ने पूछा कि क्या तुमने ''नाम'' लिया है? मैंने कहा कि नाम तो लिया है, पर मैनेजर साहिब ने तो आते वक्त कहा था कि सतगुरु-सतगुरु किया करो। तब लाला अर्जुन दास जी ने कहा कि तुम सिर्फ वोही नाम जपो जो आपको डेरा से मिला है। उसके बाद मैंने 'नाम' जपना शुरू कर दिया। तब जाकर मेरे दिल को तसल्ली मिली। घर पर भी हर तरह की बरकतें, (खुशीयां) होने लगी। अब सतगुरु की दया मेहर है और हर तरफ खुशीयां ही खुशीयां हो रही हैं।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
तुलसीदास पुत्र मोतीराम सैनी, दिल्ली

****

''सतगुरु को प्रगट होकर मदद करनी''

चौधरी सूबेसिंह, पुराना सत्संगी था। उसने पूज्य मैनेजर साहिब जी से ''नाम'' लिया था। उसके खिलाफ एक केस बिजली के बिल का एक लाख 26 हज़ार का

तीस हज़ारी अदालत में चल रहा था। मैंने अपने वकील की मार्फत जवाब दावा पेश किया। सतगुरु ने दया मेहर की तो अपने आप ही बिजली वालों ने बिल कम करके सिफ 55 हज़ार कर दिया। उस रकम पर भी मेरे वकील ने इतराज़ किया कि यह रकम भी बहुत ज़्यादा है। सुनवाई के लिये 02/11/78 की तारीख रखी। परन्तु मैं उस तारीख पर चिराग दिल्ली चला गया और पेशी की तारीख भूल गया। जब याद आया तो मैंने सोचा कि हाई कोर्ट में वकील से मिलकर जाऊंगा। जब याद आया कि उसकी 02/11/78 तारीख की तो पेशी थी। अदालत ने ज़रूर मेरे वारन्ट निकाल दिये होंगे। जब मैंने वकील के मुंशी के पास जाकर पूछा तो उसने कहा कि आपकी तो हाज़री लगी हुई है। शर्मा वकील साहिब कहने लगा कि आप खुद ही आए थे और बहुत सारे दूसरे लोगों ने भी आपको देखा है। उस वक्त वक्त आपने घोती पहनी हुई थी। मजिस्ट्रेट ने 10/11/78 की तारीख रखी है। यह सब सुनकर मेरे को बहुत हैरानी हुई और सतगुरु की बहुत तारीफ और धन्यवाद किया कि सतगुरु ने खुद आकर चौधरी साहिब का रूप धार कर अदालत में मेरी हाज़री लगाई। मैं अपने साथ लाला रतन चन्द जी को जमानत के लिये वहाँ ले गया था, पर सतगुरु ने हाज़िर होकर सब काम ठीक कर दिया, सतगुरु ने बहुत दया मेहर की।

इसी किस्म का एक और केस फौजदारी का मेरे पर चल रहा था। उसकी तारीख भी 27 जनवरी थी। इस दफा भी मैं तारीख भूल गया था और आपने साथ लाला रतन चन्द जी को जमानत के लिये आपने साथ 29 जनवरी को ले गया था। वहाँ पर वही आदमी खुद-ब-खुद मिल गया जिसके खिलाफ केस था। तो वह आदमी खुद ही बोला कि चौधरी साहिब मैं खुद 27 तारीख को आया ही ना था और आज की ही तारीख है। अहलमद मुंशी ने नोट दे दिया था कि यह केस लारेन्स रोड नं. 8 में ही भुगताया जायेगा और हमारी फाईल नं0 58 के साथ 29 तारीख बराये पेशी रखी थी। सतगुरु ने वहाँ पर भी हमारी लाज रखी। और मुझ पापी पर बड़ी दया मेहर की।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
सूबे सिंह, दिल्ली

****

''भूत परेत का दूर करना''

महात्मा बाबू जो भामर वाली ढाणी का रहने वाला है। इसका सारा परिवार सत्संगी है। इसके दादा-दादी ने तो पूज्य मस्ताना जी से ''नाम' लिया हुआ था। बाबू राम की बुआ जापे में ही बीमार होने के बाद चोला छोड़ गई थी। उसकी ख़्वाहिश बाकी रह गई थी।

बाबू राम की छोटी बहन जो कि कंवारी थी। बुआ की रूह इसके अन्दर भूत बनकर बातें करती थी। वो लड़की अपने कपड़े फाड़ लेती थी। चीज़ तोड़ देती थी। उसने (बाबू) इधर-उधर से बहुत टूने ताबीज़ करवाए पर कोई आराम नहीं आया बल्कि और ज़्यादा नुकसान हुआ। उसने पूज्य मैनेजर साहिब के पास आकर उस लड़की के बारे में सारा हाल बताया। इस पर पूज्य मैनेजर साहिब ने साफ तौर पर फरमाया कि जहाँ भजन सिमरण होता है, वहाँ पर कोई भी बदरूह (भूत परेत) नहीं आ सकती।

पहले इनके घर पर कोई बच्चा ना था। शीला के बच्चा पैदा हुआ तो सारा परिवार उस बच्चे को लेकर इधर-उधर लेकर फिरते रहे। तब मैनेजर साहिब ने फरमाया कि आपने इस लड़के के प्यार में आकर सतगुरु को बिल्कुल ही भुला दिया है और माया के अन्दर रात दिन मस्त हुये फिर रहे हैं। अब आप सब लोग सारी रात जागें और भजन सिमरन के लिये वक्त दो। जहाँ सतगुरु की चर्चा और उसका भजन सिमरन होता है वहाँ पर कोई बदरूह भूत-प्रेत दखल नहीं दे सकती।

पूज्य मैनेजर साहिब ने बागड़ (राजस्थान) की तरफ सत्संग रखे थे। बाबू राम महात्मा का बाप उस लड़के और शीला को भी साथ लेकर सत्संग सुनने चले गए। एक हफ्ता (7 दिन) तक मैनेजर साहिब जी के साथ ही रहे फिर डेरे में भी आकर रहे। अब वही लड़की बिल्कुल ठीक है। किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं है।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
शीला देवी, भामर वाली ढाणी

****

'भूत प्रेत को पकड़ लेना'

परनीत सिंह रूकना बालासर तहसील सिरसा का रहने वाला था। उसने पूज्य मैनेजर साहिब से नाम लिया हुआ था। उसको 'नाम' लिये हुए 2 साल हो गये थे। उसकी एक लड़की थी उसने भी नाम ले रखा था। उस लड़की पर बदरूह भूतनी का साया था। परनीत सिंह ने पूज्य मैनेजर साहिब से सुन रखा था कि भजन सिमरण के आगे कोई बदरूह नहीं ठहरती है। उसने खूब दिल लगाकर भजन सिमरन किया। (उसने परनीत सिंह ने) उस भूतनी का हाथ पकड़कर पूछा कि तू कौन है? जब वो ना बोली तो फिर आखिर तंग आकर उसको मिर्च की धूनी दी। तब वो बोली कि मेरे को छोड़ दो। मैं फिर तुम्हारे घर नहीं आऊंगी।

''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा''

परनीत सिंह के पड़ोस में नटों का घर था। उसकी लड़की के चार बच्चे थे। उस लड़की पर भी भूत का साया था। जब वो लड़की बहोश हो गई, तो नट बेअन्त सिंह को बुलाकर ले गये। उसने वहाँ पर बैठकर भजन सिमरन किया और उस लड़की के बदन जिस्म पर हाथ फेरा। तो वो भूत निकल कर भाग गया और लड़की होश में आ गई। बेअन्त सिंह को उसके बाद बहुत तकलीफ आई। कई दिनों तक उसका बदन टूटता रहा। जब उसने फिर सारी सारी रात भजन किया तो फिर वो ठीक हो गया।

परनीत सिंह के बच्चों की मामी के अन्दर दो भूत थे। उसको भी बालासर ले आए। बेअन्त सिंह जब पूज्य मैनेजर साहिब का सत्संग सुनकर घर वापिस आया तो पता लगा कि उसके बच्चों की मामी बीमार पड़ी है और वो बेहोश है। उसने सारी रात वहाँ बैठकर भजन सिमरन किया। सुबह उस पर हाथ फेरा तो भूत छोड़कर भाग गये और वो औरत ठीक हो गई। फिर उसने सतगुरु के आगे प्रार्थना करी कि मेरे सतगुरु यह तेरे ही बच्चे हैं। आपने ही इनकी संभाल करनी है और धन धन सतगुरु का नारा लगाया।

जब पूज्य मैनेजर साहिब के आगे सारी बात सुनाई तो उन्होंने (मैनेजर साहिब) ने हंसकर हुक्म फरमाया कि यह तगड़ा आदमी है। जहाँ भी किसी पर भूत का साया हो इसको वहाँ ले जाया करो क्योंकि इसके आगे भूत प्रेत

नहीं ठहरते। यह सब भजन सिमरन की ही करामात है। भजन सिमरन के आगे कोई चीज़ तो क्या, काल तक भी नहीं ठहर सकता।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–

परनीत सिंह रूकना, बालासर, तहसील सिरसा

****

'भूत का निकलना'

भड़ौलावाली का नम्बरदार सरजीत सिंह पूज्य मैनेजर साहिब के पास नाम लेने के लिये आया था। डेरा में 8-10 दिन भी रहा, मगर उसको नाम नहीं दिया और पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि आपको नाम बाद में देवेंगे। जब वो अपने गांव भड़ौलावाली आया तो उसको भूत ने पकड़ लिया। उसने पूज्य मैनेजर साहिब को याद किया तो पूज्य मैनेजर साहिब प्रगट हो गये। और उस नम्बरदार को जिसके ऊपर भूत का साया था, सोटी मारी तो भूत भाग गया। और फिर फरमाया कि आप फ़िक्र ना करे, भजन सिमरन करते रहें। भूत प्रेत डेरे के आसपास दो-दो मील तक किसी को कोई दखल नहीं देगा।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–

सरजीत सिंह नम्बरदार, भड़ौलावाली'

****

'सांप से बचाना'

शकुन्तला की शादी मुलांवाली में हुई थी। उनके सारे परिवार ने पूज्य मैनेजर साहिब से नाम लिया हुआ था। सब ही बहुत प्रेम करते थे। कई दफा उनके घर पर बहुत बड़ा काला सांप दिखाई देता था। एक दिन मेरा भाई मूलांवाली में आया हुआ था। रात के वक्त एक कमरे के अन्दर तीन आदमी सो रहे थे। उनमें से एक बच्चा था। कुत्ता बाहर सेहन में भौंक रहा था। जब उन्होंने बाहर निकलकर

देखा। वहाँ पर सांप की लकीर के निशान थे। फिर अचानक ही एक सांप निकलकर उनके कमरे की तरफ गया। मेरे भाई ने एक लोहे का डण्डा लेकर सांप पर मारा। सांप को थोड़ा सा लगा पर बच गया और वह सांप गुस्से में आ गया। गुस्से से धरती से तकरीबन दो फुट ऊँचा खड़ा हो गया। जब वो उनकी तरफ आने लगा तो सब आदमी डर गये। अन्दर जो आदमी सो रहे थे उनके अन्दर एक बच्चा भी था। सबने सोचा कि सांप आज ज़रूर खा जाएगा। मेरे भाई जिसने पूज्य मैनेजर साहिब से 'नाम' लिया हुआ था, सतगुरु से अर्ज़ की। सब ने कहा कि हे सतगुरु! हमारी रक्षा करो। फिर मेरे भाई ने हिम्मत करके लोहे का डण्डा दोबारा उस सांप की तरफ चलाया। तो वो डण्डा सांप की कनपटी पर लगा और सांप जख्मी होकर गिर गया। तब सब आदमियों ने उसको कूटकर मार दिया। जब दूसरे लोग सांप को देखने आए तो बोले कि यह तो बहुत जहरीला सांप था। सतगुरु ने ही आप सबको बचा लिया है। यह काल बनकर आया था।

फिर कुछ दिनों के बाद मेरी ननंद के घर पर शादी थी। हम लोग वहाँ गये हुये थे। वहाँ पर एक पण्डित आया और कहने लगा कि मैं तेरा हाथ देखने के लिए आया हूँ। तब मैंने उससे कहा कि मेरा हाथ तो देखने वाला एक ही है। मैंने आज तक उनके सिवा किसी को अपना हाथ नहीं दिखाया। फिर मैंने उस पण्डित से कहा कि मेरे भाई का हाथ देख। जब उसने मेरे भाई का हाथ देखा तो वो कहने लगा कि तुम्हारी तो सांप के साथ लड़ाई हुई है। बुजुर्ग (बूढ़ा) फकीर जिसकी सफेद और लम्बी ढाड़ी और में बैंत (सोटी) थी और सफेद सलवार पहन रखी थी, उस वक्त वो वहाँ पर हाज़िर था। उन्होंने ही आप की जान उस सांप से बचाई थी। वरना वो सांप आप को खा जाता। मैंने कहा उन्होंने तो सलवार तो नहीं पहनी। तो पण्डित ने कहा कि मैं किस तरह मानूं उस वक्त खुद मौजूद थे और सलवार पहन रखी थी। सब आदमी पण्डित की यह बातें सुनकर हैरान हो गये। पण्डित ने फिर कहा कि आपकी रखवाली (रक्षा) करके सांप से बचा दिया है और वो (पूज्य मैनेजर साहिब) अब भी इस वक्त यहाँ पर मौजूद, यानी हाज़िर हैं। वो हर वक्त अंग संग रहते हैं। जब यह किस्सा लखनऊ के लोगों ने सुना तो बहुत हैरान हुये और कहने लगे कि ऐसे कामिल फकीर के दर्शन ज़रूर करने चाहियें।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–

शकुन्तला देवी, बेटी बलराज महात्मा–पक्का कलां

****

'बिजली गिरने से पहले पूज्य मैनेजर साहिब ने दर्शन दिये और सबकी रक्षा की'

लछूराम जाट गांव फेफाना, तेहसील नौहर, जिला गंगानगर का रहने वाला था। पूज्य मस्ताना शाह बिलोचिसतानी जी ने स.1956 में उनके गांव में सत्संग किया था। तो सत्संग के दौरान में ही उसने मस्ताना जी को दो मतीरे भेंट किये थे। तब पूज्य मस्ताना जी ने 20 रुपये के नोटों का हार उसके गले में पहनाया था और यह फरमाया था कि एक-एक रुपये की कीमत लाख-लाख से ज़्यादा है। उसके बाद पूज्य मैनेजर साहिब भी (कभी-कभी) उसके गांव में सत्संग करने जाते रहते थे। लछूराम और उसका सारा परिवार सत्संग पर आता था। पर 'नाम' अभी तक किसी ने भी नहीं लिया था।

तारीख 14/02/1979 को रात के तकरीबन ढाई तीन बजे, पूज्य मैनेजर साहिब ने उसको सपने के अन्दर दर्शन दिये। तो लछुराम बहुत ही खुश हुआ तथा खड़ा होकर हाथ जोड़कर धन धन सतगुरु बुलाई और अर्ज़ की कि मैं आप की क्या सेवा करूं? आपने दर्शन देकर मुझे निहाल कर दिया है। खुशी के अन्दर फूला नहीं समा रहा था। पूज्य मैनेजर साहिब से बार-बार अर्ज़ करता है कि आप की किया सेवा करूं? आपके लिए दूध या चाय लाऊं? तब पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि तूने क्या सेवा करनी है? हम तो खुद आज आपकी सेवा करने आये हैं। अभी बातें करते-करते कोई 15 मिनट ही हुये होंगे कि आसमान पर बादल गरजने लगा और बिजली कड़ककर मेरे मकान की दूसरी मंजिल पर गिरी। मेरे मकान का सिर्फ दरवाज़ा ही कच्चा है बाकी सारा मकान पक्का था। मैं नीचे सोया था और मेरे दोनों लड़कों के साथ तीन लड़के जो उसके साथ पढ़ने के लिये आये थे, वो भी वहीं पर सो गये थे। बिजली उस चौबारे पर जब गिरी तो बहुत रोशनी हुई और बहुत ज़ोर का धमाका हुआ। सारे लोग जाग गए और बहुत हैरान थे। बिजली उन लड़कों से एक फुट के नज़दीक फिरती रही। बिस्तरे की रजाई को आग लग गई थी। मगर सब लड़के सब बच गये।

सतगुरु ने सबको बचा लिया। निचले कमरे में भी बिजली आई और कपड़ों को जला गई। सतगुरु की दया मेहर से कोई जानी नुकसान नहीं हुआ। ऊपर की मंजिल में बिजली इधर-उधर दीवारों से टकरा कर बाहर निकल गई। बिजली के निशान दीवारों पर दिख रहे थे। चौबारे का दरवाज़ा बन्द था। उसको तोड़कर

बिजली बाहर निकल गई। आसपास के सब घरों में धुआं ही धुआं हो गया था और रात के तीन बजे सारा गांव मेरे घर पर जमा हो गया था। कपड़ों की लगी आग बुझा दी। ऊपर चौबारे में सो रहे सब लड़के भी उठ गये थे। कमरे से बाहर आ गये। लड़कों की मां ने पूछा कि किसी को कोई चोट तो नहीं आई? लड़कों ने कहा कि हम सब ठीक है। तब मैंने कहा कि चोट कैसे आती? क्योंकि अभी-अभी पूज्य मैनेजर साहिब खुद मेरे पास आये थे और मैंने उनसे अर्ज़ की थी कि मैं आपकी क्या सेवा करूं? तब मैनेजर साहिब ने फरमाया था कि लछूराम आज तो हम तेरी सेवा करने आये हैं। पूज्य मैनेजर साहिब तो खुद मालिक हैं। काल ने तो अपना पूरा ज़ोर लगा कर हमला किया था। पर सतगुरु के आगे काल की क्या ताकत थी कि कोई नुकसान हो जाता? सारे घर को पूज्य मैनेजर साहिब ने खुद हाज़िर होकर बचाया है। तारीख 14 मार्च 1979 को पूज्य मैनेजर साहिब ने हमारे गांव में सत्संग किया था।

उस वक्त मैंने सारा किस्सा पूज्य मैनेजर साहिब के आगे अर्ज़ किया था। और सत्संग के वक्त रात को भी सारी साध संगत के आगे ब्यान किया था। सारी साध संगत यह सुनकर हैरान हो गई थी। सब आदमी सतगुरु की तारीफ करने लगे। उसके बाद गांव वालों ने और मैंने अपने सारे परिवार के साथ पूज्य मैनेजर साहिब से नाम ले लिया था।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
लछूराम

****

'गाड़ी के अन्दर फोटो रखने से गाड़ी स्टार्ट'

मैं चरना, मोटर नं. 3216/पीएचबी चलाता था। गाड़ी का मालिक लाला जोगिन्दर पाल कालांवाली का रहने वाला था। मैंने और गाड़ी के मालिक दोनों ने ही पूज्य मैनेजर साहिब से नाम लिया हुआ था। गाड़ी के अन्दर मैंने पूज्य मैनेजर साहिब की फोटो लगाई हुई थी। और उसकी फ्रेम चौखट सटील की बनी हुई थी।

लाला जोगिन्दर पाल ने फतेहाबाद में गोदाम बनाने का ठेका ले रखा था। वो दोनों मालिक और दूसरा ड्राइवर जिसका नाम था ओम, गाड़ी लेकर वहाँ गये।

गाड़ी के अन्दर जो फोटो रखी थी वो हिलती थी और टिक-टिक करती थी जब गाड़ी चलती थी। उस ड्राइवर को गुस्सा आ गया और उसने वो फोटो गाड़ी में से उतार दी।

जब वो लोग वापिस आने के लिए मोटर स्टार्ट करने लगे तो मोटर स्टार्ट ना हुई। बहुत कोशिश करने के बाद आखिर मिस्त्री को बुलाया गया। मिस्त्री को भी काफी देख भाल करने के बाद उसकी समझ में कुछ नहीं आया। कहने लगा कि तेल भी ठीक है, करंट भी ठीक तरह से आ रहा है, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा। फिर लाला जोगिन्दर पाल ने देखा कि पूज्य मैनेजर साहिब की फोटो गाड़ी के अन्दर नहीं है। तो उसने ड्राइवर से पूछा कि उनकी फोटो कहाँ है? तो ड्राइवर ने कहा कि वो तो मैंने उतार दी है। तब गाड़ी के मालिक ने कहा कि उसको गाड़ी के अन्दर उसी जगह पर लगा दो। जब ड्राइवर ने पूज्य मैनेजर साहिब की तस्वीर गाड़ी के अन्दर लगा दी। उसके बाद जब ड्राइवर गाड़ी स्टार्ट करने लगा तो गाड़ी स्टार्ट हो गई। सब आदमी यह देखकर हैरान हो गये।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
ड्राइवर, चरना।

****

'बीमार लड़के का ठीक होना'

मिस्त्री रावतराम, जाट सकना नान्हू, तहसील नोहर, जिला गंगानगर का रहने वाला था। उसने पूज्य मस्ताना जी से नाम ले रखा था उसके लड़के पूर्ण को पेट के दर्द की वजह से भादरा हास्पीटल में इलाज के लिए ले गये। वहाँ के डॉक्टर ने उसको अपेंडिक्स की बीमारी बताई। दो दिन की दवाई देने के बाद फिर उसका ऑपरेशन कर दिया। ऑपरेशन के बाद तकरीबन 7-8 घण्टे तक उस लड़के को होश ना आई। तब उसके पिता ने पूज्य मस्ताना जी के आगे अर्ज़ की कि अभी उसकी शादी हुई है। इसलिए दया मेहर करके उसकी ज़िन्दगी बख़्श देंवें। जब रावतराम सिमरन पर बैठा। तब पूज्य मस्ताना जी और पूज्य मैनेजर साहिब दोनों ने उसको दर्शन दिये।

पूज्य मस्ताना जी तो चुपचाप खड़े रहे। तब पूज्य मैनेजर साहिब ने उसके

पिता से फरमाया कि लड़के की बात तो सतगुरु पर छोड़ दो। आप सब घर वालों के साथ भजन सिमरण पर बैठ जाओ और सिमरन करो। क्योंकि भजन सिमरन में बहुत ताकत होती है। सिमरन तो अनेक पापों को भी खत्म कर देता है। इसलिए तुम किसी तरह की कोई फ़िक्र ना करो।

रावत राम को जब दोनों ताकतों के दर्शन हुए। तो उसकी तसल्ली हो गई। उसने जब अपने लड़के की तरफ देखा। उस वक्त तक उसका लड़का होश में आ चुका था। लड़का अपने पिता से बोला कि यह कौन सी जगह है और हम सब यहाँ पर क्यों आये हैं। तब उसने अपने लड़के से कहा कि यह बादरा का अस्पताल है और तेरे पेट का ऑपरेशन हुआ है। तू आठ घण्टे से बहोश था। पूछा कि अब तेरे को कोई तकलीफ तो नहीं है। तब उस लड़के ने जवाब दिया कि मुझे अब कोई तकलीफ नहीं है। आप कोई फ़िक्र ना करें।

एक हफ्ता (सात दिन) के बाद लड़के को पूरा आराम आने के बाद डॉक्टर ने कहा कि अब आप लोग अपने लड़के को घर ले जा सकते हैं। मैंने उसको अस्पताल से छुट्टी दे दी है। तब हम सब लड़के को राज़ी खुशी अपने घर पर ले आए। उसके बाद लड़का बिल्कुल ठीक रहा। उसको कोई तकलीफ नहीं हुई। उसके बाद जब पूज्य मैनेजर साहिब हमारे गांव में सत्संग फरमाने के लिए आए। तब मैंने वहाँ पर सत्संग के वक्त सारा किस्सा सबको बताया और सब से हाथ जोड़कर अर्ज़ की कि जिसने पूज्य मस्ताना जी से नाम नहीं लिया, वो अब पूज्य मैनेजर साहिब से नाम लेकर अपना जन्म सफल कर लो।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

मिस्त्री रावतराम
जाट सकना नान्हू, तहसील नोहर, जिला गंगानगर

****

'शादी के 17 साल के बाद लड़का होना'

जयकिशन, 2 के. के. तः पदम पुर, जिला गंगानगर, राजस्थान का रहने वाला था। उसके सारे परिवार ने पूज्य मैनेजर साहिब से नाम लिया हुआ था। तकरीबन सारा चक ही पूज्य मैनेजर साहिब पर पूरा विश्वास रखता था। मेरे (जयकिशन के) कोई औलाद नहीं थी। जब उसकी औरत के बारे में डॉक्टरों को दिखाया तो

उन्होंने कहा कि इस औरत के कभी भी बच्चा नहीं हो सकता। बेशक किसी से इसका इलाज करा लो। मैं निराश हो गया। उसको उसकी बीबी, और सब रिश्तेदार भी, जयकिशन को दूसरी शादी करवाने के लिए मजबूर करने लगे। तब मैंने सबको कहा कि जिस तरह सतगुरु को मंजूर होगा वो ही होगा। फिर उसकी औरत ने कहा कि आप मैनेजर साहिब से ही अर्ज़ करके देखो। जब उसने कहा कि सब कुछ पूज्य मैनेजर साहिब के बस में है। अगर वो अन्तर्यामी हैं, तो फिर उनको कहने की ज़रूरत नहीं है। अगर वो इन्सान ही हैं तो भी उनसे कहने से क्या फायदा? यह बातें उस वक्त की हैं, जिस वक्त उसकी औरत ने नाम नहीं लिया था। तब उसने अपनी औरत से कहा कि वो 'नाम' ले ले। नाम लेने के बाद फिर तू खुद ही उनसे अर्ज़ करना। उसके बाद उसकी औरत ने पूज्य मैनेजर साहिब से नाम ले लिया। अपने मन की ख्वाहिश (तमन्ना) उनसे अर्ज़ की। तब उन्होंने ने फरमाया कि सतगुरु के आगे बिनती करो। सतगुरु बड़ा (पूरा) समर्थ है, सच्चे हिरदे की पुकार ज़रूर सुनी जाती है। उस औरत को कुछ तसल्ली तो उसी वक्त हो गई थी। उसके बाद वो हर रोज़ चार-चार घण्टे भजन सिमरन करने लगी। आखिर उनकी दिल की मुराद जब पूरी हुई, उस वक्त उसकी शादी को पूरे 17 साल हो गये थे।

सो नाम लेने के बाद सतगुरु ने अपना चमत्कार दिखाया और लड़का पैदा हुआ। तारीख 28 दिसम्बर 1975 रात के ढाई बजे को लड़का हुआ था। जब लड़के की उम्र 3 साल की थी। एक पण्डित उनके घर पर आकर उसका नाम मेहरदास रखा और कहा कि आपके घर पर पूरब की तरफ से फकीर आयेगा और आपके घर पर सत्संग करेगा। 16 जनवरी 1976 को पूज्य मैनेजर साहिब जी ने हमारे घर पर सत्संग फरमाया। उस दिन इतवार था। पूज्य मैनेजर साहिब ने मेरे लड़के का नाम गुरुदिता रखा था।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

****

'डूबते बच्चे को सतगुरु ने बचाया'

तारीख 28/3/1979 का किस्सा है। जय किशन का लड़का तीन साल का था। वो एक दिन अचानक पानी से भरी हुई डिग्गी में गिर गया था। उसकी माता खेत गई हुई थी। एक छोटी लड़की जो पास में ही थी भागकर लड़के की मां को

ख़बर की कि गुरुदिता डिग्गी में गिर गया है। खेत जो कि घर से पांच किल्ला ही दूरी पर था। लड़के की मां ने आकर कपड़ों के साथ ही उस डिग्गी में छलांग मारी। लड़का पानी के ऊपर तैर रहा था। उसके पेट में पानी नहीं भरा था । उसको बाहर निकाल लिया था। लड़का बिल्कुल ठीक था। यह चमत्कार देखकर सब लोग सतगुरु का जस करने लगे। सब आदमी कहने लगे कि जिसने दिया है वो संभाल भी करता है। उसके बाद जयकिशन अपने लड़के को 30/3/1979 को पूज्य मैनेजर साहिब के पास लाया। लड़का बिल्कुल तंदुरुस्त था और खेल रहा था।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
जयकिशन

****

'फौजदारी केस का ठीक होना'

रणधीर सिंह त्यागी, गांव हथौला, तहसील पानीपत, जिला करनाल का रहने वाला था। उसने यह किस्सा सुनाया था। कि मैंने सावन के भण्डारा 1978 पर नाम लिया था पूज्य मैनेजर साहिब जी से। मैं अपनी रिश्तेदारी में, गांव बीहौनी, तहसील हापुड़ जिला गाजियाबाद में मेरी दो साली ब्याही हुई थी। उनमें एक के आदमी से फौजदारी केस हो गया था। जब मुझे पता लगा तो मैं वहाँ गया था। मैं 24 मार्च 1979 को उनके पास गया था।

मैं जब शाम को वहाँ पर भजन सिमरन पर बैठा हुआ था। मेरी छोटी साली जिसने अभी तक नाम नहीं लिया था और ना ही पूज्य मैनेजर साहिब को देखा ही था। उसको मेरे पीछे पूज्य मैनेजर साहिब का फोटो नज़र आया था। क्योंकि उसने फोटो का हुलिया बताया था कि तुम्हारे पीछे एक सफेद कपड़ों वाला आदमी, हाथ में सोटी थी उसकी दाड़ी बिल्कुल सफेद थी और सिर पर सफेद ही पगड़ी थी, खड़े थे। उस आदमी (पूज्य मैनेजर साहिब) ने उसकी साली से कहा कि फ़िक्र करने की कोई बात नहीं है, सब काम ठीक हो जाएगा। अगले रोज़ ही आखिरी हफ्ता की छुट्टी थी। कोर्ट भी बन्द थीं, फिर भी मेरे सांडू सतूप्रकाश को जेल से छोड़ दिया था और शाम के पांच बजे घर पर आ गया था। इस केस के अन्दर छः आदमी थे।

तीन आदमियों को तो शनीवार को ही छोड़ दिया था, और बाकियों की भी ज़मानत हो गई थी। वो लोग मेरी साली के घर वाले देवी देवता की पूजा करते थे। मेरा गांव हथौला दिल्ली से 60 मील है, और 60 मील हापुड़ है। हापुड़ से 30 मील बीहौनी गांव है। जहाँ पर यह चमत्कार दिखाई दिया था।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
रणधीर सिंह त्यागी

****

'नाम लेने के बाद घर में बरकत होगी'

रणधीर सिंह त्यागी गांव हथौला ने खुद बताया था कि जब पूज्य मैनेजर साहिब ने हमारे गांव में सत्संग रखा तो लाला रतन चन्द दिल्ली वाले के दामाद ने मुझे कहा कि यह बहुत अच्छे और कामिल फकीर हैं। वो चढ़ावा वगैरा कुछ नहीं लेते, ना ही मथ्था टिकाते हैं। सब की ख्वाहिशें (ज़रूरतें) पूरी हो जाती हैं। मेरी औरत ने मुझे नाम लेने के लिए मजबूर किया।

उसके बाद मैं लाला रतन चन्द के दामाद के साथ सावण शाह जी के भण्डारे पर डेरे आया था और पूज्य मैनेजर साहिब से नाम ले लिया था। मेरे घर पर 13 अप्रैल सन् 1950 को डाका पड़ा था। वो लोग सब कुछ लूट कर ले गये थे। उसके बाद मेरे माता-पिता ने भी चोला छोड़ दिया था और मेरे हालात दिन ब दिन ख़राब ही होते गये।

जब डेरे के अन्दर पूज्य मैनेजर साहिब के दर्शन किए और मैंने सारा हाल उनसे अर्ज़ किया। तब मैनेजर साहिब ने फरमाया कि कोई फ़िक्र ना कर। सतगुरु हर तरह से संभाल करेगा। तब मैं नाम लेकर वापिस घर चला गया। धीरे-धीरे मेरे हालात ठीक होते गये। इससे पहले मेरे तमाम जानवर मर गये थे और मैं बहुत तंग था। दाने-दाने के लिए मुहताज था। मेरे पास 13 किले ज़मीन है और नाम लेने से पहले चार किनाल के अन्दर सिर्फ 4 मन ही चावल हुये थे। फिर जब मैंने नाम लेने के बाद धान लगाया, फिर पानी का फल्लड, तूफान बहुत ज़ोर का आया सब कुछ तबाह हो गया। चावलों के ऊपर तीन-तीन फुट पानी। 80 किलोमीटर की रफ्तार से तकरीबन सात दिन तक इसी तरह चलता रहा। इसके बावजूद भी

सतगुरु ने उसी खेत में 18 मन चावल की पैदा हुई। जहाँ पर एक दाना भी होने की उम्मीद ना थी। यह देखकर सब हैरान रहे गये।

नाम लेने से पहले 40 बीघे ज़मीन में 60 मन गन्दम हुई थी। अब उसी ज़मीन के अन्दर से सतगुरु ने 300 मन गन्दम पैदा की। अब हर तरह से खुशहाली है और घर पर हर तरह से शांती और अमन चैन है। सत्संग के वक्त पूज्य मैनेजर साहिब ने मेरे घर पर अपने शुभ चरण डाले थे। मेरे तीनों लड़कों और एक लड़की और मेरी औरत को सबको नामदान की दौलत से मालामाल कर दिया था।

'धन धन सगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
रणधीर सिंह

****

'पूज्य मैनेजर साहिब का दिल की बात बताना'

गुरुवचन सिंह, गांव 1-सी राजस्थान, जिला गंगानगर वाले ने खुद ही अर्ज़ की कि मैं 4 अप्रैल 1974 को हरिदवार डेरा में सत्संग सुनने के लिए गया था। मैंने उनसे बहुत बातें कीं। मैंने पहले भी महाराज चरण सिंह जी ब्यास वालों से नाम लिया हुआ था और डेरे ब्यास भी बहुत दफा गया था। मेरे दिल के अन्दर भी कई दफा यह ख़्याल भी आया था कि मैं उनसे बातचीत करूं मगर बातचीत करने का मौका ही ना मिला।

फिर एक दफा जब पूज्य मैनेजर साहिब ने गंगानगर में सत्संग फरमाया था। मैंने सत्संग बड़े प्रेम से सुना था। मेरे दिल में नाम लेने की चाहना हुई और रात को नाम भी मिल गया। मैंने घर आकर भजन सिमरन को काफी वक्त देने लगा।

एक दिन रात को महाराज चरन सिंह जी के दर्शन हुए और वो मेरे पास आकर खड़े हो गये। पर बोले कुछ भी नहीं। थोड़ी देर के बाद मैनेजर साहिब भी आ गये। मैनेजर साहिब के आने के बाद महाराज चरण सिंह चले गये।
पूज्य मैनेजर साहिब जब नाम देने लगे तब मेरे से कहा कि तुमने तो नाम ले रखा है। मैंने उत्तर दिया कि जी हाँ। मेरे इसरार करने पर आखिर मेरे को नाम दे दिया गया। फिर पूज्य मैनेजर साहिब ने कहा कि तुमने तो गुरुद्वारे के नाम ज़मीन भी

करवाई थी। फिर मैंने कहा कि हाँ जी करवाई थी। फिर वो बोले तो फिर क्या हुआ? तब मैंने अर्ज़ करी कि सारे गांवों में दुश्मनी बढ़ गई। प्रेम करने की जगह सब मेरे दुश्मन हो गये हैं।

इसके बाद मेरे दिल में पूरी तसल्ली (भरोसा) हो गई। क्योंकि वगैर बताए ही उन्होंने सारी बातें मेरे को बता दी थीं। 1-2 अप्रैल 1975 के भण्डारा पर उस ने खुद बताई थीं। वो कहता था कि मेरी किसी जगह से भी तसल्ली नहीं हुई थी। आखिर जब पूज्य मैनेजर साहिब ने मेरे दिल की बात (भेद) ज़ाहिर कर दी। अब मुझे पूरा भरोसा हो गया है कि आप ही पूरे कामल सन्त हैं।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
गुरुवचन सिंह

****

'घर के अन्दर कूकड़ीयां (मुर्गियाँ) छुपा रखी थी'

जब जनवरी 1979 को पूज्य मैनेजर साहिब का सत्संग गांव डींगा में हुआ। तब मैंने 1-सी में सत्संग करने के लिए अर्ज़ करी। तो उन्होंने फौरन ही मेरे घर पर सत्संग करना मंजूर कर लिया। यह सुनकर सारे प्रेमी हैरान रह गए कि मेरे घर पर कैसे सत्संग मंजूर हो गया।

पूज्य मैनेजर साहिब दूसरे दिन 11 बजे मेरे घर 1-सी में पहुँच गये थे। हम ने उनका बिस्तरा एक कमरे के अन्दर लगा दिया। मैंने कूकड़ीयां रखी हुई थीं और चालाकी से छुपा कर ख़ड्डे के अन्दर बन्द कर दिया था। ताकि उनको पता ना लगे।

अभी मैनेजर साहिब को घर पर आए हुए कोई पांच मिनट ही हुए होंगे,उन्होंने सारे घर वालों को बुला लिया और कहा कि सत्संगी घरों के अन्दर यह सब चीजें ठीक नहीं होतीं। मौत के वक्त तकलीफ़ ज़रूर आती है और घर में भी नुकसान होता रहता है। इसलिए जो तुमने घर में कूकड़ीयां रखी हुई हैं उनको जल्दी बाहर निकाल दो। सब आदमी यह देखकर हैरान हो गये कि इनको कैसे पता लग गया? अभी तक तो कोई आदमी भी उनसे मिला नहीं है। पूज्य मैनेजर साहिब फौरन

उस कमरे से बाहर आ गये। बाद में सब कूकड़ीयां एक मास्टर को दिलवा दीं जो मेरे बच्चों को पढ़ाता था।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
गुरुवचन सिंह

****

'मास्टर की लड़की का ठीक होना'

गुरुवचन सिंह चक न.1-सी जिला गंगानगर ने बताया कि हमारे चक के अन्दर एक मास्टर जिसका नाम रामचन्द्र था, उसकी एक 15-16 साल की लड़की पढ़ती थी। उसके पेट में तकलीफ रहती थी। कई डॉक्टरों को भी दिखाया था पर किसी की समझ में कुछ नहीं आया था। उसको चंडीगढ़ भी लेकर गये थे पर वहाँ से भी निराश होकर घर वापिस आ गये थे। लड़की को बहुत सारे टूने तावीज़ भी करा रखे थे पर अभी तक उसको कोई फायदा नहीं हुआ था।

मैंने मास्टर जी को पूज्य मैनेजर साहिब के बारे में बतलाया। उससे कहा कि तू नाम ले ले। तब मास्टर ने सत्संग सुना और नाम लेने के लिए उनसे अर्ज़ की। लड़की की बीमारी के बारे में भी उनसे ज़िक्र किया कि वो बहुत बीमार रहती है। किसी की समझ में अभी तक कुछ नहीं आया। तब पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि यह कर्मों का सिलसिला ही ऐसा है। कर्मों के चक्कर से तो बड़े-बड़े ऋषि मुनि भी नहीं बच सके। सिर्फ एक भजन सिमरन करने से ही कर्मों का बोझ हल्का हो सकता है। इसके सिवाए और कोई दवाई काम नहीं करती।

उसके बाद उस मास्टर और उसकी लड़की (दोनों ने) नाम लिया और वो भजन सिमरन भी करते रहते थे। कुछ दिनों के बाद वो लड़की जिसको सब डॉक्टरों ने लाइलाज कर दिया था, सतगुरु की दया मेहर से वो लड़की बिल्कुल ठीक हो गई थी।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
गुरुवचन सिंह

****

'सोने के ज़ेवरों का मिल जाना'

तारीख 13/2/1979 को गांव महाबद्दर, तहसील मुक्तसर, पंजाब में पूज्य मैनेजर साहिब का सत्संग था। काफी संगत वहाँ इकट्ठी हुई थी। सबने बड़े प्रेम से सत्संग सुना। सत्संग के बाद पूज्य मैनेजर साहिब जी सब प्रेमियों के घरों में तशरीफ ले गये। एक प्रेमी प्रेमसिंह जो गांव में परचून की दुकान करता था, दीवाली के दिनों में उसने अपने घर और दुकान पर सफेदी करवाने के लिए घर का सारा सामान सेहन में बाहर रखा था। वो सफेदी करने वाला आदमी शाम को अपने घर जाते वक्त सोने के ज़ेवर जोकि तकरीबन 15 तोले थे, उठाकर ले गया था। घर वालों को कोई पता नहीं लगा था।

रात को प्रेमसिंह को पूज्य मैनेजर साहिब ने दर्शन दिए और उन ज़ेवरों के बारे में कहा कि वो सफेदी करने वाला तुम्हारे ज़ेवर ले गया है और उस जगह पर दबा रखे हैं। सुबह जब उठकर अपना सामान देखा तो ज़ेवर वाला डिब्बा नहीं था। जब सफेदी करने वाला सफेदी करने के लिए आया। जब प्रेमसिंह ने उससे पूछा तो वो साफ ही मुक्कर गया। जब आखिर में उसको पूज्य मैनेजर साहिब की फोटो के सामने खड़ा किया तो वो फोटो देखते ही डर गया और शर्म के मारे अपनी आंखें नीची करके खड़ा हो गया। जब उसको फोटो की तरफ देखने को कहा उसके बाद वो बहुत शर्मिन्दा हुआ और मान गया कि मैंने ही ज़ेवर लिए हैं। तब वो प्रेमसिंह को साथ ले गया और सारे ज़ेवर जहाँ पर दबाकर रखे थे, सब निकाल कर प्रेमसिंह को दे दिये।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
गुरुवचन सिंह

****

'रेल गाड़ी का ठहर जाना'

तारीख 26/01/1979 को गांव मोहननगर, ज़िला गंगानगर,राजस्थान में दलीप सिंह के घर पर पूज्य मैनेजर साहिब का सत्संग रखा गया था। पूज्य मैनेजर साहिब सुबह के वक्त जब सैर को जा रहे थे, दलीप सिंह के साथ तीन चार प्रेमी

भी थे। उस वक्त वो पूज्य मैनेजर साहिब से कहने लगे कि अभी कोई दो तीन दिन की ही बात है कि हम लोग सत्संग का सामान लाने के लए रायसिंह नगर गये थे। वापसी पर जब हम गाड़ी रेल से आ रहे थे तो हमारे दिल में ख़्याल आया कि हमारा स्टेशन तो हमारे गांव से बहुत दूर पड़ता है। सतगुरु से अर्ज़ की कि जब गाड़ी गांव के नज़दीक आकर अगर रूक जाये तो बहुत अच्छा होगा। हम लोग बगैर किसी तकलीफ के सारा सामान जल्दी घर ले जावेंगे। बिल्कुल ऐसा ही हुआ? और सतगुरु ने हमारी दिल की मुराद पूरी कर दी। गाड़ी गांव के बराबर आकर रूक गई। हमने जल्दी-जल्दी सामान उतारा और धन धन सतगुरु के नारे लगाये। जो लोग उस गाड़ी के अन्दर सफर कर रहे थे बहुत हैरान हो गये। वहाँ पर स्टेशन मास्टर भी आ गया। हमने उससे भी सत्संग के बारे अर्ज़ की कि वो सत्संग पर ज़रूर दर्शन देने की कृपा करे।

एक दिन हम तीन चार आदमी किसी काम की वजह से रायसिंह नगर जा रहे थे। सुबह के वक्त सर्दी बहुत पड़ रही थी। गाड़ी आने में अभी देर थी, इसलिए हम स्टेशन के बाहर आग जलाकर सेंक रहे थे। इतने में स्टेशन मास्टर आ गया और हमको अपने कमरे में ले गया। वहाँ पर कमरे में आग जला रखी थी। फिर उसने हमें चाय पिलाई। हमारी कोई खास जान पहचान तो नहीं थी, पर स्टेशन मास्टर ने भी ब्यास से नाम लिया हुआ था। उसने कहा कि आप लोग पूज्य मैनेजर साहिब के शिष्य होने के कारण हमारा फर्ज़ बनता है कि हम आपकी सेवा करें। यह सारा किस्सा सुनकर पूज्य मैनेजर साहिब ने फरमाया कि यह तो सब कुछ सच्चे प्रेम की बात है। आम लोग तो सुनी सुनाई बातें करते हैं कि सतगुरु ने नामदेव की छप्परी बनाई, धन्ने भगत की गाएं चराई थी। मगर अब तो सतगुरु ने सब के सामने चमत्कार दिखाया है। इस पर भी दुनिया को विश्वास नहीं होता।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
दलीप सिंह

****

'काल के साथ लड़ाई'

श्री ओम प्रकाश, गांव धूकांवाली ने अर्ज़ करी कि मैं 1-2 अप्रैल 1979 को डेरा जगमाल वाली में पूज्य मस्ताना जी के जन्म दिन भण्डारा पर आया था। तारीख

3 अप्रैल दिन मंगलवार रात के 11-12 बजे का वक्त था। मैं लेटा हुआ था। ना नींद में था ना जागा ही था। कुछ खमारी सी ही हालत के अन्दर था। मेरे सामने एक ऊँचे कद वाला डरावनी शक्ल वाला काला दैत (काल) एक गड्ढे में और गड्ढा भी कुंए की तरह गहरा था, उसके अन्दर देखा। उस गड्ढे में तीन चार लकड़ी के बल्ले पौड़ी की शक्ल की तरह लगे हुए थे। वहाँ पर नीचे गड्ढे में वो काल खड़ा था और मैं उस गड्ढे के ऊपर के डण्डे पर खड़ा था। जब मैंने काल को देखा तो मेरे को बहुत डर लगा और डरता हुआ सतगुरु-सतगुरु कर रहा था। एक दम अचानक ही पूज्य मैनेजर साहिब दिखाई दिए। उनके साथ तीन चार साधू भी थे। डेरे के साधुओं ने उसको रोककर उस पर मिट्टी का गारा मारा। तब काल नीचे कुएं में उतर गया। तब मैनेजर साहिब ने उस काल से कहा कि अगर तेरे में ताकत है तो इसके साथ मुकाबला कर। फिर उन्होंने मेरे से कहा कि तुम नीचे मत जाना ऊपर ही रहना। इतने में काल बाहर आ गया। पर काल ने अपना पहले वाला रूप बदलकर बहुत डरावना रूप धारण कर लिया था। जब मैनेजर साहिब ने मेरे ऊपर अपनी नज़र मारी, तो मुझे जोश आ गया और मैं काल के साथ कुस्ती करने लगा। मैंने अपना एक हाथ उसकी (काल) की गर्दन में और दूसरा पाठों में डालकर उसको नीचे गिरा दिया और उसकी खूब पिटाई की। इतने में डेरे का एक साधू आ गया। मेरा हौंसला बढ़ गया। उसने मेरी मदद की। फिर जब मैंने पूज्य मैनेजर साहिब से पूछा कि क्या इस (काल) को आग में जला देवें। वो बोले तो कुछ नहीं पर इशारा करके चले गए। तब मैंने सोचा कि ज़रूर इसको आग में ही जलाना चाहिए। काल का एक हाथ मैंने पकड़ा था और दूसरा साधू ने पकड़ रखा था। फिर हम काल को दरवाज़े से बाहर ले गये। वहाँ पर हम ने वैसी ही डरावनी शक्ल वाला देखा। वो पहले काल से पूछने लगा कि तुझे क्यों पकड़ा है? मैं तेरे को इनसे छुड़ाऊं? तब वो काल बोला तू इनको मत छेड़ना। मेरी भी ताकत (पेश) इनके आगे नहीं चली। जब मैंने पहले वाले को छोड़ दिया। तब मैनेजर साहिब ने मेरी तरफ देखा। तो जब में दूसरे को पकड़ने लगा तो वह भाग खड़ा हुआ। मैंने उठाकर एक पत्थर उस पर मारा। जो जाकर उसके माथे में लगा। तब वो दोनों काल या भूत भाग गए और फिर दिखाई नहीं दिए।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
ओम प्रकाश

****

'हनुमान के भगत ने कहा यहाँ मेरा बस नहीं चलता'

एक दफा डेरा जगमाल वाली सत्संग पर हमारे गांव से बहुत लोग आये थे। जब मैंने अपने मामा के लड़के को कहा तो वो भी तैयार हो गये। रास्ते के अन्दर उसकी तबीयत ख़राब हो गई। वो हनुमान का पुजारी था। रास्ते में ट्रैक्टर से भी गिरने लगा था। जब वो ना रुका तो हमने ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाए। नारे सुनकर वो चुप होकर बैठ गया। दरबार में पहुँच गए। तब दरबान ने कहा कि पहले लंगर खा लो। पर हमने कहा कि पहले उनके दर्शन कर लें। तब उसने कहा कि वो तो सत्संग के वक्त ही आएंगे। हम सब लंगर खाने के लिए बैठ गए। जब मैंने अर्जुन से खाने के लिए कहाँ तो उसने इन्कार कर दिया। पर दोबारा कहने पर उसने लंगर खा लिया। फिर पहली तरह करने लगा। तो मैंने उसे बरामदा में आराम करने को कहा। जब हम सब उनके दर्शन करने गये तो बहुत सारी संगत बैठी थी। तो मैनेजर साहब पहले ही कह रहे थे कि पूरण ताकत के नारे में बहुत ताकत होती है। मैंने सुनकर कहा कि हाँ जी बहुत ताकत होती है। हम अभी आ रहे हैं और मेरा भाई अर्जुन कभी यहाँ नहीं आया और नाम भी नहीं लिया है। यह सब परिवार हनुमान को मानते हैं। तब मैंने सारी कहानी उनसे खोलकर सुनाई। जब मैंने ज़ोर-ज़ोर से नारे लगाए, तब वो ठीक हो गया। तब उन्होंने कहा कि काल तंग करता है। जब हम बाहर आये तो अर्जुन ने चीख मारी। मेरी दादी 4-5 दिन पहले ही सेवा के लिए डेरा आई हुई थी। जब अर्जुन ने दादी के पैर छुए और मेरा विश्वास कौन मानेगा? तब दादी ने उसके 2-3 थप्पड़ मारे और कहा कि तू कौन है विश्वास हटाने वाला? और कहा कि मैं इसकी भुआ लगती हूँ तू इसको क्यों तंग करता है? तो अर्जुन बोला अपने-अपने धाम में सब बड़े होते हैं और छुप कर बरामदे में बैठ गया। बाकी संगत सेवा करती रही। शाम के वक्त जब खाने का वक्त हुआ, तो अर्जुन एक साधू के साथ बाहर जाकर बैठ गया। कहा कि यह मेरे को खाना खाने से रोकता है। जब पूछा कि कौन रोकता है? कि जो बला मेरे अन्दर बैठी है। फिर पूछा कि क्यों रोकती है? तब उसने कहा कि लंगर में नमक डाला हुआ है और वो नमक सन्तों का है। और यह मेरी हड्डीयां तोड़कर निकलेगा। जब मास्टर ने चलने को कहा। तो अर्जुन कहने लगा अभी वहाँ पर भीड़ है। जब मास्टर ने अन्दर जाकर देखा तो वाकय ही भीड़ थी। फिर कोई दो घण्टे के बाद अर्जुन बोला अब चलो भीड़ कम हो गयी है। तब दोनों ने आकर

खाना खाया।

सत्संग की कारवाई 10 बजे शुरू हुई थी। पर मैनेजर साहिब 12 बजे आए थे। सत्संग काफी देर तक चला। मेरे को तो नींद आने लगी, तो मैं उठकर इधर-उधर फिरने लगा। मैंने अर्जुन और मास्टर के पास बैठकर कहा कि जब भी पूरण ताकत का सत्संग होता है तो नींद और आलस तंग करती ही है। वैसे चाहें हम सारी रात बातें करते रहें नींद नहीं आती। तब अर्जुन ने कहा कि तू अब सो कर दिखा। जब मैंने कहा कि तू है कौन, जो सत्संग में शोर कर रहा है। तब उसने कहा कि मैं हनुमान हूँ। तो मैंने कहा कि होगा तू हनुमान, चुप करके बैठ जा, शोर मत कर। तब अर्जुन कहने लगा कि रास्ते में तूने मुझे नारे लगा-लगाकर गुस्सा कर दिया था। तब मैंने कहा कि हमारा मस्ताना शाह हाज़िर नाज़िर ज़िन्दाराम है। तब अर्जुन ने मेरी तरफ हाथ उठाया। तब मैंने कहा कि मैं तुमको मारूंगा। तब अर्जुन चुप करके बैठ गया। अपने हाथ पर फूंक मारने लगा। सत्संग रात के दो बजे तक चलता रहा। सत्संग के बाद ड्राइवर ने कहा कि जिसने चलना है जल्दी तैयार हो जाओ। तब मैंने अर्जुन से पूछा कि तूने चलना है या यहाँ पर रहना है। तब उसने कहा कि मैंने जाना है। क्योंकि मैं यहाँ पर तकलीफ पा रहा हूँ। जब मैंने पूछा कि क्या तकलीफ है? तो उसने कहा कि घर जाकर बताऊंगा। तब मैंने कहा कि रास्ते में कोई झगड़ा नहीं करना, क्योंकि औरतें हमारे साथ हैं। तब उसने कहा कि मैं कुछ नहीं बोलूंगा। यहाँ पर आने से ही अन्दर वाली बला नाराज़ होती थी। जाती दफा वो सरीये पर बैठ गया और सारे रास्ते कुछ नहीं बोला। और सारी संगत से अलग होकर बैठा रहा।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

****

'काल से एक की बजाए दो लड़के लेना'

मेरे गांव धूकियांवाली में एक साधू आया और कहने लगा कि जो लोग शादीशुदा हैं, मैं उनकी दोबारा शादीयां करवाता हूँ। इससे आप को दूसरे जन्म में यही पत्नीयां मिलेंगी जो अब तुम्हारी पत्नीयां हैं। कोई 4-5 आदिमयों ने उस साधू से दोबारा शादी करवाई। मेरी दादी उस साधू के पास गई। वहाँ और आदमी

भी बैठे थे। साधू ने देखते ही कहा तेरा नाम गौमती है और तेरी अपनी कोई औलाद नहीं। तूने लड़का गोद लिया हुआ है। घर के दायें तरफ एक भूत रहता है। अब तेरे पोते की बहू के बच्चा होने वाला है और भूत कहता है कि मैं बच्चे को पैदा होते ही मार दूंगा। पहले भी उस भूत ने, तेरे पोते के बच्चे को भी उसी ने मारा था।

मेरी दादी रोने लगी और साधू से अर्ज़ की कि इसका इलाज कर दो। तब उसने कहा कि आप का कोई आदमी आकर बात करे। दादी ने घर आकर मुझसे कहा कि मुझे तो तेरे दादा से डर लगता है। तू जाकर उसको सारी बात बता दे। मैंने जाकर सारी बात अपने दादा हुकमचन्द को बता दी। तब दादा जी ने कहा कि उसके पास सुबह ही चलेंगे। दूसरे दिन हम तीनों सुबह उस साधू के पास गये। वहाँ जाकर एक तरफ बैठ गए। तब साधू ने दादा से कहा कि तूने सारी कहानी तो सुन ली होगी। तब दादा जी बोले कि हाँ जी। इसी काम के लिए ही तो आप के चरणों में आए हैं। तब साधू बोला कि एक दरख्वासत लिखो। मैं आपको लिखवाता हूँ मेरे से यह लिखवाया कि उसका बाल बच्चा चले और भूत का भी इलाज हो। ऐसी अर्ज़ी लिखवा कर मन्दिर में जहाँ मूर्तियां रखी थीं। वहाँ ले गया और कहा कि यह रखकर हाथ जोड़कर बैठ जाऊ। खुद जोत करने लग गया। उसमें से आवाज़ आयेगी तो समझना कि आप की अर्ज़ी मन्जूर हो गई है। जब साधू ने थाली में दीया रखकर जोत जलाई। तो फिर ज़ोर की आवाज़ आई तब साधू ने कहा कि लाला जी आपकी अर्ज़ी मन्जूर हो गई है। आप फ़िक्र ना करें, इलाज हो जाएगा। तब हमने पूछा कि क्या खरच होगा? तब उसने बताया कि अढ़ाई तौला कस्तूरी, 101 गज़ कपड़ा, 101 मटकी और सामग्री। सारा खर्चा 3600 रुपये का बताया। मथुरा से पंडित लाकर हवन करेंगे, तब इस भूत का इलाज होगा। तब हमने कहा कि घर जाकर सलाह करेंगे। घर आकर दिल में ख़्याल आया कि कोई ठगी ना हो। हमने नाम तो मस्ताना जी से लिया था पर उनकी सोहबत नहीं की और ना ही डेरा गये थे।

हमें नाम भी हमारे गांव में ही मिला था। आखिर साधू 20-21 दिन वहाँ रहकर खाली हाथ वहाँ से चला गया। साधू के जाने के बाद अढ़ाई महीने के बाद रात को बच्चा पैदा हुआ। वो रात को 12 बजे मर गया और सुबह 4 बजे फिर ज़िन्दा हो गया। सुबह दादा ने पण्डित को बुलाया और सारा हाल सुनाया। पैदा होने का वक्त भी बताया। तब पण्डित ने कहा कि लड़का गन्डमूल में पैदा हुआ है। कोई पण्डित इसका नाम नहीं रखेगा और ना ही दान लेगा। तो दादा ने कहा

तो फिर दान कौन लेगा? पण्डित ने कहा कि डकौत ही लेगा। उसको काले तिलों का हाथी बनाकर उसके मुंह में सोना रखकर और एक सोने का सांप बनाकर और कपड़े देने हैं। लड़के का नाम निकलवाने के बाद ठीक 12 बजे दान देकर घर से भेज देना। वो भी पीछे मुड़कर ना देखे और ना ही आप जाते की उसकी पीठ देखना। तब लड़के का नाम 21 दिन के बाद रखूंगा। जब जन्म पत्री के लिए कहा तो पण्डित ने कहा कि मैं सिर्फ टेवा बना सकता हूँ, पत्री किसी और से बना लेना। इसी तरह 10 रोज़ गुज़र गये और कहा था कि लड़के का बाप इसका मुंह ना देखे मगर लड़के के बाप ने तो पहले ही देख लिया था। 10 रोज़ के बाद लड़का मर गया।

जिया तो 20 दिन तक, अन्दर नहीं रखा जा सकता। अगर लड़का बच गया तो उसको सुबह ही बाहर निकाल देंगे। सुबह तीन-चार बजे लड़का ज़िन्दा हो गया। सुबह किसी को भी ना बुलाया। 10 दिन के बाद डकौत को बुलाकर लड़के का नाम रामचन्द रख दिया। दादा ने कहा नाम तो ठीक है। दादी डेरा जगमाल वाली सत्संग सुनने अकेली जाती थी। पूज्य मैनेजर साहिब ने नुहीयां वाली सत्संग रखा। तो दादी ने मैनेजर साहिब से कहा कि हमारे यहाँ धूकियांवाली दरबार में दर्शन देने की कृपा करें। तब उन्होंने कहा कि हम वहाँ पर ठहरेगें नहीं। जब वहाँ दरबार में गये तो दादी ने कहा कि हमारे घर भी चरन डाल दो। तब कुछ साधुओं को लेकर हमारे घर आए। हमने उनको बैठाने के लिए बाहर ही दरी बिछा दी। मैनेजर साहिब ने आते ही कहा कि अन्दर चलो। अन्दर वो कुर्सी पर बैठ गए। बाकी सब दरी पर बैठ गए। शब्द कीर्तन शुरू हुआ। तो छोटा लड़का रामचन्द नाचने लगा। तब उन्होंने उस लड़के का नाम सुभाष रखा। और कहा कि इस के माथे पर काला टीका लगाया करो। उसके बाद मैनेजर साहिब वापिस चले गए। 4-5 महीने के बाद दादा ने कहा कि मैनेजर साहिब से सत्संग लेकर आओ।

सत्संग मांगने पर उन्होंने सत्संग दे दिया। जब पूज्य मैनेजर साहिब धूकियांवाली आए तो सुभाष की तरफ देखकर कहा कि इसकी खुशी से ही है इसके पैर पकड़ो। मगर हमने शरमाकर कुछ भी ना कहा। फिर कहा कि दादा का वक्त थोड़ा है। भजन सिमरन किया करो। तो दादा बोला कि मैं धन धन सतगुरु तो बहुत करता हूँ। यह कहकर अन्दर चले गये। 5-6 माह के बाद सुभाष लड़का मर गया। दादी ने चुपके से राजकुमार को 50 रुपये देकर कहा कि जल्दी से जीप करके मैनेजर साहिब के पास चला जा और उनसे कहना कि सुभाष चोला छोड़ गया है। उसके बाद मैंने गांव के सिआने आदमियों और लाला चानन राम से सलाह

कर के कहा कि दिन डूबने वाला है, लड़के को दफना देना ही ठीक रहेगा। दादी तो पागल है जो कहती है कि डेरा ले चलो। यह मरा नहीं है बल्कि ज़िन्दा है। तब हमने कहा कि मरे को 4 घण्टे हो गये हैं। मरा नहीं तो क्या है। हमने दादी से कहा कि अच्छा डेरे ले जाते हैं। यह बहाना करके बच्चे को शमशान भूमि में ले जाकर उसको मिट्टी दे दी। हमें यह पता ही ना था कि राजकुमार मैनेजर साहिब के पास गया है। हम जब दफना कर वापिस आ रहे थे, तो राजकुमार जीप लेकर आया और मेरे को एक तरफ ले जाकर कहा कि क्या लड़के को दफना आये हो? तो मैंने कहा कि हाँ दफना दिया है। जब मैंने पूछा कि तू कहा गया था? तो उसने कहा कि मुझे दादी ने मैनेजर साहिब के पास भेजा था। तो फिर उन्होंने क्या कहा है? तब मैनेजर साहिब ने कहा था कि किसी डॉक्टर को दिखा दो। तब मैंने उनसे कहा कि यह सारी बात दादी को मत बताना। जो हो गया सो हो ही गया है। दादी से कह देना कि उन्होंने कहा है कि जो भाणा बीत गया वो ठीक है, सतगुरु-सतगुरु करो। अगर तूने सच्ची बात बता दी तो सब काम बिगड़ जाएगा। उसके बाद दादा जी जो अफीम खाने के आदी थे। उन्होंने छोड़ दी और उदास रहने लगे। मालिक के आगे शिकवा करने लगा कि मेरी उम्र 85 साल की हो गई है कि या तो बच्चा देना ही ना था, और अगर दिया था तो फिर वापिस नहीं लेना था। वो जिद्दी बहुत थे। कमज़ोरी होने लगी, तो मैंने दादी से कहा कि इनको चाय के अन्दर अफीम घोलकर दे दिया करो। फ़िक्र बहुत करते हैं, नहीं तो मर जाएगा। उसके बाद दादी मैनेजर साहिब के पास गई और सारा हाल उनसे कह दिया। उन्होंने फरमाया कि बूढ़े का वक्त कम रहता है। सतगुरु-सतगुरु करे। तुम बेफ़िक्र रहो। काल अगर एक ले गया है तो उससे दो ले लेंगे।

हमारे घर में जो देवी देवता और पितरों की पूजा होती थी और जो थान बनाया था, वो सब गिरा कर बाहर फेंक दिए। इसके 4-5 महीने के बाद दादा चोला छोड़ गए। उनके मरने के एक साल बाद रात के 8 बजे फिर ओम के घर पर लड़का पैदा हुआ। तब पूज्य मैनेजर साहिब ने नम्बरदार नंदसिंह के हाथ 11 रुपये देकर कहा कि ओम के घर लड़का पैदा हुआ है, उसको दे आना। जब वो (नन्दसिंह) आया तो हमने उसी तरह नंगे बच्चे को नम्बरदार के आगे लाकर रख दिया। पहले तो बच्चे को देखकर हंसा, फिर उसके हाथ पर 11 रुपये रख दिए। हमारा भी यही ख़्याल था कि किसी भाई या रिश्तेदार से लड़के के लिए कोई रुपया नहीं लेंगे। और सब से पहले दरबार में जाकर उसका नाम रखवाएंगे। जब हम उसको दरबार में ले गए, तो पूज्य मैनेजर साहिब ने उसका नाम ''गुर चरनदास'' रखा।

फिर कुछ दिनों के बाद मैनेजर साहिब हमारे गांव आए। सत्संग फरमाने के बाद पूज्य मैनेजर साहिब ने हमारे घर पर भी अपने चरण डालकर पवित्र किया। जब आप घर पर आए थे, तो लड़का मैनेजर साहिब की सोटी पकड़ने लगा। तो उन्होंने फरमाया, अगर सोटी लेनी है तो डेरे आ जाना। जब चार साल के बाद वो ही लड़का डेरा गया। तो पूज्य मैनेजर साहिब ने वो ही सोटी, अपनी दे दी उसके बाद फिर ओम प्रकाश के घर पर दूसरा लड़का पैदा हुआ। जिसका नाम पूज्य मैनेजर साहिब ने गुरवचन दास रखा।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
ओमप्रकाश

****

'बीमारी का जाना! कर्मों का दण्ड भुगतना पड़ता है'

ओम प्रकाश ने कहा कि मेरा भाई माडू जिसका नाम मस्ताना जी ने नारायणसर रखा था, उसकी शादी सिरसा में मुरलीधर बाऐं वाला के घर पर हुई थी। जिसका एक लड़का शंकर लाल था। उसके अन्दर मुहम्मद रफी आता था। सब लोगों को जो उसके पास आते थे उन सबको उनके दिल की बात बताता था। एक दिन नारायणसर ने मुझसे कहा कि सिरसा में एक लड़का जो कि माडू का साला लगता है लोगों को उनकी बीमारी का हाल बताता है। ओम रोज़ाना बीमार रहता था। वो कमज़ोरी की वजह से चल फिर भी नहीं सकता था। एक दिन ओम उस लड़के के पास आया। उससे अपनी बीमारी के बारे सारा हाल पूछा। तब वो लड़का बोला कि मैं तेरे को क्या बताऊं?

यहाँ पर कचहेरी लगती है। जिसके अन्दर सब देवी-देवता इकट्ठे होते हैं। मैं किसी से तो छोटा हूँ और किसी से बड़ा हूँ। पर तेरे ऊपर सब देवी देवता नाराज़ हैं। मगर एक बात ज़रूर तेरे हक के अन्दर है, कि तेरा ईष्ट (गुरु) जी है वो ज़बरदस्त ताकतवर है। किसी भी देवी देवता की उनके आगे कोई पेश, ताकत काम नहीं करती। सब आप के रहबर से बेज़ार तंग हैं। अगर मैं आपको सारी बात बता दूं, तो फिर तू तो चारपाई से उठ भी नहीं सकेगा। मैंने कहा कि मुझे तू यह बता दे कि मेरी बीमारी क्या है? यह कैसे लगी? और इसका इलाज कैसे हो सकता है? या इसका कोई इलाज नहीं है? या क्या किसी मेरे दुश्मन ने कोई टूना वगैरा

तो नहीं कर दिया? मेरे को सारी बात सच-सच बता दे।

तब फिर वो लड़का बोला कि कोई देवी-देवता नाराज़ नहीं है, और ना ही किसी ने तुम्हारे ऊपर कोई टूना ही किया है। यह सब तेरे कर्मों का सिलसिला है। यह सब लेने-देने का ही खेल है। एक तेरे हाथ से जीव हत्या भी हुई है। इतना कहकर वो लड़का चुप हो गया। ओम सारी बातें सुनकर अपने घर वापिस आ गया और बहुत फ़िक्र करने लगा। मन में ख़्याल करने लगा कि बीमारी तो थी ही पर जीव हत्या तो न करवाता। वह सतगुरु से बिनती करने लगा।

सावन का भण्डारा था। डेरे के अन्दर ट्रैक्टरों से मिट्टी लाकर, भरत कर रहे थे। दादी और जवाहर एक हफ्ता (सात दिन) पहले ही डेरा आ गये थे। घर पर भैंस भी सूने वाली थी। भैंस चारा नहीं खा रही थी। मेरे को शक हुआ कि वो भैंस बीमार होगी। मैंने गांव से किसी सियाने डॉक्टर को बुलाकर भैंस को दिखाया। थोड़ी देर के बाद भैंस ने बच्चा गिरा दिया। भैंस बहुत अच्छी थी। जब मैंने देखा तो पता चला कि वो कट्टी थी। ज्यों ही मैंने उसको हाथ लगाया तो वो कट्टी मर गई। मैंने सोचा कि अगर दादी घर पर होती तो, भैंस की देखभाल तो कर लेती। पर वो तो पहले ही दरबार में चली गई थी। मैंने अपने भाई भगते को, दादी को लाने के लिए डेरा भेजा। दादी ने सारी बात पूज्य मैनेजर साहिब के आगे बता दी और गांव जाने के लिए इजाज़त मांगी। तब मैनेजर साहिब ने फरमाया कि यह सब कर्मों का दण्ड है। इसको तो भुगतना ही पड़ता है। अब तू वहाँ जाकर क्या करेगी?

पूज्य मैनेजर साहिब के वचन सुनकर दादी गांव नहीं आई। भण्डारे के बाद गांव आई थी। तब तक भैंस ख़राब हो चुकी थी। बच्चा मरने की वजह से दूध भी नहीं दिया। आखिर उसने तंग आकर भैंस को 200 रुपये के अन्दर किसी को बेच दिया। जब दादी घर पर आई। तब उसने बताया कि पूज्य मैनेजर साहिब ने बताया था कि यह सब कर्मों का और लेने-देने का सिलसिला ही ऐसा है। सतगुरु और देगा। तू बीमार है चिन्ता ना कर। इस घर के अन्दर पहले कोई बाल-बच्चा नहीं होता था। देख इस सतगुरु ने इस घर पर अपनी दया मेहर से कितनी रचना लगा रखी है। यह सब सतगुरु की दया मेहर से ही हो रहा है। हमें उसकी रज़ा में राज़ी रहना चाहिए और भजन सिमरन करते रहना चाहिए।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
ओम प्रकाश

****

'लड़की का सत्संग टेप सुनकर चोला छोड़ना'

सरदार राजिन्दर सिंह ठेकेदार जी गंगा नगर का रहने वाला था। उसने बताया कि एक लड़की गांव रतेवाला की थी। उसको बच्चा होने वाला था। उसको गंगानगर डॉ. गुप्ता के पास लाए थे। लड़की की हालत बहुत ख़राब थी। पर सतगुरु की दया से उसको बच्चा हो गया। डॉक्टर ने कहा इसको ज़्यादा हिलने-डुलने मत देना, क्योंकि इसको आराम की ज़रूरत है। दूसरे दिन उस लड़की ने कहा कि डॉक्टर साहब आप मुझे छुट्टी दे दो। मैंने घर जाकर कल मैनेजर साहिब का सत्संग सुनना है। तो डॉक्टर ने कहा कि इस जगह पर टेप लगा लो। हम भी सुन लेंगे। लड़की ना मानी, तो डॉक्टर ने उसको घर जाने की छुट्टी दे दी। वो लड़की घर पर आकर दो दिनों तक सत्संग टेप पर ही सुनती रही। दूसरे दिन मैनेजर साहिब ने कहा कि प्रसाद लेकर आओ। तब उस वक्त लड़की ने कहा कि अब सतगुरु आ गये हैं और मैं उनके साथ जा रही हूँ। इतना कहकर उस लड़की ने चोला छोड़ दिया।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
राजिन्द सिंह, ठेकेदार

****

'डॉक्टर ने फीस लेने से इनकार कर दिया'

अर्ज़ है कि मेरे घर पर मेरी पत्नी बीमार हो गई थी। हम लोग गंगानगर में ही डॉक्टर गुप्ता जी से ही इलाज करवा रहे थे। उसकी हर रोज़ की फीस पांच रुपये थी। मेरी बीबी रोज़ाना ही डॉक्टर को ज़ुबानी पूज्य मैनेजर साहब की साखीयां सुनाया करती थी। डॉक्टर के दिल पर भी साखीयों का असर हुआ और वह डॉक्टर बोला कि मैं अब आप से कोई फीस नहीं लूंगा। तब मेरे घरवाली बोली कि हमारे सन्तों का हुक्म है कि किसी का हक नहीं मारना चाहिए। अगर आप पांच रुपये नहीं लेते तो आप तीन रुपये ले लो। मैं मुफ्त में दवाई नहीं खाऊंगी। मुझे भी सन्तों का हुक्म है कि हम सबको धर्मराए के घर जाकर हिसाब देना पड़ता है। तब डॉक्टर ने कहा कि मैं धर्मराए से कह दूंगा कि मैंने सब फीस ले ली है कोई हिसाब बकाया नहीं रहता। डॉक्टर उसकी बातों से बहुत मुतासिर हुआ। डॉक्टर की फीस पांच रुपये रोज़ाना, बिजली के खर्च के 30 रुपये दी, टीके ताकत के

10 रुपये, मशीन से टेस्ट करवाने की फीस 40 रुपये होते थे।

डॉक्टर साहिब ने 40 रुपये तो वापिस कर दिए। ठेकेदार राजिन्दर सिंह के घर से डॉक्टर को रोज़ाना की कीमत दे देती थी पर डॉक्टर वो रुपये पर्ची के अन्दर लपेट कर वापिस दे देता था। घर आकर जब पर्ची खोलते। तब पता चलता कि डॉक्टर ने फीस वगैरा कुछ नहीं ली। दूसरे दिन फिर डॉक्टर को कहा जाता कि आप फीस रख लिया करो। तब डॉक्टर बोला कि माता जी अगर आप का इलाज मुझे छः महीने तक भी करना पड़ा, तो भी मैं आपसे एक पैसा भी नहीं लूंगा।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
राजिन्दर सिंह

****

'बीमार लड़के का ठीक होना'

ठेकेदार साहिब के लड़के के पेट के अन्दर गैस की तकलीफ कई रोज़ से रहती थी। एक दफा रात को पूज्य मैनेजर साहिब जी ने सपने के अन्दर दर्शन दिये और फरमाया कि हम पप्पू से गाना सुनना चाहते हैं। तब हमने अर्ज़ करी कि सतगुरु जी पप्पू के पेट में कई रोज़ से तकलीफ रहती है। तब पूज्य मैनेजर साहब जी ने फरमाया कि सुबह के वक्त पर इसको काली मिर्च और छोटी ईलायची दोनों को रगड़कर हर रोज़ पानी के अन्दर मिलाकर पिलाया करो। तो अगले दिन सुबह से ही हर रोज़ इसी तरह से दवाई बनाकर कोई तकरीबन चार-पांच दिन तक पिलाते रहे। सतगुरु की दया मेहर से पप्पू के पेट के गैस की तकलीफ को आराम आ गया। जो डॉक्टर कई रोज़ से उसको दवाई देता था पर कोई उसकी तकलीफ के अन्दर फर्क नहीं पड़ा था, जब यह सारा किस्सा डॉक्टर को बताया तो वो सुनकर हैरान हो गया। फिर उसके बाद कभी कोई तकलीफ नहीं हुई।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

जुबानी–
राजिन्दर सिंह ठेकेदार

****

'जमदूत से लड़ाई करना'

सरदार राजिन्दर सिंह ठेकेदार गंगानगर वाले ने अर्ज़ की कि 14-15 अप्रैल 1979 का किस्सा है कि मैं डेरे जगमाल वाली आया हुआ था। तब पूज्य मैनेजर साहिब ने मुझे बुलाकर कहा कि वाटर वर्क्स की टंकी का जाल बनाना है और उसके अन्दर कंकरीट भी डलवानी है। तब ठेकेदार साहिब ने गंगानगर जाने के लिए अर्ज़ की कि घर पर पप्पू की मां बहुत बीमार है। मैं इसलिए जल्दी जाना चाहता हूँ।

तब पूज्य मैनेजर साहिब जी ने फरमाया कि हम गंगानगर तार दे देते हैं कि ठेकेदार साहिब 4-5 रोज़ के बाद आयेंगें। उसके बाद 4-5 रोज़ के बाद जब मैं घर पहुँचा तो पप्पू की मां सारा किस्सा सुनाने लगी कि 'रात को जमदूत आया था। उसकी बहुत डरावनी शक्ल थी। उसके लम्बे-लम्बे दांत, और उसका काला रंग बड़ी-बड़ी आंखें थी। मेरे को मारने के लिए मेरे गले के अन्दर हाथ डालने लगा। तब मैंने पूरे ज़ोर से उसके हाथों को पकड़कर मुंह से काट खाया और कोशिश करके अपनी गर्दन पर हाथ ना डालने दिया। उसने मुझे मारने की बहुत कोशिश की।

हमारी आपस में बहुत देर तक लड़ाई होती रही। फिर मुझे अचानक ही सतगुरु का दिया हुआ नाम याद आया और मैं ज़ोर-ज़ोर से सिमरन करने लगी। मेरे सिमरन करते ही जमदूत भागने लगा। कहने लगा कि अब मेरा तेरे ऊपर कोई ज़ोर नहीं चलता और भाग गया यमदूत। इतने में पूज्य मैनेजर साहिब की आवाज़ सुनाई दी और कहने लगे कि दुःख के अन्दर सिमरन याद करते हो आप सब, सुख के अन्दर सिमरन किया करो तो दुःख तकलीफ कभी ना हो। सतगुरु आप सबकी रखवली करता है, वो तो हाजिर नाजिर है।

तब फिर पप्पू की मां ने मुझे कहा कि अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। थोड़ी बहुत कमज़ोरी ज़रूर है। जब सब घर वालों ने यह किस्सा सुना तो बहुत हैरान हुए और सतगुरु का सिमरन करने लगे। जिसको भी इस किस्सा का पता लगा, सुनकर बहुत सब हैरान हुए।

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'

सत्संग

'ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे'

सत्संग के बचन

पाठी– ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे तेरे कम्म आवेगा।
सुन्दर महल मकान ऐत्थे छड्ड जावेंगा॥
जदों काल वली ने औणा तैनूं गुरजाँ मार डरौणा।
तेरे कोल होणगे सारे, तैनूं किसे ने नहीं छुड़ौणा,
फेर पछताएंगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी– हमारे सत्संग का असली मतलब क्या है? जब हम कीर्तन कथा करते हैं और जितने भी पूजा पाठ करते हैं उनका मतलब क्या है? सब का मतलब यह है कि काल एक शक्ति है जो मौत के समय आती है। सबके लिए आती है, कबीर साहिब ने घोघड़ कहा है। और फकीरों ने, महात्माओं ने इसे काल कहा है। कबीर का शब्द है:–

इक दिन घोघड़ आसी रे, इक दिन काल आसी रे।
तीन लोक और चौदह भवन में इस घोघड़ का राज॥

त्रिलोकी तक उसका राज है। तीन लोक चौदह भवन में, चौदह लोक, जितने भी खण्ड, ब्रह्माण्ड हैं, त्रिलोकी तक सबमें इसका राज है। सबको चुरा रहा है। सब की मिट्टी पलीत कर रहा है। इसका काम है मिट्टी पलीत करना। उसका काम क्या है? पैदा करना, पालना और मारना। देखो! मौत के समय क्या हाल है? कितनी तकलीफ है? यह तो हमारे सामने है। वो चिल्लाते हैं कि हाय! मेरे नीचे आग जला दी। हाय! मुझे काट रहे हैं। कितना चिल्लाते हैं। पशुओं को मरते हुए देखो, आदमियों को मरते हुए देखो! क्या हाल होता है? यहाँ पर बस नहीं, जो आगे जा कर हाल होता है? फकीर देखते हैं जो अन्दर जाते हैं कि किस तरह जीव को नरकों में डालता है। क्या-क्या तकलीफें देता है। अब सवाल तो यह है कि फकीर

उस तकलीफ को देखते हैं। उनको दर्द आता है। उन्होंने आकर हमें आवाज़ दी कि इससे बचो! बचो! कि कोई उपाय सोच लो! कि कोई उपाय सोच लो! न उन फकीरों ने मज़हब बनाए न कभी मिटाए। उनका इनसे कोई ताल्लुक नहीं। यह तो हमने पीछे से झगड़े डाले हैं। उनकी तो एक ही तालीम है। क्या? कि इस घोघड़ से बचो! बस भक्ति करके अपने देश पहुँचो जो उसके राज से परे है। अपने घर पहुँच जाए, सचखण्ड अनामी में पहुँच जाए, जहाँ से हम आए हैं। उनका तो यह मतलब है और कोई मतलब नहीं। ऐसे ही दुनिया झगड़ों में पड़ी है। कोई कौमों के झगड़ों में पड़ा है। यह सब फकीरों के पीछे से बने हैं। सब का असली मतलब तो यही है। अगर यह बचाव नहीं किया तो हमारा सिक्ख बनने का क्या फायदा है? अगर हमने यह बचाव न किया तो हमारा नामधारी बनने का क्या फायदा? अगर वह उपाय न किया तो सनातनी बनने का क्या फायदा? सोच लो! सबका मतलब तो यही है! सब का मतलब तो यही है, चाहे कोई भी हो। सबका एक ही मतलब है कि मौत के वक्त बचाव हो जाए। मौत के वक्त बचाव हो जाए कि और कोई? इसके पीछे करते हैं। ऐसे ही दुनिया लड़-लड़कर मर गई, सोच लो! उस समय कौन बचाएगा?

जिस समय मौत आई, मौत अन्दर, यमदूत अन्दर। वो अन्दर ही पीड़ते हैं। आत्मा अन्दर, न आत्मा दिखाई देती है, न यमदूत दिखाई देते हैं, न काल दिखाई देता है। सोच लो! हम पास बैठे हैं, वो हाय! हूँ करता है। अगर कोई बचाना चाहे, बचा नहीं सकते। लाचार हो जाते हैं, पता ही नहीं। मंदिर बाहर, गुरुद्वारे बाहर, तीर्थ बाहर, बाहर के गुरु बाहर। अब उस समय कौन छुड़ाए? बोलो! सोच लो! दोनों अन्दर हैं। कोई अन्दर ताकत हो तो छुड़ाए? वो चीज़ इसके अन्दर है। वो ज़िन्दा ताकत वो सत् ताकत इसके अन्दर है। उसको खुश न किया, बाकी सब को खुश किया। गुरुद्वारों में गए भाईयों को खुश किया, मंदिरों में गए पुजारियों को खुश किया, तीर्थों पर गए उनको खुश किया, बाहर गुरुओं को खुश किया पर अन्दर वाले राम को खुश नहीं किया, जिन्दाराम को खुश न किया, सोच लो। वो जिन्दाराम ज़िन्दा ताकत, उसको शब्द गुरु कहो, ज़िन्दा ताकत कहो, ज़िन्दाराम कहो एक ही चीज़ है। ज़िन्दाराम का मतलब है कि जो चीज़ हमेशा जन्म, मरण से परे हैं। 'राम' रमी हुई ताकत है।

'रमेता सो रामा'

वो ज़र्रे-ज़र्रे में है। जैसे फूल में खुशबू है। इस तरह राम भी इसके अन्दर

है। रमा हुआ है जैसे दूध में घी है, इस तरह वो भी इसमें रमा हुआ है। उसको निकाले, अन्दर प्रकट करे या फिर प्रकट करने का प्रयत्न करे। वो काम देने वाला है बाकी कोई काम देने वाला नहीं। सोच लो! जैसे डॉक्टर कहता है कि मैंने कितने मुर्दे चीरे हैं पर अन्दर राम तो दिखाई नहीं दिया। वो कौन सी चीज़ है। अन्दर हो तो बताए। उन्होंने तो यमदूत भी नहीं देखे, आत्मा भी नहीं देखी। इस तरह राम नहीं देखा। सोच लो! वो ताकत इसके अन्दर है, वो बचाने वाली है। उसको हम शब्द गुरु कहते हैं या जिन्दाराम कहते हैं। वो एक ही गुरु है जो बचाने वाला है। पूरी दुनिया का एक ही गुरु है। जो बचाने वाला है, जो मुक्ति देने वाला है। जो छुड़ाने वाला है, जो जन्म मरण के बन्धन काटने वाला है, वो एक ही गुरु है। जिन्दाराम कहो, शब्द गुरु कहो। गुरु नानक को पूछा तो उन्होंने फरमाया किः—

तेरा कवणु गुरु जिस का तू चेला॥ (942/18 मः1)

सबदु गुरु सुरति धुनि चेला॥ (943/1 मः1)

अगर कबीर साहिब को पूछा तो उन्होंने फरमायाः—

शब्द गुरु को कीजिए, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद में, ठौर ठौर बटमार॥

अगर तुलसी साहिब से पूछा गया तो उन्होंने फरमायाः—

सुरति शिष्य सबदे गुरु मिलि मारग जाना हो।
अलख आकाश ऊंधा कुआं ता मैं सुरति समाना हो॥

उसको गुरुनानक साहिब ने ज़िन्दा गुरु कहा है। जन्म साखी में सब पढ़ते हैं लेकिन फारसी के शब्द है। गुरुनानक साहिब कंधार गए। वहाँ यार अली फकीर मिला। उसने पूछा—

'पीरे शमा कदाम अस्त'

तुम्हारा गुरु कौन है? उन्होंने कहा—

'पीरे मा जिन्दा पीर अस्त'

कि मेरा गुरु ज़िन्दा गुरु है। कि ज़िन्दा? कि हाँ। मुझे तो ज़िन्दा पर इतकाद नहीं। क्यों? कि जो पैदा हुआ उसने ज़रूर मरना है। गुरुनानक साहिब ने फरमायाः—

'यक खुदाये पीर अस्त किदाइम जिन्दा अस्त कुल आलम मुरीद अस्त'

कि खुदा ही गुरु है जो हमेशा ज़िन्दा है सारा आलम उसका मुरीद है।

'बजुज़ खुदा पीर दीगर कदाम अस्त'

खुदा के इलावा और कौन गुरु हो सकता है?

'सतिगुरु मेरा बे मुहताजु। सतिगुरु मेरे सचा साजु'

(गुरु अर्जुन साहिब)

वो बे-मुहताज सतगुरु है। बाहर तो लगी पड़ी है लिआओ, लिआओ। वो बे-मुहताज सतगुरु है।

सबदे धरती सबदे आकास। सबदे सबदु भइआ प्रगास।

(जन्म साखी पन्ना 19)

जिसने सारी रचना की है। वो किस का मुहताज है? बोलो! वो किसी का मुहताज नहीं, वो बे-मुहताज सतगुरु है। वो सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रहा है। जैसे कि बिजली का करंट है। भाखड़ा से आती है। सब बल्बों, ट्यूबों में आती है। स्विच बन्द करो तो बन्द हो जाती है, स्विच लगा दो तो जल पड़ेगी।

सभै घट रामु बोलै, रामा बोलै। राम बिना को बोलै रे।

इस तरह सबको ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। जैसे यह बिजली आ रही है। जैसे यह बिजली आ रही है लेकिन यह करंट दिखाई तो नहीं देती। इस तरह राम भी दिखाई नहीं देता जो सबके अन्दर है। अब किसका मुहताज है यह? यह फूलों में रंग कैसे भरता है? बोलो! भई! किसका मुहताज है? रंग लेने गया कहीं? हरा भी लाया, पीला भी लाया, सब रंग लाया। यह हरा और रंग है, यह पीला और रंग है। यह बे-मुहताज सतगुरु है। अपने आप अन्दर काम कर रहा है। हमारे अन्दर भी काम कर रहा है। देख लो! बाहर कोई चीज़ बढ़ाते हैं, घटाते है, बाहर मशीनें बढ़ाते हैं, घटाते हैं। सौ मिस्त्री लगते हैं, सौ चीज़ लाते हैं। वो अन्दर बैठा ही काम कर रहा है। पहले छोटे थे फिर बड़े कर दिए, फिर उससे भी बड़े कर दिए। वो अन्दर बैठा काम कर रहा है न, वो बेमुहताज सतगुरु है। वो गुरु है छुड़ाने वाला, बाकी कोई नहीं। उसको सब छोड़े बैठे हैं। उसको प्रकट करना ही सच्चा सौदा है। इस सत् ताकत को प्रगट करना ही सच्चा सौदा है। यह सच्चा नाम है, यह सच्ची ताकत है, जो सब को ज़िन्दगी और ताकत दे रही है। यह जिन्दाराम है, यह काम देने वाला है। इस के इलावा आप हज़ारों जप-तप कर लो, हज़ारों पूजा-पाठ कर लो, हज़ारों तीर्थों में नहा लो, कोई छुड़ाने वाला नहीं, यह छुड़ाने वाला है। यह नहीं कि इन का फल नहीं, फल है, पर छुटकारा नहीं, मुक्ति नहीं। काल से नहीं छुड़ा सकता, यमदूतों से छुटकारा नहीं।

पुण्य दानु जो बीजदे, सब धर्मराइ कै जाई।
बिनु सतिगुरु जमकालु न छोड़ई दूजै भापि खुआई॥

करम धरम सभि बंधना पाप पुँन सनबंधु॥
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु॥
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु॥
नानक सचे नाम बिनु वरतणि बरतै अंधु॥

(551/3 मः3)

वो शब्द गुरु रेडियो वेवज की तरह सब जगह है। वो कुदरती आवाज़ है मालिक की। वो ज़र्रे-ज़र्रे में है। वो कैसे है, जो ज़िन्दगी और ताकत दे रही है? ईसाइयों ने वर्ड कहा है। मुसलमानों ने कलमा कहा है, कलामे इलाही कहा है, बांगे असमानी कहा है। हमारे में शब्द कहा है, नाम कहा है, वाणी कहा है। वो कुदरती आवाज़ है। वो लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं, वो शब्द लिखने पढ़ने की चीज़ नहीं।

चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै।

(944/14 मः 1)

यही कबीर साहिब कहते हैं कि—

सबद सबद सब को कहे वह तो सबद बदेह।
जीभा पर आवे नहीं निरख परख कर लेह॥

पलटू साहिब भी यही कहते हैंः—

नाम डोरि है गुप्त कोउ नहीं जानता।
निंह अछर निह रूप दृष्ट नहीं आवता॥

वो इन आंखों से देखा नहीं जाता। वो मालिक की कुदरती आवाज़ है। अब यहाँ बम्बई की आवाज़ है, कलकत्ते की आवाज़ है, इंग्लैण्ड की आवाज़ है, जलँधर की आवाज़ है, मगर हम सुन नहीं सकते। जहाँ रेडियो स्विच लगा लो सुन लो। इस तरह वो आवाज़ सब जगह है। कोई ऐसा फकीर मिले, जो इससे जुड़ना सिखाए, नाम को प्रकट करना सिखाए, वो इसके घर का रास्ता है। और कोई नहीं। यह छुड़ाने वाला है बाकी कोई नहीं। इससे काल डरता है।

अफरियो जम मारिया न जाई गुरु के सबदे नेड़े न आई।
सबद सुने तो दुरहु भागे, मतु मारे हरि जीओ बेपरवाह हे॥

वो ज़िन्दा ताकत है। उसको खुश न किया, बाकी सारी दुनिया को खुश किया। सोच लो! मौत के समय कौन सी चीज़ सहाई होगी, बोलो? मौत अन्दर, मारने वाले अन्दर, कौन सी चीज़ सहाई होगी? बाहर सब खण्डन कर दिये। बाहर सब परे रह गए। वो छुड़ाने वाली चीज़ अन्दर है। बाकी कोई छुड़ाने वाला नहीं।

इसको ज़िन्दा ताकत कहते हैं, सतगुरु कहते हैं, हाज़िर नाज़िर जिन्दाराम कहते हैं। वो ही ताकत कभी किसी चोले में आई, तो कभी किसी चोले में आई। गुरु नानक साहिब के चोले में आई, कभी कबीर साहिब के चोले में आई, मीरां ने देखा। जिनसे उनका ताल्लुक पड़ा उसने देखा। जिन्होंने मेहनतें की, उन्होंने अन्दर देखा कि यह तो वही ताकत है जो धुरधाम से आ रही है। जब वो अन्दर गए, उन्होंने कहा कबीर ही कबीर। बाकी कोई नहीं यही ताकत वाला है। अगर गुरु नानक साहिब के चोले में आई तो उन्होंने कहा कि यही तारने वाला है। जब गुरु अंगदसाहिब अन्दर गए तो क्या देखते हैं।

हरि जीउ नामु परिओ रामदासु। (612/7 मः 5)

मालिक पर रामदास का नाम पड़ गया। वो तो एक ताकत है पर दुनिया इसको पकड़ कर बैठ जाती है। वो तो हमें समझाने के लिए आते हैं कि तेरा गुरु तेरे अन्दर है। वो पकड़ाने आते हैं पर वो शब्द न पकड़ा। जैसे उन चोलों में आई, वैसे ही परमसन्त सावनशाह के चोले में आई। पर समझाने के लिए, पर माना किसी ने नहीं। उन्होंने समझाया कि वह ताकत हमने ऐसे निकाली है तू भी निकाल भई! ऐसे ही। वो सन्त आते हैं हमारे जन्म मरण के बन्धनों की तरह नहीं होते। वो हमारे समझाने के लिए आते हैं। हम इन बन्धनों से निकल नहीं सकते, पर सन्त जब चाहें आ सकते हैं जब चाहें जा सकते हैं। वो आज़ाद होते हैं।

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए।
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए॥

(749/2 मः 5)

वो हमारे अन्दर ज़िन्दगी का इन्जेक्शन देने आते हैं। वो हमें तालीम देने आते हैं, समझाने के लिए आते हैं कि किधर घूम रहे हो? न तुम्हारा यह देश है, न तुम्हारी कौमे हैं, न तेरे मज़हब हैं, बोलो! मरते वक्त कौन सी चीज़ काम देगी? यह देश देंगे? यह कौमें देंगी? यह मज़हब देंगे काम? बोलो! असली चीज़ ही छोड़ दी। परमार्थ ही छोड़ दिया, फिरके बना लिए, फिरको से होना तो था मालिक के पास, पर यह दूर-दूर होता गया मालिक से। कैसे दूर हो गया? गुरु अंगद साहिब कहते हैंः—

पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि।
नानक हरि विसराइकै पउदे नरकि अँधारि॥

"कि जितने ही पंथ है, जितने भी भेष हैं सब प्रेम से खाली हैं।" दुनिया

ऐसे ही झगड़ों में पड़ी है वो कहता है कि फलाना ऐसे है फलाना ऐसे है, वो सीधे नरकों में जाते हैं। गुरुअंगद साहिब का फैसला गलत हो सकता है? पूर्ण ताकत का फैसला है। सोच लो! दुनिया ऐसे ही झगड़ों में पड़ी है। जो असली काम करना था वो तो किया ही नहीं।

सनातनी–वो है जो अन्दर सत् ताकत को प्रगट करे।

आर्य–वो है जो अन्दर शब्द गुरु का प्रकट कर ले।

पाक–जो नाम के तीर्थ में नहा ले वो पाक हो सकता है बाकी कोई नहीं हो सकता।

खालसा–वो है; *'पूर्ण जोत जगै घट में तब खालसा ताहि नखालस जाणै'*। वो जोत को अन्दर प्रकट कर ले, सत्ताकत को प्रकट कर ले, वो खालसा है नहीं तो कोई नहीं है।

राधा स्वामी–वो है जो राधा, सुरत को शब्द में मिला दे बाकी कोई नहीं।

सच्चा सौदा–वाला वो है जो सच्चे नाम को प्रकट करे।

सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम।
गुरमती हरि नामु वणजीअै अति मोलु अफारा राम॥

(570/13 मः 3)

जो सच्चे नाम को प्रगट कर के वह सच्चे सौदे वाला है।

इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि।
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भँडार॥

(646/8 मः 3)

नामधारी–वो है जो अन्दर नाम को प्रकट कर ले। सबकी एक ही तालीम है। लेकिन यहाँ फिरके बना कर बैठ गए, पल्ले कुछ भी नहीं। इसको प्रगट कर ले तो सब कुछ है, नहीं तो कुछ भी नहीं। बस डींगें ही डींगें हैं, कुछ भी नहीं। इस ज़िन्दा ताकत को खुश करो। चाहे आप नामधारी हो कर करो, चाहे सिक्ख होकर करो, चाहे जैसे भी करो। लेकिन जब तक यह खुश नहीं होती, जब तक जिन्दाराम को प्रगट नहीं करते, शब्द गुरु को प्रगट नहीं करते, तब तक छुटकारा नहीं! छुटकारा नहीं! जन्म मरण के बन्धन नहीं छूटते। हज़ारों पुण्य, दान, पूजा, पाठ कर लो छुटकारा नहीं। जब इसे कोई कामिल फकीर मिले, इसको वो तरीका बताए, अन्दर ज़िन्दा ताकत को प्रगट करे। जब वो ज़िन्दा ताकत प्रगट कर ली तो सब कुछ बन गया, नहीं तो कुछ भी नहीं। वो छुड़ाने वाला है। सबका वही मालिक है। जितने हम आडम्बर करते हैं, मन्दिर, गुरुद्वारे और सब पूजते हैं सबका यही मतलब है

कि मौत के वक्त कोई सहाई होवे और कुछ नहीं। अगर यह नहीं किया तो कुछ भी नहीं। क्या फायदा? सोचो! हमें जप तप करते हुए कितना समय बीत गया, उमरें बीत गईं। उनको फिर पूछो कि काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार कम हुए? कोई शांती आई? अगर नहीं तो इनके करने का क्या फायदा? अगर इसको कोई कामिल फकीर मिले, ठीक जपे, तो अन्दर शांती आ जाए। काम, क्रोध की अग्नि बुझ जाए। उसकी बजाय शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता, गरीबी आ जाए। अगर मिल भी जाता है तो मेहनत नहीं करता, छोड़कर कर परे हो जाता है। यह मेहनत का चोर है। मुफ्त में किसी को कुछ नहीं मिला।

बिन मेहनत किसे न पाया रब्ब दा नाम खज़ाना।

यह मेहनत की चीज़ है। दुनिया में कोई काम है जो बिना मेहनत के होता है? बिना मेहनत के तो रोटी भी नहीं चलती। हाय! हाय! करते सारी उमर निकल जाती है। एक मकान नहीं बना सकते। सारी उमर ऐसे ही खप-खपकर मर जाते हैं। अगर इतनी मेहनत करे मालिक के लिए तो वो इसके पीछे-पीछे है।

कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर।
पाछे लागे हरि फिरि कहे कबीर कबीर॥

जैसे नामदेव की छपरी बनाई इसकी बनाए, जैसे धन्ने की गऊएं चराईं इसकी भी चारता फिरे। सब काम इसके करता फिरे। उस देने वाले को सब छोड़े बैठे हैं। वो दात इसके अन्दर है। उसको सब छोड़े बैठे हैं। वो दात इसके अन्दर है उसको सब छोड़े बैठे हैं। बाहर सारी दुनिया मांगती है। लिआओ, लिआओ लगी पड़ी है। उसको सब छोड़े बैठे हैं वो इसके अन्दर है। जैसे वो काम करता है बस इस तरह यह भी अन्दर है। वो देने वाला है। यह बे-मुहताज है न। आप ही लाता है न सब कुछ! इस तरह सब कुछ देने वाला वो है। कही भी जाओ, जंगल जाओ, बीयावान जाओ यह सच्चा साथी है। प्रहलाद ने अन्दर वाले को जपा। झट थम से निकलकर आ गया। इसको सब छोड़े बैठे हैं। हाँ जीः

पाठी– ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे तेरे कम्म आवेगा।

मैनेजर साहिब जी– जितने भी फकीर आए, यह नहीं कि मस्ताना जी ने यह तालीम चलाई है। युगों-युगों से आ रही है। वो एक ही तरीका है। गुरुनानक साहिब की यही तालीम है, कबीर साहिब की यही तालीम है, पलटू साहिब की यही तालीम है। सब फकीरों की एक ही तालीम है। लेकिन जब-जब जहाँ जहाँ फकीर आए उन्होंने डेरे बनवाए कि संगत आकर आराम से काम कर सके, सुन सके। फिर

सब कुछ है, बाद में यह फिरका बन गया। वो कहता है कि हमारा फिरका ठीक है, वो कहता है कि मेरा फिरका ठीक है। उस समय में ठीक ही था, बाद में भूल गए। फिर वो किसी और फकीर के चोले में आया। वहाँ कुछ और नाम रख दिया। फिर किसी और फकीर के चोले में आया। वहाँ कुछ और नाम रख दिया। फिर वो कहने लगे कि हमारा ठीक है। अबके कुछ कह गए बाद में वो भी भूल गए। वो कहीं और चोले में चला गया तो फिर फिरके बन गए। असली तालीम खत्म ही हो गई। युगों-युगों से सन्त आते रहते हैं हमें समझाते रहे हैं कि यह तरीका है। युगों युगों से सन्त आते रहे हैं।

जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे हरि गुण गावहि रसन रसेरे।
उसतित करहि परहरि दुखु दालदु, जिन नाहिं चिन्त पराई हे॥

(गुरुनानक साहिब)

युगों-युगों से आ रही है। वो हमें मालिक के मीठे व प्यारे वचन सुनाते हैं। हमें समझाने के लिए आते हैं कि तेरा गुरु तेरे अन्दर है। तेरा राम तेरे अन्दर है। ऐसे हम सीख नहीं सकते। कोई है बिना उस्ताद के नहीं आता। कोई न कोई बात हर किसी से सीखी है– मां से, बाप से, बहन, भाई से। जब बच्चे थे तब से सीखते आए हैं। जैसे हिन्दी का मास्टर और, अंग्रेज़ी का और, पंजाबी का और, इस तरह रूहानीयत भी सीखने पर आती है। उन फकीरों के ज़रिये सीखी जाती है।

जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे हरि गुण गावहि रसन रसेरे।
उसतित करहि परहरि दुखु दालदु, जिन नाहिं चिन्त पराई हे॥

(गुरुनानक साहिब)

वो हमारी चिन्ता लेकर आते हैं। उनको हम से कोई गर्ज़ नहीं होती। बे-गर्ज़ होकर हमारी सेवा करते हैं। गुरुनानक साहिब ने बे-गर्ज़ होकर सेवा की। क्या लेना था उन्होंने? कोडे राक्षस जैसे से क्या लेना था? सज्जन ठग से क्या लेना था। बोलो भई! उन्होंने बे-गर्ज़ होकर, अपना हक हलाल का कमा कर, फिर हमें तालीम दी है। कबीर साहिब ने छोले चबा-चबाकर हमें तालीम दी है। सोच लो! जो गर्ज़ रखता है, जो मांगता है वो फकीर ही नहीं। जो गर्ज़ रखता है वो साधू ही नहीं।

दादू साध परीखिये अन्तरि आत्म देख।
मन माहि माया रहे या आपे आप अलेख॥

(दादू साहिब)

कि देख लो! देखो तो सही, उसके अन्दर माया-माया लगी है कि मालिक ही मालिक है। वो मालिक के भरोसे होते हैं। सोच लो! जिस बीबी का पति मौजूद है उसे क्या ज़रूरत है कि बाज़ारों में धक्के खाती फिरे, कमाती फिरे। इस तरह चंदे फण्ड करवाना, कभी इधर, कभी उधर, कभी यह ला तो कभी वो ला, क्या ज़रूरत है उसको? वो अपना काम खुद करते हैं। उन्हें क्या गर्ज़ है? वो बे-गर्ज़ होते हैं। वो बे-गर्ज़ होकर हमें तालीम देते हैं। वो हमारी चिन्ता लेकर आते हैं। कौन सी चिन्ता लेकर आते हैं? कौन से दुख दूर करते हैं? यह नहीं कि भूखों को रोटी देते हैं। यह भी करते हैं, यह नहीं कि नहीं करते। नामदेव की छपरी बनाई और भी दुख दूर करते हैं। जो कर्मों का चक्कर है वो भी भुगताते हैं। असली चिन्ता कौन सी है? कि इस जन्म मरण के बन्धनों में से निकल जाए। वापिस इन झगड़ों में न पड़े।

कभी घोड़े बनते हैं, कभी गधे बनते हैं, कभी ऊंट बनते हैं, कभी बैल बनते हैं। वो यह छुड़ाते हैं कि इनमें से निकल जाए बस यह चिन्ता लेकर आते हैं कि वापिस आना न पड़े। अगर सुख दे भी दिया चार दिन, माया दे दी बाद में फिर क्या करेगा? बोलो! फिर उसी चक्कर में। स्वर्गों तक यह झगड़े खत्म नहीं होते। कृष्ण भगवान ने उधो से कहा कि हे उधो! यह जो कीड़ा जा रहा है कई बार सृष्टि का कर्त्ता ब्रह्मा बना, कई बार स्वर्गों का देवता इन्द्र बना, आज यह कीड़ा है। फिर उन स्वर्गों का क्या फायदा हुआ? वो चाहते हैं कि इस दायरे से निकल जाए वापिस न आना पड़े। सत्पुरुष का रूप बन जाए अपने घर पहुँच जाए। इसका देश तो सचखण्ड अनामी है। इसकी असली कौम कौन सी है? आत्मा।

'कहु कबीर इहु राम की अंशु' (871/9)

यह राम की अंश है, सतपुरुष की अंश है। यह तो भूल ही गया। कोई कहता है कि मैं सिक्खों की अंश हूँ, कोई कहता है कि सनातनीयों की अंश हूँ। इन झगड़ों में मर गई दुनिया, असली चीज़ ही भूल गए। हाँ जीः

पाठी– ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे तेरे कम्म आवेगा।
सुन्दर महल मकान ऐत्थे छड़ जावेगा॥

मैनेजर साहिब जी–सोचो! आप ने मुसलमान भी देखे, सिक्ख भी देखे, अंग्रेज भी देखे, हिन्दू भी देखे। सबका पैदाइश का ज़रिया एक ही है कि नहीं? सब एक ही ज़रिये से मरते हैं। सोच लो! फिर मालिक से मिलने का रास्ता अलग कैसे हो सकता है? सोचो! भई! सब का एक ही तरीका है। युगों-युगों से एक ही तरीका है। वो

जिन्दाराम बचाने वाला है बाकी कोई नहीं। यह ज़िन्दा ताकत है, शब्द गुरु है जो बचाने वाला है। यही निकालने वाला है। यहीं पैदा करने वाला है, यही समर्थ गुरु है बाकी कोई नहीं।

पाठी– जदों काल वली ने औणा तैनूं गुरजाँ मार डरौणा।
तेरे कोल होणगे सारे, तैनूं किसे ने नहीं छुड़ौणा,
फेर पछताएंगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी–कबीर साहिब कहते है कि–

ऊँचे कुल के कारने, भूल रहा संसार।
तां कुल की क्या लाज, जब तन होगा छार॥

बोलो! फिर किधर जाएगा। गुरुनानक साहिब आए तो सब कहने लगे कि वह कुराहिया है। यह नया पंथ चला रहा है। उल्टे काम चला रहा है। नया झगड़ा खड़ा करता है, सोच लो! अगर पलटू साहिब आया तो पण्डितों और मौलवीयों ने उनको ज़िन्दा जलाया। उनकी मुखालफित ही करते रहे। उन्होंने तो हमारे दर्द की बात की। सब फकीरों के साथ ऐसे ही हुआ है। जिन्होंने सच्ची-सच्ची बात कही उन सब के साथ ऐसे ही हुआ है। किसी ने भी नहीं सुनी। कोई विरला ही सुनता है, मत ही नहीं, अक्ल ही नहीं। गुरुनानक साहिब के रिकार्ड पड़े हैं, देख लो! एक बीबी नानकी थी जिसने उनको पहचाना। किसी विरले ने पहचाना। इस तरह होती आई है सबके साथ। अब भी यही हाल है। जब पूज्य मस्ताना जी आए तो कोई कहने लगा कि जासूस है, कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ। असली चीज़ ही छोड़ दी। कोई सुनता ही नहीं, कितना समय रहेगा? अगर जासूस है तो छुप-छुपकर रहेगा तो कब तक? दो दिन नहीं रहने देते। मन मार देता है, काल सुनने नहीं देता। वो कहता है कि मेरा तो देश ही उजड़ जाएगा, मेरा तो राज ही खत्म हो जाएगा, अगर किसी ने उनकी सुन ली। उसने कितनी भक्ति कर-करके कितनी रूहें ली हैं ऐसे ही थोड़े है। फिर कहाँ छोड़ता है? अंग्रेज़ों को कितनी मुश्किल से निकाला है। बोलो भई! यह आत्मा का राज लेना आसान है कोई? बोलो भई! अगर सारी दुनिया पर हकूमत है किसी की, अगर किसी का खुदा है, अगर किसी का गुरु है तो यह मन है। याद रखो! इस समय सब का यही गुरु है। इसके कहने अनुसार चलते हैं। यहीं हमारा दुश्मन है बस।

'मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ' (87/13 म:3)

इसका राज है आत्मा पर। सोच लो! इसके कहे अनुसार चलेंगे, बाकी नहीं।

सारी दुनिया इस के मातहत है। सब का गुरु, परमेश्वर यही है। इसने कौम मज़हब बनाए।

'इहु मन करमा इहु मनु धरमा। इहु मनु पंच ततु ते जनमा॥

(415/10 मः 1)

ये कर्म-धर्म इसी ने बनाए हैं। जितने कर्म हैं, जितनी पार्टीयाँ हैं, सब इसी ने बनाए हैं। जितने झगड़े हैं सब इसके हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार सब इसके साथी हैं। सोच लो! जितने झगड़े हैं सब इसी के हैं, बाकी किसी के भी नहीं। हम इनका काम कर रहे हैं– काम का, क्रोध का, मोह का, लोभ का या अहंकार का। सब इनके झगड़े डाले हुए हैं और किसी के नहीं। सारी दुनिया इसकी गुलाम बनी पड़ी है। जितना काम हम कर रहे हैं। सब इसका है। आत्मा का कौन सा काम है?

दुश्मन–इसके क्रोध के।

औरतें–इसके काम की।

बाल बच्चे–इसके मोह के।

ज़मीन जायदादें–इसके लोभ की।

मान बड़ाई–इसकी अहंकार की।

बस कौमों, मज़हबों में फलाना यह फलाना वो। वह किसके है? बोलो! यह सब किसके हैं? अहंकार के हैं। किसके हैं बोलो! सब इसके गुलाम बने पड़े हैं। कोई विरला फकीर है जो इसके दायरे से निकला है। गुरुनानक साहिब कहते हैंः–

मनु मैगलु साकतु देवाना॥ बन खंडि माइआ मोहि हैराना॥
इत उत जाहि काल के चापे॥ गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे॥

(415/6 मः 1)

कि मन एक मस्त हाथी की तरह है, जो मोह माया और विषय-विकारों के जंगलों में भटकता रहता है। कभी स्त्रियों का प्यार, कभी बच्चों का प्यार, कभी रिश्तेदारों का प्यार। कभी कौमों मज़हबों के झगड़े। कभी नाच, कभी रंग, कभी तमाशों में घूमता है। यह काल का एजेन्ट है। काल का दलाल है। सबको नचाई फिर रहा है। सबके अन्दर है।

जीउ एकु अरु सगल सरीरा। इसु मन कउ रवि रहे कबीरा॥

(330/12)

सारी दुनिया का एक ही वकील है। सारी दुनिया को नचाई फिर रहा है। यहाँ कुछ है वहाँ कुछ है, सबको लड़ा रहा है। सारी दुनिया को वक्त डाल रखा

है। सब का एक ही वकील है बाकी कोई नहीं। असली चीज़ ही छुड़ा दी। कोई विरला गुरुमुख है। वो इसके दायरे निकला है जिन्होंने इसके साथ सख़्त मुकाबले किए हैं, अन्दर शब्द गुरु को प्रगट किया। तब यह आता है, नहीं तो नहीं। देख लो! यह ऋषि, मुनी, तपस्वीयों को, सबको खा गया। श्रृंगी ऋषि ने अड्डासी हज़ार साल तप किया, मार दिया कि नहीं? विश्वामित्र ने साठ हज़ार साल तप किया, मार दिया कि नहीं? यह किसी भी कर्मों-धर्मों को नहीं मानता। यह सब इसके मातहत हैं। कर्मों-धर्मों को किसी को नहीं जानता। डरता है तो बस एक शब्द गुरु से बाकी किसी से नहीं डरता।

पाठी– ज़िन्दाराम सिमर मन मेरे तेरे कम्म आवेगा।
सुन्दर महल मकान ऐत्थे छड़ जावेंगा॥

मैनेजर साहिब जी– कई बार कहते हैं कि काम आ जाए तो कहते हैं कि कमाने का समय है कुछ कमा लो। इस तरह इन्सानी जामा भी कमाने का मौका है। राम नाम की लूट है।

राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट।

यही वक्त है चौरासी में से निकलने का। देवी देवता भी इसके लिए तरस रहे हैं। वो भी नहीं जा सकते, उनका भी छुटकारा नहीं हो सकता। अगर वो छुटकारा है तो इस इन्सानी जामे में, बाकी कहीं नहीं।

लख चउरासीह जोनि सबाई॥ माणस कउ प्रभि दीई बडिआई॥
इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा॥
(1075/14 मः 5)

फिर चौरासी तैयार है। अगर अब नहीं संभलता तो फिर चौरासी तैयार है। अगर शब्द गुरु को खुश कर ले, सच्चे नाम को प्रकट कर ले, तब इसका छुटकारा है नहीं तो छुटकारा नहीं। अगर शब्द गुरु को खुश नहीं करता, सतगुरु को प्रकट नहीं करता, तो फिर चौरासी तैयार है इसके लिए।

कबीर गुरु की भक्ति बिन राजा गधा होय।
माटी लादे घुमार की, घास न डारे कोय॥

यह सुन्दर महल मकान तो कहाँ रह गए यह राजे भी गधे बने फिरते हैं। क्या फायदा हुआ? सुन्दर महल, मकान बना भी लिए, बाल बच्चे भी कर लिए, ऐशो इश्रत भी कर ली, फिर भी गधे बने तो क्या फायदा हुआ? बोलो!

कबीर गुरु की भक्ति बिन, नार कूकरी होय।
गली गली भरमत फिरे टुक न डारे कोय॥

उज्ज्वल पहने कपड़ा, पान सुपारी खाए।
कबीर गुरु की भक्ति बिन बांधा यमपुर जाए॥

बंदोबस्त तो यह करना था। यह तो चार दिन के लिए इकट्ठा किया, खा लिया। आगे के लिए क्या बंदोबस्त किया? सोचो! यह तो सब यही रह जाएगा। साथ क्या जाएगा। बोलो! हाँ जीः

पाठी– क्यों करदा ए मेरा मेरी, हो जाएगी खाक दी ढेरी।
एह मानस जन्म है बन्देया, इक जोगी वाली फेरी
फेर नहीं आवेगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल! हाँ जीः

पाठी– क्यों करदा ए मेरा मेरी, हो जाएगी खाक दी ढेरी।
एह मानस जन्म है बन्देया, इक जोगी वाली फेरी
फेर नहीं आवेगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी– सोचो! वो कौन सी चीज़ साथ जाएगी? न मां, न बाप, न बहन, न भाई, न ज़मीन न जायदादें, न कारखाने। जब पाकिस्तान बना पूछ लो जो पाकिस्तान से आए, यहाँ पर ही साथ न दिया तो वहाँ क्या जाएगा साथ। इधर ही साथ नहीं दिया, वहाँ क्या जाएगा? सन्तों ने बहुत आवाज़ें दी कि किसी भी चीज़ ने साथ नहीं जाना। साथ जाने वाला खज़ाना पैदा कर, नहीं तो बहुत दुख पाएगा। पर किसी ने सुना ही नहीं। अगर किसी ने सुना तो मन दिलासे देता है। पहले यह खत्म कर ले, पहले यह खत्म कर ले। बस इसी तरह दिलासे में गुज़ार गया। फिर होश आती है जब सिर पर यमदूत आकर खड़े हो जाते हैं, यह क्या बन गया?

कहु कबीर प्राणी तब जागे। यम का डंड मूंड पर लागे॥

सोचो! सारी उमर इसने यही नहीं सोचा कि मेरे साथ क्या जाएगा? कितने अफसोस की बात है कि मैं इस दुनिया में किस लिए आया हूँ? कभी किसी ने सोचा? आकर बस कमा लो, खा लो। मां कहती है बेटा कमा कर ला, बाप भी कहता है कि कमा कर ला। कोई कहता है पढ़ ले, कोई कुछ तो कोई कुछ। पर किसी ने यह नहीं कहा कि राम नाम भी निकाल ले, आगे जा कर सहाई होगा। रिश्तेदार ही वो है जो कहता कि मैं भी जपूं, तू भी जप। असली रिश्तेदार फकीर है। उनका कहा नही मानता।

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ।
ओइ जीवंदे बिछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि।
(1102/मः5)

सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलँनि।
जिथै लेखा मंगीअै तिथै खड़े दिसँनि॥ (729/मः1)

वो यहाँ भी साथी है, वहाँ भी साथी है। उनका कहना ही नहीं माना किसी ने फिर क्या बनता है? फिर पछताता है।

कहु कबीर प्राणी तब जागे। यम का डंड मूंड पर लागे॥

अब फकीर जो हमें सही रास्ता बताए, तसल्ली दे, उपदेश दे कि ऐसे कर भई! तब तुझे अपने आप तसल्ली मिलेगी। मिली तो छोड़ देना। पैसा वो न लें, मत्था वो न टिकाएं, फिर भी उनका कहना किसी ने नहीं माना। गुरुनानक साहिब की मानी किसी ने? कबीर साहिब की मानी किसी ने? क्या मांगा उन्होंने किसी से? जो मांगने वाले हैं, उनके आगे जाकर मत्था टेकते हैं कि बल्ला। बल्ला! बड़ा फकीर है। हाँ जीः

पाठी– क्यों करदा एँ मेरी मेरी, हो जाएगी खाक दी ढेरी।
एह मानस जन्म है बन्देया, इक जोगी वाली फेरी
फेर नहीं आवेंगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी– हाय! हाय! जोगी वाली फेरी। जोगी जाता है पर पता नहीं फिर आवे या न आवे। इस तरह आदमी योनि भी चौरासी लख जीअ जून भोग कर मिलती है। मिले, मिले न मिले, न मिले। पहले भी मिली होगी। इस तरह ही हम गुज़ार कर चले गए। यह जोगी वाली फेरी है। मिले, मिले न मिले, न मिले। यह कीमती वक्त था ऐसे ही बर्बाद कर दिया।

मानस देह पाइ वड़भागी राम न जपे आत्मघाती।

सारी दुनिया अपनी आत्मा का घात कर रही है, सोच लो! सारी दुनिया आत्मा का घात कर रही है। कोई विरला है जो जपे, नहीं तो कोई नहीं जपता।

कहु नानक कोटन मै कोउ जो भजन राम को पावै।
जग में उत्तम कार्य विरला केई हेत।

नहीं तो सारी दुनिया अहंकार में फंसी पड़ी है। कोई बाल बच्चों में फंसा पड़ा है। कोई ज़मीनों, जायदादों में, कोई औहदों के लिए। इस तरह अपना वक्त गुज़ार कर चले गए। हाँ जीः

दादू साहिब कामिल फकीर हुए है। सब फकीर रो-रोकर गए है। उन्होंने कहा है:—

दादू कहत पुकारी कोई माने नाहिं हमारी।
पण्डित काज़ी वेद कतेबे पढ़-पढ़ मुये लबारी।
वह तीरथ वह हज को जाते, बूढ़े भवजल धारी।
ईसाई सब धोखा खाया पढ़ अंजील बीचारी।
हिन्दु तुर्क ईसाई तीनों करम धरम पचहारी।
नूर-जहूर खुदा हम पाया उतरै भवजल पारी॥

कि मैं कहता हूँ कि मैंने नूर-ज़हूर खुदा देखा है। तुम भी देखो! जपो! पर कोई मेरी सुनता ही नहीं। कोई कर्मों-धर्मों में फंसा पड़ा है; कोई तीर्थों पर जाता है, कोई ज्ञानों-ध्यानों में फंसा पड़ा है। ऐसे ही दुनिया गुज़ार कर चली गई। यहाँ पर न ज्ञानो-ध्यानों का सवाल है, न अक्लों का सवाल है, न इलमों का सवाल है। अब गुरुनानक कितना पढ़े हुए थे? कबीर साहिब कितना पढ़े हुए थे? अब उन की वाणीयों के अर्थ निकाल-निकालकर बताते हैं। कौन सी तालीम थी उनकी? अब मस्ताना जी की वाणी देखो न विलोचस्तानी, न हिन्दी, न अंग्रेज़ी, न उर्दू। किसी तरह की भी नहीं थी। आधा लफ़्ज कुछ तो आधा लफ़्ज कुछ। बोलो! ज्ञानी-ध्यानी उनका अर्थ निकाल-निकालकर थक गए। (मैनेजर साहिब जी हंसकर कहने लगे) अब पता ही नहीं किस तरह मिलावें ऐसे ही दुनिया भरमों में पड़ी है)।

ग्रन्थन महिं अर्थ है, अर्थन महिं है भूल। (कबीर साहिब)

जितने भी हम अर्थ निकालते हैं अपनी मनमत से निकालते हैं। यह सब मनबुद्धि के हैं। वो मनबुद्धि के दायरे से परे हैं। वो चीज़ ग्रन्थ शास्त्रों में आने वाली नहीं। भाई गुरुदास जी ने लिखा है:—

वेद ग्रन्थ गुरु हट है जित लग भवजल पार उतारा।
सतिगुरु बाझ न बुझीऐ जिचर धरे न गुरु अवतारा॥ (भाई गुरदास जी)

जब तक कि शब्द गुरु आप आकर न समझाए, तब तक समझ नहीं आती। सबसे पहली तालीम रूहानीयत की क्या है? दीनता और नम्रता अखत्यार करना। यह तो अहंकार में है कि मैं यह जानता हूँ, मैं गुणी हूँ, मैं ज्ञानी हूँ, मैं यह जानता हूँ, मैं वो जानता हूँ। फकीर के पास दीनता और नम्रता से जाए। फिर कुछ कमा सकता है।

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु॥ (470/13 म:1)

यही ईसा ने कहा है:—

1. First Humility
2. Second Humility
3. Third Humility

खुदा के लिए तीन नम्रता की ज़रूरत है।

पहली नम्रता– ध्यान से सुने विचारे, फिर नाम रास्ता लेकर नम्रता से जपे। अगर कुछ हासिल हो गया फिर भी नम्रता रखे। अहंकार न हो कि मेरा कुछ है। यह सोचे कि सब कुछ मालिक की दात है। पहली तालीम है हमारे लिए। यही खत्म कर बैठे हैं। कही भी जाओ गुण उठाओ, ठीक है या गलत, देखो और सुनो! फिर फायदा उठाओ। उसको अन्दर बसाओ। सोचो! विचारो कि वाक्य ठीक है या गलत है। यह है पहली नम्रता।

दूसरी नम्रता–प्रेम का सवाल है। सच्चे हृदय का सवाल है।

हिरदै सचु एह करणी सारु॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु॥

(1343/15 मः1)

सच्चे दिल से करो, पाखंड से नहीं। जितने भी फकीर हुए हैं वो नम्रता से गए हैं। दीनता से गए हैं कि मालिका हम तो कुछ नहीं जानते, तू समर्थ ताकत है, तूं ही मेहर कर।

"Be like children for shall enter into the kingdom of heaven."

''कि मासूम बच्चों की तरह बन जाओ, तब मालिक की दरगाह में जा सकते हैं।''

हरि के भगत सदा सुखवासी, बाल सुभाइ अतीत उदासी॥

जितने भी फकीर हुए सब दीनता और गरीबी से गए हैं। उन्होंने गुण ही उठाए हैं जा-जाकर। आज पूज्य मस्ताना जी जिनका हम जन्म दिन मना रहे हैं, जिनकी तालीम बता रहे हैं। वैसे तो सबकी एक ही तालीम है। उन्होंने भी दीनता और नम्रता से पाया। बचपन से ही कभी मन्दिरों में चले गए, कभी कीर्तन में चले गए, कभी गुरुद्वारों में चले गए। एक बार एक पण्डित के पास चले गए। वो ठाकुर की पूजा करता था। सतनारायण की पूजा करता था। उसको कहने लगे कि दादा हमें भी यह बता। वो कहने लगा कि गाय देनी पड़ेगी। उसने मूर्ति दे दी और उन्होंने गाय दे दी। अब दिल सच्चा था। पूजा करने लगे। यह दिल की सच्चाई पर है। यह प्रेम पर है। अब सिरहाने एक रुपया आने लग गया। उन दिनों रुपया बड़ी चीज़ थी। रोज़ रुपया आ जाता था। किसी को बाल (गेहूँ की बाल) तोड़कर दे देते तो उसका बुखार उतर जाता

था। और बीमारियां भी हट जाती थीं। सोचो! सच्ची तड़प थी, सच्चा प्रेम था, सच्ची लगन थी। मालिक के आगे बेनती करते थे दीनता और नम्रता से। उन दिनों में परमसन्त सावनशाह के चोले में सतगुरु काम कर रहे थे तो उस चोले में जाकर मिले। कहने लगे कि जब तक आप कामिल फकीर नहीं ढूंढ़ते, पूरा मुर्शद नहीं ढूंढ़ते, तब तक छुटकारा नहीं, नरकों में जाओगे। अब उन्होंने सोचा, यह कीमती बात है, कि इतनी बड़ी करामात है कि गेहूँ की बाल तोड़कर दे तो बुखार उतर जाए, बीमारियां हट जाएं, सिरहाने रुपया आ जाता था।

क्या पता गलती में हों, अन्दर शांती तो है नहीं। अब मूर्ति सोने की बनाई हुई थी, दरवाज़ा बन्द करके कुंडी लगाकर बाहर चले गए कि दूध लाकर चाय बनाकर पिलाते हैं। जब वापिस आए चाय बनाकर लाए दरवाज़ा खोला तो कोई भी नहीं था। फिर दो चार दिन बाद दिखाई दिए कि पूरा मुर्शद नहीं ढूंढ़ते! मालिक के फकीर हर समय रहते हैं। अगर सच्चे दिल से पुकार करे। यह खुद नहीं फकीर को पहचान सकता। अक्ल से पहचान लिया, वहाँ अक्ले काम नहीं करतीं, बुद्धि काम नहीं करती। हम बुद्धि से काम लेते हैं पर बुद्धि काम नहीं देती। बुद्धि के दायरे से परे की चीज़ है। यह मालिक की मेहर से मिलती है। मालिक आप मेहर करे तो करे, किसी के अख्यार नहीं। क्या यह पहचान सकता है मास्टर को कि यह मैट्रिक है, बी.ए. है, एम.ए. है? इस तरह हम फकीर को भी नहीं पहचान सकते। यही तुलसी साहिब ने कहा हैः

जो कोई कहे साध को चीन्हा। तुलसी हाथ कान पर दीना॥

कहता है कि मैं कान पकड़ता हूँ अगर कोई साधू को पहचान ले। फिर तो वो बड़ा हुआ, बाकी क्या? फिर यही बड़ा हुआ जो पहचान गया फकीर को। फकीर की बाहर कोई डिग्री नहीं, बाहर कोई बोर्ड नहीं, कोई कुछ नहीं। यह मालिक की मेहर पर है जो सच्चे दिल से पुकार करता है तो सतगुरु उसके पीछे-पीछे है। फिर उसका बंदोवस्त भी करता है।

पिता क्रिपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना॥

(1266/15 मः5)

यह सच्चे दिल से पुकार करे तो ज़रूर सुनता है, ज़रूर सुनता है। हम करते तो हैं पर ऊपर-ऊपर से करते हैं। सच्चे दिल से नहीं करते, सच्ची तड़प से नहीं करते, सच्ची लगन से नहीं करते। अगर सच्ची लगन है, भीलनी को सच्ची लगन थी तो कर्मीयों-धर्मीयों को सबको छोड़ गए श्री रामचन्द्र जी, उसके पास गए बोलो! वो कौन सी पढ़ी हुई थी? कौन से कर्म-धर्म किए थे उसने? यह सच्ची लगन है।

यह सच्ची लगन और प्रेम का नमूना है, फिर ढूढ़ते रहे। एक मुसलमान फकीर के पास गए। उसने पूछा कि कैसे आए हो? कि अल्ला लेना है। वो कहने लगा कि ओहो! कि एक आया हिन्दू जो अल्ला मांगता है। नहीं तो कोई कुछ मांगता है तो कोई कुछ। सब दुनिया झगड़ों में पड़ी है। वो कहने लगा कि भई अल्ला तो मेरे पास है नहीं मेरे पास एक मंत्र है अगर कहो तो आसमानों में चढ़ने लग जाए। वो भी किया उड़ने लगा पर फायदा क्या हुआ? अन्दर शांती तो आई न। उन्होंने सुना था कि गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा है और गुरुनानक जी फरमाते हैं किः—

'गुरु नाम खज़ाना लध्धा'

गुरु नाम खज़ाना। वह कौन सी चीज़ है जो शांती देने वाली है? हम रोज़ जपुजी साहिब में पढ़ते हैंः—

पंखी हाइ कै जे भवा सै असमानी जाउ॥
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ॥
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ॥ (14 मः1)

फिर भी न समझो कि उसके पास नाम आ गया, वो इतनी ऊँची चीज़ है। वो क्या चीज़ है? फिर एक और फकीर के पास गए। उसने कहा कि मेरे पास ऐसा मंत्र है जिसको पढ़कर शंख बजाएं तो मिठाई का थाल आ जाता है। वो किया उसका भी फायदा नहीं हुआ। फिर ढूंढ़ते-ढूंढ़ते आगरे पहुँच गए। पता चला कि वहाँ कोई फकीर है पर उसका भी पता नहीं चला। लेकिन अगर सच्ची तड़प हो, सच्ची लगन हो तो मालिक भी सुनता है। फिर जब थक गए तो सपने में सच्चे पातशाह दिखाई दिए। कहने लगे कि अब ब्यास में आओ। अब ब्यास का पता नहीं। स्टेशन पर आ गए। बाबू ने पूछा कि कहाँ जाना है? कि जी ब्यास। कि बैठ गाड़ी में, गाड़ी में बैठा लिया। अब बंदोबस्त भी करता है। किसी का अख्यार नहीं। अगर इसका दिल सच्चा है तो सब बंदोबस्त करता है। ब्यास उतरे, डेरे गए। अब सच्चे पातशाह वहाँ नहीं थे। वह थेड़ी गए हुए थे। सिरसा के पास है। फिर सिरसा आए। वहाँ से थेड़ी गए। शाम का वक्त था। सच्चे पातशाह सैर कर रहे थे। साथ उनका सैक्ट्ररी था। वो बातें कर रहे थे कि बिलोचस्तान में भी रूहें पड़ी हैं जो स्वामी जी, गुरुनानक साहिब, कबीर साहिब की चिताई हुई हैं। उनको निकालना है। इतने में मस्ताना जी पहुँच गए। मस्ताना जी ने सच्चे पातशाह के आगे मत्था टेका और कहा कि बाबू का रूप धार कर खुद ही लाए हो। पहचान गए कि वो ही है। सच्चे पातशाह ने फरमाया कि तू कोई मस्ताना है। कि कैसे

आए हो? कि जी हमने मौत से छुड़ाने वाला गुरु लेना है, और तो सब हमने देख लिए पर मौत से छुड़ाने वाला कोई नहीं मिला। तब सच्चे पातशाह ने फरमाया कि वह गुरु तुम्हारे अन्दर है। जो उसे खुश कर ले वो दुनिया में आनन्द लूटे। बाकी सारी दुनिया इस तरह है। बाहर वाले गुरुओं ने तो अन्दर वाला छुड़ा ही दिया। सोच लो! बाहर वाला गुरु आप गुरु बन गया। वहाँ है क्या? वहाँ चीज़ ही खत्म। जो अन्दर वाले को खुश कर ले वो आनन्द लूटे, दोनों जहानों में आनन्द लूटे। सोच लो! जो आप बना, जहाँ मैं है, जहाँ मैं है, वहाँ मालिक आता ही नहीं। गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा हैः–

जो हम को परमेश्वर उचरि है, ते सब नरक कुण्ड महि परि है।
मो कौ दास तवन का जानो, या में भेद न रंच पछानो॥

(गुरु गोविन्द सिंह जी)

जो अपने आप में बना वो सीधा नरकों का अधिकारी। वो फरमाते हैं कि मैं तो उनका दास हूँ। गुरुनानक साहिब को मालिक ने कहा कि मैंने जितने फकीर भेजे हैं, वो सब खुद ही पीर, पैगम्बर, औलिया बन बैठे हैं। नानक तू गरीब फकीर होकर काम करना। तू जा जीवों को चिता! तू जा जीवों को चिता। मगर, अगर किसी को पता भी लग जाए तो ज़ाहिर नहीं करने देते। यहाँ बैठा है एक प्रेमी फेफाणे का, हम गए इनके रिश्तेदारों में। जब वहाँ गए तो यही कहने लगा कि पूज्य मस्ताना जी, जी आप तो खुद खुदा हो, पर छुपा कर रखते हो, ज़ाहिर नहीं करते। अब जिसकी कुछ आंख खुली हो उसको ज़ाहिर भी कर देते थे। कहने लगे कि यह बात तो तेरी हमने मानी पर ज़ाहिर न करना। यह तो मालिक जिसे बख़्शे नहीं तो मालिक का हुक्म कि गरीब फकीर बन कर, नहीं तो मालिक कहेगा कि तू भी बदल गया, जाकर हुक्म नहीं माना। जो बना बस खत्म, चीज़ ही खत्म है। उन्होंने कभी भी नहीं कहा कि मैं गुरु हूँ। गुरुनानक साहिब ने लिखा हैः–

'कहु नानक हम नीच करमा'

देख लो! मै कुचजी हूँ। हमारे समझाने के लिए। दुनिया में सब चज वाले हैं। मैं कुचजी हाँ।

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ।
जिनि अैसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ॥ (1364/7)

यह दीनता और गरीबी का मार्ग है। अपनी हस्ती मिटाने का मार्ग है। अगर बना कुछ, तो बस खत्म है। तब सच्चे पातशाह ने फरमाया कि मौत से छुड़ाने वाला गुरु तुम्हारे अन्दर है। उन्होंने पूछा कि क्या करते हो? कि जी सत्नारायण

की पूजा करता हूँ। कि उस मूर्ति को तोड़कर लाओ तब आपको ज़िन्दा सतनारायण देंगे। ज़िन्दा गुरु आपको देंगे कि इस तरह है। किसी की ताकत जो तोड़े! लेकिन अगर दिल सच्चा है। जैसे भाई मँझ था। उसको कहा कि सुलतान का मन्दिर तोड़ कर आ। हिम्मत की, तोड़ा। फिर चीज़ खट ली। फिर चीज़ भी खट ली। तोड़कर आए। फिर तरीका बताया कि इस तरह जपो! जा अब वहाँ जाकर भजन करो। भजन, सिमरण किया, करामातें आ गईं। यह दिल की सच्चाई पर है। नम्रता और दीनता पर है। तालीम पर है, अमल करने पर है, शरीअत छोड़ने पर है। सब दुनिया शरीअत में कैद हुई पड़ी है। गुरुनानक साहिब मक्के गए, काज़ी रूकनदीन ने कहाः—

कि ''ऐ नानक! तू तौहीद का उपदेश देता है और हम भी तौहीद के कायल हैं।'' इसलिए हमारा आपस में कोई मतभेद नहीं। एक खुदा को आप मानते हो और एक ही खुदा को हम मानते हैं और क्या? गुरुनानक साहिब ने कहा कि हमारी तौहीद की जो तालीम है वो मुतलिक है, तुम्हारी तौहीद मुकीद है। आपने शरीयत की मधुशाला छोड़ी है, साथ में। मुहम्मद एक ही है और आएगा ही नहीं। मेरे मतानुसार अनेकों सन्त, फकीर आये, अनेकों राम कृष्ण आए, अनेकों ब्रह्मा, विष्णु आए हैं, आते रहेंगे। अनेकों वेद, ग्रन्थ, शास्त्र बनते रहेंगे। आप बन्दिशों में पड़े हो। सारी दुनिया बन्दिशों में पड़ी है। बन्धन तोड़े तब है। नहीं आगे से आगे बढ़ता जा रहा है।

पहले भी अर्ज़ की थी कि यह जो करंट आ रही है, सब टयूबों-बल्बों में जा रही है। इस तरह वो कुदरती करंट आ रही है। जैसे यह करंट आ रही है, जल रही है। इस तरह यह भी चलता फिरता काम कर रहा है। इसके अन्दर है वो कुदरती करंट है। दिमाग के ज़रिये आ रही है। जब आंखों में आई देखने लग गया। कानों में आई सुनने लग गया, ज़ुबान में आई बोलने लग गया, हाथ-पाँव में आई चलने लग गया। कई बार आपने देखा होगा कि हम बैठे हैं। बैठे-बैठे टांग सो जाती है। खड़े होना चाहो तो नहीं हो सकते। हम कहते हैं कि टांग सो गई। इसकी तरफ ध्यान दो, इसको दबाओ, जो फिर चलने लग जाती है। क्या मतलब कि करंट वहाँ से निकल गया था। जिस को कहते हैं जड़ चेतन की गांठ खोलना। जड़ चेतन की गांठ पहले ही से बंधी पड़ी है। और कौमों, मज़हबों, देशों, मन्दिरों, मस्जिदों से और बांध लिया। यह बन्धन तोड़ने थे। इसको और बांध लिया। सोच लो! यह करंट सब जगह है। कुदरती तौर पर, सतगुरु कहो, सच्चा नाम कहो वो रेडियो-वेवज़ की तरह सब जगह है।

चहु दिसि हुक्मु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालँ।
सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बेआलं॥

(1275/13 मः1)

रोमि-रोमि रविआ हरि नामु। (1144/4 मः5)

वो ज़र्रे-ज़र्रे में है। लेकिन वो सुनता कब है? ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, दुनिया के सब ख़्याल निकाले। इस तन से भी निकले, जीवित मरे। जीवित मरना यह नहीं कि मर कर कब्रों में चले जाना है। इस देह से निकल जाए, ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे, तब वो सुनाई देता है।

नउ दरि ठाके धावतु रहाए॥ दसवैं निज घरि वासा पाए॥
ओथै अनहद सबद बजहि दिनु राती॥ गुरमती सबदु सुणावणिआ॥

(124/12 मः4)

दो आंखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुँह का, दो टट्टी पेशाब के दसवां अन्दर खुलता है। यहाँ ख़्याल को टिका कर भजन सिमरन करे। अब नौ दरवाज़े बन्द करके बैठ जाओ। फिर भी मन भागा दौड़ा फिरता है। इसको रोको, यहाँ टिकाओ। वो दसवां अन्दर बन्द पड़ा है। हमें पता ही नहीं कुछ भी।

नउ दरवाज़े नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुईजै॥

(1323/112 मः4)

वो दसवां खोले, उसमें अमृत है। वो इसके घर का दरवाज़ा है और कोई नहीं। नीचे भी सुनाई देता है। यहाँ पर ख़्याल को एकान्त करके इकट्ठा करे, सोच लो! जब हम कुछ समझ नहीं आता तो हम ऐसे बैठ जाते हैं, सिर पकड़कर। इस तरह हमें सब ख़्याल छोड़कर यहाँ आए, ख़्याल को टिकाए। यह उसके घर का रास्ता है और कोई नहीं।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ॥

युगों युगों से यही रास्ता है और कोई रास्ता नहीं है।

जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ।
दैत पुत्रु प्रहलादु गायत्री तरपणु किछु न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ॥

(1133/13 मः3)

युगों-युगों से यही रास्ता है।

सुरत सबद में राखिये तब पहुँचे दरबार।
कहे कबीर तहां देखिये बैठा पुरुष हमार॥

(कबीर साहिब)

गुरु नानक साहिब जी मिठुनकोट गए। वहाँ मियां मिट्ठा फकीर मिला। वह कर्मी-धर्मी था। गुरुनानक साहिब जी ने कहा कि मियां मिट्ठा, सच्चे नाम के बिना जीव का कल्याण नहीं, मुक्ति नहीं, जीव बन्धनों में रहता है। उसने पूछा कि जी सच्चा नाम क्या चीज़ है? कि सच्चा नाम कहने सुनने की चीज़ नही। मियां मिट्ठा कहने लगा कि जी फिर भी! गुरु साहिब ने फरमाया कि वो अनुभव की चीज़ है। वो कहने लगा कि जी कुछ तो बताओ। उसको एक तरफ ले गए कहने लगे सुन भई! तुझे कुछ सुनाई देता है? मिट्ठा कहने लगा कि नहीं जी! कर्मी-धर्मी था, कर्मों-धर्मों से हिरदा साफ हो जाता है। अगर हिरदा साफ हो उसमें कोई चीज़ न डालो तो क्या फायदा? जब गुरुनानक साहिब जी ने तव्वजो दी तो कहने लगा कि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे रोम-रोम में नाम की लहरें चल रही हैं।

रोमि रोमि रविआ हरिनामु॥ (1144/4 मः5)

वो नाम है न हिन्दी का, न पंजाबी का, न अंग्रेज़ी का। अगर हिन्दी पंजाबी का हो तो हमारे लिए, तो बाकी कहाँ जाएं? अगर अंग्रेज़ी का हो तो अंग्रेज़ों के लिए बाकी कहाँ जाएं? फारसी का हो तो मुसलमानों के लिए, बाकी कहाँ जाए? वो सबके अन्दर एक जैसा ही है। जिसको गुरुनानक साहिब ने कहा :—

उच्चे खासे महल पर देवे बांग खुदाय।
सुते बांग न सुण सकन रहिया खुदाये जगाय॥

हाँ जी! वो साथ देने वाला है सोचो! जिस वक्त मौत आई क्या होता है उस समय? हम कहते हैं कि टांगे ठण्डी हो गईं, बाहे ठण्डी हो गईं, सिर ठण्डा हो गया। जब यहाँ से निकल गई रूह, सारा शरीर खाली हो गया। जब जुबान से निकली तो बोलना बन्द, लफ़्ज़ो का बोलना बन्द, जिससे हम पूजा पाठ करते हैं। जब आंखों से निकली तो देखना बन्द, जब कानों से निकली तो सुनना बन्द। आगे मनचित बुद्धि अहंकार का स्टेशन है। उनका चितवना भी खत्म हो गया सब। बाकी इसके पल्ले क्या रहा? वो तो यहीं रह गए। इसके पल्ले क्या रहा?

बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि।
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि॥ (340/3)

वो अक्षर ही और हैं, वो वाणी और है, वो तो न सीखी? यहाँ पंजाबी बोली है पर इंग्लैण्ड में काम नहीं आती। यहाँ अंग्रेज़ी सीखो तो वहाँ काम देगी। इस तरह यह भाषा सीखो तो काम देगी। ऐसे ही दुनिया झगड़ों में पड़ी है। असली मतलब ही छोड़ दिया बोलो! आगे क्या साथ गया? यह तो यहीं रह गया। गुरुनानक साहिब का शब्द आता हैः—

एहु सभु किछु आवण जाणु है जेता है आकारु॥ (516/16 मः3)

फिर फरमाते हैं कि यह लिखने वाली कलम है, यह कागज़ है, यह स्याही है। यह ग्रन्थ है, यह शास्त्र है और उनके लिखे हुए अक्षर सब जल कर राख हो जाएंगे। यह शरीर भी जल जाएगा सिर्फ एक मालिक की ही सच्ची प्रीत है जो हमेशा कायम है और सच्चा साथ देने वाली है। फिर लिखते हैंः—

कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ॥
नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोड़ी सचै पाइ॥
नदरी आवदा नालि न चलई बेखहु को विउपाइ॥
सतिगुरि सचु द्रिड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ॥
नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ॥

(84/8 मः3)

बस अन्दर से एक शब्द जाएगा और किसी ने भी नहीं जाना। सच्ची प्रीत कहो, सच्चा नाम कहो, सच्चा शब्द कहो, अब देखने में प्रीत अलग है नाम अलग है।

प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु॥ (640/3 मः5)

अन्दर एक ही चीज़ है। असली प्रेम का तब पता चलता है जब मुर्शद आप ऊपर जाए। ऊपर क्या? यहाँ पर हमारे सिर की तरफ इशारा है। आंखों के पीछे ख़्याल को जोड़े। तब पता चलता है। अभी तक तो माया के बन्धनों में है। खाने पीने के बन्धनों में है। प्रेम का तो तब पता चलता है। यह खाना, पीना प्रेम नहीं है कि फलाने ने बड़ा खिलाया, बड़ी सेवा की, बड़ा प्रेम है उसको। प्रेम का तो तब पता चलता है जब ख़्याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करे। फिर नाम का पता चलता है कि ऊपर जाने का तरीका मिला। खूब मेहनत करो।

पाठी— क्यों करदा ऐं मेरा मेरी हो जाएगी खाक दी ढेरी।
एह मानुष जन्म है बन्देया इक जोगी वाली फेरी।
फेर नहीं आवेंगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी— दादू साहिब कहते हैं किः—

दादू दावा दूर कर बिन दावे दिन काट।
केते सौदा कर गये पंसारी की हाट॥
दादू दावा आदि का निरदावा कैसा।
दिल की दुविधा दूर कर सौदा कर ऐसा॥

वो कर यहाँ से आया है। इसका क्या? यह सब तो यही रह जाने है। जो साथ जाने वाला है वो तो किया न? देख लो! हाँ जीः

पाठी– जिस धन जोबन ते फुल्लया, एह ऐत्थे ही छड़ जाना।
तेरे चलदी वारी मूर्खां इक नाम ने साथ है जाणा।
होर की लै जावेंगा॥
सुन्दर महल.....

मैनेजर साहिब जी– यह तो कठिन नहीं है पर हम करते नहीं। बाहर कितनी मेहनत करते हैं। हमारे लिए पूज्य मस्ताना जी ने नमूने बना-बनाकर दिखाए हैं। अमरपुर में तख्तपोश पर कपड़ा भी बिछाते थे। भादों का महीना चारों तरफ मच्छर। बस नंगे ही एक धोती पहनकर पड़े रहते। ऐसे जपते हैं। गुरुनानक साहिब जी ने तेरह साल रोड़ियों पर बिस्तर रखा सिर्फ हमारे समझाने के लिए। कहते हैं कि मालिक दूर नहीं, मेहनत करे खूब। वो मज़दूरी हर समय देता है, ज्यों-ज्यों मेहनत करे। चार-चार घण्टे भजन करे तो एक महीने में ही तसल्ली मिल जाए।

पाठी– जिस धन जोबन ते फुल्लया, एह ऐत्थे ही छड़ जाना।
तेरे चलदी वारी मूर्खां इक नाम ने साथ है जाणा।
होर की लै जावेगा॥
सुन्दर महल.....

पाठी– हुंदी साधूआं दे हथ चाबी तकदीर दी।
भागां नाल मिले सोहब्बत फकीर दी।
सरसे च बैठा शाह मस्ताना निरंकार जी।
ओथे जाके कीता महां सिक्ख ने दीदार जी।
उठ गई उदासी दिलों दिलगीर दी।
भागां नाल मिले सोहब्बत फकीर दी।

मैनेजर साहिब जी–फिर बोल भई!

पाठी– सरसे च बैठा शाह मस्ताना निरंकार जी।
ओथे जाके कीता महां सिक्ख ने दीदार जी।
उठ गई उदासी दिलों दिलगीर दी।
भागां नाल मिले सोहब्बत फकीर दी।

मैनेजर साहिब जी– यह जो शब्द सुना रहा है। अब दुनिया के लिए तो रद्दी है पर फकीरों पर, फकीरों के लिए एक चुटका है। किसी-किसी मौके पर किसी बिरले को यह देते हैं। यह उनके लिए तो छोटी सी बात है। जैसे हाथी के पांव नीचे

चींटी आ जाती है। बस यही हाल है। पहले तो फकीर नहीं मिलता। अगर मिलता भी है तो अमल नहीं करता। यह मुश्किल से मिलता है। मालिक की मेहर के बिना नहीं मिलता। अगर कोई मिलता भी है तो बिना नसीबों से पास नहीं जा सकता। सच्चे सौदे के पास कंगनपुर गांव है। छः सात साल हुए थे डेरा बने को। कंगनपुर दो मील पर है। हम खड़े थे। कि एक प्रेमी खड़ा था। साथ ही पूज्य मस्ताना जी खड़े थे। एक आदमी पानी का घड़ा लेने आया। छः साल डेरा बने को हो गए थे। वो आया और पूछने लगा कि बाबा जी कौन से हैं? हमने पूछा कि तू कहाँ से आया है। कहने लगा कि जी कंगनपुर से। फिर यहाँ पानी लेने कैसे आ गया? कि जी साथ ही मेरा खेत है। दरवाज़े के साथ सड़क है, उसके साथ खेत है। चार बीघे अढ़ाई किले का खेत। उसके परले पासे उसका खेत देख लो। छः सात साल में उसको यह ही नहीं पता। कुदरती उस दिन आ गया अन्दर, बिना किस्मत के कैसे आए। बोलो! इतनी ही हिम्मत नहीं थी। किस्मत के बिना कैसे आए? बिना किस्मत के तो फकीर नहीं मिलता। यह सही बात है। गुरु अर्जुन साहिब कहते हैं:—

कई कोटि मागहि सतसँगु पारब्रहम तिन लागा रंगु॥
जिन कउ होए आपि सुप्रसंन नानक ते जन सदा धनि धंनि॥

(279/10 मः5)

"कि लाखों, करोड़ों आदमी चाहते हैं कि सच्चा फकीर मिले, सच्चा सत्संग मिले, मालिक का प्यार मिले, प्रेम मिले। कहते हैं कि मुबारक हैं। कहते हैं कि बिना नसीबों के नहीं मिलता। जिस पर वह मालिक मेहर करे उसको मिलता है। वो मुबारक हैं। बिना साधू की सोहब्बत से इसको मुक्ति नहीं मिलती। पहले तो पता ही नहीं चलता कि परमार्थ क्या है? जब उनकी सोहब्बत करता है तो सोहब्बत कर-कर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ढीले पड़ जाते हैं। उनकी बजाय शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी आने लग जाती है। *'मेरे माधो'* यह तो सभी कहते हैं कि सत्संग में जाकर मुक्ति मिलती है।

मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ॥
गुर परसादि परमपदु पाइआ सूके कासट हरिआ॥ (10 मो.5)

जैसे बाहर खड़सुक होते हैं। पानी न मिलने पर सूख जाते हैं। पानी मिलने पर हरे हो जाते हैं। इस तरह आत्मा भी खड़सुक हुई पड़ी है। इसको कोई कामिल फकीर मिले, उसकी संगत में जाकर इसको सत्संग का पानी मिलने लग जाता है और इसमें फल, फूल निकल आते हैं।

ज्यों ज्यों अन्दर जपता है तो काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार जिसमें सड़ रहा है, वो सब अग्नि बुझ जाती है। उसकी बजाय शील, क्षमा, सन्तोष, धीरज, विवेक, दीनता और गरीबी के फूल, फल लगने शुरू हो जाते हैं। शान्ती आने लग जाती है। पहले तो वहाँ जाते ही तसल्ली मिलने लग जाती है।

महा पवित्र साध का संगु॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु॥

(392-93/मो. 5)

वहाँ भक्ति भाव की लहरें होती हैं। जो उसको ठण्डक पहुँचाती हैं। कुछ शांती मिलने लग जाती है। तीर्थ किसलिए बने थे? वहाँ भक्ति भाव की लहरें थीं। अगर यहाँ खुशबू डाल दो तो दूर तक खुशबू आएगी, अगर गन्द डाल दो तो बस खत्म। अगर वहाँ भक्ति की लहरें हैं अगर वहाँ काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, विषय भोगे, मांस शराब खाना पीना शुरू कर दें फिर वहाँ क्या रहेगा? तीर्थों को बनाने वाले ही सन्त हैं। जहाँ-जहाँ पर किसी जिस महात्मा ने भक्ति की या चोला छोड़ा, या जन्म लिया, वो तीर्थ बन गए। कबीर साहिब कहते हैंः—

तीर्थ नहाते एक फल सन्त मिले फल चार।
सतगुरु मिले अनेक फल कहे कबीर विचार॥

कि तीर्थों का तो एक फल, सन्तों की सोहब्बत के चार फल हैं। अगर सन्तों की तालीम अनुसार चले, भजन सिमरन करे, अन्दर नाम को प्रकट कर ले तो अनेकों फल हैं। कौन सा तीर्थ इसके अन्दर है? नाम का तीर्थ। अन्दर नाम को प्रगट कर ले। वो सब भूखें दूर करने वाला है। वो नाम आत्मा की मैलें साफ करने वाला है। बाहर कोई तीर्थ नहीं जो पापों की मैल उतारे। हम रोज़ पढ़ते हैंः—

भरीऐ हथु पैरु तनु देह॥ पाणी धोतै उतरसु खेह॥
मूत पलीती कपड़ु होइ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि॥

(जपुजी साहिब)

वो नाम का तीर्थ इसके अन्दर है।

अठसठि तीरथ हरिनामु है किलविख काटणहारा।

(1009/3 मः1)

वो अमृतसर इसके अन्दर है।

काइआ अन्दरि अंम्रित सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे।

(1046/3 मः3)

वो प्रयाग इसके अन्दर है।

इड़ा पिंगुला अदुर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई।
बैणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई॥ (974/6)

पहले तो फकीर नहीं मिलता। यह तो मिट्टी के ही काम करता है। मिट्टी की ही बात करता है। वो क्या करते हैं? यह तो मिट्टी की बात है। वो रिद्धियों, सिद्धियों वाले भी देखते हैं। लेकिन नाम वो खज़ाना है कि अपने अन्दर पहुँच जाए फिर आना ही न पड़े, पैदा न होना पड़े, मरना न पड़े। फकीर तो वह दात देने आते हैं, जो बढ़िया फकीर हैं जैसे गुरुनानक साहिब आए, कबीर साहिब आए। यह तो छोटे-छोटे फकीरों के काम है। यह तो रिद्धियां-सिद्धियां हैं। वो चाहें तो किसी को लाखों दे दें, वो चाहें तो पहाड़ पर चढ़ा दें। यह तो छोटी-छोटी बाते हैं। यह तो प्रेमी कर लेते हैं। अगर कोई सिमरन करे तो यह जल्दी आ जाती हैं। यह तो प्रेमी कर लेते हैं। यह हुक्म नहीं मानने देता। अपनी भक्ति जाया करता है।

पाठी– सरसे च बैठा शाह मस्ताना निरंकार जी।
ओथे जाके कीता महां सिक्ख ने दीदार जी।
उठ गई उदासी दिलों दिलगीर दी।
भागां नाल मिले सोहब्बत फकीर दी।
सरसे में साधू रब दा सरूप है।
सिफ्त करा की सोहनी तस्वीर दी।
भागां नाल मिले सोहब्बत फकीर दी।

मैनेजर साहिब जी– पता ही नहीं कि क्या बला थी? इनके प्रेत था हर तरह से तंग करता था। पशुओं को मार देता, दूध ख़राब कर देता। खून ही खून कर देता चारों तरफ। बुरा हाल कर देता था। बचाव कर करके थक गए। इसके नज़दीक नहीं आते। भूत प्रेत तो क्या यमदूत नहीं आते सिमरन के पास।

प्रभ कै सिमरनु साध कै संगि। सरब निधान नानक हरि रंगि॥
(262/14 म:5)

जो असली सिमरन है वो कामिल फकीरों के ज़रिये मिलता है।

राम नामु गुरबचनी बोलहु॥ सन्त सभा महि इहु रसु टोलहु॥
गुरमति खोजि लहहु घरु अपना॥ बहुड़ि न गरभ मझारा हे॥
(1030/6 म:1)

यह तो क्या चीज़ है? यमदूत व काल नज़दीक नहीं आते सिमरन के, शब्द तो दूर रहा। जो शब्द को प्रकट करने वाला सिमरन है वो सन्तों के ज़रिये मिलता है। सिमरन से काल व यमदूत पास नहीं आते।

जो कोई सन्त शरण के दागी, तिन तै काल दूर होई भागी।
यम की जाल निकटि नहिं आवे, मारगि छाड़ि अलग हो जावै॥

(तुलसी साहिब)

यह बातों का मजमून नहीं प्रेमीयों के तजरबे किए हुए हैं मौत के वक्त। प्रेमी मरते वक्त कहते हैं यमदूतों को कि जाओ तुम्हारे साथ नहीं जाएंगे। किसी की ताकत है ऐसा कहने की?

पाठी– हुँदी साधूआं दे हथ चाबी तकदीर दी।
भागां नाल मिले सोहब्बत फकीर दी।

मैनेजर साहिब जी– कभी किसी ने सोचा है? कोई कहता है ओइम नाम बड़ा है, कोई कहता है वहिगुरु बड़ा है, कोई कहता है सतनाम बड़ा है। कोई कहता है राधा स्वामी बड़ा है। कोई कुछ तो कोई कुछ। मुसलमान कहते है कि अल्ला बड़ा है। वो भी सच्चा है। जब ओइम नाम बड़ा है तो वो क्यों नहीं बड़ा? फिर सतनाम भी बड़ा, वहिगुरु भी बड़ा, तो वो क्यों नहीं बड़ा? वो तो हुक्म है। जो मालिक का हुक्म हुआ वो जपाया। उनके हुक्मनुसार सिमरन जपता है वो बड़ा है। बाकी कोई बड़ा नहीं हुआ। कभी यह हुआ, कभी वो हुआ, मौके अनुसार सब हुए हैं। पर बड़ा है वो, जो कामिल सन्त के ज़रिये सिमरन मिलता है। वो बड़ा है बाकी कोई नहीं। यह जिस बॉडी में सतगुरु काम करता है, उसका हुक्म काम करता है, बाकी कोई नहीं काम करने वाला।

पाठी– पारस और संत में बड़ो अन्तरो जान।
वो लोहा कंचन करे वह कर ले आप समान॥

मैनेजर साहिब जी– यह बड़ाई है उन सन्तों की और कोई चीज़ नहीं। यह सिफ़्त है उन सन्तों की। यह काम करने आते हैं पर हम हुक्म नहीं मानते। अगर हम हुक्म माने तो उनका रूप बन जाएं। कोई एम. ए. है तालीम देता है। पहले पहली क्लास की देगा फिर दूसरी, चौथी, आठवीं, दसवीं, बी.ए. फिर एम.ए. बना देता है। इस तरह सन्त भी बना लेते हैं। पर पढ़ता ही नहीं कोई भी तो वो क्या करें?

पाठी– पूरीयां मुरादा कर दिंदे साधू सारीयां।
साडे पिंड चलो साई अरजां गुजारीयाँ॥

'धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'